

सम-सामयिक
**घटना
चक्र**
अतिरिक्तांक

Website : <http://www.ssgcp.com/>

<https://www.facebook.com/ssgcp/>

<https://www.facebook.com/ssghatnachakra>

<https://plus.google.com/+Ssgcpssgcp>

<https://twitter.com/SamsamyikGhatna>

2019

उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड, उ.प्र. लोक
सेवा आयोग एवं अन्य परीक्षा संस्थाओं द्वारा आयोजित

TGT/PGT/GIC/ LT Grade/NET/JRF

परीक्षा प्रश्न पत्रों के
अध्यायवार विभाजित
हल प्रश्न पत्र
की पुस्तक

हिन्दी
NET/JRF परीक्षा
चयनित विषय आधारित प्रश्न
जून, 2009 से जुलाई, 2018 तक
सम्पन्न

34 प्रश्न-पत्र
तथ्यात्मक प्रस्तुति

नॉट बूट : 2009 से जुलाई, 2018 के समय सम्पन्न NET/JRF के
34 प्रश्न-पत्रों का एक साथ संग्रह करने में सफल किया जा रहा है। सभी प्रश्नों के
उत्तरों का विवरण UGC/CBSE द्वारा प्रस्तुत उत्तर-पत्रों के अनुसार
दिया है। उत्तर-पत्रों को उचित रूप से देखकर उपयोग किया जा सकता है। इसे
परीक्षाओं में भी जीक का पैरा पढ़ा जा सकता है।

हिन्दी

वर्ष 2000 से अद्यतन परीक्षा तक सम्पन्न

TGT/PGT/GIC/LT Grade/NET/JRF

के कुल 63 प्रश्न पत्र शामिल

© प्रकाशकाधीन :

संस्करण- चतुर्थ

संस्करण वर्ष- 2019

ले.- SSGC

मूल्य : 300/-

ISBN No.: 978-93-88616-41-6

मुद्रक- प्रिया ऑफसेट प्रिन्टर्स

मुद्रण क्रम : प्रथम

संपर्क-

सम-सामयिक घटना चक्र

188A/128 एलनगंज, चर्चलेन

प्रयागराज (इलाहाबाद)- 211002

Ph.: 0532-2465524, 2465525

Mob.: 9335140296

e-mail : ssgcald@yahoo.co.in

Website : ssgcp.com

e-shop Website : shop.ssgcp.com

■ इस प्रकाशन के किसी भी अंश का पुनः प्रस्तुतीकरण या किसी भी रूप में प्रतिलिपिकरण (फोटोप्रति या किसी भी माध्यम में ग्राफिक्स के रूप में संग्रहण, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिकीकरण द्वारा जहां कहीं या अस्थायी रूप से या किसी अन्य प्रकार के प्रसंगवश इस प्रकाशन का उपयोग भी) कॉपीराइट के स्वामित्व धारक के लिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

किसी भी प्रकार से इसके भंग होने या अनुमति न लेने की स्थिति में बिना किसी पूर्व सूचना के उन पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

*इस प्रकाशन से संबंधित सभी विवादों का निपटारा न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज (इलाहाबाद) के न्यायालय न्यायाधिकरण के अधीन होगा।

संकलन सहयोग-

■ **पंकज कुमार राय**

■ **सुरेन्द्र कुमार**

■ **मनोज विश्वकर्मा**

■ **अभिवेक कुमार**

■ **विनय कुमार द्विवेदी**

■ **शशिचन्द्र उपाध्याय**

अध्यायवार विभाजित प्रश्नों की शृंखला सर्वप्रथम सम-सामयिक घटना चक्र ने प्रारंभ की थी। प्रश्नों को अध्यायवार विभाजित स्वरूप में प्रस्तुत करने की शैली ने परीक्षा में सफलता की दृष्टि से अपनी उपयोगिता सिद्ध कर दी है। प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (T.G.T.) परीक्षा के प्रतियोगी भी लगातार इस परीक्षा के प्रश्नों को अध्यायवार विभाजित शैली में प्रस्तुत करने के लिए आग्रह कर रहे थे। इस विचार को क्रियान्वित करने के क्रम में हमने इस बात पर भी विमर्श किया कि क्यों न T.G.T. के साथ ही P.G.T. के प्रश्नों को भी शामिल किया जाए? वास्तव में T.G.T. एवं P.G.T. के पाठ्यक्रम में अत्यधिक साम्यता है। दोनों ही परीक्षा-प्रश्न-पत्रों का अवलोकन कर परीक्षार्थी स्वयं जान सकते हैं। दोनों परीक्षाओं में से किसी एक परीक्षा में शामिल होने वाले परीक्षार्थियों के लिए भी यह जरूरी है कि दोनों परीक्षाओं के प्रश्नों से अवगत हो लें, क्योंकि दोनों ही परीक्षाओं के मध्य परस्पर दुहराव की प्रवृत्ति तीव्र रही है। परीक्षा-प्रवृत्ति का अवलोकन करके हमने प्रस्तुत संकलन में उ.प्र. लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित G.I.C., डायट प्रवक्ता एवं आश्रम पद्धति (प्रवक्ता), एल.टी. ग्रेड तथा अन्य संस्थाओं की परीक्षाओं का संयुक्त अध्यायवार विभाजित हल प्रश्न प्रस्तुत किया है। हल प्रश्न-पत्र में प्रायः वर्ष 2000 से अद्यतन परीक्षा तक के प्रश्न-पत्र शामिल किए गए हैं। जो प्रश्न हूबहू दुहराए गए हैं उनके नीचे परीक्षा वर्ष एवं परीक्षा का नाम अंकित करके दर्शा दिया गया है। वर्ष 2013 की T.G.T./P.G.T. परीक्षा में एक बात यह द्रष्टव्य रही है कि इसमें बहुत अधिक प्रश्न UGC की नेट परीक्षा से हूबहू उठा लिए गए थे। अभ्यर्थियों की सुविधा के लिए पुस्तक के अंत में हमने UGC नेट परीक्षा के जून, 2009 से जुलाई, 2018 तक के 34 प्रश्न-पत्रों के प्रश्नों को तथ्यात्मक स्वरूप में प्रस्तुत किया है। इन प्रश्नों के उत्तरों को UGC/NET द्वारा जारी संशोधित उत्तर-पत्रक से मिलान करके प्रस्तुत किया गया है। उत्तर-पत्रक के अनुसार उत्तर जहां भी गलत प्रतीत हुए हैं, वहां प्रमाण सहित विस्तृत स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया गया है, ताकि परीक्षार्थियों को कोई संशय न रहे। वर्ष 2011 एवं 2013 के T.G.T./P.G.T. प्रश्न-पत्रों को उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा जारी उत्तर-पत्रक से मिलान किया गया है। गलत प्रतीत हो रहे प्रश्नों पर स्पष्टीकरण भी हमने प्रस्तुत किया है।

□ **हल प्रश्न-पत्र भी, मार्गदर्शक भी**

प्रस्तुत संकलन केवल हल प्रश्न-पत्र की पुस्तक नहीं है। प्रत्येक प्रश्न के हल हेतु प्रस्तुत व्याख्या में ढेरों तथ्य संजोए गए हैं। साथ ही 'अन्य महत्वपूर्ण तथ्य' शीर्षक के अंतर्गत महत्वपूर्ण संभावित तथ्यों को संकलित कर दिया गया है। यह संकलन परीक्षार्थियों के लिए उत्तम मार्गदर्शक सिद्ध होगा। इस संकलन के अध्ययन से एक लाभ तो यह होगा कि दुहराव वाले प्रश्नों को हल करने में परीक्षार्थी सक्षम हो सकेंगे, दूसरा फायदा यह होगा कि कम पृष्ठों के अध्ययन द्वारा ही अत्यधिक संभावित अध्ययन सामग्री को आत्मसात कर सकेंगे। हल प्रश्नों की प्रस्तुति में हमारी प्रामाणिकता सिद्ध रही है। पूर्ववलोकन के तहत सिविल सेवा परीक्षा-प्रश्नों के आठ खंड एवं रेलवे, एस.एस.सी. तथा सिविल जज के संकलन इसके प्रमाण हैं। इस संकलन में भी प्रामाणिकता के उसी स्तर को स्पर्श किया गया है। प्रत्येक प्रश्न की व्याख्या को इंटरनेट से जांच के उपरांत विषय-विशेषज्ञों की कसौटी पर भी परखा गया है। इसके बावजूद यदि किसी भी प्रश्न के प्रति रंचमात्र भी शंका उत्पन्न हो, तो परीक्षार्थी दूरभाष संख्या 9335140296 पर हमसे संपर्क करें। हम अवश्य ही संदेह का निवारण

प्रश्न पत्र-विश्लेषण

इस संकलन में T.G.T., P.G.T., G.I.C., L.T. Grade एवं अन्य संस्थाओं की परीक्षाओं के क्रमशः हिन्दी T.G.T. एवं P.G.T. विषय के वस्तुनिष्ठ 29 प्रश्न-पत्रों तथा UGC/ NET के 34 प्रश्न-पत्रों को शामिल किया गया है। इन प्रश्न-पत्रों में शामिल प्रश्नों का विवरण इस प्रकार है—

क्रमांक	विषय/परीक्षा नाम	परीक्षा वर्ष	कुल प्रश्न संख्या
1.	हिन्दी/T.G.T.	2001	85
2.	हिन्दी/T.G.T.	2002	85
3.	हिन्दी/T.G.T.	2003	85
4.	हिन्दी/T.G.T.	2004	125
5.	हिन्दी/T.G.T. (पुनर्परीक्षा)	2004	125
6.	हिन्दी/T.G.T.	2005	125
7.	हिन्दी/T.G.T.	2009	125
8.	हिन्दी/T.G.T.	2010	125
9.	हिन्दी/T.G.T.	2011	125
10.	हिन्दी/T.G.T.	2013	125
11.	हिन्दी/P.G.T.	2000	100
12.	हिन्दी/P.G.T.	2002	85
13.	हिन्दी/P.G.T.	2003	85
14.	हिन्दी/P.G.T.	2004	125
15.	हिन्दी/P.G.T.	2005	125
16.	हिन्दी/P.G.T.	2009	125
17.	हिन्दी/P.G.T.	2010	125
18.	हिन्दी/P.G.T.	2011	125
19.	हिन्दी/P.G.T.	2013	125
20.	हिन्दी/G.I.C. (प्रवक्ता)	2012	120
21.	हिन्दी/G.I.C. (प्रवक्ता)	2015	120
22.	हिन्दी/G.I.C. (प्रवक्ता)	2017	120
23.	हिन्दी/एल.टी. ग्रेड (सहायक अध्यापक)	2018	120
24.	हिन्दी/ आश्रम पद्धति (प्रवक्ता)	2009	120
25.	हिन्दी/ आश्रम पद्धति (प्रवक्ता)	2012	120
26.	हिन्दी/डायट (प्रवक्ता)	2014	90
27.	हिन्दी/केन्द्रीय विद्यालय (प्रवक्ता)	2014	120
28.	हिन्दी/नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता)	2014	100
29.	हिन्दी/दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (प्रवक्ता)	2015	200
कुल प्रश्न			3380

T.G.T./P.G.T. शृंखला के तहत सप्तम खण्ड में हिन्दी के प्रश्नों को प्रस्तुत किया जा रहा है। पाठ्यक्रम के अनुसार रचित इस खण्ड के लिए हिन्दी विषय T.G.T., P.G.T., G.I.C., L.T. Grade एवं अन्य संस्थाओं की परीक्षाओं के कुल 29 वस्तुनिष्ठ प्रश्न-पत्रों से कुल 3380 प्रश्न लिए गए जिनमें से दुहराव वाले 80 प्रश्नों को अलग कर 3300 प्रश्नों को इस खण्ड में समाहित किया गया है। दुहराव वाले प्रश्नों का परीक्षा नाम मूल प्रश्नों के परीक्षा नाम के नीचे जोड़ दिया गया है, ताकि परीक्षार्थी प्रश्नों के दुहराव की प्रकृति को समझ सकें। इसके अतिरिक्त के UGC/NET के 34 प्रश्न-पत्रों के 1896 प्रश्नों का हल संक्षिप्त रूप (वन लाइनर) में दिया गया है।

हिन्दी साहित्य का इतिहास

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा का सूत्रपात किसने किया?

- (a) जॉर्ज ग्रियर्सन (b) गार्सा-द-तासी
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) मिश्रबन्धु

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा का सूत्रपात 'गार्सा-द-तासी' ने किया, जिन्होंने फ्रेंच भाषा में 'इस्त्वार-द-ला लितरेत्युर एन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी' ग्रन्थ लिखा, इसमें हिन्दी और उर्दू के अनेक कवियों का विवरण वर्णक्रमानुसार दिया गया है। इसका प्रथम भाग सन् 1839 में तथा द्वितीय भाग सन् 1847 में प्रकाशित हुआ था।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

☛ सन् 1888 में 'एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल' की पत्रिका के विशेषांक के रूप में जॉर्ज ग्रियर्सन द्वारा रचित 'द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' का प्रकाशन हुआ, जो नाम से 'इतिहास' न होते हुए भी सच्चे अर्थ में हिन्दी साहित्य का पहला इतिहास कहा जा सकता है।

2. हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन का सर्वप्रथम प्रयास किसने किया था?

- (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) ग्रियर्सन
(c) गार्सा-द-तासी (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. हिन्दी साहित्य के इतिहास का लेखन सर्वप्रथम किस भाषा में हुआ?

- (a) अंग्रेजी (b) फ्रेंच
(c) जर्मनी (d) उर्दू

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने वाले प्रथम लेखक का नाम है—

- (a) रामचन्द्र शुक्ल (b) गार्सा-द-तासी
(c) शिवसिंह सेंगर (d) मिश्रबन्धु

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. कालक्रमानुसार लिखा गया हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास ग्रन्थ है—

- (a) शिवसिंह सरोज
(b) इस्त्वार-द-ला लितरेत्युर एन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी
(c) तसकरिआ शूअरा हिन्दी
(d) द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'इस्त्वार-द-ला लितरेत्युर एन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी' नामक हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रन्थ के लेखक का नाम है—

- (a) गार्सा-द-तासी (b) जॉर्ज ग्रियर्सन
(c) शेक्सपियर (d) विलियम वड्सवर्थ

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. हिन्दी साहित्य का पहला इतिहास लिखा गया था—

- (a) संस्कृत भाषा में (b) जर्मन भाषा में
(c) फ्रेंच भाषा में (d) अंग्रेजी भाषा में

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. हिन्दी का प्रथम व्याकरण लिखने वाले विद्वान हैं—

- (a) जोशुआ केटलर (b) किशोरीदास बाजपेयी
(c) जॉर्ज ग्रियर्सन (d) कामता प्रसाद गुरु

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

हिन्दी का प्रथम व्याकरण लिखने वाले विद्वान जोशुआ केटलर, डच (पुर्तगाल) ईस्ट इंडिया कम्पनी के राजदूत बनकर भारत आये थे। उन्होंने अपने देशवासियों को भारत में व्यावसायिक सुविधा की दृष्टि से हिन्दी का सामान्य ज्ञान कराने के लिए व्याकरण की पुस्तक 'हिन्दुस्तानी ग्रामर' लिखी थी, जो सन् 1715 के आस-पास प्रकाशित हुई। इस ग्रामर की रचना डच भाषा में की गई थी। डॉ. ग्रियर्सन ने अपने ग्रन्थ 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' (Linguistic Survey of India) में इस पुस्तक का तथा उसके लेखक का संक्षिप्त परिचय दिया है। सन् 1943 में पं. किशोरीदास बाजपेयी का 'ब्रजभाषा व्याकरण' प्रकाशित हुआ और इसी के साथ व्याकरण लेखन में नई चेतना का संचार हुआ। इसके बाद बाजपेयी जी की अच्छी हिन्दी का नमूना (1948), ब्रजभाषा का प्रथम व्याकरण (1949), हिन्दी निरुक्त (1949) तथा हिन्दी शब्दानुशासन (1958) प्रकाशित हुआ।

9. हिन्दी साहित्य के इतिहास को व्यवस्थित रूप देने का श्रेय किसको है?

- (a) शिवसिंह सेंगर (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(c) जॉर्ज ग्रियर्सन (d) मिश्रबन्धु

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

हिन्दी साहित्य के इतिहास को व्यवस्थित रूप देने का श्रेय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को है। इन्होंने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' (1929) लिखा, जो मूलतः नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी शब्द-सागर' की भूमिका के रूप में लिखा गया था तथा जिसे आगे परिवर्द्धित एवं विस्तृत करके स्वतन्त्र पुस्तक का रूप दे दिया गया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ 'शिवसिंह सरोज' (1883) में लगभग एक सहस्र भाषा-कवियों का जीवन चरित्र उनकी कविताओं के उदाहरण सहित प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, यह शिवसिंह सेंगर कृत है।

10. रामचन्द्र शुक्ल का 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' मूलतः किस कृति की भूमिका के रूप में लिखा गया था? हिन्दी हिन्दी

- (a) हिन्दी कोविद रत्नमाला (b) हिन्दी शब्दसागर
(c) हिन्दी विश्वकोश (d) धर्मशास्त्र का इतिहास

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें

11. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा रचित "हिन्दी साहित्य का इतिहास" का प्रकाशन वर्ष है—

- (a) 1917 (b) 1918
(c) 1919 (d) 1929

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. इनमें से वह कौन-सी रचना है, जिसे मूलतः 'हिन्दी शब्द-सागर' की भूमिका के रूप में लिखा गया था, किन्तु बाद में उसे स्वतन्त्र ग्रन्थ भी बना दिया गया?

- (a) रामकुमार वर्मा कृत 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास'
(b) गणपतिचन्द्र गुप्त कृत 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास'
(c) रामचन्द्र शुक्ल कृत 'हिन्दी साहित्य का इतिहास'
(d) शिवसिंह सेंगर कृत 'शिवसिंह सरोज'

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. आंग्ल भाषा में लिखा गया हिन्दी साहित्य का इतिहास 'स्केच ऑफ हिन्दी लिटरेचर' के लेखक हैं—

- (a) पादरी एफ.ई.के. (b) पादरी एडसिन ग्रीब्ज
(c) गार्सा-न्द-तासी (d) जॉर्ज ग्रियर्सन

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

आंग्ल भाषा में लिखा गया हिन्दी साहित्य का इतिहास 'स्केच ऑफ लिटरेचर' के लेखक पादरी एडसिन ग्रीब्ज हैं। पादरी एफ.ई.के. द्वारा लिखित हिन्दी साहित्य का इतिहास 'ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर' नाम से प्रकाशित हुआ था। 'दि मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' के लेखक जॉर्ज ग्रियर्सन हैं।

14. ग्रियर्सन कृत 'द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' का हिन्दी अनुवाद किसने किया?

- (a) डॉ. किशोरी लाल गुप्त (b) डॉ. रामकुमार वर्मा
(c) डॉ. लक्ष्मीसागर वाष्णेय (d) डॉ. जगदीश गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

ग्रियर्सन द्वारा रचित 'द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' का हिन्दी अनुवाद डॉ. किशोरी लाल गुप्त ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के नाम से किया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ किशोरी लाल गुप्त का जन्म वर्ष 1916 में भदोही (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। ये पण्डित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के प्रमुख शिष्यों में से एक थे।
☛ गुप्त जी को 'विन्ध गौरव' से सम्मानित किया गया था। गुप्त जी की कृति 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी से प्रकाशित हुई थी।
☛ किशोरी लाल गुप्त की अन्तिम प्रकाशित कृति सूरसागर की टीका चार खण्डों में है।

15. 'द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थ के लेखक का नाम है—

- (a) जॉर्ज ग्रियर्सन (b) गार्सा-न्द-तासी
(c) विलियम वड्सवर्थ (d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. "द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान" का लेखक है—

- (a) गार्सा-न्द-तासी (b) गिलक्राइस्ट
(c) जॉर्ज ग्रियर्सन (d) मैक्समुल्लर

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. डॉ. किशोरी लाल गुप्त ने इनमें से किस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' शीर्षक से किया है?
- (a) 'इस्तवार-द-ला लिहरेचुर एन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी'
 (b) 'द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिहरेचर ऑफ हिन्दुस्तान'
 (c) 'ए स्केच ऑफ हिन्दी लिहरेचर'
 (d) 'ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिहरेचर'

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. इनमें से किस साहित्येतिहास ग्रंथ को किशोरीलाल गुप्त ने 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' नाम से अनुवाद करके प्रकाशित कराया?
- (a) 'इस्तवार-द-ला लिहरेचुर एन्दुई ऐ-एन्दुस्तानी' को
 (b) 'ए स्केच ऑफ हिन्दी लिहरेचर' को
 (c) 'ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिहरेचर' को
 (d) 'द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिहरेचर ऑफ नार्दर्न हिन्दुस्तान' को

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. किस लेखक के इतिहास ग्रन्थ में सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य का काल विभाजन मिलता है?
- (a) शिवसिंह सेंगर (b) महेशदत्त शुक्ल
 (c) मौलवी करीमुद्दीन (d) जॉर्ज ग्रियर्सन

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन करने वाले प्रथम इतिहासकार डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन हैं। उन्होंने आदिकाल की अंतिम सीमा 1400 ई. तक मानी है।

20. किस साहित्येतिहास के लेखक ने काल विभाजन में कवियों के नाम का सर्वाधिक उपयोग किया है?
- (a) मिश्रबन्धु (b) ग्रियर्सन
 (c) हरिऔध (d) श्यामसुन्दर दास

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

हिन्दी साहित्येतिहास की परम्परा में मिश्रबन्धुओं ने अपनी कृति 'मिश्रबन्धु विनोद' में लगभग 5000 कवियों को स्थान दिया, जिसे आठ से भी अधिक काल-खंडों में विभक्त किया है। इस प्रकार मिश्रबन्धुओं ने काल विभाजन में सर्वाधिक कवियों के नाम का उल्लेख किया है।

21. 'मिश्रबन्धु विनोद' नामक हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों के नाम हैं—
- (a) श्याम बिहारी मिश्र, शुकदेव बिहारी मिश्र और राम बिहारी मिश्र
 (b) गणेश बिहारी मिश्र, श्याम बिहारी मिश्र और शुकदेव बिहारी मिश्र
 (c) गणेश बिहारी मिश्र, श्याम बिहारी मिश्र और राम बिहारी मिश्र
 (d) गणेश बिहारी मिश्र, शुकदेव बिहारी मिश्र और राम बिहारी मिश्र

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'मिश्रबन्धु विनोद' नामक हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों के नाम गणेश बिहारी मिश्र, श्याम बिहारी मिश्र एवं शुकदेव बिहारी मिश्र हैं। 'मिश्रबन्धु विनोद' के चार भाग थे। प्रथम तीन भागों का प्रकाशन सन् 1913 में किया गया, जबकि चौथा भाग सन् 1934 में प्रकाशित हुआ। मिश्रबन्धुओं ने मिश्रबन्धु विनोद के प्रथम तीन भागों को 'हिन्दी नवरत्न' के नाम से प्रकाशित कराया।

22. 'मिश्रबन्धु विनोद' का चौथा भाग कब प्रकाशित हुआ?

- (a) 1934 ई. में (b) 1913 ई. में
 (c) 1910 ई. में (d) 1900 ई. में

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. 'मिश्रबन्धुविनोद' कितने भागों में प्रकाशित हुआ है?

- (a) तीन भाग (b) चार भाग
 (c) एक भाग (d) दो भाग

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. मिश्रबन्धुओं ने 'परिवर्तन काल' की समय सीमा निर्धारित की है—

- (a) संवत् 1890 वि.-संवत् 1925 वि.
 (b) संवत् 1791 वि.-संवत् 1889 वि.
 (c) संवत् 1890 ई.-संवत् 1925 वि.
 (d) संवत् 1791 ई.-संवत् 1889 वि.

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

मिश्रबन्धुओं ने 'मिश्रबन्धु विनोद' में काल विभाजन का प्रयास किया, जो इस प्रकार है—(1) प्रारम्भिक काल 700 से 1440 वि. तक, (2) माध्यमिक काल 1445 से 1680 वि. तक, (3) अलंकृत काल 1681 से 1889 वि. तक, (4) परिवर्तन काल 1890 से 1925 वि. तक तथा (5) वर्तमान काल 1926 वि. से अब तक।

25. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रथम उत्थान का समय कब-से-कब तक निर्धारित किया है?

- (a) 1850 से 1885 ई. (b) 1857 से 1900 ई.
(c) 1868 से 1893 ई. (d) 1800 से 1850 ई.

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रथम उत्थान का समय 1868-1893 ई. (संवत् 1925-1950) तक तथा द्वितीय उत्थान का समय 1893-1918 ई. (संवत् 1950-1975) तक तय किया है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का प्रभाव भाषा और साहित्य दोनों पर बड़ा गहरा पड़ा। उन्होंने जिस प्रकार हिन्दी गद्य को परिमार्जित करके उसे बहुत ही सरल, मधुर और स्वच्छ रूप दिया, उसी प्रकार हिन्दी साहित्य को भी नए मार्ग पर लाकर खड़ा कर दिया, उनके भाषा संस्कार की महत्ता को सब लोगों ने मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया और वे वर्तमान हिन्दी गद्य के प्रवर्तक माने गये।

26. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के 'आधुनिक गद्य साहित्य परम्परा का प्रवर्तन' के अन्तर्गत 'प्रथम उत्थान' की कालावधि निर्धारित की है।

- (a) सं 1900 से 1950 विक्रमी तक
(b) सं 1925 से 1950 विक्रमी तक
(c) सं 1925 से 1975 विक्रमी तक
(d) सं 1900 से 1925 विक्रमी तक

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने द्वितीय उत्थान का समय कब-से-कब तक तय किया है?

- (a) 1893 से 1918 ई. (b) 1900 से 1920 ई.
(c) 1885 से 1918 ई. (d) 1903 से 1920 ई.

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना कब हुई थी?

- (a) 1867 ई. में (b) 1850 ई. में
(c) 1885 ई. में (d) 1893 ई. में

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना 1893 ई. में श्याम सुन्दर दास जी ने की थी। नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी भाषा और साहित्य तथा देवनागरी लिपि की उन्नति एवं प्रचार और प्रसार करने वाली भारत की अग्रणी संस्था है। हिन्दी साहित्य के नियमन, नियंत्रण और संचालन में इस सभा का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ से 'हिन्दी शब्दसागर' का प्रकाशन किया गया। इस शब्दकोश के लेखक श्याम सुन्दर दास थे।

29. काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई थी-

- (a) 1895 ई. में (b) 1893 ई. में
(c) 1898 ई. में (d) 1890 ई. में

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. 'नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना हुई थी-

- (a) 1910 (b) 1893
(c) 1800 (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'हिन्दी शब्दसागर' का प्रकाशन किस संस्था ने किया था?

- (a) हिन्दी साहित्य सम्मेलन
(b) नागरी प्रचारिणी सभा
(c) इंडियन प्रेस
(d) राष्ट्रभाषा परिषद्

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. 'नागरी प्रचारिणी सभा' के संस्थापकों में कौन नहीं थे?

- (a) बाबू श्याम सुन्दर दास
(b) पं. रामनारायण मिश्र
(c) रामचन्द्र वर्मा
(d) ठाकुर शिव कुमार सिंह

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना 16 जुलाई, 1893 को वाराणसी में हुई, जिसकी स्थापना में बाबू श्याम सुन्दर दास, पं. रामनारायण मिश्र तथा ठाकुर शिव कुमार सिंह जैसी प्रभृतियों का मुख्य योगदान रहा।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➤ आचार्य रामचन्द्र वर्मा हिन्दी के साहित्यकार एवं कोशकार रहे हैं। ये हिन्दी शब्द सागर के सम्पादक मंडल के प्रमुख सदस्य थे। इन्होंने आचार्य किशोरीलाल बाजपेयी के साथ मिलकर 'अच्छी हिन्दी' का आन्दोलन चलाया और हिन्दी का मानकीकरण हुआ। इन्होंने सन् 1919 में 'महात्मा गाँधी' नामक पुस्तक लिखी।

33. फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना किस वर्ष में हुई थी?

- (a) वि.सं. 1800 में (b) 1800 ई. में
(c) 1798 ई. में (d) 1802 ई. में

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

वेलेजली ने जॉन गिलक्राइस्ट की अध्यक्षता में 'ओरियंटल सैमिनरी' की स्थापना की। बाद में यही संस्था 'फोर्ट विलियम कॉलेज' के रूप में परिवर्तित हुई। फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना टीपू सुल्तान पर ब्रिटेन की निर्णायक विजय की स्मृति में 10 जुलाई, 1800 को 'मॉर्केस ऑफ वेलेजली' ने की थी और गिलक्राइस्ट उसके हिन्दुस्तानी विभाग के अध्यक्ष नियुक्त किये गये। उन्होंने हिन्दी के शिक्षण के लिए दो भाषा पण्डितों लल्लू लाल एवं सदल मिश्र की नियुक्ति की।

34. 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की स्थापना कब हुई?

- (a) 1800 ई. में (b) 1805 ई. में
(c) 1809 ई. में (d) 1810 ई. में

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की स्थापना कब हुई थी?

- (a) सन् 1800 ई. (b) सन् 1857 ई.
(c) सन् 1885 ई. (d) सन् 1900 ई.

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. कलकत्ता में स्थापित 'फोर्ट विलियम कॉलेज' के संस्थापक थे—

- (a) जॉन गिलक्राइस्ट (b) सदल मिश्र
(c) राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' (d) रवीन्द्रनाथ टैगोर

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. सदल मिश्र की भाषा की विशेषता है—

- (a) पूरबीपन (b) उर्दू की प्रमुखता
(c) सहज एवं प्रवाहमयी भाषा (d) किस्सागोई

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

सदल मिश्र बिहार प्रान्त के शाहाबाद जिले के ध्रुवडीहा गाँव के रहने वाले शाकद्वीपीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम नन्दमणि मिश्र था। यह कलकत्ता के फोर्ट विलियम कॉलेज के हिन्दुस्तानी विभाग में अध्यापक थे। सदल मिश्र का प्रारम्भिक खड़ी बोली गद्य लेखकों में विशेष महत्व है। इनके शब्द संघटन और वाक्य विन्यास दोनों में ही ब्रजभाषा, पूरबीपन और बांग्ला इन तीनों का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आधुनिक काल में जिस भाषा में हिन्दी गद्य लिखा जा रहा है, वह खड़ी बोली गद्य ही है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने खड़ी बोली गद्य का प्रारम्भ अकबर के दरबारी कवि गंग द्वारा लिखित 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' से माना है।
- सदल मिश्र हिन्दी के पहले गद्यकार हैं। सदल मिश्र की दो गद्य कृतियाँ प्रसिद्ध हैं- 1. नासिकेतोपाख्यान या चन्द्रावती (1803), 2. रामचरित (1806)।
- रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, सदल मिश्र ने व्यावहारोपयोगी भाषा लिखने का प्रयत्न किया है।
- श्यामसुन्दर दास ने तत्कालीन गद्य लेखकों में इशाअल्ला खाँ के बाद दूसरा स्थान सदल मिश्र का ही स्वीकार किया है।
- लल्लू लाल की रचना 'प्रेम सागर' में ब्रजभाषा का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है तथा शैली आख्यात्मक है।
- मुंशी सदासुख लाल की रचना 'सुखसागर' एक धार्मिक ग्रन्थ है। इसकी भाषा पर पण्डिताऊपन एवं फारसी का प्रभाव है। इशाअल्ला खाँ की रचना 'रानी केतकी की कहानी' है, जिसे 'उदयभान चरित' भी कहा जाता है। इसकी भाषा पर उर्दू, अरबी एवं फारसी का प्रभाव है।
- फोर्ट विलियम कॉलेज में जॉन गिलक्राइस्ट हिन्दी-उर्दू के अध्यापक थे। इन्होंने आगरा के 'लल्लू लाल' और आरा के 'सदल मिश्र' को भाषा मुंशी के रूप में नियुक्त किया।
- सदल मिश्र की अन्य कृतियाँ हैं—फूलन्ह के बिछाने, सोनम के थम्भ, चहुँदिसि, बरते थे, बाजने लगा, काँदती है आदि।

38. लल्लू जी लाल का सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ है—

- (a) शकुन्तला नाटक
(b) प्रेमसागर
(c) सिंहासन बत्तीसी
(d) बैताल पच्चीसी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. 'प्रेमसागर' किसकी रचना है?

- (a) सदल मिश्र (b) लल्लू लाल
(c) इशाअल्ला खाँ (d) नासिकेतोपाख्यान

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. 'रानी केतकी की कहानी' के लेखक हैं-

- (a) सदल मिश्र (b) लल्लू लाल
(c) इंशाअल्ला खाँ (d) सदासुख लाल

T.G.T. परीक्षा, 2011

P.G.T. परीक्षा, 2004

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. 'रानी केतकी की कहानी' के रचनाकार हैं—

- (a) लल्लू लाल
(b) सदल मिश्र
(c) इंशाअल्ला खाँ
(d) राजा लक्ष्मण सिंह 'सितारे हिन्द'

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. निम्नलिखित में से कौन फोर्ट विलियम कॉलेज (कलकत्ता) में हिन्दी के अध्यापक थे?

- (a) इंशाअल्ला खाँ (b) सदल मिश्र
(c) राजा लक्ष्मण सिंह (d) सदासुखलाल

P.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. इनमें से कौन कलकत्ता के फोर्ट विलियम कॉलेज से सम्बद्ध थे?

- (a) लल्लू लाल
(b) इंशाअल्ला खाँ
(c) सदासुख लाल
(d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. 'नासिकेतोपाख्यान' के लेखक हैं-

- (a) सदल मिश्र (b) इंशाअल्ला खाँ
(c) लल्लू लाल (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. 'नासिकेतोपाख्यान' के लेखक हैं-

- (a) लल्लू लाल (b) सदासुख लाल
(c) इंशाअल्ला खाँ (d) सदल मिश्र

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. इनमें से 'सदल मिश्र' की रचना कौन-सी है?

- (a) रानी केतकी की कहानी (b) प्रेमसागर
(c) सुखसागर (d) नासिकेतोपाख्यान

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. उदयमान चरित के लेखक हैं-

- (a) लल्लू लाल (b) सदल मिश्र
(c) सदासुख लाल (d) इंशाअल्ला खाँ

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

48. 'सुखसागर' की रचना किसने की?

- (a) सदल मिश्र (b) लल्लू लाल
(c) इंशाअल्ला खाँ (d) सदासुख लाल

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. 'सुखसागर' का विषय है-

- (a) शिव पुराण के प्रेरक प्रसंग
(b) गीता के प्रेरक प्रसंग
(c) विष्णु पुराण के उपदेशात्मक प्रसंग
(d) इनमें से कोई नहीं

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

डॉ. नगेन्द्र अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखते हैं कि मुंशी सदासुखराय निसार (नियाज नहीं), जिनके नाम से 'सुखसागर' शीर्षक ग्रंथ का उल्लेख प्रायः सभी इतिहास पुस्तकों में किया गया है, 'सुखसागर' शीर्षक किसी ग्रंथ के रचयिता नहीं हैं, अपितु 'सुखसागर' इनका उपनाम था। 'विष्णु पुराण' या 'भागवत' का मुंशी जी ने पद्यानुवाद किया था। इनकी अन्य दो गद्य-रचनाएँ अवश्य प्राप्त हैं- 'सुरासुर-निर्णय' (निबन्धात्मक रचना, सज्जन-दुर्जन का विवेचन) और 'वार्तिक' (बाबा दयालुदास के ध्रुवपदों का भाष्य)।

50. 'भाषा योगवाशिष्ठ' के लेखक हैं—

- (a) रामप्रसाद बिस्मिल (b) रमाशंकर वाजपेयी
(c) रामप्रसाद निरंजनी (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'भाषा योगवाशिष्ठ' के लेखक रामप्रसाद निरंजनी हैं। यह ग्रन्थ संवत् 1768 में लिखा गया। इसे रामचन्द्र शुक्ल ने खड़ी बोली में लिखा गया बहुत साफ-सुथरा ग्रन्थ बताया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अब तक पायी गयी पुस्तकों में 'भाषा योगवाशिष्ठ' सबसे पुरानी है जिसमें गद्य अपने परिष्कृत रूप में दिखाई पड़ता है।
- इसे रामचन्द्र शुक्ल ने खड़ी बोली का प्रथम ग्रन्थ माना है।
- इसकी भाषा गुरुमुखी लिपि से मिलती-जुलती है।

51. 'योगवाशिष्ठ' के लेखक हैं—

- (a) राजा शिवप्रसाद सिंह
(b) रामप्रसाद निरंजनी
(c) राजा राममोहन राय
(d) सदल मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

52. खड़ी बोली की पहली रचना है?

- (a) प्रेमसागर
(b) नासिकेतोपाख्यान
(c) ढोला मारू रा दूहा
(d) आशिय

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने अपनी वेबसाइट पर 'हिन्दी का उद्भव' शीर्षक के अन्तर्गत खड़ी बोली गद्य की पहली पुस्तक 1623 ई. में जटमाल कृत 'गोरा बादल की कथा' का उल्लेख किया है। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के अनुसार, आधुनिक प्रथम गद्यकारों में सदल मिश्र एवं लल्लू लाल दोनों शामिल हैं, जो फोर्ट विलियम कॉलेज कलकत्ता में एक साथ गये। वहाँ सदल मिश्र ने 1803 ई. में नासिकेतोपाख्यान की रचना की तथा 1805 ई. में लल्लू लाल प्रणीत 'प्रेम सागर' (श्री मद्भागवत पुराण के दशम स्कन्ध का खड़ी बोली गद्य रूपान्तर) का प्रकाशन हुआ। अतः आधुनिक गद्यकारों में नासिकेतोपाख्यान खड़ी बोली की पहली रचना है। उ. प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में विकल्प (b) को सही माना है।

53. 'खड़ी बोली' में जो 'खड़ी' शब्द है, उसका सर्वप्रथम प्रयोग किसने किया था?

- (a) सदल मिश्र (b) भोलानाथ तिवारी
(c) लल्लू लाल (d) हरदेव बाहरी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

नरेन्द्र कोहली ने अपनी पुस्तक 'व्यंग्य गाथा' में लिखा है कि पं. लल्लू लाल जी ने खड़ी बोली में गद्य का लेखन किया। फोर्ट विलियम कॉलेज में ही खड़ी बोली का नामकरण हुआ। खड़ी बोली के नामकरण का श्रेय गिलक्राइस्ट एवं सदल मिश्र को दिया जाता है। 1803 ई. में खड़ी बोली का प्रयोग भाषा के रूप में पहली बार हुआ।

54. 'खड़ी बोली' का पहला प्रयोग किसके द्वारा किया गया है?

- (a) बलदेव (b) लल्लू लाल
(c) जॉन गिलक्राइस्ट (d) सुनीति कुमार चटर्जी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'राजा द्वय' के नाम से विख्यात दो रचनाकार हैं—

- (a) राजा लक्ष्मण सिंह और राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह
(b) राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द और राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह
(c) राजा लक्ष्मण सिंह और राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द
(d) इनमें से कोई भी नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

फारसी पढ़े-लिखे लोगों ने जनभाषा को फारसी शब्दों से बोझिल कर दिया। इस खेमे का नेतृत्व कर रहे थे राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द। इसकी प्रतिक्रिया में कुछ लोगों ने भाषा में संस्कृत शब्दों की भर-मार कर दी। इस वर्ग के नेता थे राजा लक्ष्मण सिंह। 'राजा द्वय' की प्रतिद्वन्द्विता भारतेन्दु के उदय काल तक चलती रही।

56. हिन्दी के प्रथम गद्यकार हैं—

- (a) बाल कृष्ण भट्ट
(b) लल्लू लाल
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(d) राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

दिये गये विकल्पों में हिन्दी के प्रथम गद्यकार लल्लू लाल हैं।

आदिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1. किस विद्वान ने हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक काल को 'वीरगाथा काल' नाम दिया?

- (a) जॉर्ज ग्रियर्सन ने (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने
(c) राहुल सांकृत्यायन ने (d) डॉ. रामकुमार वर्मा ने

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

हिन्दी साहित्य के विभिन्न विद्वानों ने प्रारम्भिक काल का भिन्न-भिन्न नामों से वर्गीकरण किया है, जो इस प्रकार हैं—

1. डॉ. ग्रियर्सन-चारण काल
2. मिश्रबन्धु-प्रारम्भिक काल
3. डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त- प्रारम्भिक काल
4. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल-वीरगाथा काल
5. राहुल सांकृत्यायन-सिद्ध-सामंत काल
6. महावीर प्रसाद द्विवेदी-बीजवपन काल
7. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र-वीरकाल
8. हजारी प्रसाद द्विवेदी-आदिकाल
9. डॉ. रामकुमार वर्मा-चारण काल या सन्धिकाल

2. आदिकाल के नामकरण से सम्बन्धित कौन-सा युग्म अशुद्ध है?

- (a) बीजवपन काल - मिश्रबन्धु
(b) सिद्ध-सामंत युग - राहुल सांकृत्यायन
(c) सन्धिकाल एवं चारण काल - डॉ. रामकुमार वर्मा
(d) वीरगाथा काल - रामचन्द्र शुक्ल

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. हिन्दी साहित्य के प्रथम काल को वीरकाल किसने कहा है?

- (a) मिश्रबन्धु (b) राहुल सांकृत्यायन
(c) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (d) डॉ. रामकुमार वर्मा

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. हिन्दी के प्रारम्भिक काल को 'वीरगाथा काल' का नाम किसने दिया?

- (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) राहुल सांकृत्यायन (d) मिश्रबन्धु

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. आदिकाल को वीरगाथा काल किसने कहा है?

- (a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) डॉ. नगेन्द्र
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) राहुल सांकृत्यायन

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. हिन्दी साहित्य के आदिकाल के लिए 'सिद्ध-सामंत युग' नाम इनके द्वारा दिया गया है—

- (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) डॉ. रमाशंकर शुक्ल रसाल
(c) डॉ. शिवप्रसाद सिंह (d) राहुल सांकृत्यायन

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'आदिकाल' को 'सिद्ध-सामंत युग' कहा है—

- (a) राहुल सांकृत्यायन ने (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने
(c) डॉ. रामकुमार वर्मा ने (d) जॉर्ज ग्रियर्सन ने

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. हिन्दी साहित्य के आदिकाल को 'सिद्ध-सामंत युग' नाम किसने दिया है?

- (a) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) राहुल सांकृत्यायन (d) मिश्रबन्धु

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. आदिकालीन हिन्दी साहित्य को 'सिद्ध-सामंत काल' कहने वाले विद्वान का नाम है—

- (a) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (b) रामकुमार वर्मा
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) राहुल सांकृत्यायन

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. आदिकाल को 'बीजवपन काल' नाम किसने दिया?

- (a) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(c) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
(d) आचार्य भगीरथ मिश्र

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'आदिकाल' के लिए 'बीजवपन काल' नामकरण किसने किया है?

- (a) राहुल सांकृत्यायन (b) डॉ. नगेन्द्र
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. आदिकाल को 'बीजवपन काल' कहा है-

- (a) ग्रियर्सन (b) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(c) मिश्रबन्धु (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. आदिकाल का 'वीरकाल' नामकरण किसने किया है?

- (a) मिश्रबन्धु (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (d) रामकुमार वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. हिन्दी साहित्य के प्रथम काल को आदिकाल नाम किसने दिया है?

- (a) रामचन्द्र शुक्ल ने (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी ने
(c) राहुल सांकृत्यायन ने (d) वासुदेवशरण अग्रवाल ने

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. निम्नलिखित में कौन-सा नाम 'आदिकाल' का नहीं है?

- (a) वीरगाथा काल (b) गद्य काल
(c) चारण काल (d) सिद्ध-सामंत काल

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. आदिकाल को 'प्रारम्भिक काल' नाम किसने दिया?

- (a) डॉ. ग्रियर्सन (b) मिश्रबन्धु
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) दिया था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है। चूंकि मिश्रबन्धु तथा डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त दोनों ने आदिकाल को प्रारम्भिक काल माना है और विकल्प में केवल मिश्रबन्धु ही है। अतः प्रश्न का उत्तर सही है।

17. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए-

सूची-I (इतिहासकार)	सूची-II (नामकरण)
(A) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	(i) प्रारम्भिक काल
(B) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी	(ii) वीरगाथा काल
(C) राहुल सांकृत्यायन	(iii) सिद्ध-सामंत काल
(D) मिश्रबन्धु	(iv) आदिकाल

कूट :

	A	B	C	D
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(c)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(d)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I (इतिहासकार)	सूची-II (नामकरण)
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	वीरगाथा काल
डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी	आदिकाल
राहुल सांकृत्यायन	सिद्ध-सामंत काल
मिश्रबन्धु	प्रारम्भिक काल

18. इनमें से किस साहित्येतिहासकार ने अपने इतिहास ग्रंथ में हिन्दी के गद्य साहित्य को 'गद्य का आविर्भाव', 'गद्य का प्रावर्तन', 'गद्य का प्रसार' और 'गद्य की वर्तमान गति' नामक खंडों में विभक्त करके विवेचित किया है?

- (a) बच्चन सिंह (b) शिवसिंह सेंगर
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) रामशंकर शुक्ल 'रसाल'

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास ग्रंथ में हिन्दी के गद्य साहित्य को इस प्रकार विभक्त किया है-

- (i) गद्य का आविर्भाव (संवत् 1900-1925)
- (ii) आधुनिक गद्य साहित्य की परम्परा का प्रवर्तन (प्रथम उत्थान) (संवत् 1925-1950)
- (iii) गद्य साहित्य का प्रसार (द्वितीय उत्थान) (संवत् 1950-1975)
- (iv) गद्य साहित्य की वर्तमान गति (तृतीय उत्थान) (संवत् 1975 से)

19. बौद्ध धर्म से जुड़े हुए साहित्य की भाषा है-

- (a) लौकिक संस्कृत
- (b) वैदिक संस्कृत
- (c) प्राकृत
- (d) पालि

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

प्राकृत भाषा के विविध रूप हैं, उनमें पालि (प्राकृत) का सम्बन्ध बौद्ध धर्म के ग्रन्थों से है और अर्द्धमागधी का सम्बन्ध जैन धर्म के ग्रन्थों से। जहाँ-जहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ, वहाँ-वहाँ पालि भाषा पहुँची है और जैन धर्म के साथ अर्द्धमागधी। प्राकृत भाषा को साहित्यिक महत्व, पूर्व की तुलना में पश्चिम से अधिक प्राप्त हुआ है और उसमें भी विशेष रूप से महाराष्ट्री प्राकृत का प्रधान रूप है।

20. निम्नांकित में से अपभ्रंश-प्रभावित हिन्दी रचना कौन-सी है?

- (a) खुमाण रासो
- (b) ढोला मारु रा दूहा
- (c) भरतेश्वर बाहुबली रास
- (d) जयमयंक-जसवन्त्रिका

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

अपभ्रंश में रास नामक पहली सरस कृति 'भरतेश्वर बाहुबली रास' (1184 ई.) है, जिसे विद्वानों ने रास परम्परा का प्रथम ग्रन्थ घोषित किया है, क्योंकि रास काव्य की सभी प्रवृत्तियों के बीज इसमें प्राप्त हो जाते हैं। साथ ही हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से इस ग्रन्थ का बहुत महत्व है। 'खुमाण रासो' के 43 छन्द प्राप्त हुए हैं। इस काव्य के कवि का नाम तो अज्ञात है, परन्तु एक स्थल पर 'दलपति विजय' शब्द देखकर आलोचकों ने अनुमान लगा लिया है कि दलपति विजय ही 'खुमाण रासो' का कवि था। 'ढोला मारु रा दूहा' के कवि कल्लेल हैं। 'ढोला मारु रा दूहा' अपने मूल रूप में उपलब्ध नहीं है। यह लोक काव्य दोहाबद्ध था और मौखिक परम्परा में सुना, गाया जाता था।

21. अपभ्रंश-प्रभावित हिन्दी-रचना कौन-सी है?

- (a) भरतेश्वर बाहुबली रास
- (b) चन्दनबाला रास
- (c) नेमिनाथ रास
- (d) वसन्त-विलास

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. ग्यारहवीं शताब्दी में रचित लोकभाषा-काव्य है?

- (a) जयमयंक-जसवन्त्रिका
- (b) उक्ति-व्यक्ति प्रकरण
- (c) राउलवेल
- (d) ढोला-मारु रा दूहा

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'ढोला-मारु रा दूहा' ग्यारहवीं शताब्दी में रचित एक लोक भाषा काव्य है। 'दूहा घणां पुराणां अछड़' पंक्ति इसकी प्राचीनता की ओर संकेत करती है। मूलतः दोहों में रचित इस लोककाव्य को सत्रहवीं शताब्दी में कुशलराय वाचक के कुछ चौपाइयाँ जोड़कर विस्तार दिया गया।

23. शालिभद्र सूरि की रचना का नाम है—

- (a) नेमिनाथ रास
- (b) भरतेश्वर बाहुबली रास
- (c) सुमितिगण रास
- (d) जयमयंक-जसवन्त्रिका

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

शालिभद्र सूरि की रचना का नाम भरतेश्वर बाहुबली रास है। मुनि जिनविजय ने इस ग्रन्थ को जैन साहित्य की रास परम्परा का प्रथम ग्रन्थ माना है। इसकी रचना 1184 ई. में शालिभद्र सूरि ने की थी। ये अपने समय के प्रसिद्ध जैन आचार्य तथा अच्छे कवि थे। इस ग्रन्थ में भरतेश्वर तथा बाहुबली के चरित का वर्णन है।

24. 'पंच पांडव चरित रास' के रचयिता हैं—

- (a) शालिभद्र सूरि
- (b) आसगु
- (c) नरपति नाह
- (d) दलपति विजय

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

'पंच पांडव चरित रास' के रचयिता शालिभद्र सूरि नामक प्रसिद्ध जैन आचार्य एवं उच्चकोटि के कवि हैं। 'भरतेश्वर बाहुबली रास' नामक ग्रन्थ इनकी एक अन्य प्रसिद्ध रचना है, जिसे रास परम्परा का प्रथम ग्रन्थ माना जाता है।

25. अपभ्रंश शब्द का सबसे पहले उल्लेख किसने किया है?

- (a) पाणिनी
- (b) नागार्जुन
- (c) पतंजलि
- (d) सरहपा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

अपभ्रंश शब्द का सबसे पहले उल्लेख महाभाष्यकार पतंजलि ने किया, जिससे पता चलता है कि संस्कृत या साधु शब्द के लोकप्रचलित विविध रूप अपभ्रंश कहलाते थे।

26. 'अवहट्ट' भाषा से तात्पर्य है-

- (a) ग्रामीण अपभ्रंश (b) परिनिष्ठित अपभ्रंश
(c) ग्रामीण प्राकृत (d) परिनिष्ठित प्राकृत

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(a)

अवहट्ट 'अपभ्रष्ट' शब्द का विकृत रूप है। इसे 'अपभ्रंश का अपभ्रंश' या परवर्ती अपभ्रंश कह सकते हैं। 'अवहट्ट' अपभ्रंश आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के बीच की संक्रमणकालीन/संक्रान्तिकालीन भाषा है। इसका कालखण्ड 900 ई. से 1100 ई. तक निर्धारित किया जाता है। अवहट्ट को अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी (ग्रामीण अपभ्रंश) के बीच की कड़ी माना जाता है। अवहट्ट भाषा के प्रमुख रचनाकार-अहमद/अब्दुल रहमान (संदेश रासय/संदेश रासक), दामोदर पंडित (उक्ति-व्यक्ति प्रकरण), ज्योतिरीश्वर ठाकुर (वर्ण रत्नाकर), विद्यापति (कीर्तिलता) आदि हैं।

27. अवहट्ट में शिक्षा शब्द के लिए कौन-सा रूप मिलता है?

- (a) सिच्छा (b) सिषा
(c) सिक्खा (d) सिख्खा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

अपभ्रंश के परवर्ती रूप को अवहट्ट नाम दिया गया। अवहट्ट में शिक्षा शब्द के लिए 'सिक्खा' रूप मिलता है।

28. अधिकांश साहित्येतिहासकारों के अनुसार, हिन्दी के प्रथम कवि हैं—

- (a) कबीर (b) सूरदास
(c) सरहपाद (d) विद्यापति

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

अधिकांश साहित्येतिहासकारों के अनुसार, हिन्दी के प्रथम कवि का नाम 'सरहपाद' है। राहुल सांकृत्यायन ने सातवीं शताब्दी ईसवी के 'सरहपाद' को हिन्दी का प्रथम कवि माना है। उनका मूल नाम 'राहुलभद्र' था और उनके सरहपा, सरोजवज्र, पद्म तथा पद्मवज्र नाम भी मिलते हैं। वे बौद्धधर्म की वज्रयान और सहजयान के प्रवर्तक तथा 84 सिद्धों में से एक थे। उनकी कविता में अपभ्रंश का साहित्यिक रूप छूट गया है तथा बोलचाल की भाषा जो आरम्भिक हिन्दी है, प्रयुक्त हुई है। सरहपाद की रचनाओं का सम्पादन राहुल सांकृत्यायन ने 'दोहाकोश' नाम से किया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ➔ डॉ. गणपति चन्द्रगुप्त ने 'शालिभद्र सूरि' को हिन्दी का प्रथम कवि माना है।
➔ डॉ. रामकुमार वर्मा 'स्वयंभू' को हिन्दी का प्रथम कवि स्वीकार करते हैं।

29. हिन्दी के किस इतिहासकार के मतानुसार 'शालिभद्र सूरि' हिन्दी के प्रथम कवि हैं?

- (a) डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त (b) डॉ. नगेंद्र
(c) डॉ. रामकुमार वर्मा (d) डॉ. धीरेंद्र वर्मा

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. सिद्धों का प्रथम कवि-

- (a) सरहपा (b) कणहपा
(c) गुंडरीपा (d) शेरपा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'सरहपाद' को हिन्दी का प्रथम कवि माना है-

- (a) रामकुमार वर्मा
(b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(d) पं. राहुल सांकृत्यायन

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. राहुल जी ने हिन्दी भाषा का प्रथम कवि किसे स्वीकार किया है?

- (a) पुष्पदन्त को (b) हेमचन्द्र को
(c) सरहपा को (d) विद्यापति को

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. हिन्दी का प्रथम कवि कौन है?

- (a) सरहपा (b) शबरपा
(c) देवसेन (d) कबीर

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. 'स्वयंभू' को हिन्दी का प्रथम कवि माना है—

- (a) रामकुमार वर्मा ने (b) रामचन्द्र शुक्ल ने
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी ने (d) राहुल सांकृत्यायन ने

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. सहजयान के प्रवर्तक हैं—

- (a) सरहपा (b) शबरपा
(c) लड़पा (d) कणहपा

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'अपभ्रंश' को क्या कहा है?

- (a) पुरानी हिन्दी (b) प्राकृताभास अपभ्रंश
(c) साहित्यिक अपभ्रंश (d) परिनिष्ठित अपभ्रंश

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपभ्रंश और हिन्दी के सम्बन्ध में यह मत व्यक्त किया है— “इस प्रकार दसवीं से चौदहवीं शताब्दी का काल, जिसे हिन्दी का आदिकाल कहते हैं, भाषा की दृष्टि से अपभ्रंश का ही बढ़ाव है। इसी अपभ्रंश के बढ़ाव को कुछ लोग उत्तरकालीन अपभ्रंश कहते हैं और कुल लोग पुरानी हिन्दी। बारहवीं शताब्दी तक निश्चित रूप से अपभ्रंश भाषा ही पुरानी हिन्दी के रूप में चलती थी, यद्यपि उसमें नये तत्सम शब्दों का आगमन शुरू हो गया था।” इस प्रकार वे अपभ्रंश को हिन्दी से अलग रखना चाहते हैं, फिर भी उन्होंने अपभ्रंश के उत्तरकालीन साहित्य को आदिकाल की सामग्री मानकर उसका विवेचन किया है। रामचन्द्र शुक्ल ने 'पुरानी हिन्दी' को ही 'प्राकृताभास हिन्दी' या 'अपभ्रंश' कहा है।

37. दसवीं से चौदहवीं शताब्दी के साहित्य को किस विद्वान ने 'आदिकाल' के अन्तर्गत रखा है?

- (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) मिश्र बन्धु
(c) राहुल सांकृत्यायन (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. 'पुरानी हिन्दी' नामकरण किसने किया?

- (a) चतुरसेन शास्त्री (b) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'
(c) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (d) रामकुमार वर्मा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

पण्डित चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' पहले विद्वान हैं, जिन्होंने स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा की थी कि 'उत्तर अपभ्रंश' ही 'पुरानी हिन्दी' है। उन्होंने 'राजा मुंज' को पुरानी हिन्दी का प्रथम कवि स्वीकार किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने गुलेरी जी के लेख के आधार पर अपने इतिहास में आदिकाल के अन्तर्गत 'उत्तर अपभ्रंश' की रचनाओं को यह मानते हुए भी स्थान दिया कि उनके आधार पर उस काल की कोई विशेष प्रवृत्ति निर्धारित नहीं की जा सकती।

39. पण्डित चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने किसको 'पुरानी हिन्दी' का प्रथम कवि स्वीकार किया है?

- (a) सरहपाद (b) स्वयंभू
(c) राजा मुंज (d) पुष्पदन्त

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. 'अपभ्रंश का वाल्मीकि' किसे कहा जाता है?

- (a) पुष्पदन्त को (b) धनपाल को
(c) शालिभद्र सूरि को (d) स्वयंभू को

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

स्वयंभू देव (आठवीं शताब्दी) निर्विवाद रूप से अपभ्रंश के सर्वश्रेष्ठ कवि माने गये हैं। स्वयंभू देव कृत 'पद्म चरित' पाँच काण्ड और 83 संधियों (सर्गों) वाला विशाल महाकाव्य है। यह अपभ्रंश का आदिकाव्य माना गया है। अतः स्वयंभू को 'अपभ्रंश का प्रथम महाकवि', 'अपभ्रंश का वाल्मीकि' इत्यादि कहा जाता है।

41. निम्न में से किस कवि को 'अपभ्रंश का वाल्मीकि' कहा जाता है?

- (a) सरहपा (b) पुष्पदन्त
(c) स्वयंभू (d) हेमचन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. अपभ्रंश के प्रथम महाकवि कौन थे?

- (a) हेमचन्द्र (b) स्वयंभू
(c) रामचन्द्र (d) दत्त

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. स्वयंभू की कृति का नाम है—

- (a) पद्मपुराण (b) महापुराण
(c) पाहुड़ दोहा (d) पद्म चरित

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. 'पउम चरिउ' किसकी रचना है?

- (a) अब्दुल रहमान (b) विद्यापति
(c) स्वयंभू (d) चन्दबरदाई

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. इनमें से किस ग्रन्थ में लिखा है कि अग्नि परीक्षा के बाद सीता जैन धर्म में दीक्षित हो जाती हैं?

- (a) महापुराण (b) परमात्मा प्रकाश
(c) भविष्यत्कहा (d) पउम चरिउ

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

पउम चरिउ स्वयंभू कृत चरित काव्य है। यह पाँच काण्डों में विभक्त है— विद्याधर काण्ड, अयोध्या काण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड। स्वयंभू ने नारी के प्रति व्यवहार का वर्णन इस काव्य में किया है। नारी के प्रति पुरुष का दृष्टिकोण उस युग में कैसा था, यह काव्य में वर्णित अग्नि परीक्षा वाले प्रसंग में स्पष्ट हो जाता है। लंका विजय के पश्चात सीता को पुष्पक विमान पर चढ़ाकर कोशलनगरी लाया जाता है। सीता के आगमन का एक ओर भव्य वातावरण और दूसरी ओर उस वातावरण में राम का ओछा व्यवहार। अग्नि परीक्षा से पूर्व सीता, राम से कहती हैं कि आज मैं अपनी सतीत्व की पताका फहराऊंगी। आग यदि समर्थ हो तो मुझे जलाए। जब मेरा मन शुद्ध है, तो इस दिव्य शक्ति का क्या होगा। इस ग्रन्थ में वर्णन है कि अग्नि परीक्षा के बाद सीता जैन धर्म में दीक्षित हो जाती हैं।

46. इनमें से कौन-सा ग्रंथ लौकिक चरितकाव्य माना जाता है?

- (a) भविस्यत् कहा (b) योगसार
(c) परमात्मप्रकाश (d) पाहुड़दोहा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

लोकप्रिय व्यक्तियों के चरित पर आधारित काव्यों के अतिरिक्त कई ऐसे चरितकाव्य भी रचे गए, जिनमें कथानायक या तो काव्यनिक होता था अथवा किसी लोककथा से लिया जाता था। इस श्रेणी में धनपाल द्वारा रचित 'भविस्यत् कहा' का नाम उल्लेखनीय है।

47. अपभ्रंश का भवभूति किसे माना जाता है?

- (a) शालिभद्र सूरि (b) पुष्पदन्त
(c) कनकामर (d) धनपाल

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

अपभ्रंश का भवभूति पुष्पदन्त को माना जाता है।

48. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना पुष्पदन्त की नहीं है?

- (a) महापुराण (b) जयकुमार चरिउ
(c) जसहर चरिउ (d) पउम चरिउ

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'पउम चरिउ' पुष्पदन्त की रचना नहीं, बल्कि कवि स्वयंभू की रचना है। इनकी दो अन्य रचनाएँ रिट्ठणेमि चरिउ तथा स्वयंभू छन्द हैं। पुष्पदन्त की तीन रचनाएँ मिलती हैं—महापुराण, जयकुमार चरिउ तथा जसहर चरिउ।

49. कौन-सी रचना स्वयंभू कवि की नहीं है?

- (a) पउम-चरिउ (b) रिट्ठणेमि चरिउ
(c) स्वयंभू छन्द (d) महापुराण

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

50. खड़ी बोली में सबसे पहले काव्य-सृजन करने वाले कवि हैं—

- (a) अमीर खुसरो (b) सूरदास
(c) तुलसीदास (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

खड़ी बोली में सबसे पहले काव्य-सृजन करने वाले कवि अमीर खुसरो हैं। इस भाषा का इस नाम (हिन्दी) से उल्लेख सबसे पहले उन्हीं की रचनाओं में मिलता है। हालांकि वे फारसी के भी अपने समय के सबसे बड़े भारतीय कवि थे। मुकरी लिखने का सर्वप्रथम प्रयास उन्होंने ही किया था। अमीर खुसरो की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं—खालिकबारी, पहेलियाँ, मुकरियाँ, दो सुखने तथा गजल इत्यादि।

51. खड़ी बोली हिन्दी में सर्वप्रथम रचना करने वाले कवि का नाम है—

- (a) जायसी (b) अमीर खुसरो
(c) विद्यापति (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

52. 'मुकरी' लिखने का सर्वप्रथम प्रयास किस कवि ने किया था?

- (a) स्वयंभू (b) जगनिन
(c) अमीर खुसरो (d) कुम्भनदास

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

53. अमीर खुसरो की पहेलियों तथा मुकरियों का क्या उद्देश्य है?

- (a) पृथ्वीराज चौहान की वीरता का वर्णन करना।
- (b) अलाउद्दीन और हमीर के युद्धों का वर्णन।
- (c) मनोरंजन के माध्यम से लोक व्यवहार की शिक्षा।
- (d) कोई उद्देश्य नहीं।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

अमीर खुसरो के बारे में कहा जाता है कि वे बड़े विनोदी और सहृदय व्यक्ति थे। जनजीवन के साथ घुलमिल कर काव्य रचना करने वाले कवियों में खुसरो का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने जनता के मनोरंजन के लिए पहेलियाँ और मुकरियाँ लिखी थी। आदिकाल में खड़ी बोली को काव्य की भाषा बनाने वाले वे पहले कवि हैं। उनके द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या सौ बताई जाती है, जिनमें अब 20-21 ही उपलब्ध हैं।

54. निम्न में से कौन शिलांकित कृति है?

- (a) पाहुडदोहा
- (b) राउलवेल
- (c) प्राकृतपैंगलम
- (d) वर्णरत्नाकर

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

शिलांकित कृति 'राउलवेल' है। यह गद्य-पद्य मिश्रित चम्पूकाव्य की प्राचीनतम हिन्दी कृति है। इसकी रचना 'राउल' नायिका के नख-शिख वर्णन के प्रसंग में हुई। आरम्भ में कवि ने राउल के सौन्दर्य का वर्णन पद्य में किया और फिर गद्य का प्रयोग किया गया है। इस कृति का रचयिता रोडा नामक कवि माना जाता है। 'राउलवेल' से हिन्दी में नख-शिख वर्णन की शृंगार परम्परा आरम्भ होती है। इसकी भाषा में हिन्दी की सात बोलियों के शब्द मिलते हैं, जिनमें राजस्थानी प्रधान है।

55. 'राउल वेल' किस तरह की रचना है?

- (a) गद्य-पद्य मिश्रित चम्पू
- (b) शुद्ध काव्य
- (c) नाटक
- (d) प्रेमाख्यात्मक प्रबंधकाव्य

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

56. निम्नलिखित में से कौन व्याकरण ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित है?

- (a) राउलवेल
- (b) उक्ति-व्यक्ति प्रकरण
- (c) वर्णरत्नाकर
- (d) कुवलयमाला

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

'उक्ति-व्यक्ति प्रकरण' व्याकरण के रूप में प्रतिष्ठित है। महाराज गोविन्द चन्द्र के सभा-पण्डित दामोदर शर्मा ने बारहवीं शताब्दी में इस पुस्तक की रचना की थी। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में "उक्ति-व्यक्ति प्रकरण एक अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है..."। हिन्दी व्याकरण की ओर उस समय ध्यान दिया जाने लगा था, यह भी इस पुस्तक से सिद्ध होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मैथिली हिन्दी में रचित गद्य की पुस्तक 'वर्णरत्नाकर' डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी और पण्डित बबुआ मिश्र के सम्पादन में बंगाल एशियाटिक सोसायटी से प्रकाशित हुई।

57. "उक्ति-व्यक्ति" यह ग्रन्थ है-

- (a) महाकाव्य
- (b) गद्याव्य
- (c) छन्द
- (d) व्याकरण

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

58. निम्न में से कौन-सी रचना व्याकरण ग्रन्थ है?

- (a) कीर्तिपताका
- (b) चर्यपद
- (c) उक्ति-व्यक्ति प्रकरण
- (d) वर्णरत्नाकर

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

59. इनमें से कौन-सी भाषा 'आदिकाल' की है?

- (a) ब्रज भाषा
- (b) खड़ी बोली
- (c) डिंगल-पिंगल
- (d) अवधी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

डॉ. नगेन्द्र ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है कि काव्यरचना की दो अन्य महत्वपूर्ण शैलियों का भी आदिकाल में विकास हुआ था, जिन्हें कुछ विद्वानों ने भाषा के नाम से ही अभिहित कर एक भ्रम पैदा कर दिया है। ये शैलियाँ हैं—डिंगल तथा पिंगल। आदिकालीन हिन्दी साहित्य में वीर रस की रचनाओं में डिंगल शैली का प्रयोग होता था तथा कोमल भावों की अभिव्यंजना पिंगल शैली में की जाती थी। जब कवि डिंगल शैली का प्रयोग करता था, तो वह हिन्दी बोलियों के कर्कश शब्दों को अपनाता था, किन्तु पिंगल शैली के प्रयोग में धीरे-धीरे कोमल शब्दावली का विकास हो रहा था। डिंगल की कर्कश शब्दावली सीमित थी, अतः इस शैली के साहित्य का अधिक विस्तार न हो सका। पिंगल शैली लोकप्रिय होती चली गयी और उसका ब्रज भाषा में विगलन हो गया। जो लोग 'डिंगल' को राजस्थानी भाषा का पर्याय मानते हैं, वे भूल करते हैं। वस्तुतः राजस्थान के आदिकालीन साहित्य की भाषा 'हिन्दी' की ये दोनों ही शैलियाँ चारणों, भाटों द्वारा प्रयुक्त होती थीं तथा भक्तिकाल और रीतिकाल में भी उनके प्रयोग की वह क्षीण परम्परा चलती रही। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि आदिकाल की भाषा ब्रज भाषा है। खड़ी बोली आधुनिक काल की तथा अवधी मध्यकाल की भाषा है।

60. 'रासो' ग्रन्थ किस भाषा में लिखे गए थे?

- (a) खड़ी बोली (b) ब्रज भाषा
(c) अवधी (d) डिंगल-पिंगल

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'रासो' ग्रन्थ डिंगल-पिंगल शैलियों में लिखे गए थे।

61. 'चारण-साहित्य' किस साहित्य का दूसरा नाम है?

- (a) सिद्ध साहित्य का (b) नाथ साहित्य का
(c) जैन साहित्य का (d) रासो साहित्य का

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

डॉ. ग्रियर्सन एवं रामकुमार वर्मा ने हिन्दी साहित्य के प्रथम काल को चारण काल नाम दिया। इस काल में राजाश्रित कवि अपने आश्रयदाता राजाओं के पराक्रमपूर्ण चरित्रों या गाथाओं का वर्णन करते थे। यही प्रबन्ध परम्परा रासो के नाम से जानी जाती है, जिसे लक्ष्य करके इस काल को वीरगाथा काल भी कहा गया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस काल की बारह रचनाओं का उल्लेख किया है, जो रासो साहित्य के नाम से भी जानी जाती हैं। इनमें प्रमुख हैं- विजयपाल रासो (नल्ल सिंह कृत), हमीर रासो (शारंगधर कृत), खुमाण रासो (दलपति विजय कृत), बीसलदेव रासो (नरपति नाह्ण कृत), पृथ्वीराज रासो (चन्दबरदाई कृत), परमाल रासो (जगनिक कृत)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सिद्ध साहित्य के इतिहास में चौरासी सिद्धों का उल्लेख मिलता है। सरहपा, शबरपा, लुइपा, विरूपा, डोम्भिया, कणहपा, कुक्कुरिपा आदि सिद्ध कवि हैं।
- नाथपन्थी योगी अलख जगाते हैं। नाथपन्थी जिन ग्रन्थों को प्रमाण मानते हैं, उनमें सबसे प्राचीन हठयोग सम्बन्धी ग्रन्थ 'घेरण्ड संहिता' और 'शिव संहिता' है।
- गोरखनाथ द्वारा रचित प्रमुख कृतियाँ हठयोग, गोरक्षनाथ ज्ञानामृत, गोरक्षकल्प आदि हैं।
- जैन साहित्य प्राकृत एवं संस्कृत भाषा में मिलते हैं। जैन साहित्य के लेखक अगरचन्द्र नाहटा थे। जैन साहित्य जिसे 'आगम' कहा जाता है, इनकी संख्या 12 बतायी जाती है।

62. निम्नलिखित में से कौन चौरासी सिद्धों में नहीं है?

- (a) विरूपा (b) कणहपा
(c) शारंगधर (d) कुक्कुरिपा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

63. आदिकाल में किस प्रकार का साहित्य लिखा जा रहा था?

- (a) जन-जीवन से हटकर राजाओं की वीरता का अतिरंजित वर्णन
(b) कृष्ण-भक्ति पर आधारित काव्य
(c) निर्गुण की उपासना
(d) उपर्युक्त किसी प्रकार का नहीं

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

64. वीरगाथाकालीन 'रासो' काव्यों में निम्नलिखित में से किस विषय का वर्णन नहीं है?

- (a) आश्रयदाताओं का अतिरंजनापूर्ण वर्णन
(b) इतिहास और कल्पना का सम्मिश्रण
(c) कृष्ण-लीला का प्रतिपादन
(d) युद्धों का सजीव एवं गत्यात्मक वर्णन

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

वीरगाथाकालीन 'रासो' काव्यों में कृष्ण लीला का प्रतिपादन नहीं किया जाता था। इन काव्यों में आश्रयदाताओं का अतिरंजनापूर्ण वर्णन, इतिहास और कल्पना का सम्मिश्रण तथा युद्धों का सजीव एवं गत्यात्मक वर्णन पाया जाता है।

65. हिन्दी साहित्य के 700 से 1400 ई. के काल खण्ड को ग्रियर्सन ने क्या नाम दिया है?

- (a) संधिकाल (b) प्रारम्भिक काल
(c) चारण काल (d) अपभ्रंश काल

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

हिन्दी साहित्य के 700 से 1400 ई. के काल खण्ड को सर जॉर्ज ग्रियर्सन ने चारण काल नाम दिया है। वे इसका प्रारम्भ 640 ई. के आस-पास स्वीकार करते हैं।

नोट—अधिकतर विद्वानों की कृतियों में ग्रियर्सन द्वारा काल विभाजन 700 ई. से 1300 ई. उद्धृत मिला है, जिसे उन्होंने चारण काल कहा है। उ.प्र. लोक सेवा आयोग द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में 700 ई. से 1400 ई. कहा गया है।

66. बीसलदेव रासो में किस शैली का प्रयोग किया गया है?

- (a) शृंगारिक (b) आख्यान
(c) गेय (d) प्रबन्ध

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

‘बीसलदेव रासो’ मूलतः गेय काव्य था, अतः इसके रूप में परिवर्तन होता रहा है। यह प्रेम एवं शृंगार से परिपूर्ण काव्य है, जिसमें भोज परमार की पुत्री राजमती और अजमेर के चौहान राजा बीसलदेव तृतीय के विवाह, वियोग एवं पुनर्मिलन की कथा सरस शैली में प्रस्तुत की गई है। इस ग्रन्थ की रचना नरपति नाह ने 1155 ई. में की थी। ‘बीसलदेव रासो’ आदिकाल की एक श्रेष्ठ काव्य कृति है। ‘बीसलदेव रासो’ की शृंगार-परम्परा का आदिकाल में ही अन्त नहीं हो जाता है। विद्यापति से होती हुई यह परम्परा भक्तिकाल में प्रेमाख्यानक काव्यों तक पहुँची, कृष्ण भक्तों को भी प्रभावित किया और रीतिकाल में जाकर इसका सरस शृंगार काव्य के रूप में चरम विकास हुआ। बीसलदेव रासो में हिन्दी काव्य में प्रयुक्त होने वाला बारहमासा वर्णन सबसे पहले मिलता है।

67. ‘बीसलदेव रासो’ के रचयिता हैं—

- (a) चन्दबरदाई (b) जगनिक
(c) नरपति नाह (d) स्वयंभू

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

68. बीसलदेव रासो के रचयिता कौन हैं?

- (a) जगनिक (b) नरपति नाह
(c) भट्ट केदार (d) चन्दबरदाई

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

69. निम्नलिखित रासो-ग्रन्थों में कौन-सा काव्य एक प्रेम काव्य या शृंगार काव्य है?

- (a) बीसलदेव रासो (b) परमाल रासो
(c) पृथ्वीराज रासो (d) जयमयंक-जसचन्द्रिका

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

70. निम्नलिखित में से किस रासो काव्य का मूल वर्ण्य विषय वीर रस न होकर शृंगार रस है?

- (a) खुमाण रासो (b) पृथ्वीराज रासो
(c) बीसलदेव रासो (d) परमाल रासो

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

71. राजमती से रूठकर बीसलदेव कहाँ गया था?

- (a) कर्नाटक (b) उड़ीसा
(c) तमिलनाडु (d) आंध्र

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

‘बीसलदेव रासो’ में राजा भोज परमार की पुत्री राजमती और अजमेर के चौहान राजा बीसलदेव तृतीय के विवाह, वियोग और पुनर्मिलन की कथा सरस शैली में प्रस्तुत की गई है। इसमें वर्णित है कि राजमती की बातों से रुष्ट होकर स्वाभिमानी राजा (बीसलदेव) उड़ीसा (अब ओडिशा) चला गया था। बारह वर्ष तक राजमती उसके विरह से दुःखी रहती है। वह राजभवन की दीवारों को केसती हुई वन में रहने की कामना करती है। सामंती जीवन के प्रति गहरी अरुचि का सजीव चित्र इस काव्य में मिलता है।

72. किस रासो ग्रन्थ को ‘आल्हा खण्ड’ के नाम से जाना जाता है?

- (a) चन्दबरदाई का पृथ्वीराज रासो
(b) नरपति नाह का बीसलदेव रासो
(c) जगनिक का परमाल रासो
(d) दलपति विजय का खुमाण रासो

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

जगनिक के ‘परमाल रासो’ ग्रन्थ को ‘आल्हा खण्ड’ के नाम से जाना जाता है। इसमें महोबा (उ.प्र.) के वीर आल्हा और ऊदल की वीरता की गाथा, उत्तर प्रदेश के अवध और मध्य प्रदेश के बुन्देलखण्ड की सर्वाधिक लोकप्रिय वीर गाथा है। 1865 ई. में चार्ल्स इलियट ने जिस ‘आल्हा खण्ड’ का प्रकाशन कराया था, वह मौखिक परम्परा पर ही आधारित है। इसी प्रति के आधार पर डॉ. श्यामसुन्दर दास ने ‘परमाल रासो’ का पाठ निर्धारण किया और उसे नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित कराया।

73. उत्तर प्रदेश में ‘आल्हा खण्ड’ के नाम से कौन-सा काव्य प्रचलित है?

- (a) हम्मीर रासो
(b) परमाल रासो
(c) पृथ्वीराज रासो
(d) खुमाण रासो

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

74. 'आल्हा और 'ऊदल' के चरित्र को वीरगीतात्मक काव्य के रूप में रचने वाले कवि हैं—

- (a) भट्ट केदार (b) श्रीधर
(c) जगनिक (d) चन्दबरदाई

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

75. 'आल्हा खण्ड' नामक काव्य-ग्रन्थ का दूसरा नाम है—

- (a) खुमाण रासो (b) विजयपाल रासो
(c) हम्मीर रासो (d) परमाल रासो

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

76. 'आल्हा खण्ड' का दूसरा नाम है—

- (a) परमाल रासो (b) बीसलदेव रासो
(c) खुमाण रासो (d) हम्मीर रासो

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

77. 'परमाल रासो' काव्य कृति के कवि का नाम है—

- (a) नल्हसिंह भट्ट (b) जगनिक
(c) हेमचन्द्र (d) शारंगधर

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

78. आल्हा और ऊदल नामक दो वीर सरदारों की वीरतापूर्ण लड़ाइयों का वर्णन मिलता है—

- (a) परमाल रासो में (b) पृथ्वीराज रासो में
(c) खुमाण रासो में (d) हम्मीर रासो में

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

79. कवि जगनिक की रचना का नाम है—

- (a) खुमाण रासो (b) मुगावती
(c) आल्हा खण्ड (d) पद्मावती

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

80. 'परमाल रासो' के लेखक हैं—

- (a) चन्दबरदाई (b) जगनिक
(c) नरपति नाल्ह (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

81. "बारह बरिस लै कूकर जीऐं, ओ तेरह लै जिऐं सियार।
बरिस अठारह छत्री जीऐं, आगे जीवन को धिक्कार॥"
किस विधा की रचना है?

- (a) सोहर (b) कजली
(c) बिरहा (d) आल्हा

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त पंक्ति जगनिक रचित 'परमाल रासो' से ली गई है। इसमें आल्हा और ऊदल नामक दो वीर सरदारों की वीरतापूर्ण लड़ाइयों का वर्णन है। इसमें वीर-भावना का जितना प्रौढ़ रूप मिलता है, उतना अन्यत्र दुर्लभ है। युद्धों के अत्यन्त प्रभावशाली वर्णनों की इस काव्य में भरमार है। इसकी रचना लोकगथा के रूप में न होकर शुद्ध काव्य के रूप में हुई है। यह आल्हा विधा है।

82. 'वीरगाथा काल' के प्रसिद्ध प्रबन्ध काव्य का क्या नाम है?

- (a) पद्मावत (b) पृथ्वीराज रासो
(c) कामायनी (d) रामचरितमानस

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'वीरगाथा काल' का प्रसिद्ध प्रबन्ध काव्य 'पृथ्वीराज रासो' है, जिसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी का प्रथम महाकाव्य तथा इसके रचयिता चन्दबरदाई को हिन्दी का प्रथम कवि माना है। 'पृथ्वीराज रासो' के चार संस्करण प्रसिद्ध हैं। सबसे बड़े संस्करण का प्रकाशन नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से हुआ है। इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ उदयपुर के संग्रहालय में सुरक्षित हैं। सभा ने 1585 ई. में लिखित प्रति के आधार पर 'रासो' का सम्पादन कराया था। इस संस्करण में 69 समय (खण्ड) तथा 16306 छन्द हैं। द्वितीय रूप में उपलब्ध 'पृथ्वीराज रासो' 7000 छन्दों का काव्य माना जाता है। इसका प्रकाशन नहीं हुआ, किन्तु अबोहर एवं बीकानेर में इसकी प्रतियाँ सुरक्षित हैं, जो सत्रहवीं शताब्दी ईसवी में लिखी गयी हैं। तीसरा लघु संस्करण 3500 छन्दों का है, जिसमें 19 समय (खण्ड) हैं। इस संस्करण की हस्तलिखित प्रतियाँ भी बीकानेर में सुरक्षित हैं। चौथा संस्करण सबसे छोटा है, जिसमें केवल 1300 छन्द हैं। इसी को डॉ. दशरथ शर्मा सहित कुछ विद्वान मूल रासो मानते हैं। चन्दबरदाई, महाराज पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि थे। इनकी भाषा को भाषा-शास्त्रियों ने पिंगल कहा है। इसमें महाराज पृथ्वीराज व उनकी प्रेमिका संयोगिता के परिणय तथा युद्ध का वर्णन है। चन्दबरदाई, पृथ्वीराज के राजकवि ही नहीं, उनके सखा और सामंत भी थे तथा षड्भाषा, व्याकरण, काव्य, साहित्य, छन्दशास्त्र, ज्योतिष, पुराण, नाटक आदि अनेक विधाओं में पारंगत थे।

83. 'पृथ्वीराज रासो' महाकाव्य के रचयिता हैं-

- (a) हेमचन्द्र (b) चन्दबरदाई
(c) परमाल (d) अमीर खुसरो

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

84. 'पृथ्वीराज रासो' के रचयिता कौन हैं?

- (a) चन्दबरदाई (b) जगनिक
(c) मधुकर (d) नरपति नाल्ह

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

85. 'पृथ्वीराज रासो' के रचयिता का नाम बताइये?

- (a) चन्दबरदाई (b) अमीर खुसरो
(c) जगनिक (d) नरपति नाल्ह

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

86. चन्दबरदाई किसके दरबारी कवि थे?

- (a) महाराज हमीर के (b) महाराज बीसलदेव के
(c) महाराणा प्रताप के (d) महाराज पृथ्वीराज चौहान के

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

87. 'पृथ्वीराज रासो' किस कवि की रचना है?

- (a) चन्दबरदाई (b) जगनिक
(c) मुल्ला दाऊद (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

88. हिन्दी का प्रथम महाकाव्य किस रचना को माना जाता है?

- (a) कामायनी (b) साकेत
(c) रामचरितमानस (d) पृथ्वीराज रासो

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

89. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए-

सूची-I

सूची-II

- (A) बीसलदेव रासो (i) जगनिक
(B) पृथ्वीराज रासो (ii) नरपति नाल्ह
(C) परमाल रासो (iii) दलपति विजय
(D) खुमाण रासो (iv) चन्दबरदाई

कूट :

- | | | | | |
|-----|-------|-------|-------|-------|
| | A | B | C | D |
| (a) | (iii) | (i) | (iv) | (ii) |
| (b) | (ii) | (iv) | (i) | (iii) |
| (c) | (i) | (ii) | (iii) | (iv) |
| (d) | (iv) | (iii) | (ii) | (i) |

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है-

सूची-I

सूची-II

- | | |
|----------------|-------------|
| बीसलदेव रासो | नरपति नाल्ह |
| पृथ्वीराज रासो | चन्दबरदाई |
| परमाल रासो | जगनिक |
| खुमाण रासो | दलपति विजय |

90. 'खुमाण रासो' के रचयिता कौन हैं?

- (a) दलपति विजय (b) जगनिक
(c) चन्दबरदाई (d) विद्यापति

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

91. आदिकालीन हिन्दी काव्यधारा में उपलब्ध नहीं है-

- (a) जैन साहित्य (b) सिद्ध साहित्य
(c) सिक्ख साहित्य (d) नाथ साहित्य

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

हिन्दी साहित्य के आदिकाल (सं. 1050 से सं.1375 तक) को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने वीरगाथा काल का नाम दिया है। इसका चारण-काल, सिद्ध-सामंत काल और अन्य नामों से भी उल्लेख किया जाता है। इस समय का साहित्य मुख्यतः इन रूपों में मिलता है— सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, चारणी साहित्य, प्रकीर्णक साहित्य। सिक्ख साहित्य का उल्लेख इस काल में नहीं मिलता।

92. संवत् 1050-1375 की कालावधि में लिखे गए हिन्दी साहित्य का 'वीरगाथा काल' के रूप में नामकरण किसने किया था?
- (a) डॉ. रामकुमार वर्मा (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) डॉ. नगेन्द्र

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

93. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, हिन्दी साहित्य के आदिकाल की समय सीमा है—
- (a) वि.सं. 1050 से वि.सं. 1375 तक
(b) सन् 1050 से सन् 1375 तक
(c) वि.सं. 1375 से वि.सं. 1700 तक
(d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

94. निम्नलिखित में से कौन वीरगाथा काल की रचना नहीं है?
- (a) संदेश रासक (b) जयमयंक-जसचन्द्रिका
(c) आल्हा खण्ड (d) भक्तमाल

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

नाभादास भक्तिकाल के कवि थे। इनकी रचना भक्तमाल है। प्रियादास की 'भक्तमाल' की टीका 1712 ई. में लिखी गई थी। इसमें 200 भक्तों का चरित 316 छप्पयों में वर्णित हैं। भक्तमाल में तुलसीदास जी को 'भक्तमाल का सुमेरु' कहा गया है। 'संदेश रासक' अब्दुल रहमान की रचना है। 'जयमयंक-जसचन्द्रिका' मधुकर भट्ट की रचना है।

95. इनमें से कौन-सा कवि आदिकाल का नहीं है?

- (a) चन्दबरदाई (b) जगनिक
(c) नाभादास (d) दलपति विजय

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

नाभादास भक्तिकाल (सगुण भक्ति काव्यधारा) के कवि थे। ये अग्रदास जी के शिष्य थे। इन्होंने अष्टयाम की रचना शृंगार भक्ति अथवा रासिक भावना को लेकर की है। ये तुलसीदास के समकालीन थे। विकल्प में दिये गये अन्य कवि आदिकाल के हैं।

96. इनमें से कौन-सी रचना आदिकाल की है?

- (a) सूरसागर (b) विद्यापति पदावली
(c) बीजक (d) भ्रमरगीत

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

'पदावली' आदिकाल की रचना है, जो विद्यापति द्वारा रचित कृष्णभक्ति शृंगार से परिपूर्ण है। इसमें राधाकृष्ण की प्रेम लीलाओं का वर्णन किया गया है। सूरसागर, बीजक तथा भ्रमरगीत भक्तिकाल की रचना है।

97. आदिकालीन साहित्य का प्रमुख रस है—

- (a) शान्त (b) हास्य
(c) करुण (d) वीर

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

आदिकालीन साहित्य का प्रमुख रस 'वीर रस' है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आदिकाल का नाम वीरगाथा काल रखा है। इस नामकरण का आधार स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं..... "आदिकाल की इस दीर्घ परम्परा के बीच प्रथम डेढ़ सौ वर्ष के भीतर तो रचना की किसी विशेष प्रवृत्ति का निश्चय नहीं होता-धर्म, नीति, शृंगार, वीर सब प्रकार की रचनाएँ दोहों में मिलती हैं।"
- राजाश्रित कवि अपने आश्रयदाता राजाओं के पराक्रमपूर्ण गाथाओं का वर्णन करते थे। इस काल की प्रधान प्रवृत्ति वीरता की थी अर्थात् इस काल में वीरगाथात्मक ग्रन्थों की प्रधानता रही है।

98. विद्यापति ने कुल कितने ग्रन्थों की रचना की है?

- (a) 10 (b) 12
(c) 16 (d) 14

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

विद्यापति की अधिकांश रचनाएँ संस्कृत एवं अवहट्ट में हैं। कीर्तिलता और कीर्तिपताका इनकी अवहट्ट रचनाएँ हैं। इनकी तीसरी रचना 'पदावली' है। जिसकी भाषा, ब्रज भाषा मिश्रित मैथिली है। इनमें कीर्तिपताका अभी तक सम्पादित होकर प्रकाशित नहीं हुई है। कीर्तिलता ऐतिहासिक महत्व का छोटा-सा प्रबन्ध काव्य है। इसकी भाषा अवहट्ट है। विद्यापति ने इसे 'कहाणी' कहा है। पदावली, विद्यापति के यश का आधार है। इनकी अन्य रचनाएँ हैं—भू-परिक्रमा, पुरुष परीक्षा, लिखनावली, शैव-सर्वस्व-सार, गंगा वाक्यावलि, दान वाक्यावलि, दुर्गाभक्ति तरंगिणी, विभाग-सार, वर्ष कृत्य और गय-पतना। गोरक्ष-विजय इनका प्रसिद्ध नाटक है। इस प्रकार इनके कुल ग्रन्थों की संख्या 14 है।

99. विद्यापति के पद किस भाषा में रचित हैं?

- (a) पहाड़ी (b) मैथिली
(c) अवधी (d) पिंगल

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

100. विद्यापति की कौन-सी रचना अभी तक सम्पादित होकर प्रकाशित नहीं हुई है?

- (a) कीर्तिलता (b) कीर्तिपताका
(c) पदावली (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

101. विद्यापति इनमें से किस रचना के आधार पर 'मैथिल कोकिल' कहलाए?

- (a) पदावली (b) कीर्तिपताका
(c) कीर्तिलता (d) उपर्युक्त सभी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है कि विद्यापति जिसकी रचना के कारण ये 'मैथिल कोकिल' कहलाए, वह इनकी पदावली है। इन्होंने अपने समय की प्रचलित मैथिली भाषा का व्यवहार किया है। विद्यापति के पद अधिकतर शृंगार के ही हैं, जिनमें नायिका और नायक राधा-कृष्ण हैं।

102. 'देसिल बअना सबजन मिट्ठा' यह प्रसिद्ध उक्ति किसने कही?

- (a) विद्यापति (b) अमीर खुसरो
(c) अब्दुर्रहमान (d) कवि गंग

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

प्रस्तुत उक्ति विद्यापति की है जिसका अर्थ है— "अपना देश या अपनी भाषा सबको मीठी लगती है। यही जानकर मैंने इसकी रचना की है।" 'कवि कोकिल विद्यापति' का पूरा नाम विद्यापति ठाकुर था।

103. इनमें से कौन-सा कवि 'अभिनव जयदेव' की उपाधि से विभूषित है?

- (a) विद्यापति (b) सूरदास
(c) नन्ददास (d) कुम्भनदास

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

विद्यापति ने ओइनवार राजवंश के विभिन्न आश्रयदाताओं के संरक्षण में गीत रचे। इनके गीतों के भाव वैशिष्ट्य एवं माधुर्य गुण से प्रभावित होकर ओइनवार कुलशिरमणि महाराजा शिवसिंह ने विद्यापति को 'अभिनव जयदेव' की उपाधि से विभूषित किया।

104. किस कवि को 'अभिनव जयदेव' नाम से जाना जाता है?

- (a) विद्यापति (b) भवभूति
(c) नरसी मेहता (d) रविदास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

105. निम्नलिखित में से कौन-सा नाम, नाथ-पंथी साधकों में शामिल नहीं है?

- (a) जलन्ध्रीपाव (b) भरथरी
(c) कणहपा (d) चुणकरनाथ

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

कणहपा, शबरपा (सरहपा), लुइपा, डोम्बिपा, कुक्कुरिपा आदि सिद्ध साहित्य के कवि हैं। नाथ-साहित्य के विकास में जिन कवियों ने योगदान दिया उनमें चौरंगीनाथ, गोपीचन्द, चुणकरनाथ, भरथरी, जलन्ध्रीपाव आदि प्रसिद्ध हैं।

106. निम्नलिखित में से किसका संबंध सिद्ध साहित्य में नहीं है?

- (a) सरहपा (b) कुक्कुरिया
(c) शबरपा (d) गोपीचंद

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

107. 'सरहपा' का सम्बन्ध निम्न में से किससे है?

- (a) सिद्ध साहित्य (b) रासो काव्य
(c) नाथ साहित्य (d) जैन साहित्य

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

108. नाथपन्थ के प्रणेता कौन थे?

- (a) आदिनाथ (b) मछन्दरनाथ
(c) गोरखनाथ (d) चुणकरनाथ

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

नाथपन्थ के प्रणेता आदिनाथ थे। यौगिक क्रियाओं के उद्धार के लिए नाथ सम्प्रदाय का उदय हुआ। नाथ सम्प्रदाय के संस्थापक आदिनाथ को भगवान शंकर का अवतार माना जाता है। इस सम्प्रदाय में नौनाथ गोरक्षनाथ, ज्वालेन्द्रनाथ, कारिणनाथ, गहिनीनाथ, चर्पटनाथ, रेवणनाथ, नागनाथ, भार्तुनाथ और गोपीचन्द्रनाथ को मुख्य माना जाता है।

109. गोरखनाथ के गुरु का नाम बतायें?

- (a) मत्स्येन्द्रनाथ (b) गोपीचन्द्र
(c) चौरंगीनाथ (d) चुणकरनाथ

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

नाथपन्थ को चलाने का श्रेय मत्स्येन्द्रनाथ तथा गोरखनाथ को है। गोरखनाथ, नाथ-साहित्य के प्रारम्भकर्ता थे। गोरखनाथ के गुरु मत्स्येन्द्रनाथ थे।

110. नाथ सम्प्रदाय में 'हठयोग' का क्या अर्थ है?

- (a) कठिन साधना
(b) अडिग योग साधना
(c) हठपूर्वक योग
(d) 'ह' का अर्थ सूर्य और 'ठ' का अर्थ चन्द्र, दोनों का योग

U.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

गोरखनाथ ने हठयोग का उपदेश दिया था। हठयोगियों के 'सिद्ध-सामंत-पद्धति' ग्रंथ के अनुसार, 'ह' का अर्थ है सूर्य और 'ठ' का अर्थ है चन्द्र। इन दोनों के योग को ही 'हठयोग' कहते हैं। गोरखनाथ ने ही षट्चक्रों वाला योगमार्ग हिन्दी साहित्य में चलाया था।

111. सिद्धों की साधना में 'शून्य' का पूरक तत्व था-

- (a) वज्र (b) अग्नि
(c) चित्र (d) ज्ञान

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

तांत्रिक सिद्धों का मूलधार लोकायतिक एवं भौतिकवादी था, किन्तु सामंतीय व्यवस्था की सत्ताधारी विचारधारा ने उनको भी अपनी कालगति में लपेट लिया और वे भी पंचमहाभूतों को समस्त भव (संसार) का बीज मानने एवं काया से मन की उत्पत्ति मानने के बजाय चित्त को ही भव तथा निर्वाण का बीज मानकर 'चिन्तकारणवादी' बन बैठे। इंद्रियों तथा उनके विषयों को तो उन्होंने पंचभूतों पर आश्रित रखा, लेकिन छठों इंद्रिय अर्थात् मन के केन्द्र से वे उलट कर अर्द्ध-अध्यात्मवादी और दिग्भ्रमित लोकायतवादी हो गये। इस प्रतिस्थापन का सूक्ष्म केन्द्र मन हुआ। मन आदि रूप में निर्मल तथा सहज स्वभाव वाला हुआ। यह संकल्पनिवेषित चित्त है। यही प्रज्ञा एवं उपाय के समागम से समन्वित होकर 'बोधचित्त' है, जिसमें शून्यता एवं करुणा की अद्वैतता है। इसी चित्त को प्राण द्वारा कमल में आसीन किया जाता है। तब यह वज्ररूप होता है। राग ही वज्र है, उपाय है और मुद्रा के आगे महामुद्रा-साधना का पूरक है। अतः करुणाभूषित राग ही महामुद्रा से समागम करने पर 'महाराग' होता है, जो मोक्ष का हेतु है। यह करुणाभूषित राग अर्थात् महाराग शून्यता से समागम करने की प्रवृत्ति के कारण वज्रराग है। अतः स्पष्ट है कि सिद्धों की साधना में 'शून्य' का पूरक तत्व वज्र है।

112. सिद्ध कवियों द्वारा प्रयुक्त भाषा को कहा जाता है-

- (a) डिंगल (b) अपभ्रंश
(c) अवहट्ट (d) संधा

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

सिद्ध कवियों के द्वारा प्रयुक्त भाषा को संधा या साध्या कहा जाता है। इन्होंने संधा भाषा-शैली में रचनाएँ की हैं। संधा भाषा वस्तुतः अंतःसाधनात्मक अनुभूतियों का संकेत करने वाली प्रतीक भाषा है। इस भाषा-शैली का उपयोग नाथों ने भी किया।

113. निम्नलिखित में से सिद्ध-साहित्य के विषय में कौन-सा कथन सत्य नहीं है?

- (a) सिद्ध साहित्य का झुकाव सहज साधना की ओर है
(b) सिद्ध साहित्य के प्रथम कवि सरहपा हैं
(c) सिद्ध साहित्य की रचना चर्यापदों तथा दोहों में हुई है
(d) सिद्ध साहित्य का प्रणयन पिंगल भाषा में हुआ है

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

डॉ. तोसीतरी अपनी पुस्तक 'पुरानी राजस्थानी' में गुजरात और राजस्थान के पश्चिमी भाग की भाषा को पुरानी पश्चिमी राजस्थानी एवं शूरसेन तथा राजस्थान के पूर्व भाग की भाषा को पिंगल अपभ्रंश नाम देते हैं। सिद्ध साहित्य का प्रणयन पिंगल भाषा में नहीं हुआ। अतः विकल्प (d) असत्य है।

भक्तिकाल

1. समग्र भक्तिकालीन काव्य पर कौन-सी विशेषता लागू होती है?

- (a) अवतार में विश्वास (b) जाति-प्रथा का निषेध
(c) अहंकार का त्याग (d) ईश्वरीय लाला गायन

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

भक्तिकालीन कवियों ने ब्रह्म प्राप्ति में अहंकार को बाधक माना। इसलिए उन्होंने सर्वप्रथम अहंकार के त्याग पर बल दिया। अतः समग्र भक्तिकालीन काव्य पर 'अहंकार का त्याग' की विशेषता लागू होती है।

2. भक्तिकाल की समय सीमा क्या है?

- (a) संवत् 1275 से संवत् 1700 तक
(b) संवत् 1275 से संवत् 1800 तक
(c) संवत् 1375 से संवत् 1850 तक
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल का समय वि.संवत् 1375 से वि.संवत् 1700 तक माना जाता है। भक्तिकाल को ज्ञानाश्रयी शाखा, प्रेमाश्रयी शाखा, कृष्णाश्रयी शाखा तथा रामाश्रयी शाखा में विभक्त किया जाता है। ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि थे—कबीरदास, रैदास और मलूकदास। प्रेमाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि थे—मलिक मुहम्मद जायसी। कृष्णाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि थे—सूरदास, नन्ददास, कृष्णदास, परमानन्ददास, कुम्भनदास, गोविन्दस्वामी, मीराबाई, नरोत्तमदास, रहीम और रसखान। रामाश्रयी शाखा में प्रमुख सन्त तुलसीदास थे।

3. संवत् 1375-1700 तक के साहित्य में कौन-सी भावधारा परिलक्षित होती है?

- (a) शृंगारिकता (b) वीरता
(c) रीति (d) भक्ति

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. भक्ति के स्रोत को दक्षिण से उत्तर भारत में प्रसारित होने के सिद्धान्त का समर्थन करने वाले विद्वान हैं—

- (a) ग्रियर्सन (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) जयशंकर प्रसाद

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, "भक्ति का जो स्रोत दक्षिण की ओर से धीरे-धीरे उत्तर भारत की ओर पहले से ही आ रहा था, उसे राजनीतिक परिवर्तन के कारण शून्य पड़ते हुए जनता के हृदय क्षेत्र में फैलने के लिए पूरा स्थान मिला।" शुक्ल जी की स्थापना का खंडन करते हुए द्विवेदी जी का ये कथन सही है कि-नैतिक सांस्कृतिक जिजीविषा और आध्यात्मिक सम्पन्नता का उद्घोष करने वाला भक्ति साहित्य 'हतपद पराजित जाति' की सम्पत्ति नहीं है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ग्रियर्सन, वेबर, कीथ, विल्सन इत्यादि विदेशी विद्वानों के मत हैं कि भक्ति के उद्गम में ईसाइयों का प्रभाव है। आज इस मत को प्रायः अमान्य सिद्ध किया जा चुका है।
- बालगंगाधर तिलक, कृष्णास्वामी अयंगर, डॉ.एच.रायचौधरी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि विद्वानों ने तथ्यात्मक साक्ष्यों और प्रबल तर्कों के सहारे ऐसी भ्रांत धारणाओं का खण्डन करते हुए भक्ति का उद्गम प्राचीन भारतीय स्रोतों में सिद्ध किया है।
- कुछ लोगों ने तात्कालिक रूप से परिस्थितिगत प्रेरणा के रूप में मुस्लिम आक्रमण और राज्य स्थापना से भक्ति आन्दोलन को जोड़ा है, जिसमें रामचन्द्र शुक्ल प्रमुख हैं।

5. 'हिन्दी का भक्ति काल बाहरी आक्रमण की प्रतिक्रिया है'-यह कथन निम्नलिखित में से किस विद्वान का है?

- (a) ग्रियर्सन (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'ग्रियर्सन, रामचन्द्र शुक्ल और हजारी प्रसाद द्विवेदी भक्ति के उदय की व्याख्या तीन भिन्न-भिन्न रूपों में करते हैं। ग्रियर्सन के लिए वह एक बाह्य प्रभाव है, रामचन्द्र शुक्ल के लिए, वह बाहरी आक्रमण की प्रतिक्रिया है और हजारी प्रसाद द्विवेदी उसे महज भारतीय परम्परा का अपना स्वतः स्फूर्त विकास मानते हैं। ये क्रमशः विदेशी, देशी और लोक पक्ष को महत्व देने की अलग-अलग परिणतियाँ हैं।

6. रामानुजाचार्य ने किस दर्शन का प्रतिपादन किया?

- (a) अद्वैतवाद (b) शुद्धद्वैतवाद
(c) विशिष्टद्वैतवाद (d) द्वैतवाद

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

‘विशिष्टाद्वैतवाद’ सम्प्रदाय के प्रवर्तक रामानुजाचार्य हैं। इनका मत है कि ईश्वर (ब्रह्म) स्वतन्त्र तत्त्व है, परन्तु जीव भी सत्य है, मिथ्या नहीं। ये जीव ईश्वर के साथ सम्बद्ध हैं। उनका यह सम्बन्ध भी अज्ञान के कारण नहीं है, वह वास्तविक है। मोक्ष होने पर ही जीव की स्वतन्त्र सत्ता रहती है। भौतिक जगत और जीव अलग-अलग रूप से सत्य हैं, परन्तु ईश्वर की सत्यता इनकी सत्यता से विलक्षण है। ब्रह्म पूर्ण है, जगत जड़ है, जीव अज्ञान और दुःख से घिरा है। ये तीनों मिलकर एकाकार हो जाते हैं, क्योंकि जगत् और जीव ब्रह्म के शरीर हैं और ब्रह्म इनकी आत्मा तथा नियंता है। ब्रह्म से पृथक् इनका अस्तित्व नहीं है, ये ब्रह्म की सेवा के लिए ही हैं।

7. ‘विशिष्टाद्वैतवाद’ के प्रतिपादक कौन थे?

- (a) रामानन्द (b) रामानुजाचार्य
(c) मध्वाचार्य (d) निम्बार्काचार्य

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. आलवार भक्तों की संख्या कितनी मानी गई है?

- (a) 9 (b) 20
(c) 12 (d) 15

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

वैष्णवभक्ति के विकास क्रम में रामभक्ति सर्वप्रथम दक्षिण के आलवार संतों की वाणी के माध्यम से प्रस्फुटित हुई और तदोपरान्त उत्तरी भारत में उसका विकास हुआ। ये आलवार संख्या में 12 थे। इनमें से काठकोप अथवा नक्तालवार ‘राम की पादुका के अवतार’ माने जाते हैं। सर्वप्रथम इनकी रचना ‘तिरुवायमोलि’ में अनन्य रामभक्ति का वर्णन मिलता है। इनकी अन्य तीन प्रसिद्ध रचनाएँ हैं—तिरुविरुतम, तिरुवर्गशरियेम तथा पेरिय तिरुवन्दादि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सातवें आलवार केरल के चेरवंशी राजा कुलशेखर भी अनन्य रामभक्त थे। ‘प्रेरुमाल तिरुभोवि’ में इनके रामभक्ति विषयक सरस गीत संकलित हैं।
- श्रीसम्प्रदाय के प्रथम आचार्य रंगनाथ मुनि (824-924 ई.) ने आलवार संतों के लोकप्रचलित पदों को ‘प्रबंधम्’ शीर्षक से चार भागों में संकलित किया।
- नाथ मुनि के परवर्ती श्रीसम्प्रदाय के पुंडरीकक्ष, राम मिश्र, यामुनाचार्य आदि आचार्यों ने भी अपनी वाणी के द्वारा रामभक्ति को अधिकधिक पल्लवित किया।
- आचार्य रामानुज शेष अथवा ‘लक्ष्मण के अवतार’ माने जाते हैं।
- ब्रह्म सम्प्रदाय की भक्ति परम्परा में मध्वाचार्य का स्थान महत्वपूर्ण है।

- उत्तरी भारत में रामभक्ति का प्रवर्तन आचार्य रामानुज की परम्परा में राघवानन्द द्वारा प्रारम्भ हुआ और उनके शिष्य रामानन्द ने उसे युगानुकूल भावभूमि प्रदान की।
- आचार्य रामानन्द ने ही सर्वप्रथम संकुचित रुढ़ियों में आबद्ध और बाह्य आक्रमणों से संतुष्ट, समसामयिक हिन्दू समाज को रामभक्ति का अभेद कवच प्रदान किया।
- भक्तिभावना को ऊँच-नीच एवं बाह्य आडम्बरों से मुक्त करने का श्रेय भी आचार्य रामानन्द को ही प्राप्त है।

9. आलवार वैष्णवों की संख्या है-

- (a) 9 (b) 10
(c) 11 (d) 12

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. रामानन्द.....की शिष्य परम्परा में आते हैं।

- (a) रंगाचार्य (b) नाथमुनि
(c) रामानुजाचार्य (d) पुंडरीकक्ष

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. निम्नलिखित में से कौन ‘रामानन्द’ की शिष्य परम्परा में नहीं है?

- (a) कबीरदास (b) नरहरिदास
(c) मलूकदास (d) रैदास

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

आदि गुरु स्वामी रामानन्द जी के बारह प्रमुख शिष्य थे, जो द्वादश महाभागवत के नाम से जाने जाते थे। वे हैं—अनन्तानन्द, सुखानन्द, योगानन्द, सुरसुरानन्द, गालवानन्द, नरहरिनन्द, भावानन्द, कबीरदास, पीपा, रैदास, धन्ना जाट, सेन भक्ता। मलूकदास जी का जन्म इलाहाबाद के कड़ा ग्राम में हुआ था। ये स्वामी रामानन्द के शिष्यों में से नहीं थे। इन्होंने ‘ज्ञानबोध’, ‘रतनखान’ भक्ति विवेक आदि ग्रंथों की रचना की। इनकी काव्य रचना ध्रुवचरित है।

11. निम्नलिखित में से कौन स्वामी रामानन्द का शिष्य नहीं था?

- (a) अनन्तानन्द (b) सुखानन्द
(c) नरहर्यानन्द (d) रैदास

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. भक्तिकाल को हिन्दी काव्य का स्वर्णयुग सर्वप्रथम किसने कहा?

- (a) ग्रियर्सन (b) मिश्रबन्धु
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2010

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

भक्तिकाल को हिन्दी काव्य का स्वर्णयुग सर्वप्रथम ग्रियर्सन ने कहा।

13. हिन्दी के किस काल को स्वर्ण-युग कहा जाता है?

- (a) छायावाद (b) रीतिकाल
(c) भक्तिकाल (d) आदिकाल

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल को स्वर्ण-युग माना जाता है। इस युग में ऐसे महान् कवियों का जन्म हुआ, जिन्होंने हिन्दी साहित्य को एक गौरवशाली स्वरूप प्रदान किया। यद्यपि ये कवि भक्त थे, किन्तु उस भक्ति काव्य में जीवन-दायिनी शक्ति के साथ-साथ काव्यात्मकता और सौन्दर्य की भी महत्वपूर्ण रचना है। इस काल में कबीर, सूर, तुलसी, नानक, जायसी, नन्ददास, मीराबाई आदि अनेक महान् विभूतियों का प्रादुर्भाव हुआ।

14. भक्तिकाल का नाम 'पूर्व मध्यकाल' किस आचार्य ने दिया?

- (a) डॉ. नगेन्द्र ने
(b) डॉ. रामकुमार वर्मा ने
(c) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने
(d) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

डॉ. नगेन्द्र द्वारा सम्पादित इतिहास में काल विभाजन का क्रम इस प्रकार है- 1. आदिकाल, 2. मध्यकाल
(क) पूर्व मध्यकाल अथवा भक्तिकाल
(ख) उत्तर मध्यकाल अथवा रीतिकाल
3. आधुनिक काल
(क) पुनर्जागरण काल अथवा भारतेन्दु युग
(ख) जागरण सुधार काल अथवा द्विवेदी युग
(ग) छायावाद युग
(घ) छायावादोत्तर युग

15. नाभादास कृत 'भक्तमाल' की भाषा है-

- (a) अवधी (b) ब्रज भाषा
(c) हिन्दी खड़ी बोली (d) मैथिली

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

नाभादास कृत 'भक्तमाल' की भाषा ब्रज भाषा है। इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ 'भक्तमाल' संवत् 1642 के बाद लिखा गया और संवत् 1769 में प्रियादास जी ने उसकी टीका लिखी। ब्रज भाषा पर इनका अच्छा अधिकार था और पद्य रचना में अच्छी निपुणता थी। नाभादास ने ब्रज भाषा में 'अष्टयाम' की रचना शृंगार भक्ति अथवा रसिक भावना को लेकर की है। इसमें कवि की शैली परिमार्जित, प्रांजल और भावपूर्ण है। इनके गुरु 'अग्रदास' थे, जो रामभक्त थे। ये तुलसीदास के समकालीन थे।

16. 'भक्तमाल' के रचनाकार हैं-

- (a) रैदास (b) नाभादास
(c) धरमदास (d) जीवादास

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. नाभादास द्वारा लिखित 'अष्टयाम' किस भाषा में लिखी गयी है?

- (a) छत्तीसगढ़ी (b) अवधी
(c) ब्रज भाषा (d) मालवी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. 'अष्टयाम' के रचयिता कौन हैं?

- (a) सूरदास (b) गोकुलनाथ
(c) नाभादास (d) बल्लभाचार्य

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. 'भक्तमाल' के रचयिता नाभादास के गुरु का नाम था-

- (a) नरहरिदास (b) बल्लभाचार्य
(c) विट्ठलनाथ (d) अग्रदास

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

सन्तकाव्य

1. सन्त-साधना का साहित्यिक रूप प्रारम्भ हुआ-

- (a) काशी (b) प्रयाग
(c) पंढरपुर (d) उज्जैन

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

अधिकतर सन्त कवि महाराष्ट्र से हुए हैं। सन्त-साधना का साहित्यिक रूप भी महाराष्ट्र (पंढरपुर) से प्रारम्भ हुआ है।

2. ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि हैं-

- (a) रैदास (b) कबीरदास
(c) गुरु नानक (d) तुलसीदास

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

भक्तिकाल को दो शाखाओं में विभाजित किया गया है- निर्गुण शाखा तथा सगुण शाखा। निर्गुण शाखा की ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी तथा सगुण शाखा की रामाश्रयी और कृष्णाश्रयी दो-दो उपशाखाएँ हैं। ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि कबीरदास हैं। अन्य प्रसिद्ध कवियों में नानक, सन्त रैदास (रविदास), दादूदयाल, मलूकदास, धर्मदास तथा सुन्दरदास हैं।

3. इनमें से 'ज्ञानाश्रयी शाखा' के कवि नहीं हैं :

- (a) धर्मदास (b) अग्रदास
(c) दादूदयाल (d) कबीरदास

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख सन्त कवि का क्या नाम है?

- (a) सूरदास (b) चन्दबरदाई
(c) कबीरदास (d) विद्यापति

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. निम्नलिखित में से 'सन्त काव्य परम्परा' के अन्तर्गत न आने वाले कवि का नाम है-

- (a) कबीर (b) दादूदयाल
(c) नानक (d) नन्ददास

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. निर्गुण सन्त कवियों में सर्वाधिक शास्त्रज्ञ एवं सुशिक्षित थे-

- (a) रज्जब (b) सुन्दरदास
(c) धर्मदास (d) दादूदयाल

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

निर्गुण सन्त कवियों में सर्वाधिक शास्त्रज्ञ एवं सुशिक्षित सुन्दरदास थे। कहते हैं कि अपने नाम के अनुरूप अत्यन्त सुन्दर थे, सुशिक्षित होने के कारण उनकी कविता कलात्मकता से युक्त और भाषा परिमार्जित है।

निर्गुण सन्तों ने गेय पद और दोहे ही लिखे हैं। सुन्दरदास ने कवित्त और सवैये भी रचे हैं। उनकी काव्य भाषा में अलंकारों का प्रयोग खूब है। उनका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सुन्दर विलास' है। रज्जब, धर्मदास एवं दादूदयाल निर्गुण सन्त कवि हैं।

7. निम्नलिखित सन्त कवियों में से कौन सन्त कवि पढ़ा-लिखा था?

- (a) दादूदयाल (b) रैदास
(c) कबीर (d) सुन्दरदास

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. इनमें से कौन-सा कवि सन्त कवि नहीं है?

- (a) कबीरदास (b) रैदास
(c) गुरुनानक (d) तुलसीदास

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

कबीरदास, रैदास, गुरुनानक, नामदेव, दादूदयाल, सुन्दरदास, मलूकदास आदि सन्त कवि हैं, जबकि तुलसीदास भक्तिकाल के रामभक्ति धारा के प्रमुख कवि हैं।

9. 'हरडेवाणी' एवं 'अंगवधू' किसकी वाणी के संकलन हैं?

- (a) सुन्दरदास (b) दादूदयाल
(c) मलूकदास (d) कबीरदास

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'हरडेवाणी' एवं 'अंगवधू' दादूदयाल की वाणी के संकलन हैं। दादू की वाणी को संकलित करने का कार्य सर्वप्रथम इनके शिष्यों सन्तदास एवं जगन्नाथ ने किया जिसका नाम इन्होंने 'हरडेवाणी' रखा। रज्जब ने दादूदयाल की वाणी को 'अंगवधू' के नाम से संकलन किया।

10. निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा का दूसरा नाम है-

- (a) राम भक्ति शाखा (b) कृष्ण भक्ति शाखा
(c) सन्त साहित्य (d) सूफी साहित्य

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने निर्गुण सन्त काव्य धारा को निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा नाम दिया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इसे निर्गुण भक्ति साहित्य कहते हैं। डॉ. रामकुमार वर्मा केवल सन्त काव्य से सम्बोधित करते हैं। अतः निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा का दूसरा नाम सन्त साहित्य है। इस वर्ग के कवियों को सन्त कवि नाम से पुकारा जाता है। इस शाखा के प्रवर्तक कवि कबीरदास हैं। रैदास (रविदास), गुरु नानक, नामदेव, दादूदयाल, सुन्दरदास, मलूकदास आदि ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख कवि हैं।

11. कबीरदास किस काव्यधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं?

- (a) सन्त काव्य (b) सूफी काव्य
(c) राम काव्य (d) कृष्ण काव्य

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. 'ज्ञानमार्गी शाखा' के कवियों को किस नाम से पुकारा जाता है?

- (a) सिद्ध कवि (b) नाथपंथी कवि
(c) भक्त कवि (d) सन्त कवि

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. सन्तकाव्य नाम किसने दिया है?

- (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) राहुल सांकृत्यायन
(c) रामकुमार वर्मा (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. निम्नलिखित विकल्पों में से जो सन्त-काव्य की विशेषता नहीं है, उसे छाँटिए:-

- (a) बाह्याडम्बरों का खंडन (b) गुरु का महत्व-प्रतिपादन
(c) सगुण ईश्वर की उपासना (d) जाति-पाँति का विरोध

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

सगुण ईश्वर की उपासना सन्त-काव्य की विशेषता नहीं है। सभी सन्त मूर्ति पूजा एवं अवतारवाद के विरोधी थे, परन्तु जाने-अनजाने रूप में इनमें से कुछ की रचनाओं में सगुण तत्वों का समावेश हो गया है। कबीर जैसे अद्वैतवादी और निर्गुण दर्शन के सबल प्रतिपादक कवि के काव्य में भी कहीं-कहीं सगुण तत्व के दर्शन होते हैं। शेष विशेषताएँ सन्त-काव्य की हैं।

15. निर्गुण काव्यधारा की प्रवृत्ति है?

- (a) वात्सल्य रस की प्रधानता
(b) प्रकृति पर चेतन सत्ता का आरोप
(c) रूढ़ियों एवं बाह्याडम्बरों का विरोध
(d) आश्रयदाता की प्रशंसा

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

निर्गुण काव्यधारा की प्रवृत्ति में बौद्धों के समान अवतारवाद, मूर्ति, तीर्थ, व्रत माला आदि सभी बाह्याडम्बरों एवं रूढ़ियों का विरोध किया गया है।

16. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भक्तिकाल के निम्नलिखित कवियों में से किसे सबसे कम महत्व प्रदान किया था?

- (a) तुलसी (b) सूरदास
(c) कबीर (d) जायसी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

किसी कवि को साहित्य में प्रतिष्ठा दिलाने वाले आचार्य रामचन्द्र शुक्ल थे, लेकिन उन्होंने जहाँ तुलसीदास, सूरदास और जायसी पर स्वतन्त्र रूप से विस्तृत समीक्षाएँ लिखीं, वहीं कबीर को इस योग्य नहीं समझा। उनके लिए कबीर का महत्व 'इतिहास' तक सीमित रहा और 'इतिहास' में भी कबीर के प्रति सम्मान या सहानुभूति का भाव नहीं दिखता। उनकी दृष्टि में कबीर की भाषा तो पंचमेल है ही, विचार भी पंचमेल हैं, प्रतिभा उनमें जरूर बड़ी प्रखर थी और उनकी उक्तियों में कहीं-कहीं विलक्षण प्रभाव और चमत्कार भी है, लेकिन कवित्व भी है—यह रामचन्द्र शुक्ल ने कहीं नहीं कहा है।

17. 'भाषा बहुत परिष्कृत और परिमार्जित न होने पर भी कबीर की उक्तियों में कहीं-कहीं विलक्षण प्रभाव और चमत्कार है। प्रतिभा उनमें प्रखर थी इसमें संदेह नहीं'— पंक्तियों के लेखक हैं—

- (a) डॉ. नगेन्द्र (b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी (d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. सधुक्कड़ी भाषा से आशय है—

- (a) जिसमें कटूक्तियों का प्रयोग हो
(b) जिसमें अक्खड़पन की झलक हो
(c) जिसमें अनेक प्रांतीय भाषाओं/बोलियों के शब्दों का मिश्रण हो
(d) जिसमें साधु-सन्तों की गुप्त बातों के संकेतांक हों

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

सधुक्कड़ी भाषा से आशय है, जिसमें अनेक प्रांतीय भाषाओं/बोलियों के शब्दों का मिश्रण हो। सन्तजन भ्रमणशील प्राणी थे, अतः उनकी रचनाओं में उन विभिन्न प्रदेशों की बोलियों के शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं, जहाँ उन्होंने भ्रमण किया। इन सन्तों के काव्यों में ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी, पंजाबी तथा राजस्थानी का प्रयोग हुआ है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी' तथा श्यामसुन्दर दास ने 'पंचमेल खिचड़ी' कहा है।

19. 'अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम' किसने कहा है?

- (a) तुलसीदास (b) सूरदास
(c) रैदास (d) मलूकदास

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

निकम्पन तथा आतसियों के बारे में मलूकदास ने यह दोहा रचा—
अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम।
दास मलूक कहि गये सबके दाता राम।

20. 'ज्ञानबोध' किसकी रचना है?

- (a) सुन्दरदास (b) मलूकदास
(c) रज्जब जी (d) इनमें में कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002, 2003

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'ज्ञानबोध' मलूकदास की रचना है। मलूकदास के अन्य प्रामाणिक ग्रन्थ हैं— रतनखान, भक्तवच्छावली, भक्ति विवेक, ज्ञानपरोछि, बारहखड़ी, रामअवतार लीला, ब्रजलीला, ध्रुवचरित, विभवविभूति, सुखसागर तथा स्फुट पद इत्यादि।

21. 'भक्ति विवेक' निम्नलिखित में से किसकी रचना है?

- (a) मलूकदास (b) सुन्दरदास
(c) नाभादास (d) दादूदयाल

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. रज्जब अली खाँ के गुरु थे-

- (a) नानक (b) दादूदयाल
(c) मलूकदास (d) धन्ना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

रज्जब अली खाँ के गुरु दादूदयाल थे। दादूदयाल के अन्य शिष्य थे— सुन्दरदास, प्रागदास, जनगोपाल, जगजीवन, प्रभृति आदि। राघोदास ने अपने 'भक्तमाल' में दादू के प्रमुख बावन शिष्यों का उल्लेख किया है जिनमें रज्जब और सुन्दरदास प्रमुख थे।

23. कबीरदास के गुरु कौन थे?

- (a) रामचन्द्र (b) राघवानन्द
(c) दयानन्द (d) मायानन्द

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(*)

कबीरदास के गुरु रामानन्द थे। रामानन्द के शिष्यों में रैदास, धन्ना तथा पीपा भी शामिल थे। रामानन्द ने वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य राघवानन्द से दीक्षा ग्रहण की थी। उपर्युक्त विकल्पों में कोई भी उत्तर सही नहीं है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर गलत बताते हुए मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

24. कबीर के गुरु का नाम क्या है?

- (a) रामानन्द सागर (b) रैदास
(c) रविदास (d) रामानन्द

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. 'कबीर वाणी के डिक्टेटर थे'-यह अभिमत किस आलोचक का है?

- (a) डॉ. रामकुमार वर्मा (b) डॉ. परशुराम चतुर्वेदी
(c) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'कबीर वाणी के डिक्टेटर थे' यह अभिमत डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का है। कबीर साहसपूर्वक जनबोली के शब्दों का प्रयोग अपनी कविता में करते हैं। बोली के ठेठ शब्दों के प्रयोग के कारण ही कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' कहा जाता है।

26. 'कबीर वाणी के डिक्टेटर थे', कथन के लेखक हैं—

- (a) रामचन्द्र शुक्ल (b) गोविन्द त्रिगुणायत
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) रामचन्द्र तिवारी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. कबीरदास को 'वाणी का डिक्टेटर' किसने कहा था?

- (a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) डॉ. नगेन्द्र

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'वाणी का डिक्टेटर' किसे कहा था?

- (a) कबीर (b) रैदास
(c) दादू (d) नानक

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. “कबीर ने जिस प्रकार एक निराकार ईश्वर के लिए भारतीय वेदांत का पल्ला पकड़ा, उसी प्रकार उस निराकार ईश्वर की भक्ति के लिए सूफियों का प्रेमतत्व लिया और अपना ‘निर्गुण’ धूमधाम से निकाला।” यह कथन किसका है?

- (a) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी (b) नामवर सिंह
(c) पुरुषोत्तम अग्रवाल (d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है—“कबीर ने जिस प्रकार एक निराकार ईश्वर के लिए भारतीय वेदांत का पल्ला पकड़ा, उसी प्रकार उस निराकार ईश्वर की भक्ति के लिए सूफियों का प्रेमतत्व लिया और अपना ‘निर्गुणपंथ’ धूमधाम से निकाला। बात यह थी कि भारतीय भक्तिमार्ग साकार और सगुण रूप को लेकर चला था, निर्गुण और निराकार ब्रह्म भक्ति या प्रेम का विषय नहीं माना जाता।”

30. ‘तुम्ह जिनि जानौ गीत है, यहु निज ब्रह्म-विचार’- किसने कहा है?

- (a) कबीर (b) रैदास
(c) सूरदास (d) तुलसीदास

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

कबीर भावना की अनुभूति से युक्त, उत्कृष्ट रहस्यवादी, जीवन का संवेदनशील संस्पर्श करने वाले और मर्यादा के रक्षक कवि थे। उन्होंने स्वतः कहा है— “तुम्ह जिनि जानौ गीत है, यहु निज ब्रह्म-विचार।” पथभ्रष्ट समाज को उचित मार्ग पर लाना ही उनका प्रधान लक्ष्य है।

31. ‘मसि कागद छुयौ नहीं, कलम गह्यो नहिं हाथ’ किसके विषय में कहा गया है?

- (a) नानक (b) रैदास
(c) कबीर (d) दादू

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

अक्षर ब्रह्म के परम साधक कबीरदास सामान्य अक्षर ज्ञान से रहित थे। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा है “मसि कागद छुयौ नहीं, कलम गह्यो नहिं हाथ।” अतः यह बात निर्विवाद है कि उन्होंने स्वतः किसी ग्रन्थ को लिपिबद्ध नहीं किया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☞ कबीरदास की कुछ उक्तियाँ इस प्रकार हैं—
● “तुम जिनि जानौ गीत है, यहु निज ब्रह्म विचार।”
● “मैं कहता हूँ आँखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी।”
● “दुलहिन गावहुँ मंगलाचार।”
● “तंत्र न जानूँ मंत्र न जानूँ, जानूँ सुन्दर काया।”

32. कबीर की वाणी का संग्रह ‘बीजक’ कहलाता है, इसके कितने भाग हैं?

- (a) दो (b) तीन
(c) चार (d) पाँच

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

कबीर की वाणी का संग्रह ‘बीजक’ कहलाता है, इसमें तीन भाग हैं— साखी, स्रवद और रमैनी। कबीरदास भक्तिकाल के एकमात्र ऐसे कवि हैं, जो आजीवन समाज और लोगों के बीच व्याप्त आडम्बरों पर कुठाराघात करते रहे।

☐ सूफीकाव्य

1. हिन्दी का प्रथम सूफी कवि है—

- (a) मुल्ला दाऊद (b) जायसी
(c) मुल्ला वजही (d) कुतुबन

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

हिन्दी का प्रथम सूफी कवि की मान्यता पर विद्वानों में मतभेद है, किन्तु अधिकतर विद्वान इस पर सहमत हैं कि मुल्ला दाऊद कृत ‘चन्दायन’ सम्भवतः हिन्दी का प्रथम सूफी प्रेम काव्य है। इसमें नायक लेरिक एवं नायिका चन्दा के प्रेम कथा का वर्णन किया गया है। यह अवधी भाषा में लिखी गयी है। इस आधार पर मुल्ला दाऊद को हिन्दी का प्रथम सूफी कवि माना जा सकता है।

2. सूफी काव्य पद्धति का अन्तिम ग्रन्थ कौन-सा है?

- (a) यूसुफ जुलेखा (b) पद्मावत
(c) मृगावती (d) इन्द्रावती

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

सूफी काव्य पद्धति का अन्तिम ग्रन्थ यूसुफ जुलेखा है, जिसकी रचना 1790 ई. में नवाब शेख निसार ने किया था। कासिमशाह कृत ‘हंस जवाहर’ की पद्धति पर इन्होंने भी अपने प्रेमाख्यान का नाम ‘यूसुफ जुलेखा’ रखा, जिसमें प्रेमी यूसुफ का नाम पहले और प्रेमिका जुलेखा का नाम बाद में है। इस काव्य के नायक-नायिका काव्यनिक नहीं हैं। यूसुफ का वृत्तांत ‘कुरान’ में आया है। ‘कुरान’ का बारहवाँ सूरा ‘सूरा यूसुफ’ के नाम से पुकारा जाता है। ‘कुरान शरीफ’ के उसी यूसुफ नामक व्यक्ति की प्रेमकथा शेख निसार ने अपने काव्य ‘यूसुफ जुलेखा’ में लिखी है। मनसवी शैली में लिखित इस कृति में आसफुद्दौला की प्रशंसा भी की गयी है, क्योंकि उन दिनों वही शाहेवक्त थे। ‘यूसुफ जुलेखा’ की भाषा जनपदीय अवधी है और कथानक में अलौकिकता की भरमार है। पद्मावत 1540 ई. में मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा, मृगावती 1503 ई. में कुतुबन द्वारा तथा इन्द्रावती 1744 ई. में नूर मुहम्मद द्वारा लिखी गई है।

3. सूफी प्रेमाख्यानक रचनाओं की भाषा कौन-सी है?

- (a) अवधी (b) ब्रज
(c) बुन्देली (d) खड़ी बोली

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

सूफी प्रेमाख्यानक रचनाओं की भाषा अवधी है। प्रेमाश्रयी शाखा के मुस्लिम सूफी कवियों की काव्यधारा को 'प्रेममार्गी' माना गया, क्योंकि प्रेम से ही प्रभु मिलते हैं, ऐसी उनकी मान्यता है। ईश्वर की तरह प्रेम भी सर्वव्यापी है और ईश्वर का जीव के साथ प्रेम का ही सम्बन्ध हो सकता है, यही उनकी रचनाओं का मूल तत्व है। उन्होंने प्रेम गाथाएँ लिखी हैं। ये प्रेम गाथाएँ फारसी की मनस कवियों की शैली पर रची गई हैं। इन गाथाओं की भाषा अवधी है और इनमें दोहा, चौपाई छन्दों का प्रयोग किया गया है।

4. सूफी कवियों का सबसे प्रिय अलंकार -

- (a) वक्रोक्ति (b) समासोक्ति
(c) अनुप्रास (d) श्लेष

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

सूफी कवियों ने अन्योक्ति, समासोक्ति, रूपक, प्रतीक, उपमा, उत्प्रेक्षा तथा अतिशयोक्ति अलंकारों की प्रयोग किया है। अतः विकल्प के आधार पर समासोक्ति सही है।

5. इनमें से सूफी काव्यधारा के कवि कौन नहीं हैं?

- (a) मुल्ला दाऊद (b) जायसी
(c) नामदास (d) कुतुबन

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

मुल्ला दाऊद, जायसी, कुतुबन, मंझन, उसमान, शेख नबी, आसिमशाह, नूर मुहम्मद आदि सूफी सन्त हैं, जबकि गुरु नामदास सिख सन्त थे।

6. प्रेममार्गी कवि नहीं हैं-

- (a) सूरदास (b) मलिक मुहम्मद जायसी
(c) मुल्ला दाऊद (d) मंझन

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

सूरदास प्रेममार्गी शाखा के कवि नहीं, बल्कि भक्तिकाल की सगुण भक्तिधारा के कृष्णभक्ति धारा के कवि हैं। इनकी रचनाएँ सूरसागर साहित्य लहरी एवं सूर सारावली हैं।

7. प्रेमाख्यान काव्य-परम्परा (सूफी कवियों) का मुख्य दर्शन है-

- (a) तसव्वुफ (b) हनफ़ी
(c) अहले हदीस (d) अहमदिया

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

सूफी दर्शन को 'तसव्वुफ' कहा जाता है। सूफी शब्द की उत्पत्ति को लेकर बहुत से मत हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि सूफी शब्द 'सफा' से निकला है, जिसका अर्थ है विशुद्धता, मन-विचार और कर्म की विशुद्धता। जिन लोगों के बारे में यह शब्द बोला जाता है, उनका चित्त शुद्ध होता है और खुदा की मुहब्बत के साथ-साथ उनके दिल में उसके बन्दों के लिए भी मुहब्बत पायी जाती है। सूफियों ने दुनिया को प्यार और अमन की तालीम दी है। सूफी मतों में प्रसिद्ध चार सिलसिलों के नाम इस प्रकार हैं—1. चिश्तिया सिलसिला, 2. कादरिया सिलसिला, 3. नक्शबंदिया सिलसिला, 4. सुहरावर्दिया सिलसिला।

8. अनलहक (मैं ही ब्रह्म हूँ).....की घोषणा है।

- (a) जायसी (b) मंसूर
(c) अमीर खुसरो (d) कबीर

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

अरब में अलहिलाज मंसूर अथवा मंसूर हल्लाज नामक सूफी सन्त को जब ज्ञान प्राप्त हुआ, तो वह 'अनलहक' अर्थात् 'मैं सत्य हूँ' की घोषणा करने लगा। उसके गुरु जुवैद थे। उन्होंने 'अनलहक' (मैं ही ब्रह्म हूँ) का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। उन्होंने 'किताबे-तवासीफ' नामक सूफीमत का एक ग्रन्थ भी लिखा था, जिसमें इनके सिद्धान्त प्रतिपादित हैं। 'अनलहक का सिद्धान्त' भारतीय 'अद्वैतवाद' के दर्शन 'अहंब्रह्मास्मि' से प्रेरित है।

9. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रेमाख्यान परम्परा का हिन्दी में प्रवर्तक/प्रथम कवि किसे माना है?

- (a) कुतुबन (b) ईश्वरदास
(c) मुल्ला दाऊद (d) असाइत

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

आचार्य शुक्ल ने मृगावती (1503 ई.) के रचयिता कुतुबन को प्रेमाख्यान परम्परा का प्रथम कवि माना है। कुतुबन-कृत मृगावती में नायक रामकुमार तथा नायिका मृगावती के प्रथम दर्शनजन्य प्रेम का निरूपण अत्यन्त भावात्मक शैली में हुआ है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- भक्तिकालीन की प्रेमाख्यान परम्परा के ग्रन्थ हैं- मृगावती, पद्मावत, मधुमालती, चित्रावली और रतनसार आदि।
- डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने ईश्वर दास की 'सत्यवती कथा' (1500 ई.) को प्रेमाख्यान परम्परा का प्रथम ग्रन्थ माना है।
- डॉ. रामकुमार वर्मा ने मुल्ला दाऊद के 'चन्दायन' (1379) को इस परम्परा का प्रवर्तक माना है।

10. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रेमाख्यान परम्परा की पहली रचना किसे मानते हैं?

- (a) सत्यवती कथा (b) चन्द्रायन
(c) मृगावती (d) हंसावली

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल प्रेमाख्यान परम्परा की पहली रचना 'मृगावती' (1501 ई.) को मानते हैं, जिसके रचनाकार कुतुबन हैं।

11. कुतुबन के गुरु कौन थे?

- (a) दादू (b) शेख सलीम
(c) शेख बुदन (d) सुन्दरदास

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(*)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कुतुबन के गुरु चिश्ती वंश के शेख बुरहान को बताया है। सम्भवतः वर्तनी त्रुटि के कारण उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा चयन बोर्ड ने अपनी संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

12. कुतुबन के गुरु का नाम-

- (a) सैयद अशरफ (b) दामो
(c) मेंहदी बुरहान (d) शेख बुरहान

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'मृगावती' के लेखक हैं-

- (a) मंझन (b) कुतुबन
(c) जायसी (d) नूर मुहम्मद

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'मृगावती' के लेखक कुतुबन हैं। इसकी रचना 909 हिजरी अर्थात् 1503-04 ई. में हुई थी। मृगावती में नायक मृगी-रूपी नायिका पर मोहित हो जाता और उसकी खोज में निकल पड़ता है। पं. रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, ये जौनपुर के बादशाह हुसैन शाह के आश्रित थे।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- जायसी की तीन रचनाएँ उपलब्ध हैं-अखरावट, आखिरी कलाम और पद्मावत।
- 'पद्मावत' प्रेम की पीर की व्यंजना करने वाला विशद प्रबन्ध काव्य है। यह दोहे-चौपाई में निबद्ध 'मनसवी' शैली में लिखा गया है।
- मंझन ने 1545 में मधुमालती की रचना की थी। ये जायसी के परवर्ती थे।

14. कुतुबन की रचना कौन-सी है?

- (a) मृगावती (b) चन्द्रायन
(c) सत्यवती कथा (d) पद्मावत

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. मुल्ला दाऊद की भाषा है-

- (a) पश्चिमी परम्परा से संपृक्त शैली (b) साहित्यिक अवधी
(c) पहाड़ी मिश्रित अवधी (d) ठेठ अवधी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

मुल्ला दाऊद की भाषा ठेठ अवधी है। मुल्ला दाऊद की काव्य कृतियों में बैसवाड़ी अवधी का प्रभाव स्पष्ट है। इनकी रचनाओं में ठेठ पूर्वी अवधी एवं अपभ्रंश का प्रयोग अधिक है। मुल्ला दाऊद अवधी के प्रथम कवि हैं। मुल्ला दाऊद ने सन् 1379 में चन्द्रायन सूफी काव्य की रचना की। चन्द्रायन को मुल्ला दाऊद ने प्रेम गाथात्मक काव्य बनाया और यह प्रेमगाथात्मक काव्य पूरी तरह से चन्द्रायन की रचना योजना से भिन्न सूफी काव्य परम्परा का ग्रन्थ बन गया है।

16. इनमें से जायसी की कौन-सी रचना नहीं है?

- (a) आखिरी कलाम (b) अखरावट
(c) पद्मावत (d) चित्रावली

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

चित्रावली उस्मान की रचना है, जबकि आखिरी कलाम, अखरावट तथा पद्मावत जायसी की रचनाएँ हैं।

17. कौन-सी रचना जायसी कृत नहीं है?

- (a) मधुमालती (b) पद्मावत
(c) अखरावट (d) आखिरी कलाम

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. 'मधुमालती' के रचनाकार हैं-

- (a) मंझन (b) कुतुबन
(c) जायसी (d) मुल्ला दाऊद

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

मधुमालती (1545 ई.) के रचनाकार मंझन हैं। इसमें अवधी भाषा एवं दोहा-चौपाई का प्रयोग हुआ है तथा नायक-नायिका के प्रथम दर्शनजन्य प्रेम के साथ-साथ पूर्व जन्म के प्रणय-संस्कारों की महत्ता दिखायी गयी है।

19. 'मधुमालती' की रचना किसने की?

- (a) दाऊद (b) कुतुबन
(c) मंझन (d) जायसी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. सूफी मत में वर्णित साधक की चार अवस्थाओं-शरीयत, तरीकत, मारिफत, हकीकत-की भारतीय भक्तिमार्ग के साथ सही क्रम में संगति होगी-

- (a) आचरण, उपासना, सिद्धावस्था, सत्यबोध
(b) सत्यबोध, आचरण, उपासना, सिद्धावस्था
(c) आचरण, उपासना, सत्यबोध, सिद्धावस्था
(d) सत्यबोध, उपासना, आचरण, सिद्धावस्था

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

सूफीमत में वर्णित साधक की चार अवस्थाओं-शरीयत, तरीकत, मारिफत और हकीकत की भारतीय भक्तिमार्ग के साथ सही क्रम है-आचरण, उपासना, सिद्धावस्था और सत्यबोध। सूफीमत में वर्णित साधक की चार अवस्थाओं का अर्थ इस प्रकार है-1. शरीयत-इसमें साधक को कर्मकाण्ड का अनुसरण करना होता है। 2. तरीकत-इसमें साधक उपासना में लीन हो जाता है। 3. मारिफत-इसमें साधक आरिफ बन जाता है। 4. हकीकत-इसमें साधक को परमतत्व की उपलब्धि हो जाती है।

21. साधना की चार अवस्थाओं-शरीयत, तरीकत, मारिफत और हकीकत का सम्बन्ध है-

- (a) ज्ञान मार्गी साधना से (b) सूफी साधना से
(c) इस्लाम धर्म साधना से (d) रीतिमुक्त काव्य से

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. भक्तिकालीन सूफी काव्यधारा की विशेषताओं के संदर्भ निम्नलिखित में से एक विशेषता गलत है। उस गलत विशेषता को चुनिए-

- (a) इस काव्यधारा के सभी कवि मुसलमान थे
(b) इस काव्यधारा के सभी कवियों ने हिन्दू प्रेमी-प्रेमिकाओं की प्रेम-कथा का काव्यात्मक चित्रण प्रस्तुत किया
(c) इस काव्यधारा के कवियों ने अवधी एवं ब्रजभाषा में रचनाएँ कीं
(d) इस काव्यधारा के कवियों ने सिर्फ प्रबन्ध काव्य ही लिखे

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(*)

सूफी सन्तों को इस्लाम प्रचारक कहा जाता है। उन्हें केवल इस्लाम का प्रचारक कहना ठीक नहीं है, जबकि वे लोग अत्यन्त उदार दृष्टिकोण के सन्त थे। लोग उनसे प्रभावित होकर मुसलमान हो जाते थे। इस काव्यधारा के सभी कवि मुसलमान थे। सूफियों ने जिन प्रेम कहानियों की रचना की वे सब प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत आती हैं। इस काव्यधारा के सभी कवियों ने हिन्दू प्रेमी-प्रेमिकाओं के प्रेम-कथा का काव्यात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है। इसमें प्रेम के वियोग पक्ष को ही अधिक महत्ता प्रदान की गई है। इनकी भाषा अवधी है। किसी-किसी कवि पर भोजपुरी और ब्रजभाषा का प्रभाव भी प्राप्त होता है। अतः दिए गए सभी विकल्प सही हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सूफी काव्यधारा के प्रमुख कवि थे—जायसी, कुतुबन, मंझन, उस्मान, शेख नबी, कासिमशाह, नूर मुहम्मद आदि।
- सूफी काव्यधारा को 'प्रेमाख्यानक काव्यधारा' भी कहा जाता है।
- सूफी धारा के काव्य फारसी की मनसूवी शैली में लिखे गये हैं। सूफी मत के अनुसार, ईश्वर एक है, आत्मा (बन्दा) उसी का अंश है। यद्यपि कवियों का ज्ञान स्वाध्याय द्वारा अर्जित न होकर, सुना-सुनाया अधिक है। सूफी कवियों का मुख्य केन्द्र अवध था।

23. 'जायसी' किस धारा के कवि हैं?

- (a) ज्ञानमार्गी काव्यधारा (b) प्रेमाख्यानक काव्यधारा
(c) नाथपंथी काव्यधारा (d) रसक काव्यधारा

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. सूफी मुक्तक काव्य का प्रथम रचयिता इनमें से कौन-सा कवि था?

- (a) मुल्ला दाऊद (b) अमीर खुसरो
(c) शेख फरीद (d) कुतुबन

डायट (प्रवक्त) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

सूफियों ने विशेषतः तो प्रबन्ध काव्यों की ही रचना की है, किन्तु कभी-कभी मुक्तक शैली पर भी कुछ रचनाएँ लिखी गई हैं। मुक्तक शैली में लिखने वालों में अमीर खुसरो का नाम सबसे पहले आता है।

25. मलिक मुहम्मद जायसी को 'जायसी' कहा जाता है, क्योंकि वे-

- (a) जायस गोत्र में पैदा हुए थे
(b) जायस मत के मानने वाले थे
(c) जायस नामक स्थान के निवासी थे
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

मलिक मुहम्मद जायसी का वास्तविक नाम मुहम्मद था। 'मलिक' इनका पूर्वजों से चला आया 'उपनाम' था, जिसका फारसी भाषा में अर्थ होता है-अमीर और बड़ा व्यापारी, जो मूलतः अरबी भाषा का शब्द है। मलिक मुहम्मद जायसी का जन्म 900 हिजरी में (सन् 1492 के लगभग) हुआ माना जाता है, जैसा कि उन्होंने स्वयं लिखा है-

या अवतार मोर नवीं सदी।

तीस बरस उपर कवि वदी।।

जायसी के जन्म स्थान के बारे में मतभेद है कि जायस ही उनका जन्म स्थान था या वह कहीं और से आकर जायस में बस गये थे। जायसी ने स्वयं कहा है-

जायस नगर मोर अस्थानू।

नगर को नवां आदि उदयानू।।

तहां देवस दस पहुँचे आएउं।

या बेराग बहुत सुख पाया।।

जायस वालों और स्वयं जायसी के कथनानुसार, वह जायस के ही रहने वाले थे। पं. सूर्यकान्त शास्त्री ने लिखा है कि उनका जन्म जायस शहर के 'कंचाना मुहल्ला' में हुआ था। डॉ. वासुदेव अग्रवाल के कथन व शोधानुसार-जायसी का जन्म जायस नगर में हुआ था और वहीं पर उन्हें वैराग्य हो गया तथा सुख मिला। कुछ विद्वानों ने इनके जन्म स्थान को गाजीपुर भी बताया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मलिक मुहम्मद जायसी की प्रमुख रचनाएँ हैं-अखरावट, पद्मावत, आखिरी कलाम, चित्ररेखा, कहरनामा तथा मसला।
- 'पद्मावत' जायसी का प्रबन्धकाव्य है जो शब्द, अर्थ और अलंकृत तीनों दृष्टियों से अनूठा है। यह जायसी का सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ माना जाता है।
- आखिरी कलाम में कयामत का वर्णन है।
- हिन्दी में सूफी काव्य परम्परा के श्रेष्ठ कवि मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित काव्य कवि के यश का आधार है पद्मावत।

26. पद्मावत की विधा है-

- | | |
|-------------------|----------------|
| (a) प्रबन्ध काव्य | (b) खण्ड काव्य |
| (c) मुक्तक काव्य | (d) महाकाव्य |

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर-(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. 'कहरनामा' किसकी रचना है?

- | | |
|-----------------|-------------|
| (a) मुल्ला दाऊद | (b) सूरजदास |
| (c) कुतुबन | (d) जायसी |

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर-(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. कयामत का वर्णन जायसी द्वारा रचित काव्य में हुआ है-

- | | |
|-----------------|--------------------|
| (a) अखरावट में | (b) आखिरी कलाम में |
| (c) पद्मावत में | (d) किसी में नहीं |

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर-(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. मलिक मोहम्मद जायसी के प्रसिद्ध प्रबन्धकाव्य का क्या नाम है?

- | | |
|--------------|----------------|
| (a) मृगावती | (b) पद्मावत |
| (c) मधुमालती | (d) परमाल रासो |

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर-(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. 'पद्मावत' के रचनाकार का नाम है-

- | | |
|-------------------|------------------------|
| (a) अमीर खुसरो | (b) अब्दुल रहमान |
| (c) मुहम्मद इकबाल | (d) मलिक मुहम्मद जायसी |

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर-(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'अखरावट' काव्य कृति के रचयिता कौन हैं?

- | | |
|------------------------|------------|
| (a) मलिक मुहम्मद जायसी | (b) कुतुबन |
| (c) मंझान | (d) उस्मान |

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर-(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. जायसी के सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ का नाम है-

- | | |
|----------------|-------------|
| (a) आखिरी कलाम | (b) अखरावट |
| (c) मधुमालती | (d) पद्मावत |

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर-(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. 'पद्मावत' है-

- | | |
|----------------|------------------|
| (a) एक त्रासदी | (b) मुक्तक काव्य |
| (c) गेय काव्य | (d) आत्म वक्तव्य |

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर-(a)

मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा पद्मावत की रचना 1540 ई. में की गई थी। पद्मावत अवधी भाषा में लिखा गया है। चूंकि पद्मावत एक प्रेमाख्यान प्रबन्ध काव्य है, जिसमें चित्तौड़ के राजा रत्नसेन तथा सिंहल की राजकुमारी पद्मावती के विवाह एवं विवाहेत्तर जीवन का चित्रण मार्मिक रूप से हुआ है, इसलिए इसे एक त्रासदी माना जाता है। पद्मावत को एक रूपक काव्य भी माना जाता है। इसे खण्डों में विभक्त किया गया है। इसके नायकों/नायिकाओं एवं प्रतीकों का रूप इस प्रकार है—

नायक/नायिका	प्रतीक
पद्मावती	- बुद्धि/परमात्मा का प्रतीक
चित्तौड़	- शरीर का प्रतीक
रत्नसेन	- मन का प्रतीक
सिंहल द्वीप	- हृदय का प्रतीक
राघव चेतन	- शैतान का प्रतीक
अलाउद्दीन	- माया का प्रतीक
नागमती	- संसार का प्रतीक
हीरामन तोता	- गुरु का प्रतीक

34. 'पद्मावत' के रचयिता कौन हैं?

- (a) मुल्ला दाउद (b) जायसी
(c) कुतुबन (d) मंझन

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. 'पद्मावत' किस भाषा में लिखा गया है?

- (a) अवधी (b) ब्रज भाषा
(c) खड़ी बोली (d) फारसी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. 'पद्मावत' किस भाषा में लिखा गया है?

- (a) ब्रज (b) मैथिली
(c) अवधी (d) अपभ्रंश

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. 'पद्मावत' के अनुच्छेदों का नाम है-

- (a) सर्ग (b) काण्ड
(c) खण्ड (d) अंक

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. 'पद्मावत' में रत्नसेन किसका प्रतीक है?

- (a) मन (b) बुद्धि
(c) अहंकार (d) हृदय

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. 'पद्मावत' में पद्मिनी प्रतीक है-

- (a) साधक का (b) शैतान की
(c) परम सत्ता की (d) प्रकृति की

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. इनमें से कौन-सी कृति जायसी की 'अक्षय कीर्ति' के आधार पर रची गयी है?

- (a) पद्मावत (b) अखरावट
(c) आखिरी कलाम (d) उपर्युक्त सभी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

जायसी ने तीन पुस्तकें लिखी हैं—पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम। अखरावट में वर्णमाला के एक-एक अक्षर को लेकर सिद्धान्त सम्बन्धी तत्त्वों से भरी चौपाइयाँ कही गयी हैं। इस पुस्तक में ईश्वर, सृष्टि, जीव, ईश्वर प्रेम आदि विषयों पर विचार प्रकट किए गए हैं। 'आखिरी कलाम' में कयामत का वर्णन है। अक्षय कीर्ति का आधार है 'पद्मावत', जिसके पढ़ने से यह प्रकट हो जाता है कि जायसी का हृदय कैसा कोमल और 'प्रेम की पीर' से भरा हुआ था।

41. 'पद्मावत' को समाप्ति किसने कहा है?

- (a) गणपतिचन्द्र गुप्त (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(c) माताप्रसाद गुप्त (d) रामकुमार वर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, पद्मावत का प्रेम लौकिक तथा कथा समाप्ति है और यह भी कहना ठीक ही है कि पद्मावत का पूर्वराम अस्मृत है—कारण वह रूपदर्शन-जन्म है और न ही साहचर्य जन्म। शुक्ल जी भक्ति को हृदय की प्राकृत वृत्ति ही मानते हैं और रहस्यमय ढंग से उपासनोपयोगी निरूपित करते हैं, उनकी दृष्टि में लौकिक कथा ही प्रमुख है और लौकिक राग ही वर्ण्य।

42. “छार उठाय लीन्ह एक मुँठी। दीन्ह उड़ाई पिरथिमी झूठी।” यह पंक्ति किस ग्रंथ से ली गई है?

- (a) पद्मावत (b) चंदायन
(c) आखिरी कलाम (d) रामचरितमानस

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त पंक्ति मलिक मुहम्मद जायसी कृत ‘पद्मावत’ से ली गई है। जब अलाउद्दीन की सेना कुंभलनेर के दुर्ग पर आक्रमण करती है, तो अलाउद्दीन को केवल निराशा ही हाथ लगती है और वह कह उठता है कि यह संसार झूठा है।

43. निम्नलिखित में से किस कवि ने सिर्फ अवधी भाषा में ही रचना की?

- (a) कबीर (b) सूरदास
(c) तुलसी (d) जायसी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

जायसी की भाषा ठेठ अवधी है और पूरबी हिन्दी के अन्तर्गत है। इसीलिए जायसी ने अपनी रचनाएँ सिर्फ अवधी भाषा में की हैं। जायसी भक्तिकाल की निर्गुण प्रेमाश्रयी शाखा के कवि हैं।

44. ‘चित्रावली’ किसकी रचना है?

- (a) उस्मान (b) शेख नबी
(c) कासिमशाह (d) नूर मुहम्मद

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

‘चित्रावली’ के रचनाकार उस्मान हैं। उन्होंने इसकी रचना 1613 ई. में की थी, ये गाजीपुर के निवासी थे। चित्रावली में चौपाई की सात-सात अर्द्धलियों (चौपाई के दो चरणों को अर्द्धली कहते हैं) के पश्चात् एक-एक दोहे का प्रयोग किया गया है। शेख नबी की रचना ज्ञानद्वीप है।

45. “हिन्दू मग पर पाँव न राखेउँ,

का जौ बहुतै हिन्दी भाखेउँ”

यह उक्ति किस रचना और रचनाकार से सम्बन्धित है?

- (a) नूर मुहम्मद - इन्द्रावती
(b) उस्मान - चित्रावली
(c) नूर मुहम्मद - अनुराग बाँसुरी
(d) कासिमशाह - हँस जवाहिर

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

नूर मुहम्मद दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के समकालीन थे और ‘सबरहद’ नामक स्थान के रहने वाले थे, जो जौनपुर-आजमगढ़ की सरहद पर है। इन्होंने 1157 हिजरी (संवत् 1801) में ‘इन्द्रावती’ नामक एक सुन्दर आख्यान काव्य लिखा, जिसमें कालिंजर के राजकुमार राजकुँवर और आगमपुर की राजकुमारी इन्द्रावती की प्रेम कहानी है। ‘इन्द्रावती’ की रचना करने पर शायद नूर मुहम्मद को समय-समय पर यह उपालम्भ सुनने को मिलता था कि तुम मुसलमान होकर हिन्दी भाषा की रचना करने क्यों गये? इसी से ‘अनुराग बाँसुरी’ के आरम्भ में इन्हें यह सफाई देने की जरूरत पड़ी।

हिन्दू मग पर पाँव न राखेउँ

का जौ बहुतै हिन्दी भाखेउँ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ नूर मुहम्मद फारसी के अच्छे आलिम थे। फारसी में इन्होंने एक दिवान के अतिरिक्त ‘शैजतुल हकायक’ इत्यादि बहुत-सी पुस्तकें लिखी थीं।
- ☛ अनुराग बाँसुरी की रचना काल 1178 हिजरी अर्थात् 1821 ई. है।

46. हिन्दी भाषा में रचना करने पर किस सूफी कवि को मुसलमानों का उपालम्भ सुनने को मिला था?

- (a) जायसी (b) उस्मान
(c) शेख नबी (d) नूर मुहम्मद

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. सूफी काव्य-परम्परा का एक ग्रन्थ है ‘इन्द्रावती’। इसके रचनाकार थे—

- (a) जायसी (b) कासिम शाह
(c) मंझान (d) नूर मुहम्मद

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

☐ रामभक्ति काव्य

1. स्वामी अग्रदास किस काव्यधारा के कवि हैं?

- (a) निर्गुण सन्त-काव्यधारा (b) प्रेमाश्रयी-काव्यधारा
(c) रामभक्ति-काव्यधारा (d) कृष्ण भक्ति-काव्यधारा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

स्वामी अग्रदास रामभक्ति-शाखा के प्रमुख कवि थे। इस शाखा के प्रमुख कवि हैं-रामानन्द, तुलसीदास, नाभादास, प्राणचंद चौहान, केशवदास आदि। स्वामी अग्रदास, कृष्णदास पयहारी के शिष्य थे। इनकी रचनाएँ हैं- हितोपदेश उपखाणां बावनी, ध्यान मंजरी, रामध्यान मंजूरी तथा कुंडलियाँ।

2. गोस्वामी जी के पिता का नाम था—

- (a) गंगाराम (b) आत्माराम
(c) देवतादीन (d) इनमें से कोई नहीं है।

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

जनश्रुति के अनुसार, गोस्वामी जी के पिता का नाम आत्माराम दूबे और माता का नाम हुलसी था। बाबा नरहरिदास ने इनका पालन-पोषण किया तथा ज्ञान-भक्ति की शिक्षा-दीक्षा भी दी। गोस्वामी जी का विवाह दीनबन्धु पाठक की कन्या रत्नावती से हुआ था।

3. “गोद लिए हुलसी फिरें, तुलसी सो सुत होया” यह पंक्ति इनमें से किस कवि की है?

- (a) प्राणचन्द्र चौहान (b) नाभादास
(c) नरोत्तमदास (d) रहीम

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

हिन्दू अवतार पुरुषों के प्रति रहीमदास जी बहुत आदर की भावना रखते थे। इसीलिए तुलसीदास और रहीम जी के बीच परस्पर अवतारवाद पर भी चर्चा होती रहती थी। दोनों के बीच पत्र व्यवहार भी होता रहता था। एक समय एक ब्राह्मण अपनी कन्या के विवाह हेतु धन की याचना करने गोस्वामी तुलसीदास जी के पास आया। उन्होंने दोहे की एक पंक्ति लिखकर उसके हाथ रहीम के पास भिजवा दिया।

सुरतिय, नरतिय, नागतिय, यह चाहत सब कोया।
रहीम ने ब्राह्मण को वांछित धन दिया और दोहे की पूर्ति कर उसे वापस तुलसीदास के पास भेज दिया, जो इस प्रकार है- गोद लिए हुलसी फिरें, तुलसी सो सुत होया।

4. “गोद लिए हुलसी फिरें तुलसी सो सुत होया” पंक्ति का लेखक कौन सा भक्त कवि है?

- (a) सूरदास (b) रसखान
(c) रहीम (d) नरहरिदास

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. तुलसी की भक्ति का स्वरूप क्या था?

- (a) दास्य (b) सख्य
(c) वात्सल्य (d) मातृ

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

तुलसी की भक्ति दास्य भाव से ओत-प्रोत है। यही कारण है कि तुलसी राम के सम्मुख विनम्र रहे हैं।

6. अवधी भाषा के सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य का नाम है—

- (a) पद्मावत (b) मधुमालती
(c) मृगावती (d) रामचरितमानस

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

‘रामचरितमानस’ अवधी भाषा का सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य है। यह रामकथा पर आधारित है, जिसकी रचना काशी, चित्रकूट और अयोध्या में हुई। इसकी रचना संवत् 1631 वि. (1574 ई.) में तुलसीदास ने की। इसे पूर्ण होने में लगभग 2 वर्ष 7 माह 26 दिन लगा।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➤ रामचरितमानस दोहा-चौपाई शैली में लिखा गया महाकाव्य है, जिसमें सात काण्ड हैं—बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड।

7. ‘रामचरितमानस’ किस भाषा में लिखी गयी रचना है?

- (a) राजस्थानी (b) भोजपुरी
(c) अवधी (d) ब्रजभाषा

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. राम-कथा पर आधारित तुलसीदास के महाकाव्य का क्या नाम है?

- (a) भरत मिलाप (b) रामचरितमानस
(c) रामरक्षा स्तोत्र (d) रामचन्द्रिका

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. रामचरितमानस की भाषा है—

- (a) अवधी (b) ब्रज
(c) मैथिली (d) खड़ी बोली

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना किस संवत् में की थी?

- (a) संवत् 1631 (b) संवत् 1637
(c) संवत् 1649 (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. रामचरितमानस में कुल कितने काण्ड हैं?

- (a) 15 (b) 10
(c) 7 (d) 8

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. रामचरितमानस में कुल कितने काण्ड हैं?

- (a) 10 (b) 7
(c) 12 (d) 15

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'रामचरितमानस' में वीभत्स रस का प्रयोग किन काण्डों में मिलता है?

- (a) अरण्यकाण्ड और लंकाकाण्ड
(b) सुन्दरकाण्ड और उत्तरकाण्ड
(c) बालकाण्ड और अयोध्याकाण्ड
(d) उपर्युक्त सभी काण्डों में

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

'रामचरितमानस' के 'अरण्यकाण्ड' में करुण तथा वीभत्स एवं 'लंकाकाण्ड' में वीर, भयानक तथा वीभत्स रस का प्रयोग मिलता है।

14. इनमें से कौन-सा महाकाव्य अवधी में लिखा गया है?

- (a) प्रियप्रवास (b) साकेत
(c) रामचरितमानस (d) रामचन्द्रिका

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

'रामचरितमानस' अवधी भाषा में लिखा गया महाकाव्य है। प्रियप्रवास तथा साकेत खड़ी बोली के महाकाव्य हैं, जबकि रामचन्द्रिका की रचना ब्रजभाषा में हुई है। इसमें छन्दों एवं अलंकारों का वर्णन है।

15. 'अरथ न धरम न काम रुचि, गति न चहुँ निरबान।

जनम जनम रति राम पद, यह बरदानु न आन।'

'रामचरितमानस' में यह आकांक्षा निम्नलिखित में से किसकी है?

- (a) भरत (b) शबरी
(c) सुग्रीव (d) हनुमान

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त पंक्तियाँ तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकाण्ड' से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से भरत कहते हैं कि मुझे न अर्थ की रुचि (इच्छा) है, न धर्म की, न काम की और न मैं मोक्ष ही चाहता हूँ। जन्म-जन्म में मेरा श्रीराम जी के चरणों में प्रेम हो, बस यही वरदान माँगता हूँ, दूसरा कुछ नहीं।

16. अवधी एवं ब्रजभाषा दोनों में रचना करने वाले कवि हैं-

- (a) सूरदास (b) तुलसीदास
(c) घनानन्द (d) उपर्युक्त सभी

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

अवधी एवं ब्रजभाषा दोनों में रचना करने वाले कवि गोस्वामी तुलसीदास हैं। उन्हें 'हिन्दी का जातीय कवि' कहा जाता है। उन्होंने हिन्दी क्षेत्र की मध्यकाल में प्रचलित दोनों काव्य भाषाओं में ब्रजभाषा और अवधी में समान अधिकार से रचना की। वस्तुतः तुलसी ने गीतावली, कवितावली आदि में मुक्तक में कथा कही।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- तुलसीदास द्वारा रचित बारह ग्रन्थ प्रामाणिक माने जाते हैं—वैराग्य संदीपनी, रामललानहछू, रामाज्ञा प्रश्न, बरवै रामायण, जानकी मंगल, श्रीकृष्ण गीतावली, पार्वती मंगल, गीतावली, दोहावली, कवितावली, विनयपत्रिका, रामचरितमानस।
- 'रामाज्ञा प्रश्न' में सात सर्ग हैं, प्रत्येक सर्ग में सात कोष्ठक हैं और प्रत्येक कोष्ठक में सात दोहे हैं। तुलसीदास ने रामाज्ञा प्रश्न की रचना मात्र छह घंटे में की थी।

17. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना तुलसीदास की नहीं है?

- (a) रामचन्द्रिका (b) कवितावली
(c) गीतावली (d) विनयपत्रिका

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. इनमें से कौन-सी रचना तुलसीदास की नहीं है?

- (a) रामचरितमानस (b) कवितावली
(c) गीतावली (d) साकेत

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. भक्तिकाल के किस कवि को जातीय कवि कहा जाता है?

- (a) सूरदास (b) तुलसीदास
(c) नाभादास (d) नन्ददास

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. 'वैराग्य संदीपनी' किस कवि की रचना है?

- (a) तुलसीदास (b) सूरदास
(c) कबीरदास (d) नन्ददास

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. 'वैराग्य संदीपनी' के रचनाकार हैं-

- (a) सूरदास (b) रहीम
(c) तुलसीदास (d) नन्ददास

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. इनमें से कौन-सा कथन असत्य है?

- (a) ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि निराकार की उपासना करते हैं।
(b) कबीर सन्त कवि हैं।
(c) 'प्रभुजी तुम चंदन हम पानी' रैदास की पंक्ति है।
(d) सन्त तुलसीदास ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि हैं।

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि निराकार की उपासना करते हैं। कबीर सन्त कवि हैं। 'प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी' रैदास की पंक्ति है। सन्त तुलसीदास रामाश्रयी शाखा के कवि हैं। अतः स्पष्ट है कि विकल्प (d) असत्य है।

23. भक्तिकाल की रामाश्रयी शाखा के निम्न में से कौन-से कवि हैं?

- (a) सूरदास (b) मीराबाई
(c) जायसी (d) तुलसीदास

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. निम्नलिखित विकल्पों में से जो रामभक्ति काव्य की विशेषता नहीं है, उसे छँटिए-

- (a) विष्णु के अवतार-रूप में राम का वर्णन
(b) लोकमंगल एवं समन्वय भावना का प्रतिपादन
(c) असद् पर सद्वृत्तियों की विजय
(d) कृष्ण की विविध लीलाओं का गायन

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

कृष्ण की विविध लीलाओं का गायन रामभक्ति काव्य की विशेषता नहीं है बल्कि, यह कृष्णभक्ति काव्य की विशेषता है। शेष रामभक्ति काव्य की विशेषताएँ हैं।

25. तुलसीदास कृत 'विनय पत्रिका' रचित है—

- (a) ब्रजभाषा में (b) अवधी में
(c) खड़ी बोली में (d) वैदिक संस्कृत में

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'विनय पत्रिका' की रचना ब्रजभाषा में है। इसमें स्वामी की सेवा में करुणतम शब्दों में अपनी दीनता का निवेदन किया गया है। विनय पत्रिका का अर्थ है- 'अर्जी प्रस्तुत की है।' इसमें दरबारी शिष्टाचार का पूर्ण निर्वाह हुआ है।

26. विनय पत्रिका की भाषा है-

- (a) अवधी (b) ब्रजभाषा
(c) ब्रज मिश्रित अवधी (d) खड़ीबोली

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. विनय पत्रिका की भाषा है-

- (a) ब्रज (b) अवधी
(c) भोजपुरी (d) मैथिली

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. 'विनय पत्रिका' नामक ग्रन्थ की रचना की है-

- (a) मल्लूकदास (b) गोस्वामी तुलसीदास
(c) विक्रमादित्य (d) केशवदास

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. 'कृष्णगीतावली' ग्रन्थ के रचनाकार हैं-

- (a) सूरदास (b) तुलसीदास
(c) नन्ददास (d) मीराबाई

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'कृष्णगीतावली' गोस्वामी तुलसीदास का ब्रजभाषा में रचित अत्यन्त मधुर व रसमय गीतिकाव्य है। इसमें कृष्ण की बाल्यावस्था और 'गोपी-उद्धव' संवाद के प्रसंग कवित्व शैली में हैं। कृष्णगीतावली में कुल 61 पद हैं। इसके कुछ पद 'सूरसागर' में भी पाए जाते हैं।

30. 'कृष्णगीतावली' नामक काव्य-ग्रन्थ के रचयिता हैं-

- (a) तुलसीदास (b) सूरदास
(c) रैदास (d) केशवदास

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'कृष्णगीतावली' के रचनाकार हैं-

- (a) तुलसी (b) सूरदास
(c) कबीर (d) रामानन्द

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. 'कृष्णगीतावली' नामक काव्य कृति के रचनाकार हैं-

- (a) सूरदास (b) मीराबाई
(c) नरोत्तमदास (d) तुलसी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. 'कृष्णगीतावली' नामक काव्य कृति के रचयिता हैं-

- (a) कबीर (b) तुलसी
(c) सूर (d) मीराबाई

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. इनमें से कौन-सा ग्रन्थ तुलसी द्वारा रचित नहीं है?

- (a) गीतावली (b) दोहावली
(c) विनय पत्रिका (d) रसमंजरी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

रसमंजरी, नन्ददास की रचना है। यह नायिकाभेद की पुस्तक है, जो भानुदत्त की रसमंजरी के आधार पर रचित है। शेष रचनाएँ तुलसीदास द्वारा रचित हैं।

35. तुलसीदास जी ने भी 'भ्रमरगीत-परम्परा' के अन्तर्गत 'भ्रमरगीत' की रचना की है, जो संकलित है-

- (a) जानकी मंगल में (b) कृष्णगीतावली में
(c) गीतावली में (d) कवितावली में

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

तुलसीदास जी की समस्त रचनाओं में 'कृष्ण विषयक' केवल एक रचना 'कृष्णगीतावली' ही उपलब्ध होती है। जिस प्रकार इनके द्वारा रचित 'गीतावली' में राम सम्बन्धी पद संग्रहीत हैं, उसी प्रकार 'कृष्णगीतावली' में कृष्ण सम्बन्धी 61 पद संग्रहीत हैं। इन पदों में कृष्ण की बाललीला एवं भ्रमरगीत प्रसंग का विशेष रूप से वर्णन मिलता है। कृष्णगीतावली के भ्रमरगीत सम्बन्धी पदों में 'भ्रमर' का स्पष्ट उल्लेख न होकर उद्धव के लिए 'मधुकर', 'मधुप' आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। इन पदों में गोपियों के मर्यादा मण्डित रूप का परिचय मिलता है। सूर की गोपियों की-सी प्रगल्भता के दर्शन तुलसी की गोपियों में नहीं होते। नन्ददास की गोपियों के समान वाक्पटु और तर्कशील भी नहीं हैं। इनमें आद्यान्त भावुकता, दीनता, विनयशीलता, झिझक और शालीनता के दर्शन होते हैं। वे सरल स्वभाव की विश्वासमयी भक्त नारियाँ हैं। इनमें प्रेम-लक्षणा भक्ति के प्रति दृढ़ आस्था एवं विश्वास है। उनका एकमात्र लक्ष्य अपने प्रियतम का साक्षात्कार है।

36. भक्तिकाल के किस कवि ने संस्कृत को छोड़कर भी संस्कृत की शास्त्रीय परम्परा का निर्वहन किया है?

- (a) जायसी (b) सूरदास
(c) तुलसीदास (d) नन्ददास

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

तुलसीदास ने अवधी में लेखन के साथ संस्कृत की परम्परा को अक्षुण्ण रखा। तुलसीदास ने अपने काव्य में छन्द का समुचित निर्वाह किया है।

37. 'गीतावली' है-

- (a) मुक्तक काव्य (b) अतुकांत काव्य
(c) प्रबन्ध काव्य (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'गीतावली' गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित मुक्तक काव्य है। तुलसी जिस प्रकार ब्रजभाषा और अवधी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखते हैं, उसी प्रकार प्रबन्ध और मुक्तक दोनों की रचना में भी कुशल हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने गीतावली और कवितावली आदि में मुक्तक कथा कही है।

38. 'रामचरितमानस' का ज्ञानदीपक प्रसंग किस काण्ड में वर्णित है?

- (a) उत्तरकाण्ड (b) अयोध्याकाण्ड
(c) बालकाण्ड (d) अरण्यकाण्ड

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

गोस्वामी तुलसीदास जी ने उत्तरकाण्ड में श्री राम-वशिष्ठ संवाद, नारद जी का अयोध्या आकर रामचन्द्र जी की स्तुति करना, शिव-पार्वती संवाद, गरुड़ मोह तथा गरुड़ जी का काकभुशुण्डि जी से रामकथा एवं राम-महिमा सुनना, काकभुशुण्डि जी के पूर्वजन्म की कथा, ज्ञान-भक्ति निरूपण, ज्ञानदीपक और भक्ति की महान महिमा, गरुड़ के सात प्रश्न और काकभुशुण्डि जी के उत्तर आदि विषयों का विस्तृत वर्णन किया है।

39. 'रामचरितमानस' से किस संवाद का सम्बन्ध नहीं है?

- (a) शिव-पार्वती संवाद (b) याज्ञवल्क्य-भरद्वाज संवाद
(c) राम-सीता संवाद (d) काकभुशुण्डि-गरुड़ संवाद

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(*)

रामचरितमानस का सम्बन्ध विकल्प में दिये गये सभी संवादों से है।

40. नीचे दो वाक्य दिये गये हैं, इनमें एक को कथन (A) तथा दूसरे को कारण (R) की संज्ञा दी गई है

कथन (A) : राम काव्य का प्रतिपाद्य विषय धार्मिक और भक्ति प्रधान है, इसलिए कवियों ने भगवान राम की प्रतिष्ठा में संस्कृत शब्दावली को अधिक स्वीकार किया है।

कारण (R) : जहाँ धर्म और दर्शन का प्रसंग हो तथा उच्च काव्य सौष्ठव दिखाना हो, वहाँ तत्सम की प्रधानता स्वाभाविक है।

उपर्युक्त वक्तव्यों (A) और (R) सन्दर्भ में इनमें से कौन-सा सही है?

- (a) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (A) की सही व्याख्या (R) है।
(b) (A) गलत और (R) सही है तथा (A) की सही व्याख्या (R) नहीं है।
(c) (A) और (R) दोनों गलत हैं तथा (A) की सही व्याख्या (R) है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं तथा (A) की सही व्याख्या (R) नहीं है।

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

राम काव्य का प्रतिपाद्य विषय धार्मिक और भक्ति प्रधान है, इसलिए कवियों ने भगवान राम की प्रतिष्ठा में संस्कृत शब्दावली को अधिक स्वीकार किया है, यह कथन सही नहीं है। जहाँ धर्म और दर्शन का प्रसंग हो तथा उच्च काव्य सौष्ठव दिखाना हो, वहाँ तत्सम की प्रधानता स्वाभाविक है। अतः (A) गलत है और (R) सही है तथा (A) की सही व्याख्या (R) नहीं है।

□ कृष्णभक्ति काव्य

1. सूरदास के विषय में कौन-सा कथन गलत है?

- (a) सूरदास को सभी विद्वान जन्मान्ध मानते हैं।
(b) सूरदास, श्रीनाथ मंदिर, वृन्दावन में कीर्तन करते थे।
(c) सूरदास वल्लभाचार्य के शिष्य थे।
(d) "प्रभु हैं सब पतितन को राजा।"

परनिंदा मुख पूरि रह्यौ जग, यह निसान नित बाजा।।"

पंक्तियाँ सूरदास द्वारा लिखित हैं।

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

"भाव प्रकाश" (हरिराय कृत), "निजवार्ता" (गोकुलनाथ कृत) के आधार पर सूरदास अंधे माने गए हैं, किंतु राधा-कृष्ण के रूप सौंदर्य का सजीव चित्रण, नाना रंगों का वर्णन, सूक्ष्म पर्यवेक्षणशीलता आदि गुणों के कारण अधिकतर विद्वान सूरदास को जन्मान्ध स्वीकार नहीं करते। श्यामसुंदर दास ने लिखा है, "सूर वास्तव में जन्मान्ध नहीं थे, क्योंकि शृंगार तथा रंग-रूपादि का जो वर्णन उन्होंने किया है, वैसा कोई जन्मान्ध नहीं कर सकता।" हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है, "सूरसागर के कुछ पदों में यह ध्वनि अवश्य निकलती है कि सूरदास अपने को जन्म का अन्धा और कर्म का अभागी कहते हैं, पर सब समय इनके अक्षरार्थ को ही प्रधान नहीं मानना चाहिए।" अन्य कथन सही हैं।

2. सूरदास किस काल के कवि थे?

- (a) रीतिकाल (b) भक्तिकाल
(c) आधुनिक काल (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

भक्तिकालीन के कृष्णभक्ति काव्यधारा के अन्तर्गत आने वाले प्रमुख कवि हैं—सूरदास, नन्ददास, कृष्णदास, परमानन्ददास, कुम्भनदास, चतुर्भुजदास, मीराबाई, रसखान, ध्रुवदास तथा चैतन्य महाप्रभु आदि।

3. सूरदास कौन-सी धारा के प्रतिनिधि कवि हैं?

- (a) कृष्ण काव्यधारा (b) राम काव्यधारा
(c) सन्त काव्यधारा (d) सूफी काव्यधारा

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. सूरदास ने किस कृति को नहीं लिखा?

- (a) सूर सारावली (b) दोहावली
(c) साहित्य लहरी (d) सूरसागर

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

सूरदास ने 'दोहावली' नहीं लिखा, बल्कि यह रचना तुलसीदास की है। डॉ. दीनदयाल गुप्त ने सूरदास द्वारा रचित पच्चीस पुस्तकों की सूचना दी है, जिनमें प्रमुख हैं—सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी, सूरपचीसी, सूररामायण, सूरसाठी और राधा रसकेलि।

5. इनमें से सूरदास की कृति कौन-सी है?

- (a) कवितावली (b) साहित्य लहरी
(c) गीतावली (d) गंगालहरी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'सूरसागर' किस भाषा की कृति है?

- (a) खड़ी बोली (b) ब्रजभाषा
(c) अवधी (d) पंजाबी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल प्रमाणों के अभाव में सूरसागर को ब्रजभाषा की पहली रचना मानते हैं।

7. इनमें से सूर की रचना कौन-सी नहीं है?

- (a) सूरसागर (b) सूर सारावली
(c) साहित्य लहरी (d) रासपंचाध्यायी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

रासपंचाध्यायी की रचना नन्ददास ने की है। शेष रचनाएँ सूरदास की हैं।

8. सूरदास किस रस का कौन-कोना झँक आये हैं?

- (a) शान्त (b) करुण
(c) मैत्री (d) वात्सल्य

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

वात्सल्य भाव अत्यन्त कोमल और शाश्वत भाव है। जब तक सृष्टि रहेगी, इस भाव की वर्तमानता भी रहेगी। सूरदास के लिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा था कि वे वात्सल्य रस का कौन-कोना झँक आये हैं।

9. 'सैय्यद इब्राहीम' का कविनाम है—

- (a) जान कवि (b) आलम
(c) रसखान (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

रसखान का वास्तविक नाम सैय्यद इब्राहीम था। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—सुजान रसखान और प्रेमवाटिका इत्यादि। रसखान का वृत्तांत दो सौ वैष्णवन की वार्ता में मिलता है और उससे ज्ञात होता है कि लौकिक प्रेम से कृष्ण-प्रेम की ओर उन्मुख हुए। इनकी प्रसिद्ध कृति प्रेमवाटिका का रचनाकाल 1614 ई. है। ये गोसाई विठ्ठलनाथ के शिष्य थे। रसखान को सवैया छन्द सिद्ध था। जितने सरस, सहज, प्रवाहमय सवैये रसखान के हैं, उतने शायद ही किसी अन्य कवि के हों। रसखान ने सूफियों का हृदय लेकर कृष्ण की लीला पर काव्य रचे हैं।

10. 'प्रेमवाटिका' नामक ग्रन्थ रचित है—

- (a) रसखान द्वारा (b) रहीम द्वारा
(c) नन्ददास द्वारा (d) मीराबाई द्वारा

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. भक्तिकाल के किस कवि को 'जड़िया' विशेषण से विभूषित किया जाता है?

- (a) नन्ददास (b) परमानन्ददास
(c) सूरदास (d) चतुर्भुजदास

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

नन्ददास 16वीं शती के अन्तिम चरण के कवि थे। ये भक्तिकालीन कृष्णभक्ति काव्यधारा के कवि थे। ये हिन्दी के अष्टछाप के प्रमुख कवियों में सूरदास के बाद सबसे अधिक प्रसिद्ध हुए। इनके काव्य के विषय में यह उक्ति प्रसिद्ध है-‘और कवि गढ़िया, नन्ददास जड़िया’। इससे प्रकट होता है कि इनके काव्य का कला-पक्ष महत्वपूर्ण है। इनकी रचना बड़ी सरस और मधुर है। इनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक ‘रासपंचाध्यायी’ है, जो रोला छन्द में लिखी गयी है। नन्ददास की अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं- भागवत दशमस्कन्ध, रुक्मिणीमंगल, सिद्धान्त पंचाध्यायी, रूपमंजरी, मानमंजरी, विरहमंजरी, दानलीला, मानलीला, सुदामाचरित, भँवरगीत आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ‘अनेकार्थमंजरी’ एक प्रकार का पर्याय-कोश ग्रन्थ है।
- ‘मानमंजरी’ में भी ‘अमरकोश’ के आधार पर शब्दों के पर्यायवाची ही लिखे गये हैं।
- रूपमंजरी नन्ददास का लघु आख्यान काव्य है।
- भँवरगीत का मूल उद्देश्य निर्गुण-निराकार ब्रह्म की उपासना का खण्डन करते हुए सगुण साकार कृष्ण की भक्ति की स्थापना करना है।
- सिद्धान्त पंचाध्यायी कृष्ण की रासलीला से सम्बन्धित रचना है।
- नन्ददास का भँवरगीत सूर के भ्रमरगीत के समरूप ही माना जाता है, परन्तु दोनों में बड़ा अन्तर यह है कि जहाँ भ्रमरगीत में उद्धव, नन्द, यशोदा और साथ ही गोपियों के कृष्ण विरहजनित संताप को शान्त करने जाते हैं, वहीं नन्ददास के भँवरगीत में उद्धव के आने का प्रयोजन केवल गोपियों को समझाना है।

12. ‘नन्ददास’ किस काव्यधारा से सम्बन्धित हैं?

- | | |
|---------------------|------------------------|
| (a) सन्त काव्यधारा | (b) सूफी काव्यधारा |
| (c) कृष्ण काव्यधारा | (d) रामभक्ति काव्यधारा |

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. सुदामाचरित के लेखक हैं-

- | | |
|-------------|-----------------------|
| (a) सूरदास | (b) नन्ददास |
| (c) रत्नाकर | (d) इनमें से कोई नहीं |

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. भ्रमरगीत परम्परा में ‘भँवरगीत’ की रचना की है-

- | | |
|-------------|-----------------|
| (a) नन्ददास | (b) सूरदास |
| (c) रत्नाकर | (d) ब्रजवासीदास |

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. ‘रासपंचाध्यायी’ के लेखक हैं-

- | | |
|-------------|------------|
| (a) नन्ददास | (b) सूरदास |
| (c) रहीम | (d) कबीर |

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a&c)

नन्ददास ने रासपंचाध्यायी की रचना की है। इसी नाम से रहीम ने भी एक काव्य की रचना की है।

16. ‘मीराबाई का मलार’ किसकी कृति है?

- | | |
|---------------|-------------------|
| (a) मीराबाई | (b) नन्ददास |
| (c) छीतस्वामी | (d) गोविन्दस्वामी |

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

‘मीराबाई का मलार’ मीराबाई की कृति है। भक्तिकालीन साहित्य में मीराबाई ने कुल चार ग्रन्थों की रचना की थी—नरसी का मायरा, गीत गोविन्द टीका, रागगोविन्द, राग सोरठा आदि। इसके अतिरिक्त उनके गीतों का संकलन, ‘मीराबाई की पदावली’ नामक ग्रन्थ में किया गया है, जिसमें प्रमुख खण्ड हैं—नरसी जी का मायरा, मीराबाई मलार या मलार राग, गर्बा गीत य मीरा की गरबी, रुक्मिणीमंगल, नरसिंह मेहता की हुंडी, चरित आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मीराबाई रविदास (रैदास) की शिष्या थीं।
- मीराबाई ने चित्तौड़गढ़ में ‘रविदास छत्तरी’ का निर्माण कराया।

17. मीराबाई के गुरु कौन थे?

- | | |
|-------------|-------------|
| (a) सूरदास | (b) रैदास |
| (c) मलूकदास | (d) कबीरदास |

नवोदय विद्यालय (प्रावत्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. इनमें से पुष्टिमार्गी कवि कौन हैं?

- | | |
|-----------|-----------|
| (a) सूर | (b) कबीर |
| (c) जायसी | (d) तुलसी |

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

वल्लभाचार्य ने ब्रजमण्डल में जिस कृष्णभक्ति को प्रतिष्ठित किया, उसका दार्शनिक आधार शुद्धद्वैत दर्शन है। साधना और व्यवहार-क्षेत्र में शुद्धद्वैत दर्शन के साथ जिस भक्ति को स्थान दिया गया, उसका आधार उन्होंने 'पुष्टिमार्ग' को बनाया। भगवान के अनुग्रह या कृपा का नाम ही पोषण है, यही पुष्टि है और इसी पुष्टि पर पुष्टिमार्ग की भक्ति पद्धति अवलम्बित है। वल्लभाचार्य के अनुसार, पुष्टिमार्ग ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। उन्होंने भक्तों के चार भेद किये हैं—प्रवाहीपुष्ट भक्त, मर्यादापुष्टि भक्त, पुष्टिपुष्ट भक्त तथा शुद्धपुष्ट भक्त। जो भगवान के अनुग्रह पर निर्भर होकर भी मर्यादानुसार कर्म करते हैं, वे 'मर्यादापुष्टि' तथा जो केवल अनुग्रह (कृपा) का अवलम्बन लेते हैं, वे 'शुद्धपुष्टि' भक्त हैं। वल्लभाचार्य ने जिस पुष्टिमार्गीय भक्ति-सम्प्रदाय की स्थापना की थी, उसका जिन हिन्दी भक्त कवियों द्वारा पल्लवन किया गया, उन्हें 'अष्टछाप' के कवि कहा जाता है। इन 'अष्टछाप' कवियों में सूरदास भी शामिल थे। अतः वे पुष्टिमार्गी कवि हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वल्लभाचार्य द्वारा रचित ग्रन्थ का नाम 'अणुभाष्य' है। इनके अन्य ग्रन्थ भागवत की 'सुबोधिनी' टीका, भागवत तत्त्वदीप निबन्ध, पूर्व मीमांसा भाष्य, गयत्री भाष्य, शृंगाररसमण्डन, विद्वन्मण्डन, पत्रावलम्बन, पुरुषोत्तम सहस्रनाम आदि हैं।
- भागवत पुराण के अनुसार, भगवान का अनुग्रह ही पोषण या पुष्टि है। आचार्य वल्लभ ने इसी भाव के आधार पर अपना पुष्टिमार्ग चलाया। इसका मूल सूत्र उपनिषदों में पाया जाता है।
- कठोपनिषद में कहा गया है कि परमात्मा जिस पर अनुग्रह करता है, उसी को अपना साक्षात्कार कराता है।

19. श्रीमद् वल्लभाचार्य ने जिस कृष्णभक्ति को प्रतिष्ठित किया उसका दार्शनिक आधार है-

- (a) अद्वैत दर्शन (b) द्वैत दर्शन
(c) शुद्धद्वैत दर्शन (d) द्वैताद्वैत दर्शन

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. 'तत्त्वदीप निबन्ध' किसकी रचना है?

- (a) वल्लभाचार्य (b) निम्बाकाचार्य
(c) नाभादास (d) नन्ददास

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. निम्नलिखित में से किसने पुष्टिमार्ग की स्थापना की?

- (a) चैतन्य महाप्रभु (b) वल्लभाचार्य
(c) विठ्ठलनाथ (d) सूरदास

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. वल्लभाचार्य द्वारा रचित ग्रन्थ का नाम है-

- (a) सिद्धान्त संग्रह (b) अध्यात्म रामायण
(c) महाभाष्य (d) अणुभाष्य

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. कृष्ण काव्यधारा के प्रवर्तक हैं-

- (a) सूरदास (b) स्वामी वल्लभाचार्य
(c) नाभादास (d) चैतन्य महाप्रभु

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. इनमें से कृष्णभक्त कवि कौन-सा नहीं है?

- (a) सूरदास (b) रसखान
(c) कृष्णदास (d) तुलसीदास

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

सूरदास, रसखान तथा कृष्णदास कृष्णभक्त कवि हैं, जबकि तुलसीदास रामभक्त कवि हैं।

25. कई चिन्तन एवं कलाधाराओं का योगदान मिलता है-

- (a) कृष्णभक्ति धारा में (b) प्रेममार्गी धारा में
(c) भारतेन्दु युगीन धारा में (d) रीतिकाव्य धारा में

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

कई चिन्तन और कलाधाराओं का योगदान कृष्णभक्ति धारा में मिलता है। ये हैं- 1. वल्लभ सम्प्रदाय-वल्लभाचार्य, 2. निम्बार्क सम्प्रदाय-निम्बार्काचार्य 3. राधावल्लभ सम्प्रदाय-हितहरिवंश, 4. हरिदासी सम्प्रदाय-स्वामी हरिदास (सखी सम्प्रदाय) एवं 5. गौड़ीय सम्प्रदाय-चैतन्यमहाप्रभु (चैतन्य सम्प्रदाय)।

26. 'रुद्र सम्प्रदाय' की स्थापना किसने की?

- (a) रुद्र स्वामी (b) श्रीस्वामी
(c) विष्णुस्वामी (d) निम्बार्काचार्य

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

रुद्र सम्प्रदाय की स्थापना विष्णुस्वामी ने किया था, जबकि वास्तव में रुद्र सम्प्रदाय वल्लभाचार्य के प्रवर्तित सम्प्रदाय के रूप में जीवित है। इसलिए रुद्र सम्प्रदाय का संस्थापक वल्लभाचार्य को माना जाता है।

27. 'राधावल्लभ सम्प्रदाय' का प्रवर्तन किसने किया?

- (a) वल्लभाचार्य (b) मध्वाचार्य
(c) हितहरिवंश (d) सूरदास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

राधावल्लभ सम्प्रदाय का प्रवर्तन हितहरिवंश ने किया था। इनको 'कृष्ण की वंशी का अवतार' कहा जाता है। ये राधा को स्वतन्त्र अधिष्ठात्री देवी मानते हैं, जबकि वल्लभाचार्य रुद्र सम्प्रदाय, मध्वाचार्य द्वैतवाद ब्रह्म सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सहचरी सुख, रसिक दास, हिय अनूप जी और हित वृन्दावन दास राधावल्लभ सम्प्रदाय के कवि थे।
- सहचरी सुख ने रंग माल, रसिक दास ने चूड़ामणि हिय, अनूप जी ने माधुर्य विलास तथा हित वृन्दावन दास ने फुटकल कविताओं की रचना किया है।

28. कृष्ण के साथ राधा की महानता सम्प्रदाय की विशेषता है।

- (a) श्री (b) रुद्र
(c) ब्रह्म (d) सनकादि

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

निम्बार्क- सम्प्रदाय कृष्ण भक्ति से सम्बन्ध रखने वाला ब्रजमंडल का प्रमुख वैष्णव-सम्प्रदाय है। इस सम्प्रदाय के आदि उपदेष्टा श्री हंस भगवान हैं। उनसे सनत् सनकादि को उपदेश मिला। इसलिए इस सम्प्रदाय को सनकादि सम्प्रदाय भी कहते हैं। नारद मुनि ने इस उपदेश को ग्रहण कर इसे आचार्य निम्बार्क को दिया। इस सम्प्रदाय में ईश्वर को सगुण अवतारी श्रीकृष्ण के रूप में स्वीकार किया जाता है। कृष्ण भक्ति में राधा-कृष्ण का युगल भाव स्वीकृत है, वाम भाग में वृषभानुजा राधा के साथ विराजमान श्रीकृष्ण ही उपास्य हैं, कृष्ण लीलावतारी हैं, अतः श्री तथा लक्ष्मी दोनों रूपों में वे कृष्ण के साथ प्रकट होती हैं। निम्बार्क सम्प्रदाय में राधा का स्वकीया रूप स्वीकार किया गया है और भक्ति के पाँच रूपों में उज्ज्वल भक्ति का दाम्पत्य भक्ति को ही सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- निम्बार्क को भगवान कृष्ण के 'सुदर्शन चक्र का अवतार' माना जाता है।
- कुछ विद्वानों का मत है कि अत्यन्त सुन्दर होने के कारण इनको शैशवकाल में 'सुदर्शन' कहते थे।
- निम्बार्काचार्य ने अपने सिद्धान्तों की स्थापना के लिए पाँच ग्रन्थों का प्रणयन किया, जिनमें 'वेदान्त-पारिजात-सौरभ' ब्रह्मसूत्र पद स्वत्यकाय वृत्ति है, 'दशश्लोकी' भक्ति सिद्धान्त प्रतिपादक दस श्लोकों की सुप्रसिद्ध रचना है तथा 'श्रीकृष्णस्तवराज', मंत्ररहस्यषोडशी' और 'प्रपन्न-कल्पवल्ली' इनकी अन्य कृतियाँ हैं। निम्बार्क का दार्शनिक सिद्धान्त 'द्वैताद्वैतवाद' है।

29. निम्नलिखित में से कौन श्रीकृष्णभक्ति का सम्प्रदाय नहीं है?

- (a) श्रीवल्लभ सम्प्रदाय (b) हरिदासी सम्प्रदाय
(c) तत्सुखी सम्प्रदाय (d) गौड़ी सम्प्रदाय

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

महात्मा जीवाराम (1800-1857) ने 'सखी-भाव' की भक्ति को और पल्लवित किया तथा 'तत्सुखी शाखा' की स्थापना की। इस सम्प्रदाय के भक्त स्वयं स्त्री-वेश धारण कर राम की उपासना करते थे और सीता को सपत्नी मानते थे। शेष सम्प्रदाय कृष्णभक्ति सम्प्रदाय के हैं।

30. 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' का सम्बन्ध किस सम्प्रदाय से है?

- (a) सखी सम्प्रदाय (b) रामानुज सम्प्रदाय
(c) श्री सम्प्रदाय (d) वल्लभ सम्प्रदाय

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' का सम्बन्ध वल्लभ सम्प्रदाय से है, जबकि सखी सम्प्रदाय राधाकृष्ण की युगल उपासना, रामानुज सम्प्रदाय विशिष्टाद्वैत के अन्तर्गत वैष्णव धर्म और श्री सम्प्रदाय महालक्ष्मी की उपासना से सम्बन्धित है।

31. 'अष्टयाम' नामक पुस्तक में किसकी दिनचर्या का वर्णन है?

- (a) कृष्ण (b) राम
(c) विष्णु (d) शंकर

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(*)

‘अष्टयाम’ नामक पुस्तक में कृष्ण की दिनचर्या का वर्णन है। मध्यकालीन गौड़ीय वैष्णवों और हितवंशी कृष्णोपासकों ने राधा-कृष्ण के अष्टयाम को ही अपना वर्ण्य विषय बनाया। राधा-कृष्ण की क्रीड़ा की अखण्ड स्मरण भावन रागानुराग भक्ति का मूल तत्व है। ‘अष्टयाम’ की परम्परा पद्म पुराण के पाताल खण्ड में भी दिखायी पड़ती है। ‘अष्टयाम’ की रचना कई लोगों द्वारा की गई है। जीवाराम ने अपनी अष्टयाम रचना में ‘सीताराम’ की अष्टयाम लीला का वर्णन किया है। कुछ ने अपनी रचना में ‘राम’ की लीला का वर्णन किया है। यही कारण है कि उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपने प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) माना था, किन्तु तृतीय संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

32. छीतस्वामी किस धारा के कवि हैं?

- (a) रामभक्ति धारा (b) अष्टछाप धारा
(c) प्रेममार्गी धारा (d) निर्गुणमार्गी धारा

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

छीतस्वामी, अष्टछाप धारा के कवि थे। छीतस्वामी मथुरा के निवासी थे। इनका प्रारम्भिक जीवन अत्यधिक उच्छृंखल और उद्विग्न था। ये कविता और संगीत दोनों में निपुण थे। उनके द्वारा रचित पदों की संख्या 64 बतायी जाती है। ‘छीतस्वामी’ शीर्षक से उनके पदों का संकलन प्रकाशित है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ‘अष्टछाप’ की स्थापना 1565 ई. में गोस्वामी विठ्ठलनाथ ने की।
- इन आठ भक्त कवियों में वल्लभाचार्य के चार शिष्य थे—सूरदास, कुम्भनदास, परमानन्ददास और कृष्णदास।
- गोस्वामी विठ्ठलनाथ के चार शिष्य थे—गोविन्द स्वामी, नन्ददास, छीतस्वामी और चतुर्भुजदास।
- ये आठों भक्त श्रीनाथ जी की नित्य-लीला में अन्तरंग सखाओं के रूप में सदैव उनके साथ-साथ रहते थे, इसी मान्यता के आधार पर इन्हें ‘अष्टसखा’ कहते हैं।
- वल्लभ सम्प्रदाय में सेवाविधि का बहुत ही सांगोपांग वर्णन है और अष्टयाम की सेवा—मंगलाचरण, शृंगार, ग्वाल, राजयोग, उत्थापन, भोग, संध्या-आरती और शयन को इस सम्प्रदाय में बड़े समारोह से स्वीकार किया गया है।

33. अष्टछाप की स्थापना 1565 ई. में किसने की थी?

- (a) गोकुलनाथ (b) विठ्ठलनाथ
(c) वल्लभाचार्य (d) निम्बार्काचार्य

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. ‘अष्टछाप’ की स्थापना किसने की?

- (a) वल्लभाचार्य (b) विठ्ठलनाथ
(c) सूरदास (d) नाभादास

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. अष्टछाप के संस्थापक हैं—

- (a) विठ्ठलनाथ (b) वल्लभाचार्य
(c) सूरदास (d) गोविन्द स्वामी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. ‘अष्टछाप’ की स्थापना का श्रेय किस आचार्य को है?

- (a) वल्लभाचार्य
(b) विठ्ठलनाथ
(c) हितहरिवंश
(d) कुम्भननाथ

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. अष्टछाप के संस्थापक थे—

- (a) रामानन्द (b) वल्लभाचार्य
(c) रामानुज (d) विठ्ठलनाथ

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. अष्टछाप में कौन सम्मिलित नहीं है?

- (a) कुम्भनदास (b) छीतस्वामी
(c) केशवदास (d) नन्ददास

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. ‘सूरदास’ किसके शिष्य थे?

- (a) वल्लभाचार्य (b) गोकुलनाथ
(c) विठ्ठलनाथ (d) नाभादास

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. नीचे दिए गए नामों में से कौन-से कवि वल्लभाचार्य के शिष्य नहीं हैं?

- (a) चतुर्भुजदास (b) सूरदास
(c) कुम्भनदास (d) परमानन्ददास

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. निम्न में से कौन विठ्ठलनाथ का शिष्य था?

- (a) सूरदास (b) चतुर्भुजदास
(c) परमानन्ददास (d) कृष्णदास

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. इनमें से एक कवि 'अष्टछाप' में नहीं है—

- (a) कृष्णदास (b) चतुर्भुजदास
(c) छीतस्वामी (d) गोविन्ददास

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. 'अष्टछाप' के प्रमुख कवि 'नन्ददास' किसके शिष्य थे?

- (a) वल्लभाचार्य (b) विठ्ठलनाथ
(c) रामानन्द (d) निम्बार्काचार्य

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. 'अष्टछाप' के प्रमुख कवि 'नन्ददास' किसके शिष्य थे?

- (a) वल्लभाचार्य (b) रामानन्द
(c) विठ्ठलनाथ (d) विनोवाचार्य

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. वल्लभाचार्य के शिष्य नहीं हैं—

- (a) कुम्भनदास (b) चतुर्भुजदास
(c) सूरदास (d) परमानन्ददास

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. निम्नलिखित में से अष्टछाप के कवि नहीं हैं—

- (a) सूरदास (b) मलूकदास
(c) नन्ददास (d) छीतस्वामी

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

मलूकदास अष्टछाप के कवि नहीं, बल्कि भक्तिकाल के ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि थे। इनका जन्म कौशाम्बी के कड़ा ग्राम में हुआ। इन्होंने ज्ञान बोध, रतनखान, भक्ति विवेक आदि अनेक ग्रन्थ रचे। इनका काव्य ध्रुवचरित भी प्रसिद्ध है। इनकी रचना दोहे-चौपाइयों में तथा भाषा अवधी है।

47. निम्नलिखित में से 'अष्टछाप' के अन्तर्गत न पड़ने वाले कवि का नाम है—

- (a) कुम्भनदास (b) सुन्दरदास
(c) नन्ददास (d) परमानन्ददास

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

सुन्दरदास अष्टछाप के कवि नहीं हैं। सूर, तुलसी व कबीर की तरह ही सन्त कवि सुन्दरदास भक्तिकाल के प्रमुख पथ प्रदर्शक के रूप में उभरे। सन्त सुन्दरदास ने 48 आध्यात्मिक अनुभूति ग्रन्थों की रचना की। सन्त सुन्दरदास ने काशी जाकर संस्कृत, हिन्दी, पुराण व वेदान्त का गहन अध्ययन कर ज्ञान अर्जित किया। भक्तिकाल के सन्त कवियों के मुकाबले सन्त सुन्दरदास सर्वाधिक ज्ञानी, शिक्षित व भाषा साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित थे। सन्त सुन्दरदास द्वारा रचित ग्रन्थों में 'ज्ञान समुद्र' एवं 'सुन्दर विलास' लोकप्रिय ग्रन्थ हैं। 'ज्ञान समुद्र' सुन्दरदास का सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ है।

48. निम्नलिखित में से कौन-सा कवि 'अष्टछाप' का कवि नहीं था?

- (a) नन्ददास (b) परमानन्ददास
(c) छीतस्वामी (d) हरिव्यास देव

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

हरिव्यास देव 'अष्टछाप' के कवि नहीं, बल्कि निम्बार्काचार्य सम्प्रदाय के कवि हैं। नाभादास द्वारा दी गई सूचनानुसार श्रीभट्ट के सुयोग्य शिष्य हरिव्यास हैं। हरिव्यास देव का निम्बाई सम्प्रदाय में वही स्थान है, जो वल्लभीय सम्प्रदाय में सूरदास का है। हरिव्यास देव ने निम्बार्क सम्प्रदाय का संगठन नए सिरे से किया। अपने सम्प्रदाय में उन्होंने 'रसिक-सम्प्रदाय' का प्रवर्तन किया। इस शाखा को 'हरिव्यासी' भी कहा जाता है। वे मधुर भाव के उपासक थे। ऋषिता में वे अपना नाम 'हरिप्रिया' रखते थे। हरिव्यास देव ने कई शाक्तों को वैष्णव बनाया और उनमें भक्ति का संचार किया।

49. निम्नांकित में कौन अष्टछाप का कवि नहीं है?

- (a) कुम्भनदास (b) स्वामी हरिदास
(c) परमानन्ददास (d) छीतस्वामी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

स्वामी हरिदास अष्टछाप कवि नहीं है। इन्हीं के नाम से हरिदासी सम्प्रदाय का नामकरण हुआ है। सखी भाव प्रधान सम्प्रदाय होने के कारण इस सम्प्रदाय को 'सखी सम्प्रदाय' भी कहा जाता है। प्रभुदयाल मीतल के अनुसार, इनका समय सोलहवीं-सत्रहवीं शती है। स्वामी हरिदास संगीत कला के मर्मज्ञ थे, किन्तु ये एक मात्र भगवान को रिझाने के लिए गाते थे और अकबरी दरबार के विख्यात गायक तानसेन इन्हीं के शिष्य थे। रससिद्ध भक्त कवि हरिदास जी ने ध्रुपद शैली में शृंगार-भक्ति के गेय पदों की रचना की है। इनमें से 108 पद केलिमाल के नाम से प्रसिद्ध हैं।

50. 'हरिदास सम्प्रदाय' को अन्य नाम से भी पुकारा जाता है। यह नाम है—

- (a) अष्टछाप सम्प्रदाय (b) राधावल्लभ सम्प्रदाय
(c) सखी सम्प्रदाय (d) चित्वाचित्य सम्प्रदाय

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

51. 'जुगलमान चरित्र' नामक ग्रन्थ के लेखक हैं—

- (a) नन्ददास (b) कृष्णदास
(c) चतुर्भुजदास (d) छीतस्वामी

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

सूरदास और नन्ददास के पश्चात कृष्णदास अष्टछाप कवियों में तीसरे स्थान पर आते हैं। वल्लभाचार्य ने इन्हें पुष्टिमार्ग में दीक्षित किया। इनके द्वारा रचित तीन रचनाएँ हैं—भ्रमरगीत, प्रेमतत्व तथा जुगलमान चरित्र। जुगलमान चरित्र में राधा-कृष्ण का प्रेम वर्णित है और शृंगारिकता के कारण यह अधिक प्रसिद्ध हुआ।

52. भ्रमरगीत प्रसंग का मूल स्रोत है—

- (a) श्रीमद्भागवत का पंचम स्कन्ध
(b) श्रीमद्भागवत का दशम स्कन्ध
(c) श्रीमद्भागवत का तृतीय स्कन्ध
(d) श्रीमद्भागवत का नवम स्कन्ध

P.G.T. परीक्षा, 2009, 2004

उत्तर—(b)

'भ्रमरगीत प्रसंग' सूरसागर का एक भाग है, जिसका मूल स्रोत 'श्रीमद्भागवत' के दशम स्कन्ध का 46 व 47 वां अध्याय है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ सूरदास का जन्म 1478 ई. तथा मृत्यु 1583 ई. में हुई।
- ☛ ये वल्लभाचार्य के शिष्य थे।
- ☛ सूर काव्य का मुख्य विषय कृष्णभक्ति है।
- ☛ सूर के भाव चित्रण में वात्सल्य को श्रेष्ठ माना गया है।
- ☛ सूर की भक्ति पद्धति पुष्टिमार्गीय भक्ति है।
- ☛ भागवत में गोपियाँ उद्धव से मिलने पर कृष्ण की स्वार्थ मैत्री पर थोड़ा आक्षेप करती हैं और शीघ्र ही भ्रमर का प्रवेश हो जाता है।
- ☛ भँवरगीत में कुशल प्रश्न के पश्चात निर्गुण-सगुण पर विवाद प्रारम्भ हो जाता है, जो 22 छन्द तक चलता है।

53. 'खेट कौतुक' किसकी रचना है?

- (a) रहीम
(b) रसखान
(c) कवि गंग
(d) दादूदयाल

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'खेट कौतुक' के रचनाकार 'रहीम' हैं। इनकी अन्य कृतियाँ हैं—रहीम दोहावली, (रहीम सतसई) बरवै नायिका भेद, नगर-शोभा, मदनाष्टक, रासपंचाध्यायी, शृंगार सौरठ।

54. 'बरवै नायिका भेद' के रचनाकार हैं—

- (a) केशवदास (b) भिखारीदास
(c) रहीम (d) बिहारी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. रहीम कृत 'मदनाष्टक' की भाषा है—

- (a) खड़ी बोली (b) अवधी
(c) ब्रज (d) राजस्थानी

T.G.T. पुनर्परीक्षा 2004

उत्तर—(a)

रहीम कृत 'मदनाष्टक' की भाषा खड़ी बोली है। रहीम का ब्रजभाषा और अवधी पर समान अधिकार था। रहीम का पूरा नाम अब्दुरहीम खानखाना था। इनकी गणना कृष्ण भक्त कवियों में की जा सकती है।

रीतिकाल

1. निम्नलिखित विकल्पों में से रीतिकालीन कवि कौन से हैं?

- (a) नन्ददास, सूरदास, परमानन्ददास, छीतस्वामी
- (b) बिहारी, मतिराम, घनानन्द, भूषण
- (c) मैथिलीशरण, दिनकर, श्रीधर पाठक, सोहनलाल द्विवेदी
- (d) जायसी, मंझन, विद्यापति, चन्दबरदाई

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

बिहारी, मतिराम, घनानन्द, भूषण, रसनिधि, बोधा, आलम, ठाकुर इत्यादि रीतिकालीन कवि हैं। अन्य विकल्प सही नहीं हैं।

2. निम्नांकित कवियों का जन्म-काल के अनुसार क्रम निर्धारण कीजिए—

- (a) घनानन्द, ठाकुर, रसलीन, रहीम
- (b) रहीम, घनानन्द, रसलीन, ठाकुर
- (c) रहीम, रसलीन, ठाकुर, घनानन्द
- (d) रहीम, ठाकुर, रसलीन, घनानन्द

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

रहीम का पूरा नाम अब्दुरहीम 'खानखाना' था। इनका जन्म 17 दिसम्बर, 1556 को लाहौर में हुआ। रहीम के पिता का नाम बैरम खान तथा माता का नाम सुल्ताना था। रीतिकाल के रीतिभुक्त काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि घनानन्द का जन्म 1673 ई. में बुन्देलखण्ड के एक कयस्थ परिवार में हुआ था। वे दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के मीर मुंशी थे। 1760 ई. में इनकी हत्या कर दी गई। रसलीन का पूरा नाम सैयद गुलाब नबी था। ये 'रसलीन' उपनाम से कविता लिखते थे। इनके पिता का नाम सैयद मुहम्मद बाकर था। रसलीन का जन्म 1689 ई. में माना जाता है। इनकी मृत्यु 1750 ई. में हुई थी। ठाकुर का पूरा नाम लाला ठाकुर दास था। इनका जन्म 1766 ई. में ओरछा में हुआ था। इनके पिता का नाम गुलाबराय था। अतः जन्म-काल के अनुसार, क्रम निर्धारण का विकल्प (b) सही उत्तर है।

3. रीतिकाल की सर्वाधिक व्यापक प्रवृत्ति -

- (a) नायिका भेद और शृंगार रस विवेचन
- (b) अलंकार विवेचन
- (c) छन्द विवेचन
- (d) शब्द शक्ति और काव्य गुण-दोष विवेचन

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

रीतिकाल में रस विवेचन के संदर्भ में नायक-नायिका भेद का विवेचन मतिराम, तोष, रसलीन प्रभृति (इत्यादि) अनेक कवियों ने किया है। इस काल की सर्वाधिक व्यापक प्रवृत्ति नायिका भेद और शृंगार रस विवेचन रहा।

4. 'रीतिकाल' की विशेषताओं के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से एक विशेषता गलत है। उस विशेषता का चयन कीजिये-

- (a) रीतिकाल में अलंकरण की प्रधानता है
- (b) रीतिकाल की प्रमुख भाषा ब्रजभाषा है
- (c) रीतिकाल में प्रकृति का आलम्बन-रूप में वर्णन हुआ है
- (d) रीतिकाल में लक्षण ग्रन्थों की प्रमुखता है

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

रीतिकाल में स्वतन्त्र और आलम्बन रूप में प्रकृति चित्रण बहुत कम हुआ है। रीतिकाल की अन्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं—लक्षण ग्रन्थों का निर्माण, शृंगार चित्रण, वीर और भक्ति काव्य, नीतिकाव्य, ब्रज भाषा का उत्कर्ष, आलंकारिता तथा काव्य रूप।

5. रीतिकालीन कवियों की काव्यभाषा क्या थी?

- (a) अवधी
- (b) खड़ी बोली
- (c) ब्रजभाषा
- (d) बुन्देली

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

रीतिकालीन कवियों की काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास में घनानन्द, बिहारी, मतिराम, पद्माकर, देव, भिखारीदास का नाम उल्लेखनीय है। भिखारीदास ने तो यह मिथ्य तोड़ा कि ब्रजभाषा में रचना के लिए ब्रज में रहना अनिवार्य है।

ब्रजभाषा हेतु ब्रजवास ही न अनुमानों,
ऐसे-ऐसे कविन की बानी हूँ सो जान्यो।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➤ पद्माकर की भाषा में सब प्रकार की भाषिक शक्तियों पर कवि का अधिकार दिखाई पड़ता है। आचार्य शुक्ल के शब्दों में "कहीं तो इनकी भाषा सिन्धु मधुर पदावली द्वारा एक सजीव भावभरी प्रेममूर्ति खड़ी करती है, कहीं भाव या रस की धारा बहती है, कहीं अनुप्रासों की झंकार उत्पन्न करती है, कहीं वीरदर्प से क्षुब्ध वाहिनी के समान अकड़ती और कड़कती हुई चलती है और कहीं प्रशान्त सरोवर के समान स्थिर और गम्भीर होकर मनुष्य-जीवन की विभ्रान्ति की छाया दिखाती है। सारांश यह कि इनकी भाषा में वह अनेकरूपता है, जो एक बड़े कवि में होनी चाहिए। भाषा की ऐसी अनेकरूपता गोस्वामी तुलसीदास में दिखाई पड़ती है।"

6. रीतियुगीन कवियों का सर्वाधिक प्रिय छन्द रहा—

- (a) सवैया (b) दोहा
(c) चौपाई (d) छप्पय

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

रीतियुगीन कवियों ने परम्परागत छन्दों का प्रयोग बहुलता से किया है, जिनमें कवित्त, सवैया, दोहा इत्यादि था, किन्तु सर्वाधिक रूप से इस युग के कवियों का सर्वाधिक प्रिय छन्द सवैया रहा, जिसका प्रयोग उन्होंने शृंगार रस से किया है।

7. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रीतिकाल का 'प्रवर्तक आचार्य' किसे माना है?

- (a) आचार्य केशवदास को (b) मतिराम को
(c) चिन्तामणि को (d) बिहारी को

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने चिन्तामणि को रीतिकाव्य परम्परा का प्रवर्तक माना है, चिन्तामणि के उपरान्त रीतिकाव्य परम्परा अविच्छिन्न रूप से चली।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- डॉ. भगीरथी मिश्र ने रीतिकाल के प्रवर्तक आचार्य केशवदास को माना है।
- आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने हिन्दी रीतिकाल का प्रवर्तक केशवदास को माना।
- चिन्तामणि ने रीति को 'काव्य का स्वभाव' कहा है।
- देव ने रीति को 'काव्य का द्वार' कहा है।

8. "हिन्दी रीतिग्रंथों की परम्परा चिन्तामणि त्रिपाठी से चली, अतः रीतिकाल का आरंभ उन्हीं से मानना चाहिए।" यह कथन किसका है?

- (a) हजारीप्रसाद द्विवेदी (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) मिश्रबन्धु (d) रामकुमार वर्मा

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

"हिन्दी रीतिग्रंथों की परंपरा चिन्तामणि त्रिपाठी से चली, अतः रीतिकाल का आरंभ उन्हीं से मानना चाहिए। उन्होंने संवत् 1700 के कुछ आगे पीछे 'काव्यविवेक', 'कविकुलकल्पतरु' और 'काव्यप्रकाश' ये तीन ग्रंथ लिखकर काव्य के सब अंगों का पूरा निरूपण किया और पिंगल या छंदशास्त्र पर भी एक पुस्तक लिखी।"

9. रीतिकाल का समय था—

- (a) 1050 से 1375 वि. स. तक (b) 1700 से 1900 वि. स. तक
(c) 1373 से 1700 वि. स. तक (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

आचार्य शुक्ल ने रीतिकाल की सीमावधि 200 वर्ष मानते हुए, उसकी सीमा 1700 से 1900 वि.स.अर्थात् 1643 से 1843 ई. ही माना है। डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, डॉ. मोहन अवस्थी, डॉ. रामरतन भटनागर, डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल', डॉ. रामखेलावन पाण्डेय आदि रीतिकाल का आरम्भ 1600 ई. से ही मानते हैं।

10. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'उत्तरमध्यकाल' को क्या नाम दिया?

- (a) शृंगारकाल (b) अलंकृतकाल
(c) रीतिकाल (d) मध्यकाल

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

हिन्दी साहित्य का 'उत्तरमध्यकाल' (लगभग 1643-1843 ई.) को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रीतिकाल कहा है।

11. रीतिकाल को 'शृंगार काल' कहा है—

- (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने (b) आचार्य विश्वनाथ मिश्र ने
(c) मिश्रबन्धु ने (d) रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' ने

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

रीतिकाल के नामकरण को लेकर विद्वानों में पर्याप्त मतभेद रहा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस युग में रीतिग्रंथों की बहुलता देखकर ही इसे 'रीतिकाल' का नाम दिया। मिश्रबन्धुओं ने इसे 'अलंकृत काल' की संज्ञा दी है और डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' ने इसे 'कला-काल' तथा आदि काल को 'जय काल' कहकर सम्बोधित किया है। इस काल का सबसे अधिक सार्थक नाम आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ. राजनाथ शर्मा और डॉ. जयकिशन प्रसाद खंडेवाल 'प्रभृति' की दृष्टि में 'शृंगार काल' है।

12. हिन्दी साहित्य में रीतिकाल को 'शृंगार काल' कहा है—

- (a) मिश्रबन्धुओं ने
(b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने
(c) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने
(d) डॉ. गुलाब राय ने

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'रीतिकाल' को 'कला-काल' किसने कहा?

- (a) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(b) डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'
(c) मिश्रबन्धु
(d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. 'रीतिकाल' को 'अलंकृत काल' कहा है-

- (a) मिश्रबन्धु ने (b) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने (d) डॉ. रामकुमार वर्मा ने

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. रीतिकाल को 'अलंकृत काल' किस इतिहासकार ने कहा है?

- (a) मिश्रबन्धु (b) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) रामकुमार वर्मा

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. रीतिकाल को 'अलंकृत काल' नाम किसने दिया?

- (a) रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' (b) विश्वनाथ मिश्र
(c) मिश्रबन्धु (d) रामचन्द्र शुक्ल

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. इनमें से किसने आदिकाल को 'जय काल' तथा रीतिकाल को 'कला काल' कहा है?

- (a) डॉ. ग्रियर्सन (b) डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल'
(c) डॉ. इन्द्रनाथ मदान (d) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेई

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

रीतिबद्ध

1. किस रचना को 'छन्दों का अजायबघर' कहा जा सकता है?

- (a) रामचरितमानस (b) चन्द छन्द बरनन की महिमा
(c) रामचन्द्रिका (d) पृथ्वीराज रासो

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

केशव रीति काव्य के प्रथम आचार्य माने जाते हैं। इन्हें हिन्दी तथा संस्कृत का बहुत अच्छा ज्ञान था। ये संगीत, धर्मशास्त्र, ज्योतिष एवं राजनीति के भी ज्ञाता थे। इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं-रसिक प्रिया, रतन बावनी, वीरसिंहदेवचरित, जहाँगीर-जस-चन्द्रिका, नखशिख, छन्दमाला, कविप्रिया, विज्ञानगीता तथा रामचन्द्रिका। 'रामचन्द्रिका' को 'छन्दों का अजायबघर' कहा गया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- रसिकप्रिया, कविप्रिया और छन्दमाला रीतिग्रन्थ हैं, जिनमें क्रमशः नौ रस, अलंकारों और छन्दों का निरूपण किया गया है।
- रामचन्द्रिका में रामकथा का प्रबन्धात्मक वर्णन है, जबकि रतन बावनी, वीरसिंहदेवचरित और जहाँगीर-जस-चन्द्रिका आश्रयदाताओं की प्रशस्तिविषयक हैं।
- विज्ञानगीता में आध्यात्मिक विषय को प्रस्तुत किया गया है तथा 'नखशिख' में परम्परागत उपमानों की सहायता से राधा के विभिन्न अंगों का वर्णन हुआ है।
- 'रसिकप्रिया' एवं 'कविप्रिया' में सोलह प्रकाश हैं।
- विज्ञानगीता, वीरसिंहदेवचरित, जहाँगीर-जस-चन्द्रिका, रतन बावनी, रामचन्द्रिका प्रबन्ध काव्य हैं, जबकि रसिकप्रिया, कविप्रिया तथा नखशिख मुक्तक काव्य हैं।
- रामचन्द्रिका में महाकाव्य की शैली अपनायी गयी है।

2. 'कविप्रिया' के रचनाकार का नाम बताइये?

- (a) देव (b) केशव
(c) पद्माकर (d) घनानन्द

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'रामचन्द्रिका' किस कवि की कृति है?

- (a) पद्माकर (b) देव
(c) केशव (d) बिहारी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. हिन्दी की 'रसरिति' परम्परा का प्रस्थान ग्रन्थ है—

- (a) रसिकप्रिया (केशवदास)
(b) हिततरंगिणी (कृपाराम)
(c) रस पीयूष निधि (सोमनाथ)
(d) रस रत्नाकर (सुरति मिश्र)

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'विज्ञानगीता' के लेखक हैं—

- (a) सेनापति (b) चिन्तामणि
(c) केशवदास (d) भिखारीदास

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'विज्ञानगीता' की रचना किसने की?

- (a) व्यास जी (b) बालगंगाधर तिलक
(c) केशवदास (d) चिन्तामणि

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. विज्ञान गीता.....की कृति है।

- (a) केशवदास (b) सूरदास
(c) तुलसीदास (d) बिहारी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'जहाँगीर-जस-चन्द्रिका' के रचनाकार हैं—

- (a) रहीम (b) आचार्य केशवदास
(c) रसखान (d) मलिक मुहम्मद जायसी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. इनमें से कौन-सा ग्रन्थ केशव का नहीं है?

- (a) रामचन्द्रिका (b) कविप्रिया
(c) विज्ञानगीता (d) भाषा-भूषण

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

भाषा-भूषण जसवंत सिंह का ग्रन्थ है। यह एक अलंकार विषयक ग्रन्थ है। शेष रचनाएँ केशवदास की हैं। 'भाषा-भूषण' चन्द्रालोक-शैली में लिखा हुआ 212 दोहों का ग्रन्थ है, जिसे पाँच प्रकाशों में विभक्त कर प्रस्तुत किया गया है।

10. 'भाषा बोल न जानई जिनके कुल के दास'।

यह कथन किस कवि का है?

- (a) तुलसीदास (b) केशवदास
(c) विद्यापति (d) जायसी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

भाषा बोल न जानई, जिनके कुल के दास।

तेहि भाषा कविता करी, जड़मति केशवदास।।

इन पंक्तियों का सम्बन्ध 'केशवदास' से है, जिसके माध्यम से वे यह व्यक्त करते हैं कि उनके परिवार में बोलचाल की भाषा संस्कृत ही प्रयुक्त होती है, लोकभाषा (हिन्दी) में तो कोई बातचीत तक नहीं करता है। उसी लोकभाषा में केशवदास कविता की रचना करता है।

11. हिन्दी साहित्य में निम्नलिखित पंक्तियाँ किसके द्वारा लिखी गईं?

जदपि सुजाति सुलक्षणी सुबरन सरस सुवृत्त।

भूषण बिनु न बिराजई, कविता बनिता मित।।

- (a) कबीरदास (b) केशवदास
(c) रहीमदास (d) तुलसीदास

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्तियाँ केशवदास जी की हैं। उन्होंने काव्य में अलंकारों को प्रतिपादित करते हुए ये पंक्तियाँ प्रस्तुत की हैं।

12. "जदपि सुजाति सुलक्षणी, सुबरन सरस सुवृत्त।

भूषण बिनु न बिराजई, कविता बनिता मित।।"

कविता की यह परिभाषा किसकी है?

- (a) बिहारी (b) मतिराम
(c) केशवदास (d) देव

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'भूषण बिनु न बिराजई कविता बनिता मित'। यह कथन किसका है?

- (a) तुलसीदास (b) भिखारीदास
(c) केशवदास (d) मतिराम

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. आचार्य भिखारीदास कृत प्रमुख काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है—

- (a) काव्यप्रकाश (b) काव्य निर्णय
(c) काव्यांगप्रकाश (d) रस-सारांश

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b&d)

भिखारीदास रीतिकाल के रीतिबद्ध धारा के श्रेष्ठ हिन्दी कवि थे। इनका जन्म प्रतापगढ़ के निकट टेंउगा में तथा मृत्यु बिहार में आरा के निकट भभुआ नामक स्थान पर हुई थी। ये प्रतापगढ़ नरेश के भाई हिंदूपति सिंह के आश्रय में रहे। इन्होंने काव्यशास्त्र पर कई ग्रन्थ लिखे जिनमें 'काव्य निर्णय' श्रेष्ठ है। भिखारीदास द्वारा लिखी गई अन्य रचनाएँ हैं— रस-सारांश, शृंगार निर्णय, छन्दोर्णव पिंगल, अमरकोश या शब्दनाम प्रकाश, विष्णु पुराण भाषा और शतरंजशतिका। रस-सारांश में नायक-नायिका भेद तथा शृंगार निर्णय में शृंगारिक वर्णन हैं। अतः विकल्प में दो उत्तर (b) तथा (d) सही हैं।

15. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना भिखारीदास की नहीं है?

- (a) रस सारांश (b) काव्यनिर्णय
(c) शृंगार निर्णय (d) भाषाभूषण

U.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. इनमें से कौन रीतिबद्ध कवि है?

- (a) घनानन्द (b) ठाकुर
(c) भिखारीदास (d) गोविन्द स्वामी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. 'शतरंजशतिका' कृति के रचनाकार हैं—

- (a) भिखारीदास (b) देव
(c) रसनिधि (d) चिन्तामणि

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. भिखारीदास की रचना है—

- (a) काव्य निर्णय (b) काव्य सिन्धु
(c) चिन्तामणि (d) रस विवेक

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?

- (a) रीतिबद्ध धारा के कवियों ने लक्षण ग्रन्थों की रचना की है।
(b) रीतिबद्ध धारा के कवियों को आचार्य कवि कहा जाता है।
(c) बिहारी रीतिसिद्ध धारा के प्रतिनिधि कवि हैं।
(d) केशव रीतिमुक्त धारा के कवि हैं।

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

केशव रीतिबद्ध धारा के प्रमुख कवि हैं। अतः स्पष्ट है कि उपर्युक्त विकल्प में (d) असत्य है। रीतिबद्ध धारा के कवियों ने अलंकार, नायिका भेद आदि के लक्षण बताकर उनके उदाहरणस्वरूप काव्य रचा है। जैसे-केशव, पद्माकर, मतिराम आदि। वस्तुतः ये मूलतः कवि थे। केशव हिन्दी के प्रथम आचार्य माने जाते हैं। वे काव्य में अलंकार को अधिक महत्व देते हैं।

20. भूषण को 'कवि भूषण' की उपाधि किसने प्रदान की थी?

- (a) शिवाजी (b) छत्रसाल
(c) सोलंकी राजा रुद्र (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

भूषण हिन्दी रीतिकाल के अन्तर्गत, उसकी परम्परा का अनुसरण करते हुए वीर-काव्य तथा वीर-रस की रचना करने वाले प्रसिद्ध कवि हैं। इनका वास्तविक नाम घनश्याम था। चित्रकूटपति हृदयराम के पुत्र रुद्र सोलंकी ने इन्हें 'भूषण' की उपाधि से विभूषित किया था। भूषण 1627 से 1680 ई. तक महाराजा शिवाजी के आश्रय में रहे। इनके छत्रसाल बुन्देला के आश्रय में रहने का भी उल्लेख मिलता है। ये रीतिकाल के रीतिबद्ध काव्यधारा के कवि हैं। 'शिवराज भूषण', 'शिवा बावनी' और 'छत्रसाल दशक' नामक तीन ग्रन्थ ही इनके लिखे छः ग्रन्थों में से उपलब्ध हैं।

21. 'शिवराज भूषण' के रचयिता कवि कौन हैं?

- (a) घनानन्द (b) बिहारी
(c) पद्माकर (d) भूषण

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. 'शिवा बावनी' के रचनाकार हैं—

- (a) रत्नाकर (b) भूषण
(c) ठाकुर (d) आलम

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. रीतिकाल के उस कवि का नाम बताइये जिसने वीर रस में कविता लिखी है?

- (a) पद्माकर (b) भूषण
(c) बिहारी (d) घनानन्द

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. रीतिकाल का कौन-सा कवि वीर रस की काव्य रचना के लिए प्रसिद्ध है?

- (a) मतिराम (b) भूषण
(c) चिन्तामणि (d) घनानन्द

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. भूषण दो राजाओं के दरबारी कवि थे। इनमें से पहले थे शिवाजी, दूसरे थे-

- (a) महाराणा प्रताप (b) राणा सांगा
(c) छत्रासाल (d) शम्भाजी

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. भूषण रीतिकाल की किस काव्यधारा के कवि हैं?

- (a) रीतिबद्ध काव्यधारा (b) रीतिमुक्त काव्यधारा
(c) रीतिसिद्ध काव्यधारा (d) आश्रयवादी काव्यधारा

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. भूषण का वास्तविक नाम था—

- (a) घनश्याम (b) रासबिहारी
(c) कृष्णदास (d) चन्द्रभूषण

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. महाकवि भूषण की रचना है?

- (a) रेणुका (b) चिदम्बरा
(c) दीपशिखा (d) छत्रशाल दशक

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. 'शिवराज भूषण' ग्रन्थ में किसका विवेचन मिलता है?

- (a) रस (b) ध्वनि
(c) अलंकार (d) औचित्य

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'शिवराज भूषण', भूषण के आचार्यत्व को सिद्ध करने वाला एक अलंकार-ग्रन्थ है और एक सुसम्बद्ध योजना के साथ लिखा गया है। इसका एक भूमिका-भाग है, जिसके प्रारम्भ में गणेश, शक्ति और सूर्य की वन्दना है। अलंकार निरूपण वाले भाग में पहले दोहों में अलंकारों के लक्षण दिये हैं। फिर कविता, सवैया, छप्पय अथवा दोहे में उसके उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। ये उदाहरण शिवाजी के जीवन की घटनाओं से सम्बन्धित हैं। आलोचकों ने भूषण के अलंकार-विवेचन में अनेक प्रकार के दोष निकाले हैं। 'शिवराज भूषण' में भूषण ने 105 अलंकार दिये हैं और कहीं-कहीं एक अलंकार के एक से अधिक उदाहरण मिलते हैं। कुछ अलंकारों जैसे-उपमा, उत्प्रेक्षा, प्रतीप, अतिशयोक्ति एवं अपह्नुति के भेदों की ओर भी इन्होंने पूरा ध्यान दिया है।

30. भूषण के ग्रन्थों में अलंकार निरूपक है-

- (a) शिवा बावनी (b) शिवराज भूषण
(c) छत्रसाल दशक (d) दूषण उल्लास

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' ग्रंथ में इनमें से किस कवि को 'हिन्दू जाति का प्रतिनिधि कवि' कहा है?

- (a) भूषण (b) सूदन
(c) लाल कवि (d) रहीम

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' ग्रन्थ में लिखा है कि शिवाजी और छत्रसाल की वीरता के वर्णनों को कोई कवियों की झूठी खुशामद नहीं कह सकता। वे आश्रयदाताओं की प्रशंसा की प्रथा के अनुसरण मात्र नहीं हैं। इन दो वीरों का जिस उत्साह के साथ सारी हिंदू जनता स्मरण करती है, उसी की व्यंजना भूषण ने की है। वे हिंदू जाति के प्रतिनिधि कवि हैं।

32. 'गंग' कवि का जन्म स्थान है-

- (a) आगरा (b) प्रयाग
(c) इटावा (d) गंगापुर नगर

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

गंग (1538-1625 ई.) रीतिकालीन काव्य परम्परा के प्रथम कवि थे। ये इटावा जिले के एकनार गाँव के निवासी थे। इनका मूलनाम गंगाधर था। गंग के मुख्य ग्रन्थ हैं-गंगपदावली, गंग पचीसी तथा गंग रत्नावली।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- गंग जाति के ब्राह्मण थे तथा अकबर के दरबारी कवि थे। इसके अतिरिक्त ये रहीम, बीरबल, मानसिंह तथा टोडरमल के भी प्रिय थे।
- कहा जाता है कि अपनी स्पष्टवादिता के कारण ये जहाँगीर के कोपभाजन का शिकार हुए और उसने इन्हें हाथी से कुचलवा दिया।
- भिखारीदास जी ने इनके विषय में कहा है-तुलसी गंग दोऊ भये, सुकविन में सरदार।

33. 'तुलसी गंग दोऊ भये, सुकविन के सरदार' उक्ति के रचनाकार हैं-

- (a) भिखारीदास (b) केशवदास
(c) रहीम (d) गंगकवि

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. 'नैन नचाय कहौ मुसुकाई, लला फिर आइयो खेलन होरी।' पंक्ति के कवि हैं-
- (a) सेनापति (b) घनानन्द
(c) पद्माकर (d) ठाकुर

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

प्रस्तुत पंक्ति पद्माकर की है। यह होली विषयक सवैया है। पद्माकर का जन्म संवत् 1880 में बाँदा में हुआ था। इनके पिता का नाम मोहन लाल भट्ट था। पद्माकर को रीतिकाल के कवियों में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। कविराज शिरोमणि की पदवी और अच्छी जागीर मिली। अन्तिम समय निकट जान कर पद्माकर जी कानपुर (गंगा तट) चले आये और वहीं अपने जीवन के शेष सात वर्ष पूरे किये। अपनी प्रसिद्ध रचना 'गंगा लहरी' इन्होंने इसी समय के बीच रची थी। पद्माकर का 'जगद्विनोद' काव्य रसिकों और अभ्यासियों दोनों का कण्ठहार रहा है।

35. 'नैन नचाई कहौ मुसुकाई,
लला फिर आइयो, खेलन होरी।' -ये पंक्तियाँ किसकी हैं?
- (a) बिहारी (b) मतिराम
(c) पद्माकर (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. 'गंगा लहरी' किसकी रचना है?
- (a) मतिराम (b) पद्माकर
(c) ठाकुर (d) बोधा

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

पद्माकर द्वारा रचित सात मौलिक ग्रन्थ मिलते हैं- हिम्मतबहादुर विरुदावली, पद्माभरण, जगद्विनोद, प्रबोधपचासा, गंगा लहरी, प्रतापसाहि विरुदावली, कलिपच्चीसी आदि। कहा जाता है कि वाल्मीकि रामायण, हितोपदेश आदि संस्कृत ग्रन्थों का अनुवाद भी इन्होंने किया था। मौलिक ग्रन्थों में पद्माभरण और जगद्विनोद ही रीतिग्रन्थ हैं।

37. 'प्रबोधपचासा' ग्रन्थ के रचयिता कौन हैं?
- (a) रामानन्द (b) कबीर
(c) मतिराम (d) पद्माकर

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. पद्माकर द्वारा रचित अलंकार-ग्रन्थ कौन-सा है?

- (a) भाषा भूषण (b) रामचन्द्राभरण
(c) काव्यालंकार (d) पद्माभरण

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'पद्माभरण' और 'जगद्विनोद' पद्माकर के रीतिग्रन्थ हैं। इन रीतिग्रन्थों में क्रमशः अलंकार और नवरस विवेचन किया गया है। 'पद्माभरण' 1810 ई. में रचा गया बताया जाता है। 'जगद्विनोद' की रचना 1803 और 1821 ई. के बीच महाराज जगत सिंह के आश्रय में उनकी आज्ञा से हुई।

39. 'काव्य रसायन' किसकी रचना है?

- (a) भूषण (b) देव
(c) बोधा (d) ठाकुर

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'देव' कवि का जन्म 1673 ई. में इटावा जिले के घौसरिया ब्राह्मण परिवार में हुआ था। अपने जीवनकाल में अनेक राजाओं, नवाबों तथा रईसों के आश्रय में रहे। इनमें प्रमुख थे—आजमशाह, फर्रूख रियासत के राजा कुशलसिंह, सेठ भोगीलाल, इटावा के निकटवर्ती झोड़िया खेरा के राजा उद्योत सिंह, दिल्ली के रईस पातीराम के पुत्र सुजानमणि, पिहानी के अधिपति अली अकबर खाँ। इनकी मृत्यु 1767 ई. के लगभग हुई। देव की प्रमुख रचनाएँ हैं— काव्य रसायन, भाव विलास, अष्टयाम, भवानी विलास, सुजानविनोद, प्रेम्तरंग, राग रत्नाकर, कुशल विलास, देवविरित, प्रेमचन्द्रिका, जातिविलास, रसविलास, सुखसागर तरंग, वृक्षविलास, पावसविलास, ब्रह्मदर्शन पचीसी, तत्त्वदर्शन पचीसी, आत्मदर्शन पचीसी, जगदर्शन पचीसी, रसानन्द लहरी, प्रेमदीपिका, नखशिख, प्रेमदर्शन आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सोमनाथ अथवा शशिनाथ ने रसपीयूषनिधि, शृंगारविलास, कृष्णलीलावती, पंचध्यायी, सुजान विलास और माधव विनोद नामक ग्रन्थों की रचना की।
- माना जाता है कि 'देव' ने 'भावविलास' की रचना 16 वर्ष की अवस्था में की थी।

40. 'देव' कवि किस जिले के थे?

- (a) मैनपुरी (b) बनारस
(c) गोरखपुर (d) इटावा

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. 'सुजानविनोद' के रचनाकार हैं-

- (a) घनानन्द (b) देव
(c) पद्माकर (d) मतिराम

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. 'जातिविलास' के रचयिता हैं—

- (a) भिखारीदास (b) देव
(c) मतिराम (d) भूषण

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. 'अष्टयाम' किसकी रचना है?

- (a) सेनापति (b) देव
(c) भूषण (d) पद्माकर

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. रीतिबद्ध कवि देव हैं—

- (a) अलंकारवादी (b) रीतिवादी
(c) वक्रोक्तिवादी (d) रसवादी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

रसवादी विवेचना एक शास्त्रीय विवेचना थी, जिसकी अभिव्यक्ति हिन्दी के अनेक कवियों में पाई जाती है। देव, मतिराम, घनानन्द, ठाकुर आदि कवियों की रचनाएँ इसी कड़ी में हैं।

45. देव किस प्रकार के कवि हैं?

- (a) अलंकारवादी (b) रीतिवादी
(c) रसवादी (d) वक्रोक्तिवादी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. 'भूलि कहत नव रस सुकवि सकल मूल सिंगार'। यह उक्ति किस आचार्य की है?

- (a) देव (b) चिन्तामणि त्रिपाठी
(c) सोमनाथ (d) कुलपति मिश्र

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'भूलि कहत नव रस सुकवि सकल मूल सिंगार।' यह उक्ति आचार्य देव की है। कवि ने अपने ग्रंथों में शृंगार का वर्णन अत्यंत प्रभावोत्पादक ढंग से किया है। देव ने संयोगानुभूति की अभिव्यंजना करते हुए नायक एवं नायिका के पारस्परिक मिलन का निरूपण अत्यंत गंभीरता और तीव्रता के साथ किया है।

47. "अमिय हलाहल मद भरे, स्वेत स्याम रतनार।

जियत मरत झुकि-झुकि परत, जिहिं चितवत इकबार॥"

इस प्रसिद्ध दोहे के रचयिता हैं—

- (a) बिहारी (b) भूषण
(c) घनानन्द (d) रसलीन

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त दोहा रसलीन का है, किन्तु भ्रमवश कुछ लोग इस दोहे को बिहारी का दोहा मान लेते हैं। रसलीन रीतिकाल के महत्वपूर्ण कवि हैं। इनका जन्म 1669 ई. में उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले के ऐतिहासिक गाँव बिलग्राम में हुआ था।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- रसलीन का वास्तविक नाम 'मीर गुलाम नबी' था। वे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रज और अवधी के साथ-साथ अरबी और फारसी भाषा के भी विद्वान थे। अन्य कवियों की भाँति इन्होंने भी अपने नाम के साथ 'रसलीन' उपनाम जोड़ लिया था। उस युग के प्रसिद्ध बिलग्रामी कवि मुहम्मद उनके बारे में लिखते हैं—
मीर गुलाम नबी हुतौ सकल गुनन को धामा
बहुरि धरयौ रसलीन निज, कविताई को नामा॥

48. मतिराम की भाषा है -

- (a) बोलचाल की ब्रजभाषा
(b) साहित्यिक ब्रजभाषा
(c) साहित्यिक अवधी
(d) साहित्यिक राजस्थानी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

ब्रजभाषा में साहित्य की विशाल और समृद्ध परम्परा रही है। हिन्दी की अन्य बोलियों की तुलना में सबसे बढ़कर और सबसे अधिक साहित्य ब्रजभाषा में है। खड़ी बोली के साहित्य भाषा बनने के पूर्व ब्रजभाषा ही सम्पूर्ण हिन्दी क्षेत्र की साहित्य भाषा रही है। मतिराम की भाषा साहित्यिक ब्रजभाषा है।

रीतिमुक्त

1. 'घनानन्द' रीतिकाव्य की किस काल के कवि हैं?

- (a) रीतिबद्ध (b) रीतिमुक्त
(c) रीतिसिद्ध (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

रीति परम्परा के साहित्यिक बन्धनों एवं रूढ़ियों से मुक्त इस काल की स्वच्छन्द काव्यधारा को रीतिमुक्त काव्य कहा जाता है। आन्तरिक अनुभूति भावावेग, व्यक्तिपरक अभिव्यंजना की सांकेतिक काव्य-रूढ़ियों से मुक्त कव्यना की प्रचुरता आदि इसकी विशेषताएँ हैं। इस धारा के प्रमुख कवि घनानन्द हैं। इनकी काव्य शैली बड़ी भावनात्मक तथा मार्मिक है। इस धारा के कवियों की लगभग सारी विशेषताएँ इनके काव्य में एक-साथ प्राप्त हो जाती हैं। इस धारा के अन्य प्रमुख कवि हैं— आलम, ठाकुर, बोधा और द्विजादेव। घनानन्द का समस्त काव्य 'प्रेम की पीर' का परम रूप है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- रीतिकाल को अध्ययन की सुविधा के अनुसार, तीन भागों में बाँटा गया है— 1. रीतिबद्ध 2. रीतिमुक्त 3. रीतिसिद्ध। रीतिसिद्ध के प्रमुख कवि बिहारीलाल हैं। रीतिबद्ध काव्य धारा के प्रमुख कवि चिन्तामणि, मतिराम, देव, भिखारीदास, आचार्य कुलपति मिश्र आदि हैं।

2. घनानन्द किस वर्ग के कवि हैं?

- (a) रीतिबद्ध (b) रीतिमुक्त
(c) रीतिसिद्ध (d) छायावाद

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. इनमें से कौन-सा कवि रीतिमुक्त नहीं है?

- (a) घनानन्द (b) आलम
(c) बोधा (d) बिहारी

P.G.T. परीक्षा, 2011

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. इनमें से कौन-सा कवि रीतिमुक्त नहीं है?

- (a) घनानन्द (b) आलम
(c) बोधा (d) केशवदास

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. “यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि भाषा पर जैसा अचूक अधिकार इनका था, वैसा और किसी कवि का नहीं।” रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन किस कवि के संबंध में है?

- (a) कबीरदास (b) तुलसीदास
(c) भारतेन्दु हरिश्चंद्र (d) घनानन्द

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने घनानन्द के बारे में कहा है— “यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि भाषा पर जैसा अचूक अधिकार इनका था वैसा और किसी कवि का नहीं। भाषा मानो इनके हृदय के साथ जुड़कर ऐसी यशवर्तिनी हो गई थी कि ये उसे अपनी अनूठी भावभंगी के साथ-साथ जिस रूप में चाहते थे, उस रूप में मोड़ सकते थे। इनके हृदय का योग पाकर भाषा को नूतन गतिविधि का अभ्यास हुआ और वह पहले से कहीं अधिक बलवती दिखाई पड़ी। जब आवश्यकता होती थी, तब ये उसे बंधी प्रणाली पर से हटाकर अपनी नई प्रणाली पर ले जाते थे। भाषा की पूर्व अर्जित शक्ति से ही काम चलाकर उन्होंने उसे अपनी ओर से नई शक्ति प्रदान की है। घनानन्द जी इन विरले कवियों में हैं, जो भाषा की व्यंजना बढ़ाते हैं।”

6. इनमें से किस कवि की प्रेमिका का नाम ‘सुजान’ था?

- (a) रसखान (b) बिहारी
(c) घनानन्द (d) आलम

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

कवि घनानन्द की प्रेमिका का नाम ‘सुजान’ था, जो एक वेश्या थी। मुहम्मदशाह रंगीले के दरबार की नृत्य-गायन विद्या में निपुण सुजान वेश्या से घनानन्द को प्रेम हो गया था। घनानन्द ने ‘सुजान’ शब्द का प्रयोग अपनी कविता में सर्वाधिक किया है।

7. ‘सुजान’ शब्द का प्रयोग किस कवि की कविता में सर्वाधिक हुआ है?

- (a) बिहारी (b) भूषण
(c) घनानन्द (d) ठाकुर

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. वियोग शृंगार का प्रधान मुक्तक कवि—

- (a) घनानन्द (b) रसलीन
(c) पद्माकर (d) आलम

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

घनानन्द स्वच्छन्द काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। इस धारा के प्रायः सभी गुण इनकी शैली में मिल जाते हैं, जैसे-भावत्मकता, वक्रता, लाक्षणिकता, भावों की दौर्बल्य, रहस्यात्मकता, मार्मिकता, स्वच्छन्दता इत्यादि। इन्होंने अपनी रचनाओं में वियोग-व्यथा के सैकड़ों अंतर्दशाओं के मार्मिक चित्र खींचे हैं, जो सीधे हृदय को छूते हैं। वियोग-शृंगार में प्रिय के रहने पर प्रेमी का भावमग्न हो जाना स्वाभाविक है पर घनानन्द संयोग में भी भावमग्न हैं। भावात्मकता के कारण ही अनुभूति का सम्बन्ध जब सशरीर प्रिय से हटकर अनुभूत्यात्मक हो जाता है, तो उसका सम्बन्ध परम सत्ता से बना प्रतीत होने लगता है।

9. घनानन्द की 'कृतियाँ' किस भाषा में हैं?

- (a) अवधी (b) खड़ी बोली
(c) ब्रज (d) मैथिली

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

घनानन्द की कृतियाँ ब्रजभाषा में हैं। घनानन्द के प्रमुख ग्रन्थ हैं—सुजानसागर, विरहलीला, कोकसार, रसकेलिबल्ली और कृपाकाण्ड।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- घनानन्द का जन्म 1689 ई. के आस-पास हुआ और 1739 ई. में ये नादिरशाह के सैनिकों द्वारा मार डाले गये।
- ये प्रेम की मस्ती विशेषतः वियोग शृंगार के कवि हैं।
- शुक्ल जी के अनुसार "प्रेममार्ग का एक ऐसा प्रवीण और धीर पथिक तथा जबाँदानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ है।"
- शुक्ल जी ने उन्हें 'लाक्षणिक मूर्तिमत्ता और प्रयोग वैचित्र्य' का ऐसा कवि कहा जैसे कवि उनके पौने दो सौ वर्ष बाद छायावाद काल में प्रकट हुए।

10. 'सुजानसागर' के लेखक हैं—

- (a) घनानन्द (b) बोधा
(c) ठाकुर (d) आलम

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. "लोग हैं लागि कवित्त बनावत,
मोहिं तौ मेरे कवित्त बनावत।"
इस काव्यपंक्ति के रचयिता का नाम है—

- (a) आलम (b) द्विजदेव
(c) घनानन्द (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

प्रस्तुत काव्यपंक्ति के रचयिता घनानन्द हैं। इसके माध्यम से घनानन्द अपनी पहचान अलग बताते हैं।

12. "लोग हैं लागि कवित्त बनावत,
मोहिं तौ मेरे कवित्त बनावत।"
किसकी पंक्ति है?

- (a) आलम की (b) देव की
(c) घनानन्द की (d) ठाकुर की

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. "लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहिं तौ मेरे कवित्त बनावत।"

यह काव्यपंक्ति किस कवि द्वारा रचित है?

- (a) केशवदास (b) मतिराम
(c) नन्ददास (d) घनानन्द

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं। पंक्ति के लेखक हैं—

- (a) मतिराम (b) देव
(c) घनानन्द (d) बिहारी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त पंक्तियाँ घनानन्द की हैं।

15. "सीखि लीनो मीन मृग खंजन कमलनैन,
सीखि लीनो जस औ प्रताप को कहानो है।"
ये पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

- (a) ठाकुर (b) घनानन्द
(c) द्विजदेव (d) मतिराम

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त पंक्तियों की रचना रीतिमुक्त धारा के कवि ठाकुर ने कवि कर्म पर व्यंग्य कसते हुए कहा है।

16. 'कवित्त रत्नाकर' के रचनाकार हैं—

- (a) जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' (b) सेनापति
(c) घनानन्द (d) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'कवित्त रत्नाकर' के रचनाकार सेनापति हैं। अभी तक इनकी यही कृति प्राप्त हुई है। कुछ इतिहासकारों ने इनकी दूसरी कृति 'काव्यकल्पद्रुम' भी मानी है, पर वह उपलब्ध नहीं है। कुछ लोग दोनों को एक ही ग्रन्थ मानते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- कवित्त रत्नाकर के अन्तर्गत सेनापति ने श्लेष अलंकार, शृंगार, षड्भक्त, रामायण और रामरसायन का वर्णन किया है।
- कवित्त रत्नाकर में पाँच तरंगें और तीन सौ चौरानबे छन्द हैं।

17. 'कवित रत्नाकर' किस भाषा में रचित है?

- (a) ब्रजभाषा (b) अवधी भाषा
(c) खड़ी बोली (d) राजस्थानी भाषा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'कवित रत्नाकर' की रचना संवत् 1706 में सेनापति द्वारा ब्रजभाषा में की गई। इसमें शृंगार, ऋतु वर्णन, श्लेष आदि के वर्णन के साथ सेनापति के भक्ति सम्बन्धी उद्गार संकलित हैं। इनका दूसरा ग्रन्थ 'काव्य-कल्पद्रुम' श्री ब्रजभाषा में है। ये रामभक्ति परम्परा के कवि हैं। ये श्लेष प्रेमी एवं इनकी कविता घनाक्षरियों में है।

18. 'सुजान चरित्र' के रचयिता हैं—

- (a) घनानन्द (b) बोधा
(c) सूदन (d) मतिराम

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

रीतिकालीन कवि सूदन का 'सुजान चरित्र' वीर रस प्रधान एक ऐतिहासिक काव्य है, जिसमें भरतपुर के महाराजा बदन सिंह के पुत्र सुजान सिंह उपनाम 'सूरजमल' के युद्धों का लम्बा वर्णन मिलता है।

19. निम्न में से किस कवि ने 'सतसई' की रचना नहीं की है?

- (a) मतिराम (b) सेनापति
(c) बिहारी (d) वृंद

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

सेनापति ने 'सतसई' की रचना नहीं की है। इनकी एक ही कृति 'कवित रत्नाकर' प्राप्त हुई है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मतिराम द्वारा रचित प्रमुख ग्रन्थ हैं—फूलमंजरी (1619), लक्षण शृंगार, साहित्यसार, रसराम (1633-43), ललितललाम (1661-64), सतसई (1681), अलंकारपंचाशिका (1690) और वृत्तकौमुदी (1701) इत्यादि।
- बिहारी की ख्याति का मूल आधार उनका अन्यतम ग्रन्थ 'सतसई' है। सतसई में बिहारी ने अलंकार, रस, भाव, नायिका भेद, ध्वनि, वक्रोक्ति, रीति, गुण आदि का ध्यान रखकर सुन्दर दोहे रचे हैं। मुक्तक-परम्परा में बिहारी का स्थान शीर्ष पर है।
- वृंद की प्रमुख रचनाएँ हैं—बारहमासा (1681), भावपंचाशिका (1686), नयनपचीसी (1686), पवनपचीसी (1691), शृंगार शिक्षा (1691) और यमक सतसई (1706) इत्यादि।
- 'बारहमासा' में बारहों महीनों का सुन्दर वर्णन है।

- 'भावपंचाशिका' में शृंगार के विविध भावों के अनुसार, सरस छन्द लिखे गये हैं।
- इन्होंने 'सुख सागर तरंग' नाम का ग्रन्थ पिहानी के अकबर अली खाँ को समर्पित किया था। इस आधार पर इनका संवत् 1824 तक जीवित रहना सिद्ध होता है।

20. मतिराम द्वारा रचित ग्रन्थ है—

- (a) कृष्णायन (b) जगद्विनोद
(c) ललितललाम (d) रस चन्द्रिका

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

रीतिसिद्ध

1. रीतिकाल की 'रीतिसिद्ध काव्यधारा' के कवि हैं—

- (a) केशव (b) देव
(c) भूषण (d) बिहारी

T.G.T. पुनर्परीक्षा 2004

उत्तर—(d)

रीतिकाल की 'रीतिसिद्ध काव्यधारा' के प्रमुख कवि बिहारी हैं। रीतिसिद्ध उन कवियों को कहा गया है जिनका काव्य, काव्य के शास्त्रीय ज्ञान से आबद्ध था, तथापि वे लक्ष्मणों के चक्कर में नहीं पड़े, परन्तु काव्य शास्त्र का पूरा ज्ञान था।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- रीतिकालीन काव्य को तीन भागों में विभक्त किया गया है—रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त।
- रीतिबद्ध काव्य धारा के कवियों ने काव्यशास्त्रीय परम्परा आदि का निर्वाह कर लक्षण ग्रन्थों का निर्माण किया जिसमें चिन्तामणि, भिखारीदास, देव, मतिराम, पद्माकर आदि प्रमुख हैं।
- रीतिसिद्ध काव्यधारा के कवियों ने लक्षण ग्रन्थ न लिखकर लक्षण को ध्यान में रखते हुए लक्षण ग्रन्थों का निर्माण किया, जिसमें बिहारी और रसनिधि प्रमुख हैं।
- रीतिमुक्त काव्यधारा के कवियों ने रीतिकाल की परिपाटी को त्यागकर स्वच्छन्द रूप से शृंगार काव्य की रचना किया, जिसमें घनानन्द, आलम, बोधा, ठाकुर आदि प्रमुख हैं।

2. बिहारी रीतिकाल की किस काव्यधारा के कवि हैं?

- (a) रीतिबद्ध (b) रीतिसिद्ध
(c) रीतिमुक्त (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. निम्नलिखित में से कौन-सा कवि रीतिबद्ध परम्परा में है?

- (a) बिहारीलाल (b) घनानन्द
(c) मतिराम (d) आलम

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. बिहारी किस धारा के कवि हैं?

- (a) रीतिसिद्ध (b) रीतिमुक्त
(c) रीतिबद्ध (d) स्वच्छन्द

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. निम्नलिखित में से एक कवि ने लक्षण-ग्रन्थ की रचना नहीं की है:

- (a) भिखारीदास (b) ग्वाल कवि
(c) बिहारी (d) देव

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति' यह कथन किसका है?

- (a) बिहारी (b) तुलसी
(c) जायसी (d) कबीर

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।

परति गाँठि दुरजन हिये, दर्ई नई यह रीति॥

अर्थात् आँखें उलझती हैं, परिवार टूटता है, पर चतुरों के हृदय का प्रेम जुड़ रहा है, किन्तु दुर्जनों के हृदय में गाँठ पड़ रही है, यह कैसा विधान है। यह पंक्तियाँ बिहारी लाल की हैं।

7. 'बिहारी सतसई' में दोहे हैं-

- (a) 500 (b) 718
(c) 719 (d) 717

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

रीतिकाल (रीतिसिद्ध) के कवि बिहारी की एक मात्र रचना 'सतसई' है। अपनी इसी एकमात्र कृति से हिन्दी साहित्य में अमर हो गये। यह मुक्तक काव्य है। इसमें 719 दोहे संकलित हैं, परन्तु कहीं-कहीं 713 दोहों का भी उल्लेख मिलता है। 'बिहारी सतसई' शृंगार रस की अत्यन्त प्रसिद्ध और

अनूठी कृति है। इसका एक-एक दोहा हिन्दी साहित्य का एक-एक अनमोल रत्न माना जाता है। भाषा शिल्प की दृष्टि से 'बिहारी सतसई' ब्रज काव्य की महान विभूषि है। शब्दावली परिमार्जित, चुटीली और हृदयग्राही है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ बिहारी शाहजहाँ के समकालीन थे और राजा जयसिंह के राजकवि थे।
- ☛ बिहारी का जन्म 1595 ई. के लगभग ग्वालियर में हुआ। वे जाति के माथुर चौबे थे। इनके पिता का नाम केशवराय था। इनका बचपन बुन्देलखण्ड में बीता और युवावस्था ससुराल मथुरा में व्यतीत हुई। 1664 ई. में इनकी मृत्यु हो गयी।

8. बिहारी की रचना का क्या नाम है?

- (a) बिहारी रत्नाकर (b) बिहारी सतसई
(c) सतसैया (d) बिहारी बोधिनी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. बिहारी निम्न में से किस काल के कवि थे?

- (a) वीरगाथा काल (b) भक्ति काल
(c) रीतिकाल (d) आधुनिक काल

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. 'बिहारी सतसई' किस भाषा का काव्य ग्रन्थ है?

- (a) ब्रजभाषा (b) खड़ी बोली
(c) अवधी (d) भोजपुरी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. रीतिकाल का वह कौन-सा कवि है, जो अपनी मात्र एक कृति से हिन्दी साहित्य में अमर हो गया?

- (a) रहीम (b) मतिराम
(c) बिहारी (d) देव

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

आधुनिक काल

1. 19वीं शताब्दी से अब तक लिखे गए हिन्दी साहित्य को अधिकांश विद्वानों द्वारा क्या अभिधान दिया गया?

- (a) कला काल (b) आधुनिक काल
(c) नवीन विकास का युग (d) गद्य काल

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

19 वीं शताब्दी के मध्य में ब्रिटिश शासन की स्थापना के साथ भारत में वर्तमान युग का आविर्भाव हुआ। पाश्चात्य संस्कृति, साहित्य एवं विचारों के सम्पर्क और उनके साथ संघर्ष से चेतना की एक नई लहर दौड़ी जिसे, पुनर्जागरण कहते हैं। प्रतीकात्मक रूप से सन् 1850 हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल की आरम्भिक तिथि मानी जाती है। यह तिथि आधुनिक साहित्य के महान प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की जन्म तिथि भी है। अधिकांश विद्वानों ने इस काल को आधुनिक काल से अभिहित किया है।

2. हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल को इस नाम से भी अभिहित किया जाता है-

- (a) जीवनीकाल (b) पद्यकाल
(c) संस्मरण काल (d) गद्यकाल

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल को स्वातन्त्र्य काल (गद्यकाल) से अभिहित किया जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक काल को 'गद्य काल' कहकर पुकारा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं "आधुनिक काल में गद्य का आविर्भाव सबसे प्रधान साहित्यिक घटना है।" इस दृष्टि से इस काल को गद्यकाल भी कहा जा सकता है।

3. रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के 'आधुनिक काल' को किस अन्य नाम से अभिहित किया है?

- (a) वर्तमान काल (b) गद्यकाल
(c) उत्थानकाल (d) उक्त में से किसी नाम से नहीं

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. ब्रजभाषा के आधुनिक कालीन प्रसिद्ध कवि हैं-

- (a) मैथिलीशरण गुप्त (b) हरिऔध
(c) जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

ब्रजभाषा के आधुनिक कालीन प्रसिद्ध कवि जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' हैं। इन्हें ब्रजभाषा काव्य का अन्तिम प्रौढ़ कवि भी माना जाता है। इनके प्रसिद्ध काव्य हिन्दोता, हरिश्चन्द्र, गंगवतरण, ऊद्धव शतक, कलकाशी, समस्यापूर्ति, जयप्रकाश, सर्वस्व, घनाक्षरी, नियम गंगा विष्णु लहरी, रत्नाष्टक, वीराष्टक, प्रकीर्ण पदावली आदि हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ जगन्नाथदास 'रत्नाकर' का जन्म 1866 ई. में वाराणसी में तथा मृत्यु 1932 में हरिद्वार में हुई थी।
- ☛ बिहारी इनके सर्वाधिक प्रिय कवि थे।
- ☛ सतसई पर लिखी हुई इनकी टीका 'बिहारी रत्नाकर' अपनी अर्थवत्ता में बेजोड़ है।
- ☛ इनकी ऊद्धव शतक (1929) प्रौढ़तम काव्य है।

5. 'रत्नाकर' शब्द किस कवि के साथ जुड़ा है?

- (a) हरिश्चन्द्र (b) जगन्नाथ
(c) बदरीनारायण (d) भिखारीदास

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. इनमें से जगन्नाथदास 'रत्नाकर' की कृति छँटिये—

- (a) ऊद्धव शतक (b) भ्रमर गीत
(c) गीतावली (d) रश्मिरथी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'ऊद्धव शतक' के लेखक हैं-

- (a) रत्नाकर (b) नन्ददास
(c) सूरदास (d) सेवाराज

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. ऊद्धव शतक में छन्द हैं।

- (a) 116 (b) 120
(c) 130 (d) 135

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(*)

राम प्रसाद मिश्रा ने अपनी पुस्तक 'खड़ी बोली कविता में विरह वर्णन' में लिखा है कि ऊद्धव शतक में 118 छन्द हैं। 'ऊद्धव शतक' जगन्नाथदास रत्नाकर की प्रसिद्ध कृति है। यह भ्रमरगीत परम्परा का काव्य है। गोपी-ऊद्धव संवाद इसका वर्ण्य-विषय है। ऊद्धव शतक एक तरह से विरह काव्य है, किन्तु विरह की तीव्रानुभूति के साथ गोपियों का उत्कट प्रेम भी इसमें पूर्ण रूप से अभिव्यक्ति हुआ है। इसे कुछ समीक्षक शृंगार काव्य ही मानते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- रत्नाकर ने शृंगार और वीर दोनों रसों में रचनाएँ की हैं।
- उन्होंने अंग्रेजी कवि पोप के 'एस्से ऑन क्रिटिसिज्म' का रोला छन्दों में 'समालोचनादर्श' नाम से अनुवाद किया।
- रत्नाकर के काव्यग्रन्थों में 'हिन्दोला', 'हरिश्चन्द्र', 'ऊद्धव शतक', 'गंगावतरण', 'कलकाशी', 'शृंगार लहरी', 'गंगा विष्णु लहरी', 'रत्नाष्टक', 'वीराष्टक' तथा फुटकर रचनाएँ हैं।
- रत्नाकर ने 'साहित्य सुधा निधि' मासिक पत्रिका का सम्पादन भी किया था।
- फारसी और संस्कृत के ज्ञाता प्राचीन साहित्य के मर्मज्ञ, विद्वान तथा उच्चकोटि के कवि रत्नाकर को 'गंगावतरण' पर हिन्दुस्तानी अकेडमी प्रयाग ने पुरस्कार प्रदान किया।
- सन् 1930 में रत्नाकर जी कलकत्ता के हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति हुए।

9. रत्नाकर कृत 'गंगावतरण' किस छन्द में लिखा गया है?

- (a) चौपाई (b) दोहा
(c) रोला (d) घनाक्षरी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

जगन्नाथ दास रत्नाकर का 'गंगावतरण' काव्य रोला छन्द में लिखा गया है, किन्तु इनका प्रिय छन्द कवित है।

10. ऊद्धवशतक की

"हमको लिख्यो है कहा, हमको लिख्यो है कहा,
हमको लिख्यो है कहा, कहन सबै लगीं।"
में पुनरुक्ति द्वारा क्या बोध होता है?

- (a) भाव का अपकर्ष (b) भावसंधि
(c) भावोत्कर्ष (d) भावसबलता

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

प्रस्तुत पंक्तियाँ जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' के ऊद्धवशतक से ली गई हैं। ऊद्धव के ब्रज पहुंचते ही गोपियाँ श्रीकृष्ण के 'प्रेम संदेश' को पाने के लिए अति उत्कटित एवं आकुलता-व्याकुलता से दौड़ पड़ती है, जो भावोत्कर्ष का प्रतीक है।

□ भारतेन्दु युग

1. भारतेन्दु जी ने किस नाटक में स्वयं अभिनय किया है?

- (a) जानकी मंगल (b) जानकी भरत
(c) बरवै रामायण (d) अँधेर नगरी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

शीतला प्रसाद त्रिपाठी का 'जानकी मंगल' (1868) नाटक अवश्य अभिनय के लिए रचा गया था। यह नाट्य गुणों से युक्त है और इसकी भाषा परिमार्जित खड़ी बोली है, किन्तु इस समय तक भारतेन्दु का उदय हो चुका था और उनका 'विद्यासुन्दर' नाटक प्रकाशित हो गया था। वस्तुतः गोस्वामी तुलसीदास द्वारा प्रवर्तित रामलीला की लोकप्रियता के साथ लीला-नाटकों की जो परम्परा आरम्भ हुई, उसका श्रेष्ठ रूप 'जानकी मंगल' नाटक है। इसके अभिनय में भारतेन्दु जी ने भी भाग लिया था। इसकी विषयवस्तु 'रामचरितमानस' पर आधृत रामकथा ही है, किन्तु ब्रज भाषा के स्थान पर खड़ी बोली के प्रयोग तथा सभी प्रकार के आवश्यक रंग-निर्देश के कारण यह नाटक भारतेन्दु द्वारा प्रवर्तित साहित्यिक नाटकों की परम्परा से जुड़ जाता है।

2. काशी में नेशनल थियेटर की स्थापना के प्रेरक रहे.....

- (a) डॉ. जगमोहन सिंह (b) प्रतापनारायण मिश्र
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

काशी की नाट्य संस्था 'नेशनल थियेटर' की मंडली ने 'अँधेर नगरी' नाटक का मंचन 1881 ई. में किया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र संस्था के संरक्षक थे। उन्होंने अभिनय में हिस्सा भी लिया था।

3. भारतेन्दु कालीन किस उपन्यास में आधुनिकता की शुरुआत मानी जाती है?

- (a) रानी केतकी की कहानी (b) परीक्षा गुरु
(c) सौ अजान एक सुजान (d) चन्द्रकान्ता

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

भारतेन्दु युग में लेखकों को उपन्यास-रचना की प्रेरणा बंगला और अंग्रेजी के उपन्यासों से प्राप्त हुई। अंग्रेजी ढंग का पहला मौलिक उपन्यास लाला श्रीनिवासदास का 'परीक्षा गुरु' (1882) माना जाता है। इससे पूर्व श्रद्धाराम फुल्लौरी ने 'भाग्यवती' (1877) शीर्षक नामक लघु सामाजिक उपन्यास लिखा था। अतः स्पष्ट है कि भारतेन्दु कालीन उपन्यास 'परीक्षा गुरु' से आधुनिकता की शुरुआत मानी जाती है। 'सौ अजान एक सुजान' (1892), बालकृष्ण भट्ट कृत तथा 'चन्द्रकान्ता' (1887) देवकीनन्दन खत्री कृत उपन्यास हैं।

4. 'तदीय समाज' से किसका सम्बन्ध था?

- (a) केशवचन्द्र सेन (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(c) राजा राममोहन राय (d) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

‘भारतीय नवजागरण के अग्रदूत’ के रूप में प्रसिद्ध भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने देश की गरीबी, पराधीनता, शासकों का अमानवीय शोषण के चित्रण को ही अपने साहित्य का लक्ष्य बनाया। वे ‘आधुनिक हिन्दी के पितामह’ कहे जाते हैं। भारतेन्दु हिन्दी में आधुनिकता के पहले रचनाकार थे। उन्होंने वैष्णव भक्ति प्रचार के लिए ‘तदीय समाज’ की स्थापना की। इनका मूल नाम हरिश्चन्द्र था, उनकी लोकप्रियता से प्रभावित होकर काशी के विद्वानों ने सन् 1880 में उन्हें ‘भारतेन्दु’ की उपाधि प्रदान की।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है।
- हिन्दी में नाटकों का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। भारतेन्दु के नाटक लिखने की शुरुआत बंगला के विद्यासुन्दर (1867) नाटक के अनुवाद से होती है।
- उन्होंने सन् 1868 में ‘कविवचनसुधा’ नामक पत्रिका निकाली, 1876 में ‘हरिश्चन्द्र मैगजीन और फ़िर ‘बातबोधिनी’ नामक पत्रिकाएँ निकालीं।

5. ‘नवजागरण का अग्रदूत’ हिन्दी के किस लेखक को कहा जाता है?

- (a) शिवप्रसाद सितारे हिंद (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(c) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) बाबू मैथिलीशरण गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. “अंगरेज राज सुख साज सजे सब भारी।

पै धन बिदेस चलि जात इहै अति ख्वारी।।”

ये पंक्तियाँ किसके द्वारा लिखी गई हैं?

- (a) मैथिलीशरण गुप्त (b) महावीरप्रसाद द्विवेदी
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) प्रताप नारायण मिश्र

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

भारतेन्दु का काल ब्रिटिश उपनिवेश का था। ब्रिटिश उपनिवेश में भारत सभी दृष्टियों से परास्त हो गया। भारत को पूर्णतः मटियामेट कर यहाँ की सारी सम्पत्ति को अपने देश की ओर ले जाना ब्रिटिशों का एकमात्र लक्ष्य था। भारतेन्दु ‘भारत-दुर्दशा’ के पहले अंक में ही यह सूचित करते हैं—

“अंगरेज राज सुख साज सजे सब भारी।

पै धन बिदेस चलि जात इहै अति ख्वारी।।”

7. ‘धन्य भारत भूमि सब रतननि की उपजावनि’ इस पंक्ति के लेखक हैं—

- (a) प्रतापनारायण मिश्र (b) बदरीनारायण चौधरी ‘प्रेमघन’
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) मैथिलीशरण गुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

भारतेन्दु युगीन कवियों ने भारतीय इतिहास के गौरवशाली पृष्ठों की स्मृति तो अनेक बार दिखायी, पर उनकी राष्ट्रीय भावना केवल यहीं तक सीमित नहीं रही। अंग्रेजों की विचारधारा और देशभक्तिपूर्ण कविताओं से भी उन्होंने यथेष्ट प्रेरणा ली, जिसका फल यह हुआ कि क्षेत्रीयता से ऊपर उठकर वे सम्पूर्ण राष्ट्र की नब्ज को टटोलने लगे। बदरीनारायण चौधरी ‘प्रेमघन’ की उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ इसी तथ्य को स्पष्ट करती हैं। देश के उत्कर्ष-अपकर्ष के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों पर प्रकाश डाल कर इस युग (भारतेन्दु युग) के कवियों ने जनमानस में राष्ट्रीय भावना के बीजवपन का महत्वपूर्ण कार्य किया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- देशभक्ति की भावना बाद में मैथिलीशरण गुप्त कृत ‘भारत-भारती’ में लक्षित हुई।
- भारतेन्दु की ‘विजयिनी विजय वैजयन्ती’, प्रेमघन की ‘आनन्द अरुणोदय’, प्रतापनारायण मिश्र की ‘महापर्व’ और ‘नया संवत्’, राधाकृष्णदास की ‘भारत बारहमासा’ और ‘विनय’ शीर्षक कविताएँ देशभक्ति की प्रेरणा से युक्त हैं।
- ‘हमारो उत्तम भारत देश’ काव्य पंक्ति राधा चरण गोस्वामी द्वारा रचित है, जो देशभक्ति भावना को परिलक्षित करती है।
- ‘प्रेमघन’ ने ‘हार्दिक हर्षादर्श’ कविता में भारत की शासनाधिकार लेने वाली महारानी विक्टोरिया के विषय में कहा है—“किय सनाथ भोली भारत की प्रजा अनाथना।”
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने “हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान” का गुणगान किया।
- प्रेमघन ने ‘राजभक्ति भारत सरिस और ठौर कहुँ नाहिं’ कहकर विदेशी शासकों को आश्वस्त किया, तो अम्बिकादत्त व्यास ने ‘जयति राजराजेश्वरी जय जय परमेश’ द्वारा रानी विक्टोरिया के प्रति आभार प्रकट किया।

8. लाला श्रीनिवास दास के ‘संयोगिता स्वयंवर’ की सच्ची समालोचना किसने की थी?

- (a) रामचन्द्र शुक्ल (b) भारतेन्दु
(c) बदरीनारायण चौधरी (d) बालकृष्ण भट्ट

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

‘हिन्दी प्रदीप’ में ‘संयोगिता स्वयंवर’ की समीक्षा ‘सच्ची समालोचना’ शीर्षक से की गयी है। इसमें बालकृष्ण भट्ट ने इस नाटक के ‘ऐतिहासिक’ कहे जाने पर आपत्ति की है, क्योंकि इसकी कथावस्तु में उन्हें वस्तुनिष्ठता का अभाव प्रतीत हुआ है। निबन्ध के आरम्भ में ही वे लिखते हैं— “लालाजी यदि बुरा न मानिये तो एक बात आप से पूछें वह यह कि आप ऐतिहासिक नाटक किस्को कहेंगे क्या केवल किसी पुराने समय के ऐतिहासिक पुनरावृत्त की छाया लेकर नाटक लिख डालने ही से वह ऐतिहासिक हो गया-क्या किसी विख्यात राजा या रानी के आने से ही वह ऐतिहासिक हो जाएगा यदि ऐसा है, तो गप्प हँकने वाले दास्तानगो और नाटक के ढंग में कुछ भी भेद न रहा-किसी समय के लोगों के हृदय की क्या दशा थी उनके आभ्यान्तरिक भाव किस पहलू पर दुलके हुये थे अर्थात् उस समय मात्र के भाव Spirit of the times क्या थे-इन सब बातों को ऐतिहासिक रीति पर पहले समझ लीजिये तब उसके दरसाने का भी यत्न नाटकों द्वारा कीजिये।” तात्पर्य यह है कि ‘संयोगिता स्वयंवर’ ऐतिहासिक नाम वाले पात्रों को लेकर लिखा गया एक किस्सा है, ऐतिहासिक नाटक नहीं, क्योंकि इसमें लेखक ने अपने ऐतिहासिक बोध का परिचय नहीं दिया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- भारतेन्दु युग में कुछ विस्तृत समीक्षाएँ भी लिखी गयीं। इनमें से जो दो सर्वाधिक प्रसिद्ध समीक्षाएँ हैं, वे लाला श्रीनिवास दास के ‘संयोगिता स्वयंवर’ पर लिखी गयी हैं, जिसे लेखक ने ‘ऐतिहासिक नाटक’ कहा था। पहली समीक्षा ‘हिन्दी प्रदीप’ (अप्रैल, 1886) में निकली थी और दूसरी ‘आनन्द कादम्बिनी’ (माला-2, मेघ 10-11-12, 1886) में दोनों समीक्षाएँ एक ही वर्ष आगे-पीछे करके निकली थीं। इसका एक प्रमाण यह भी है कि ‘आनन्द कादम्बिनी’ में प्रकाशित समीक्षा में ‘हिन्दी प्रदीप’ में प्रकाशित समीक्षा का हवाला दिया गया। दोनों समीक्षाओं में से किसी समीक्षा के साथ उसके लेखक के नाम का उल्लेख नहीं है, जिससे यह अनुमान होता है कि ये समीक्षाएँ स्वयं सम्पादकों द्वारा लिखी गयी हैं।
- बालकृष्ण भट्ट ने पं. किशोरीलाल गोस्वामी की कविता-पुस्तक ‘समस्या-पूर्ति-मंजरी’ की हिन्दी प्रदीप में समीक्षा करते हुए लिखा था— “इसकी सम्पूर्ण कविताएँ केवल शृंगार रस की न हो थोड़ी-सी सामयिक देश भलाई के सम्बन्ध में भी होती, तो सोना और सुगन्धित कहा जाता।”
- इसी प्रकार उन्होंने शंकर दीक्षित नामक एक कवि की कविता पुस्तक ‘माधुरी विलास’ की समीक्षा करते हुए ‘हिन्दी प्रदीप’ में ही यह लिखा था “देशोपकारी बातें पर यह कविता की जाती, तो अधिक लाभ था।”

- ‘संयोगिता स्वयंवर’ के कथोपकथन एक ओर आलंकारिक हैं और दूसरी ओर पाण्डित्यपूर्ण। भट्ट जी ने आलंकारिकता पर आक्षेप करते हुए कहा है—“केवल विलिखित श्लेष बोलने ही से तो ऐतिहासिक नाटक के पात्र क्या वरन एक प्राकृतिक मनुष्य की भी पदवी हम आपके पात्रों को नहीं दे सकते-बल्कि मनुष्य के बदले आपके नाटकों को पात्रों के नीरस और रूखे से रूखे अर्थान्तरन्यास गढ़ने की कला कहें, तो अनुचित न होगा।”
- आनन्द कादम्बिनी में प्रकाशित समीक्षा (‘प्रेमघन-सर्वस्व’, द्वितीय) भट्ट जी की समीक्षा से भी बड़ी है। इसमें ‘संयोगिता स्वयंवर’ की समीक्षा ‘संयोगिता स्वयंवर नाटक’ के नाम से ‘प्राप्ति स्वीकार वा समालोचना’ स्तम्भ के अन्तर्गत की गयी है।
- ‘प्रेमघन’ ने ‘हिन्दी प्रदीप’ की समीक्षा पर अपना सन्तोष प्रकट करते हुए लिखा है—“नाट्य रचना के बहुतेरे शेष ‘हिन्दी प्रदीप’ ने अपनी ‘सच्ची समालोचना’ में दिखलाये हैं। अतः उसमें हम विस्तार नहीं देते; हम केवल यहाँ अलग-अलग उन दोषों को दिखलाना चाहते हैं कि जो प्रधान और विशेष हैं।”
- ‘रणधीर प्रेममोहिनी’ लाला श्रीनिवास दास का ‘संयोगिता स्वयंवर’ से पहले का नाटक है। यह नाटक भट्ट जी को पसन्द आया था। उनके अनुसार, “ट्रेजेडी के किस्म का यह पहला नाटक है, जो हिन्दी भाषा में रचा गया है।” इसमें शृंगार, हास्य और करुण तीनों रसों का उत्तम रीति से निर्वाह देखने को मिला था। इसके साथ-साथ इस नाटक में सदुपदेश भी थे और पात्रों का आदर्श एवं यथार्थ रूप में चित्रण भी।
- भारतेन्दु का नाटक ‘नीलदेवी’ के बारे में ‘विषय, छन्द या गान’ को भट्ट जी ने ऐसा ‘उत्तेजक’ बतलाया है, जिसे पढ़कर कायरों का जी भी फड़क उठे।

9. ‘मेघदूत’ काव्य का खड़ी बोली में अनुवाद किया है-

- | | |
|------------------|------------------------------|
| (a) सदल मिश्र ने | (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने |
| (c) लल्लू लाल ने | (d) राजा लक्ष्मण सिंह ने |

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

भारतेन्दु युग के कवियों ने हिन्दी और ब्रजभाषा में मौलिक रचनाओं के साथ-साथ संस्कृत की अनेक रचनाओं के अनुवाद भी किए। राजा लक्ष्मण सिंह द्वारा अनूदित ‘रघुवंश’ और ‘मेघदूत’ उल्लेखनीय कृतियाँ हैं, जिनमें भावान्तरण की सरसता, शैली की लालित्य, शुद्ध ब्रजभाषा तथा सवैया छन्द प्रस्तुत किया गया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ठाकुर जगमोहन सिंह द्वारा अनूदित रचनाएँ ‘ऋतु संहार’ और ‘मेघदूत’ विशेष उल्लेखनीय हैं।

10. शेक्सपीयर के सभी नाटकों का हिन्दी अनुवाद किसने किया है?

- (a) मोहन राकेश (b) लाला सीताराम
(c) विद्यानिवास मिश्र (d) जगनिक

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

लाला सीताराम ने शेक्सपीयर की कई पुस्तकों का अनुवाद किया है, जिनमें भूल भुलैया (1885) प्रमुख था। लाला सीताराम का उपनाम 'भूप' था। इन्होंने दोहा-चौपाई में अवधी भाषा का घनाक्षरी सवैया में ब्रजभाषा का और गद्य में खड़ी बोली का प्रयोग किया। इनका एक ग्रन्थ 'अयोध्या का इतिहास' बहुचर्चित है। इनकी कुछ कविताएँ बहुत प्रसिद्ध हुई हैं। जैसे- बैरगिया नाता।

11. गोल्ड स्मिथ की कृति ट्रैवलर का अनुवाद किसने किया है?

- (a) रामचरित उपाध्याय (b) रामनरेश त्रिपाठी
(c) श्रीधर पाठक (d) ठाकुर गोपाल शरण सिंह

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

श्रीधर पाठक ने कालिदास कृति 'ऋतुसंहार' और गोल्ड स्मिथ कृत 'हरमिट', 'डेजर्टेड', तथा 'द ट्रैवलर' का काव्यानुवाद क्रमशः 'एकान्तवासी योगी', 'ऊजड़ ग्राम' और 'श्रान्त पथिक' नामक शीर्षक से किया।

12. भारतेन्दु का खड़ी बोली में रचित कविताओं का संग्रह किस नाम से प्रसिद्ध है?

- (a) फूलों का गुच्छा (b) प्रेमतरंग
(c) प्रेम सरोवर (d) प्रेम माधुरी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

भारतेन्दु द्वारा रचित खड़ी बोली में रचित कविताएँ 'फूलों का गुच्छा' नामक काव्य ग्रन्थ में संगृहीत हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को आधुनिक हिन्दी के प्रणेता, पितामह व प्रवर्तक माना जाता है।

13. निम्नलिखित में से भारतेन्दुकालीन कवि कौन से हैं?

- (a) हरिश्चन्द्र, प्रेमघन, प्रतापनारायण मिश्र, अंबिकादत्त व्यास
(b) हरिऔध, रामनरेश त्रिपाठी, मुकुटधर पांडेय
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण, गोपालशरण सिंह
(d) मुक्तिबोध, गिरिजाकुमार माथुर, शमशेर बहादुर सिंह

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

भारतेन्दुकालीन प्रमुख कवि इस प्रकार हैं- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रताप नारायण मिश्र, जगमोहन सिंह, अंबिकादत्त व्यास, राधाकृष्णदास इत्यादि।

14. कौन-सा निबन्धकार भारतेन्दु युग का नहीं है?

- (a) बालकृष्ण भट्ट (b) बालमुकुन्द गुप्त
(c) प्रतापनारायण मिश्र (d) श्रीनिवास दास

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

बालमुकुन्द गुप्त द्विवेदी युग के निबन्धकार हैं। बालमुकुन्द की रचनाएँ 'शिवशम्भू का चिट्ठा' तथा 'चिट्ठे और खत' हैं। द्विवेदी युग के प्रमुख निबन्धकार-महावीर प्रसाद द्विवेदी, गोविन्द नारायण मिश्र, माधव प्रसाद मिश्र, मिश्रबन्धु, गोपालराम गहमरी, सरदार पूर्ण सिंह, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी आदि हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➔ भारतेन्दु युग के प्रमुख निबन्धकार-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', लाला श्रीनिवास दास, जगमोहन सिंह आदि हैं।

15. भारतेन्दु ने अपना बलिया वाला ऐतिहासिक व्याख्यान दिया था-

- (a) 1880 ई. में (b) 1874 ई. में
(c) 1884 ई. में (d) 1882 ई. में

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

हिन्दी साहित्य में रुचि रखने वालों के लिए ददरी मेले का एक खास ऐतिहासिक महत्व है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने नवम्बर, 1884 में यहाँ एक व्याख्यान दिया था, जिसे 'बलिया व्याख्यान' या 'बलिया का भाषण' के नाम से जाना जाता है। यही व्याख्यान 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?' शीर्षक से 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' में दिसम्बर, 1884 में प्रकाशित हुआ।

16. समस्या पूर्ति किस युग की विशेषता है?

- (a) भारतेन्दु युग (b) द्विवेदी युग
(c) छायावाद युग (d) प्रगतिवादी युग

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

समस्या पूर्ति भारतेन्दु युग की काव्य शैली थी और उनके मंडल के कवि विविध विषयों पर तत्काल समस्या पूर्ति किया करते थे। रामकृष्ण वर्मा, प्रेमघन आदि कवि तत्काल समस्या पूर्ति के लिए प्रसिद्ध थे। भारतेन्दुकालीन कविता की मुख्य विशेषताएँ हैं—1. देश-भक्ति और राष्ट्रीय भावना, 2. जनवादी विचारधारा, 3. प्राचीन परिपाटी की कविता, 4. कलात्मकता का अभाव, 5. काव्य में ब्रजभाषा का प्रयोग, 6. हास्य-व्यंग्य एवं समस्या पूर्ति तथा 7. प्राचीन छन्द।

17. भारतेन्दु युग के नाटककार हैं -

- (a) श्रीनिवास दास (b) प्रसाद
(c) हरिकृष्ण 'प्रेमी' (d) वृन्दावन लाल वर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

भारतेन्दु युग के लेखकों में बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, राधा चरण गोस्वामी, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', लाला श्रीनिवास दास, बाबू देवकीनन्दन खत्री और किशोरी लाल गोस्वामी आदि उल्लेखनीय हैं। हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी आदि भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाले लाला श्रीनिवास दास को हिन्दी में आधुनिक ढंग का पहला उपन्यास 'परीक्षा गुरु' लिखने का गौरव प्राप्त है। उपन्यास के अतिरिक्त नाटक के क्षेत्र में भी उन्हें भरपूर ख्याति मिली। श्रीनिवास जी के प्रमुख नाटक-प्रह्लाद चरित्र, तप्ता संवरण, रणधीर और प्रेममोहिनी तथा संयोगिता स्वयंवर आदि हैं।

18. भारतेन्दु युग का कौन-कवि पुष्टिमार्ग में दीक्षित था?

- (a) बालकृष्ण भट्ट (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(c) प्रेमघन (d) प्रतापनारायण मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

हिन्दी के कृष्णभक्त कवियों में विद्यापति, सूरदास आदि अष्टछाप के कवि, रहीम, रसखान, मीराबाई, बिहारी, चाचा हितहरिवंश, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, जगन्नाथदास रत्नाकर, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', धर्मवीर भारती आदि के नाम अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। अतः स्पष्ट है कि प्रस्तुत विकल्प में भारतेन्दु युग के कवियों में केवल भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुष्टिमार्ग में दीक्षित तथा कृष्ण भक्त थे।

19. गद्य रचना को एक कला के रूप में ग्रहण करने वाले-कलम की कारीगरी समझने वाले-लेखक थे—

- (a) रामचन्द्र शुक्ल (b) गोविन्दनारायण मिश्र
(c) बदरीनाथ भट्ट (d) बदरीनारायण चौधरी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है कि पण्डित बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की शैली सबसे विलक्षण थी। ये गद्य रचना को एक कला के रूप में ग्रहण करने वाले-कलम की कारीगरी समझने वाले लेखक थे और कभी-कभी ऐसे पेचीदे मजमून बाँधते थे कि पाठक एक-डेढ़ कॉलम के लम्बे वाक्य में उलझा रह जाता था। अनुप्रास और अनूठे पदविन्यास की ओर भी उनका ध्यान रहता था। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (d) बताया था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- भारत सौभाग्य, प्रयाग रामागमन 'प्रेमघन' जी के प्रसिद्ध नाटक हैं।
- 'प्रेमघन' ने 'जीर्ण जनपद' नामक एक काव्य लिखा है, जिसमें ग्रामीण जीवन का यथार्थवादी चित्रण है।

20. नीचे दो वक्तव्य दिये गये हैं, इनमें से एक कथन (A) और दूसरा कारण (R) है।

कथन (A) : भारतेन्दु युग के आते-आते हिन्दी में अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हो गया था।

कारण (R) : भारतेन्दु युग के सभी लेखक पत्रकार थे। उपर्युक्त वक्तव्यों के आधार पर नीचे दिये गये विकल्पों में से ही उत्तर चुनिये।

- (a) (A) सही और (R) गलत है, दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।
(b) (A) गलत और (R) सही है, दोनों एक-दूसरे के पूरक नहीं हैं।
(c) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (A) की सही व्याख्या (R) है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं तथा (A) की सही व्याख्या (R) नहीं है।

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कथन (A) की सही व्याख्या कारण (R) है।

❑ द्विवेदी युग

1. 'द्विवेदी युग' का नामकरण किसके नाम पर हुआ है?

- (a) शान्तिप्रिय द्विवेदी
(b) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(d) डॉ. राम अवध द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2004, 2005

उत्तर—(b)

आधुनिक कविता के दूसरे पड़ाव (सन् 1903 से 1916) को द्विवेदी युग के नाम से जाना जाता है। यह आधुनिक कविता के उत्थान व विकास का काल है। सन् 1903 में महावीर प्रसाद द्विवेदी जी सरस्वती पत्रिका के सम्पादक बने। द्विवेदी जी ने खड़ी बोली को शुद्ध व्याकरण-सम्मत और व्यवस्थित बनाकर साहित्य के सिंहासन पर बैठने योग्य बनाया। अब वह ब्रजभाषा रानी की युवराज्ञी न रहकर स्वयं साहित्यिक जगत की साम्राज्ञी बन गयी। यह कार्य द्विवेदी जी के महान व्यक्तित्व से ही सम्पन्न हुआ और इस काल का कवि-मंडल उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनके बताये मार्ग पर चला। इसीलिए इस युग को 'द्विवेदी युग' का नाम दिया गया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- द्विवेदी युग के प्रमुख कवि मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', श्रीधर पाठक, गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही', रामनरेश त्रिपाठी, नाथूराम शर्मा 'शंकर', सत्यनारायण 'कविरत्न', गोपालशरण सिंह आदि हैं।
- महावीर प्रसाद द्विवेदी की साहित्य सेवा को देखते हुए सन् 1931 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने उन्हें आचार्य की उपाधि प्रदान की।

2. 'द्विवेदी युग' नामकरण किसके नाम के आधार पर किया गया है?

- (a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) शान्तिप्रिय द्विवेदी (d) मन्नन द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. आधुनिक हिन्दी साहित्य के 'द्विवेदी युग' का नामकरण किस रचनाकार के नाम के आधार पर किया गया?

- (a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) सुधाकर द्विवेदी
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) मन्नन द्विवेदी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. द्विवेदी युग का एक और नाम है -

- (a) संक्रांति काल (b) संधिकाल
(c) जागरण-सुधारकाल (d) गद्यकाल

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

द्विवेदी युग को 'जागरण-सुधारकाल' भी कहा जाता है। डॉ. रामकुमार वर्मा ने आदिकाल को सन्धिकाल तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक काल को गद्यकाल कहा है।

5. द्विवेदी युग का वह साहित्यकार, जिन्हें 'कविता-कामिनी-कांत', 'भारतेन्दु प्रज्ञेन्दु', 'साहित्य सुधाकर' उपाधियों से विभूषित किया गया था—

- (a) नाथूराम शर्मा शंकर (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(c) रामधारी सिंह 'दिनकर' (d) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

द्विवेदी युग के कवि नाथूराम शर्मा शंकर ब्रजभाषा के कवि थे, किन्तु शीघ्र ही खड़ी बोली की ओर झुक गये थे। इन्होंने राजा रवि वर्मा के चित्रों के आधार पर कविताएँ लिखी हैं। ये समस्यापूर्ति में बड़े कुशल थे। इन्हें 'कविता-कामिनी-कांत', 'भारतेन्दु प्रज्ञेन्दु', 'साहित्य सुधाकर' आदि उपाधियों से विभूषित किया गया था। 'अनुराग रत्न', 'शंकर सरोज', 'गर्भरंडा-रहस्य तथा 'शंकर-सर्वस्व' इनके प्रमुख काव्य ग्रन्थ हैं। ये प्रायः अतिशयोक्तिपूर्ण कविता लिखते थे।

6. "ज्ञानराशि के संचित कोष ही का नाम साहित्य है।"

यह उक्ति किस साहित्यकार की है?

- (a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) नन्ददुलारे वाजपेयी
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) मुक्तिबोध

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर 'द्विवेदी युग' कहा जाता है। वे साहित्य को 'ज्ञान राशि का संचित कोष' मानते थे। वे भाषा और साहित्य के व्यवस्थापक थे। उन्होंने सरस्वती पत्रिका को इस व्यवस्थापन का माध्यम बनाया।

7. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी रचित 'अर्थशास्त्र' विषय का ग्रन्थ है—

- (a) अर्थशास्त्र की भूमिका (b) आर्थिक व्यवस्था
(c) भारतीय अर्थनीति (d) सम्पत्तिशास्त्र

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' विषय का ग्रन्थ है— सम्पत्तिशास्त्र। यह पुस्तक सन् 1908 में प्रकाशित हुई, जो भारत के आर्थिक-राजनीतिक यथार्थ का अभूतपूर्व चित्र प्रस्तुत करती है।

8. 'सम्पत्तिशास्त्र' के लेखक हैं—

- (a) श्रीधर पाठक (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. सम्पत्तिशास्त्र के लेखक का नाम है—

- (a) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
(b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(d) बाबू श्यामसुन्दर दास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. 'जूही की कली' कविता को किस सम्पादक ने अपने पत्र में बिना प्रकाशित किये वापस कर दिया था?

- (a) गोपालदास गहमरी (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) बनारसीदास चतुर्वेदी

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के साहित्यिक नेतृत्व के उत्कर्ष काल में निराला का साहित्यिक जीवन शुरू होता है। निराला की 'जूही की कली' (1916) मुक्त छन्द की कविता महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपने पत्र में बिना प्रकाशित किये ही लौटा दी। निराला 'समन्वय' पत्र से जुड़े बाद में 'सुधा' एवं 'मतवाला' से भी जुड़े। मतवाला से उनका संघर्ष भी रहा।

11. 'निराला की कविता 'जूही की कली' को किस संपादक ने बिना प्रकाशित किये वापस कर दिया था?

- (a) श्यामसुन्दर दास (b) बालमुकुंद गुप्त
(c) प्रेमचन्द (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. "अन्तःकरण की वृत्तियों के चित्र का नाम कविता है।" किसने कहा है?

- (a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) श्यामसुन्दर दास (d) रामचन्द्र शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कहा कि कविता अन्तःकरण की वृत्तियों का चित्र बन जाती है या रामचन्द्र शुक्ल को याद करें, तो उन्होंने कहा था कि जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है, तो हृदय की मुक्ति की साधना के लिये मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आयी है, वह कविता है।

13. इनमें से कौन द्विवेदी युग का कवि नहीं है?

- (a) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(b) सोहनलाल द्विवेदी
(c) रामनरेश त्रिपाठी
(d) मैथिलीशरण गुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

सोहनलाल द्विवेदी, द्विवेदी युग के कवि नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत एवं प्रमुख गँधीवादी कवि हैं। द्विवेदी युग के प्रमुख कवि मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', श्रीधर पाठक, गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही', रामनरेश त्रिपाठी, नाथूराम शर्मा 'शंकर', गोपाल शरण सिंह, जगन्नाथ दास रत्नाकर आदि हैं।

14. द्विवेदी युग के सर्वश्रेष्ठ प्रगीतकार माने जाते हैं-

- (a) रूपनारायण पाण्डेय (b) लोचन प्रसाद पाण्डेय
(c) मुकुटधर पाण्डेय (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

लोचन प्रसाद पाण्डेय के अनुज मुकुटधर पाण्डेय भी सुकवि थे। वे प्रकृति के उपासक थे। इनके काव्य में भावात्मकता, आन्तरिक संवेदना और रहस्यात्मक अनुभूति के दर्शन होते हैं। ये द्विवेदी युग के सर्वश्रेष्ठ प्रगीतकार माने जाते हैं। वस्तुतः इनके काव्य में छायावाद का पूर्वाभास मिलता है। 'पूजाफूल' तथा 'कानन-कुसुम' इनके प्रकाशित काव्य संकलन हैं।

15. छायावाद का पूर्वाभास किस कवि की रचनाओं में प्रकट हुआ?

- (a) मुकुटधर पाण्डेय (b) रूपनारायण पाण्डेय
(c) लोचन प्रसाद पाण्डेय (d) श्याम नारायण पाण्डेय

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. किस कवि की रचनाओं में छायावाद का पूर्वाभास संलक्षित हुआ?

- (a) रूपनारायण पाण्डेय (b) डॉ. गोपाल शरण
(c) मुकुटधर पाण्डेय (d) लोचन प्रसाद पाण्डेय

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है-

- (a) कविता कौमुदी (b) ऊर्ध्व चरित
(c) प्रियप्रवास (d) लोकायतन

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रियप्रवास' संस्कृत की समस्त तथा कोमल-कान्त पदावली से अलंकृत एवं संस्कृत वर्णवृत्तों में लिखित हिन्दी खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है, यह सत्रह सर्गों में विभक्त है। इसमें शृंगार और करुण रस की प्रधानता है। रामचन्द्र शुक्ल ने अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'प्रियप्रवास' को महाकाव्य नहीं माना है। 'हरिऔध' जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। गद्य और पद्य में उनका समान अधिकार था। कुल मिलाकर उनकी 51 रचनाएँ हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- हरिऔध जी ने जहाँ 'चोखे चौपदे' में मुहावरों के बाहुल्य तथा लोकभाषा के समावेश का प्रयास किया, वहीं 'वैदेही वनवास' की रचना द्वारा एक और प्रबन्ध सृष्टि का प्रयत्न किया।
- अपने काव्य संग्रह 'रसकलश' को ब्रजभाषा में लिखकर यह सिद्ध कर दिया कि ब्रजभाषा पर भी उनकी अच्छी पकड़ है।
- हरिऔध जी ने दो नाटक 'प्रद्युम्न विजय' (1893) तथा 'रुक्मणी परिणय' (1894) भी लिखे।
- सन् 1894 में इनका प्रथम उपन्यास 'प्रेमकान्ता' प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात दो और उपन्यास 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' (1899) तथा 'अधखिला फूल' (1907) भी प्रकाशित हुआ।
- हरिऔध जी की अन्य महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं—रसिक रहस्य (1899), प्रेमाम्बुवारिधि, प्रेम प्रपंच (1900), प्रमाम्बु प्रश्रवण, प्रेमाम्बु प्रवह (1901), प्रेम पुष्पहार (1904), उद्बोधन (1906), काव्योपवन (1909), कर्मवीर (1916), ऋतु मुकुर (1917), पद्मप्रसून (1925) तथा पद्मप्रमोद।
- कल्पलता, बोलचाल, पारिजात तथा हरिऔध सतसई जैसे मुक्तक काव्य के अलावा कबीर वचनावली, साहित्य सन्दर्भ तथा हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास आलोचनात्मक कृतियों की रचना भी हरिऔध जी ने की थी।
- सन् 1924 में इन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधान पद को भी सुशोभित किया।
- खड़ी बोली का प्रथम महाकवि होने का श्रेय 'हरिऔध' जी को है।

18. खड़ी बोली हिन्दी का आधुनिककालीन प्रथम महाकाव्य है—

- (a) साकेत (b) प्रियप्रवास
- (c) भारत भारती (d) कुरुक्षेत्र

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. 'हरिऔध' के 'प्रियप्रवास' महाकाव्य में सर्गों की संख्या है—

- (a) 17 (b) 19
- (c) 21 (d) 23

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा लिखित काव्य ग्रन्थ है—

- (a) पथिक (b) कनुप्रिया
- (c) चोखे चौपदे (d) वासवदत्ता

T.G.T. परीक्षा, 2005, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. 'वैदेही वनवास' नामक काव्य लिखा है—

- (a) देव (b) अयोध्यासिंह उपाध्याय
- (c) बदरीनारायण चौधरी (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. 'वैदेही वनवास' के लेखक हैं—

- (a) मैथिलीशरण गुप्त (b) अयोध्यासिंह उपाध्याय
- (c) गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' (d) रामनरेश त्रिपाठी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. खड़ी बोली में प्रथम महाकाव्य 'प्रियप्रवास' के रचयिता हैं—

- (a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- (b) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
- (c) माखनलाल चतुर्वेदी
- (d) केशवदास

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है—

- (a) कामायनी (b) रामचरितमानस
- (c) साकेत (d) प्रियप्रवास

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना 'अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध' की नहीं है?

- (a) विचित्र विवाह (b) वैदेही वनवास
- (c) चोखे चौपदे (d) चुभते चौपदे

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'विचित्र विवाह', 'राष्ट्र भारती', 'देवदूत', 'देवसभा' रामचरित उपाध्याय की कृति है। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'रामचरितविंतामणि' नामक प्रबंध काव्य की भी रचना की है। शेष कृतियाँ अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की हैं।

26. “दिवस का अवसान समीप था।
गगन था कुछ लोहित हो चला।।
तरु शिखा पर थी जब राजती।
कमलिनी-कुल-वल्लभ की प्रभा।।”
काव्य पंक्तियों का सम्बन्ध है—

- (a) आँसू से (b) परिवर्तन से
(c) प्रियप्रवास से (d) किसान से

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ अयोध्यासिंह उपाध्याय ‘हरिऔध’ की खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य ‘प्रियप्रवास’ के प्रथम सर्ग से अवतरित हैं।

27. द्विवेदी युग की कविता है—

- (a) उपदेशात्मक एवं इतिवृत्तात्मक
(b) प्रकृति चित्रात्मक
(c) नव जागरण परक
(d) नारी चेतनात्मक

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

डॉ. नगेन्द्र अपनी पुस्तक ‘हिन्दी साहित्य का इतिहास’ में लिखते हैं कि सामान्यतः द्विवेदीयुगीन काव्य को नीरस, इतिवृत्तात्मक और उपदेशात्मक कहा जाता है। अतः विकल्प (a) सही उत्तर है।

28. ‘इतिवृत्तात्मकता’ किस काव्य युग की प्रमुख विशेषता है?

- (a) भारतेन्दु युग (b) द्विवेदी युग
(c) शुक्ल युग (d) छायावादी युग

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. द्विवेदी युगीन साहित्य में किस प्रवृत्ति की प्रमुखता नहीं है?

- (a) गद्यात्मकता (b) काव्यात्मकता
(c) वैचारिकता (d) इतिवृत्तात्मकता

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

काव्यात्मकता द्विवेदी युगीन साहित्य की प्रवृत्ति की प्रमुखता नहीं है। शेष द्विवेदी युगीन प्रवृत्ति की प्रमुखता है।

30. भारत-भारती का प्रकाशन किस वर्ष हुआ?

- (a) 1912 ई. (b) 1914 ई.
(c) 1916 ई. (d) 1918 ई.

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

3 अगस्त, 1886 को झाँसी (उ.प्र.) के चिरगाँव में जन्मे मैथिलीशरण गुप्त हिन्दी के सर्वाधिक प्रभावी तथा लोकप्रिय रचनाकारों में से एक हैं। इनकी कविताओं में बौद्ध दर्शन, महाभारत, रामायण आदि के कथानक स्वतः उतर आते हैं। हिन्दी की खड़ी बोली के रचनाकार गुप्त जी हिन्दी कविता के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव के समान हैं। उन्होंने सन् 1912 में राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत ‘भारत-भारती’ का प्रकाशन किया, जो तीन खण्डों में है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- गंधीजी ने मैथिलीशरण गुप्त को ‘राष्ट्रकवि’ की संज्ञा दी।
- गुप्त जी को सन् 1954 में पद्मभूषण प्रदान किया गया।
- ‘साकेत’ इनकी सर्वोत्कृष्ट रचना है, जिसमें लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला को नायिका बनाकर रामकथा कही गयी है।
- इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं—जयद्रथ वध, विकट भट, गुरुकुल, किसान, सिद्धराज, जयभारत, द्वापर, वैतालिक, कुणाल, यशोधरा, पंचवटी, हिडिम्बा, अर्जन-विसर्जन, काबाकर्बला तथा साकेत (महाकाव्य)।
- गुप्त जी द्वारा अनूदित काव्य हैं—‘प्लासी का युद्ध’, ‘मेघनाद वध’, ‘वृत्र-संहार’।
- ‘यशोधरा’ की नायिका गौतम बुद्ध की पत्नी यशोधरा हैं।
- ‘किसान’ में एक सामान्य किसान के जीवन-संघर्ष की कथा है।
- ‘रंग में भंग’ राजपूत आन की कथा है।
- ‘जयिनी’ मार्क्स की पुत्री जैनी पर रचित प्रबन्ध काव्य है।
- मैथिलीशरण गुप्त की प्रथम पुस्तक ‘रंग में भंग’ का प्रकाशन सन् 1909 में हुआ, किन्तु इनकी ख्याति का मूलाधार ‘भारत-भारती’ (1912) है।
- गुप्त जी ने ‘तिलोत्तमा’, ‘चन्द्रहास’ और ‘अनघ’ नामक तीन नाटक, प्रायः सभी प्रकार के प्रगीत और मुक्तक भी लिखे हैं। मैथिलीशरण गुप्त प्रसिद्ध रामभक्त कवि थे।
- गुप्त जी की प्रारम्भिक रचनाएँ कलकत्ता से निकलने वाले ‘वैश्योपकारक’ में प्रकाशित होती थीं। बाद में इनका परिचय आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी से हुआ और इनकी कविताएँ ‘सरस्वती’ में प्रकाशित होने लगीं।

31. ‘भारत-भारती’ में किस भावना की रूपरेखा प्रस्तुत है?

- (a) दैन्य भावना (b) राष्ट्रीय भावना
(c) प्रेम भावना (d) भक्ति भावना

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. राजपूती आन की कथा है—

- (a) सिद्धराज (b) रंग में भंग
(c) पंचवटी (d) साकेत

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. 'चिरगँव' किस कवि का जन्म स्थान है?

- (a) माखनलाल चतुर्वेदी (b) मैथिलीशरण गुप्त
(c) सुभद्रा कुमारी चौहान (d) सुमित्रानन्दन पन्त

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. 'किसान' के रचनाकार हैं—

- (a) मैथिलीशरण गुप्त (b) निराला
(c) हरिऔध (d) प्रसाद

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. रंग में भंग नामक काव्य कृति के रचयिता हैं—

- (a) भिखारीदास (b) मलूकदास
(c) मैथिलीशरण गुप्त (d) तुलसीदास

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. निम्नलिखित में से एक मैथिलीशरण गुप्त की काव्य रचना नहीं है—

- (a) सिद्धराज (b) जयभारत
(c) हिडिम्बा (d) कृषक-क्रन्दन

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'जयद्रथ-वध' क्या है?

- (a) महाकाव्य (b) प्रबन्ध काव्य
(c) खण्डकाव्य (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'जयद्रथ-वध' का प्रकाशन 1910 ई. में हुआ था। मैथिलीशरण गुप्त की प्रारम्भिक रचनाओं में 'भारत-भारती' को छोड़कर 'जयद्रथ-वध' की प्रसिद्धि सर्वाधिक रही। हरिगीतिका छन्द में रचित यह एक खण्डकाव्य है।

38. साकेत महाकाव्य का सर्वाधिक मार्मिक सर्ग है—

- (a) षष्ठ (b) सप्तम्
(c) अष्टम् (d) नवम्

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

मैथिलीशरण गुप्त कृत साकेत महाकाव्य का नवम् सर्ग सर्वाधिक मार्मिक है। साकेत में 12 सर्ग हैं, जिसका रचनाकाल 1916-1932 ई. है। साकेत की सम्पूर्ण कथा का केन्द्र बिन्दु 'उर्मिला' है। आरम्भ में इसका नाम उर्मिला-उत्ताप अर्थात् उर्मिला-काव्य रखा गया, क्योंकि महाकवि रबीन्द्रनाथ ने बंगला-भाषा में लिखे गये अपने निबन्ध 'काव्येर उपेक्षिता' में राम-कथा में अव्यक्त वेदना-देवी उर्मिला के प्रति भारतीय कवियों की उपेक्षा की ओर ध्यान आकृष्ट किया था और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'कवियों की उर्मिला-विषयक उदासीनता' लेख द्वारा हिन्दी कवियों से अनुरोध किया था कि वे इस उपेक्षा को दूर करें। अपने काव्य-गुरु द्विवेदी जी से संकेत पाकर गुप्त जी ने 'साकेत' लिखना शुरू कर दिया।

39. 'साकेत' की कथा का मुख्य सम्बन्ध किसके चरित्र विकास से जुड़ा है?

- (a) राम और सीता के (b) लक्ष्मण और उर्मिला के
(c) भरत और माण्डवी के (d) लक्ष्मण और सीता के

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'साकेत' की कथा का मुख्य सम्बन्ध उर्मिला और लक्ष्मण के चरित्र से जुड़ा है। यह मैथिलीशरण गुप्त का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। इसकी कथा साकेत (अयोध्या) को केन्द्र मानकर लिखी गयी है। इस काव्य का प्रारम्भ अयोध्या के राजभवन में होने वाले लक्ष्मण-उर्मिला के विनोद से होता है। यह विशद प्रबन्ध काव्य है। इसमें लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला को नायिका बनाकर राम कथा कही गयी है। 'साकेत' रचना की मूल प्रेरणा गुप्त जी को महावीर प्रसाद द्विवेदी के एक लेख 'कवियों की उर्मिला-विषयक उदासीनता' से मिली, जो 'सरस्वती' में 1908 ई. की जुलाई में भुजंगभूषण भट्टाचार्य के छद्म नाम से छपा था।

40. मैथिलीशरण गुप्त ने इतिहास के उपेक्षित नारी पात्र को निम्न पुस्तक में प्रतिष्ठित किया—

- (a) भारत-भारती (b) रंग में भंग
(c) द्वापर (d) साकेत

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. द्विवेदी युग के सम्पूर्णतः प्रतिनिधि कवि हैं—

- (a) श्रीधर पाठक (b) हरिऔध
(c) मैथिलीशरण गुप्त (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है, "गुप्तजी की प्रतिभा की सबसे बड़ी विशेषता है।" कालानुसरण की क्षमता अर्थात् उत्तरोत्तर बदलती हुई भावनाओं और काव्य प्रणालियों को ग्रहण करते चलने की शक्ति। इस दृष्टि से हिन्दी-भाषी जनता के प्रतिनिधि कवि ये निस्सन्देह कहे जा सकते हैं। भारतेन्दु के समय से स्वदेश-प्रेम की भावना जिस रूप में चली आ रही थी, उसका विकास 'भारत-भारती' में मिलता है। इधर के राजनीतिक आन्दोलनों ने, जो रूप धारण किया उसका पूरा आभास पिछली रचनाओं में मिलता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि सत्याग्रह, अहिंसा, मनुष्यत्ववाद, विश्वप्रेम, किसानों एवं श्रमजीवियों के प्रति प्रेम एवं सम्मान सबकी झलक हम पाते हैं।" अतः द्विवेदी युग के सम्पूर्णतः प्रतिनिधि कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं।

छायावाद के प्रवर्तक के सम्बन्ध में एक लम्बा विवाद है। डॉ. गंगा प्रसाद पाण्डेय, निराला की 'जूही की कली' (1916) के साथ इस युग के प्रवर्तक महाप्राण निराला को मानते हैं। छायावाद का काल 1918-1938 ई. तक माना जाता है। अधिकतर विद्वान 'प्रसाद' की 'झरना' (1918) से इस युग की शुरुआत मानते हैं। चूँकि इस युग में प्रसाद का आगमन पहले हुआ और छायावाद की भी यहीं से शुरुआत मानी जाती है। अतः जयशंकर प्रसाद को 'छायावाद का प्रवर्तक' माना जा सकता है।

4. छायावाद की पहली रचना मानी जाती है-

- | | |
|-------------|----------|
| (a) पल्लव | (b) लहर |
| (c) कामायनी | (d) झरना |

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

□ छायावाद

1. 'छायावाद' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किस आलोचक ने किया था?

- | | |
|---------------------------|----------------------------|
| (a) मुकुटधर पाण्डेय | (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल |
| (c) हजारी प्रसाद द्विवेदी | (d) नामवर सिंह |

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

'छायावाद' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग मुकुटधर पाण्डेय ने किया। 'छायावाद' सिद्ध करने में पं. मुकुटधर पाण्डेय के 'श्री शारदा' में प्रकाशित लेखमाला की अहम भूमिका रही। पं. मुकुटधर पाण्डेय की 'सरस्वती' में प्रकाशित कविता 'कुकरी के प्रति' को प्रथम छायावादी कविता माना गया एवं समस्त हिन्दी साहित्य जगत ने इसे स्वीकार भी किया। इसमें छायावाद के सभी तत्व समाहित थे। सन् 1916 में इनकी पहली कविता संग्रह 'पूजा के फूल' का प्रकाशन हुआ। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—शैलबाला (1916), लच्छमा (1917), परिश्रम (1917), हृदयदान (1918), मामा (1918) आदि।

2. 'छायावाद' शब्द प्रयोग सबसे पहले किया था-

- | | |
|---------------------|---------------------|
| (a) राम विलास शर्मा | (b) मुकुटधर पाण्डेय |
| (c) नामवर सिंह | (d) जयशंकर प्रसाद |

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. छायावादी युग का प्रवर्तक किसे कहा जाता है?

- | | |
|-------------------|--------------------------------|
| (a) जयशंकर प्रसाद | (b) सुमित्रानन्दन पन्त |
| (c) महादेवी वर्मा | (d) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला |

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

5. आधुनिक काल की किस काव्यधारा में 'रहस्यवाद' की भावना पायी जाती है?

- | | |
|------------------|---------------|
| (a) द्विवेदी युग | (b) छायावाद |
| (c) प्रगतिवाद | (d) प्रयोगवाद |

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

आधुनिक काल की 'छायावाद' काव्यधारा में रहस्यवाद की भावना पायी जाती है। छायावाद दो अर्थों में प्रयुक्त किया गया—रहस्यवाद के अर्थ में और शैली विशेष या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➤ 1916 के आस-पास हिन्दी में कल्पनापूर्ण स्वच्छन्दता और भावुकता की एक लहर उमड़ी। भाव, भाषा, शैली, छन्द, अलंकार सभी दृष्टियों से पुरानी कविता से इसका कोई मेल न था। आलोचकों ने इसे छायावाद या छायावादी कविता का नाम दिया।

6. छायावाद की निम्नलिखित विशेषताएँ हो सकती हैं -

- | | |
|-------------------|----------------------|
| 1. विशेषण विपर्यय | 2. स्वच्छन्द भावावेश |
| 3. मूर्ति विधान | 4. इतिवृत्तात्मकता |
- इनमें से कौन-सा विकल्प सही है?

- | | |
|---------------|------------------|
| (a) 1, 2 और 3 | (b) 1, 3 और 4 |
| (c) 1, 2 और 4 | (d) 1, 2, 3 और 4 |

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

‘छायावाद’ के अर्थ-निर्धारण के संदर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सीमित अर्थ में एक शैली विशेष माना है, जिसमें लाक्षणिक मूर्तिमत्ता, प्रतीक-विधान, विरोध चमत्कार, विशेषण-विपर्यय, मानवीकरण, अन्योक्ति विधान आदि पर बल रहता है। ‘छायावाद’ के व्यापक अर्थ में उन्होंने रहस्यवाद को भी समाविष्ट किया है। जयशंकर प्रसाद ने छायावाद में स्वानुभूति की विवृति पर बल दिया। छायावाद के विवेचन के प्रसंग में स्वच्छन्दवादी प्रवृत्ति का भी उल्लेख मिलता है। इतिवृत्तात्मकता द्विवेदी युग की विशेषता है।

7. चित्रात्मक भाषा एवं लाक्षणिक पदावली किस युग की कविता की विशेषता है?

- (a) छायावाद (b) प्रगतिवाद
(c) प्रयोगवाद (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

छायावादी युग प्रधानतः मुक्तक गीतों का युग है। ये मुक्तक गीत, गेय तथा संगीतात्मक हैं। चित्रमयी कल्पना तथा लाक्षणिक प्रतीकात्मक शैलियों को अपनाकर छायावादी कवियों ने कविता को सजीव और सरस बना दिया है। प्रभावानुकूल छन्द चयन करने में भी इन्होंने अपनी मौलिकता का प्रदर्शन किया। अलंकारों के प्रयोग में भी नवीनता है। मानवीकरण तथा विशेषण-विपर्यय जैसे नए अलंकारों का उदय एवं प्रचुर प्रयोग हुआ। भाषा (खड़ी बोली) को सँवारने, उसमें ब्रजभाषा-जैसा लोच और सरसता लाने, उसकी अभिव्यंजना शक्ति बढ़ाने का समस्त श्रेय इस युग को ही दिया गया है।

8. छायावाद में ‘वक्रता का वैभव’ मिलता है। ‘प्रसाद’ के काव्य में निम्नलिखित में से किसका उत्कर्ष मिलता है?

- (a) विदग्धता (b) अभिव्यंजना
(c) चारुता (d) चमत्कार

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

अभिव्यंजना की दृष्टि से जयशंकर प्रसाद के काव्य की गरिमा अपरिमित है, वस्तु का मार्मिक एवं पूर्ण अन्तःसाक्षात्कार तभी सम्भव है, जब अभिव्यंजना के सूक्ष्म प्रसाधनों का प्रयोग कौशलपूर्ण हो। यह तथ्य भी सही है कि अभिव्यंजना साधन मात्र है, साध्य वास्तविक वस्तु ही होती है। प्रसाद के काव्य में ध्वनि, रीति, गुण, वक्रोक्ति, औचित्य आदि तत्वों से युक्त होकर अभिव्यंजना ने अपना स्वरूप ग्रहण किया है। ‘ऑसू’ में प्रसाद की अन्तर्भावनाओं की जैसी अभिव्यक्ति हुई है, वैसी अन्यत्र विरल है। कामायनी में एक प्रौढ़ विद्वता झलकती है। अमूर्त भावों को मूर्त रूप देने में प्रसाद की कला अतुलनीय रही है। प्रसाद की लाक्षणिकता बेजोड़ है। प्रसाद की कविताएँ माधुर्य रस से भरी हुई हैं। परम्परा से कटकर, हटकर और ऊपर उठकर प्रसाद ने अपनी कविता की भावभूमि का निर्माण किया है।

9. आधुनिक काल के तीसरे उत्थान की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्ति है-

- (a) प्रगतिवाद (b) प्रयोगवाद
(c) हालावाद (d) छायावाद

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक काल को दो खण्डों में विभाजित किया है- गद्य खण्ड और काव्य खण्ड। दोनों खण्डों को दो-दो प्रकरणों में बांटा गया है। गद्य के पहले प्रकरण में ब्रजभाषा गद्य और खड़ी बोली गद्य का विवेचन तथा दूसरे प्रकरण में गद्य-साहित्य का आविर्भाव विश्लेषित है। काव्य खण्ड में भी दो प्रकरण हैं- पुरानी काव्य धारा और नयी धारा। नयी धारा के भी तीन उत्थान हैं- प्रथम, द्वितीय और तृतीय। काव्य खण्ड के दूसरे प्रकरण के तृतीय उत्थान को काव्य में ‘छायावाद’ के नाम से अभिहित किया जाता है।

10. जयशंकर प्रसाद की ‘कामायनी’ की भाषा है-

- (a) सधुक्कड़ी (b) अवधी
(c) ब्रजभाषा (d) खड़ी बोली

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

जयशंकर प्रसाद की ‘कामायनी’ की भाषा खड़ी बोली है। खड़ी बोली का यह अद्वितीय महाकाव्य ‘मनु’ और ‘श्रद्धा’ को आधार बनाकर रचित मानवता को विजयिनी बनाने का संदेश देता है। यह रूपक कथाकाव्य भी है। उनकी यह कृति छायावाद और खड़ी बोली की काव्य गरिमा का ज्वलन्त उदाहरण है। सुमित्रानन्दन पन्त इसे ‘हिन्दी में ताजमहल के समान’ मानते हैं।

11. ‘कामायनी’ को ‘छायावाद का उपनिषद्’ किसने कहा है?

- (a) डॉ. नगेन्द्र ने (b) मुक्तिबोध ने
(c) डॉ. इन्द्रनाथ मदान ने (d) शान्तिप्रिय द्विवेदी ने

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

जयशंकर प्रसाद कृत ‘कामायनी’ (1935 ई.) छायावादी शैली का प्रथम महाकाव्य है। शान्तिप्रिय द्विवेदी ने ‘कामायनी’ को ‘छायावाद का उपनिषद्’ कहा है। शान्तिप्रिय द्विवेदी ने 27 कृतियाँ लिखी हैं, जिनमें प्रमुख हैं- परिचय, नीरव, हिमानी, हमारे साहित्य निर्माता, युग और साहित्य, सामयिकी, धरातल, जीवन-यात्रा, परिग्राजक की प्रजा, वृत्त और विकास, कवि और काव्य, परिक्रमा, चित्र और चिंतन एवं स्मृतियाँ और कृतियाँ।

12. कामायनी में श्रद्धा किसका प्रतीक है?

- (a) तन का (b) मन का
(c) हृदय का (d) बुद्धि का

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

कामायनी में मनु, श्रद्धा और इड़ा, क्रमशः मन, हृदय और बुद्धि के प्रतीक हैं। कामायनी अपनी मूल कथा और उससे व्यंजित होने वाले तात्पर्य दोनों की दृष्टि से अत्यन्त श्रेष्ठ रचना है। 'कामायनी' जयशंकर प्रसाद कृत एक महाकाव्य है। इसकी प्रधान पात्र श्रद्धा है। काम की पुत्री होने के कारण उसका दूसरा नाम कामायनी भी है। प्रसाद जी ने इस गरिमामयी नारी को सम्मान देने के लिये ही अपने महाकाव्य का नाम कामायनी रखा है। इसकी कथा का आधार ऋग्वेद, छान्दोग्य उपनिषद्, शतपथ ब्राह्मण और श्रीमद्भागवत है।

13. 'कामायनी' की श्रद्धा.....का प्रतीक है।

- (a) बुद्धि (b) मन
(c) हृदय (d) आनन्द

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. जयशंकर प्रसाद की किस कृति को पहले ब्रजभाषा में तथा बाद में खड़ी बोली में रूपान्तरित कर दिया गया?

- (a) प्रेम पथिक (b) कानन कुसुम
(c) झरना (d) आँसू

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद की रचना 'प्रेम पथिक' (1913) पहले ब्रजभाषा में की गई थी, किन्तु बाद में उसे खड़ी बोली में रूपान्तरित कर दिया गया। यह भी उल्लेखनीय है कि 'कानन कुसुम' और 'झरना' के परवर्ती संस्करणों में कवि ने कुछ नई कविताओं का समावेश किया तथा 'आँसू' में चौसठ छन्द और जोड़ दिए।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- जयशंकर प्रसाद की प्रमुख काव्य-रचनाएँ हैं—उर्वशी (1909), वनमिलन (1909), प्रेम राज्य (1909), अशेष्याका उद्धार (1910), शोकोच्छ्वास (1910), वभ्रुवाहन (1911), कानन कुसुम (1913), करुणालय (1913), महाराणा का महत्व (1914), झरना (1918), आँसू (1925), लहर (1933) और कामायनी (1935)।

15. 'आँसू' है—

- (a) मुक्तक काव्य संकलन (b) अतुकान्त काव्य
(c) प्रबन्ध काव्य (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'आँसू' विरह काव्य है, जिसमें प्रेमी की अतीत की मादक स्मृतियों की याद में अपनी आन्तरिक ज्वाला, विषाद और वेदना का इजहार है। स्मृति के रूप में प्रायः तीन वस्तुओं का उल्लेख हुआ है—प्रिय के शारीरिक सौन्दर्य और परिम्भ-कुम्भ की मदिरा तथा निःश्वास मलय के झोंके का।

16. जयशंकर प्रसाद की कृतियाँ किस विकल्प में हैं?

- (a) नीरजा, सांध्यगीत, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी
(b) झरना, लहर, ध्रुवस्वामिनी, स्कन्दगुप्त
(c) परिमल, गीतिका, प्रबन्ध पद्म, तुलसीदास
(d) पल्लव, गुंजन, युगवाणी, ग्राम्या

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में प्रस्तुत कृतियाँ जयशंकर प्रसाद की हैं। विकल्प (a) की कृतियाँ महादेवी वर्मा की, विकल्प (c) की कृतियाँ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की तथा विकल्प (d) की कृतियाँ सुमित्रानन्दन पन्त की हैं।

17. निम्नलिखित में से किस कृति के लेखक जयशंकर प्रसाद नहीं हैं?

- (a) कानन कुसुम (b) ध्रुवस्वामिनी
(c) चारुचन्द्र लेख (d) तितली

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

'चारुचन्द्र लेख' के लेखक जयशंकर प्रसाद नहीं, बल्कि हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी की प्रमुख रचनाएँ हैं—बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा, कुटज, विचार प्रवाह, अशोक के फूल, कल्पलता, आलोक पर्व, विचार और वितर्क इत्यादि। कानन कुसुम, ध्रुवस्वामिनी और तितली जयशंकर प्रसाद की रचनाएँ हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'कबीर' नामक कृति पर हजारी प्रसाद द्विवेदी को मंगला प्रसाद पारितोषिक प्राप्त हुआ।
➤ साहित्य समिति इन्दौर ने हजारी प्रसाद द्विवेदी को 'सूर साहित्य' पर स्वर्ण-पदक से सम्मानित किया।
➤ विश्व-भारती का सम्पादन कार्य भी इन्होंने किया।

18. निम्न में से कौन-सी कृति जयशंकर 'प्रसाद' की नहीं है?

- (a) कानन कुसुम (b) दीपशिखा
(c) झरना (d) कामायनी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

‘दीपशिखा’ जयशंकर प्रसाद की कृति नहीं, बल्कि महादेवी वर्मा की रचना है। जयशंकर प्रसाद की रचनाएँ हैं—कानन कुसुम, वनमिलन, प्रेमाश्रय, प्रेम पथिक, रघुवंश कमाल, छोटा जादूगर, आँधी, अघोरी का मोह, अपराधी, इंद्रजाल, पुरस्कार, गुंडा, आकाशदीप आदि।

19. निम्न में से कौन-सी रचना महादेवी वर्मा की नहीं है?

- (a) यामा (b) दीपशिखा
(c) आँगन के पार द्वार (d) नीरजा

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

‘आँगन के पार द्वार’ महादेवी वर्मा की रचना नहीं, बल्कि सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन ‘अज्ञेय’ की है। ‘अज्ञेय’ की अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं—अरी ओ करुणा प्रभामय, हरी घास पर क्षण भर, इन्द्र धनु रेंदे हुए ये, पूर्वा, सुनहले शैवाल, कितनी नावों में कितनी बार, बावरा अहेरी, इत्यलम, चिन्ता, पहरे में सन्नाटा बुनता हूँ इत्यादि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- महादेवी वर्मा की प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं—नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्य गीत, दीपशिखा, सप्तपर्णा, यामा तथा हिमालय इत्यादि।
- ‘नीहार’ महादेवी वर्मा का प्रथम काव्य-संग्रह है। इसमें 47 गीत संकलित हैं।
- प्रसाद, पन्त, निराला तथा महादेवी वर्मा ‘छायावाद युग’ के इन चार महान् कवियों को ‘बृहत चतुष्टयी’ के नाम से जाना जाता है।
- महादेवी वर्मा को भारत सरकार ने ‘पद्मभूषण’ अलंकार से सम्मानित किया।
- इनकी रचनाएँ सर्वप्रथम ‘चाँद’ पत्रिका में प्रकाशित हुईं।
- काव्यात्मक प्रतिभा के लिए इन्हें ‘सेकसरिया’ एवं ‘मंगला प्रसाद’ पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।
- महादेवी वर्मा को ‘ज्ञानपीठ’ एवं ‘भारत-भारती’ पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।
- महादेवी वर्मा (1907-1987 ई.) का जन्म फर्रुखाबाद (उ.प्र.) में हुआ।
- ये आरम्भ में ब्रजभाषा में कविता लिखती थीं, बाद में खड़ी बोली में लिखने लगीं।
- ये एक कुशल चित्रकार भी थीं।

20. ‘नीहार’ की रचना किसने की है?

- (a) महादेवी वर्मा (b) अज्ञेय
(c) दिनकर (d) पन्त

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. महादेवी वर्मा का प्रथम काव्य संकलन है—

- (a) दीपशिखा (b) यामा
(c) नीहार (d) रश्मि

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. ‘सप्तपर्णा’ किसकी कृति है?

- (a) निराला (b) प्रसाद
(c) महादेवी वर्मा (d) पन्त

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. कौन-सा कवि छायावादी नहीं है?

- (a) निराला (b) पन्त
(c) प्रसाद (d) जायसी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. छायावाद के प्रमुख कवियों में किसमें गीतों की मधुर वेदना की मर्मभिव्यक्ति अधिक है?

- (a) प्रसाद (b) पन्त
(c) महादेवी (d) निराला

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

छायावाद के प्रमुख कवियों में महादेवी वर्मा के गीतों में मधुर वेदना की मर्मभिव्यक्ति अधिक है। उनके विविध गीतों में व्यथा, पीड़ा, आशा, अज्ञात प्रिय के प्रति प्रणय-निवेदन और साधना की विविध अनुभूतियों के स्वर मुखरित हुए हैं। उन्होंने अनुभूति को विचार से समन्वित करने का प्रयास किया। महादेवी वर्मा ने दुःख को केवल व्यक्तिगत जीवन के सन्दर्भ में स्वीकार किया है, सामाजिक जीवन के प्रसंग में तो वे अथक और अमर साधना में विश्वास करती हैं। उन्हें ‘अमरों के लोक’ की कामना नहीं है, वे तो मिटने के अधिकार को ही बनाये रखना चाहती हैं। अपनी पीड़ा का वर्णन उन्होंने इन शब्दों में किया है—“अमरता उसमें मनाती है मरण-त्योहार।”

25. 'केवल सूक्ष्मगत सौन्दर्यसत्ता का राग' कहकर 'छायावाद' का किसने विरोध किया था?

- (a) आचार्य शुक्ल (b) महादेवी वर्मा
(c) सुमित्रानन्दन पन्त (d) अज्ञेय

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

छायावादी समीक्षा का विवेचन करते हुए महादेवी वर्मा ने कहा है "छायावाद स्थूल की प्रतिक्रिया में उत्पन्न हुआ था। छायावाद ने कोई रुढ़िगत आध्यात्म या वर्गगत सिद्धान्तों का संचयन न देकर हमें केवल समष्टिगत चेतना और सूक्ष्मगत सौन्दर्यसत्ता की ओर जागरूक कर दिया था। इसी से उसे यथार्थ रूप में ग्रहण करना हमारे लिए कठिन हो गया।" अतः स्पष्ट है कि महादेवी वर्मा ने 'केवल सूक्ष्मगत सौन्दर्यसत्ता का राग' कहकर 'छायावाद' का विरोध किया।

26. 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' यह कथन किसका है?

- (a) महादेवी वर्मा (b) प्रसाद
(c) पन्त (d) निराला

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

महादेवी वर्मा का दुःखवाद किसी सीमा तक समाज-कल्याण की भावना में संपृक्त है। वे जब अपने जीवन की तुलना 'नीर-भरी दुःख की बदली' दीपशिखा से करती हैं, तो वहाँ आध्यात्मिक साधना के साथ-साथ लोक कल्याण की भावना भी विद्यमान रहती है। जिस प्रकार घटा स्वयं को गला कर सृष्टि को सुख और शीतलता प्रदान करती है या दीपक स्वयं जलकर राख हो जाता है, किन्तु परिवेश को आलोकित करता है, उसी प्रकार महादेवी स्वयं साधना की आग में जलकर सामाजिक जीवन को अधिक सुखद और मंगलमय बनाना चाहती हैं। वे कहती हैं—

दुखव्रती निर्माण उन्मद

ये अमरता नापते पद

बाँध देंगे अंक-संसृति से तिमिर में स्वर्ण बेला।

27. हिन्दी काव्य की आधुनिक मीरा किसे कहा जाता है?

- (a) महादेवी वर्मा (b) कीर्ति चौधरी
(c) सुभद्रा कुमारी चौहान (d) वन्दना वाजपेयी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

जिस प्रकार मीरा ने स्वयं को श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित कर दिया था। वही समर्पण भाव महादेवी वर्मा की कविताओं में है। अतः महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है। काव्य-शिरोमणि 'निराला' जी ने उनकी साहित्यिक उत्कृष्टता को 'हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती' कह कर सम्बोधित किया था।

28. "तेरा वैभव देखूँ या जीवन का क्रंदन देखूँ।" यह पंक्ति है -

- (a) निराला (b) अज्ञेय
(c) महादेवी (d) बच्चन

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

"तेरा वैभव देखूँ या जीवन का क्रंदन देखूँ।" यह पंक्ति महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'दुविधा' शीर्षक कविता से ली गई है। महादेवी वर्मा ने अपनी कविता का माध्यम पूरी तरह गीत को बनाया है।

29. निराला की कविता 'राम की शक्ति-पूजा' पर किस रचना का सर्वाधिक प्रभाव है?

- (a) रामचरितमानस (b) वाल्मीकि रामायण
(c) साकेत (d) कृत्तिवास रामायण

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

कृत्तिवास रामायण के आधार पर सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने 'राम की शक्ति पूजा' मिथक काव्य रचना की है। निराला जी ने कथा में परिवर्तन तो नहीं किया है, लेकिन राम के चरित्र को आधुनिक मनुष्य के अंतर्द्वन्द्व से जोड़ दिया है। निराला की कविताओं पर भारतीय दर्शन का गहरा प्रभाव है। 'राम की शक्ति पूजा' लंकाकाण्ड के कथानक को लेकर लिखी गई एक लम्बी कविता है। इसमें अपने सर्जक के निजत्व के समीपतम पहचान का प्रतिफलन है। यह रामकथा कम, निराला के रचनात्मक संशय, संघर्ष एवं आत्म-बलिदान की कहानी अधिक है।

30. 'निराला' की कविता 'राम की शक्तिपूजा' पर किस रचना का सर्वाधिक प्रभाव है?

- (a) वाल्मीकि रामायण (b) कृत्तिवास रामायण
(c) रामचरितमानस (d) विष्णु पुराण

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'कला और बूढ़ा चाँद' के लेखक हैं -

- (a) रामधारी सिंह 'दिनकर' (b) सुमित्रानन्दन पन्त
(c) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (d) नन्ददुलारे वाजपेयी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'कला और बूढ़ा चाँद' के लेखक सुमित्रानन्दन पन्त (बचपन का नाम गोसाई दत्त) हैं। पन्त जी की अन्य रचनाएँ हैं—उच्छ्वास, ग्रन्थि, वीणा, लोकायतन, पल्लव, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, उत्तरा, वाणी, चिदम्बरा, पतक्षर, एक भाव क्रान्ति, गीत हंस, शंख ध्वनि, किरण वीणा, समाधिता और ग्राम्या इत्यादि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सुमित्रानन्दन पन्त की कृति 'लोकायतन' प्रबन्ध काव्य है।
- 1960 में पन्त जी को 'कला और बूढ़ा चाँद' कविता संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- 'लोकायतन' पर सोवियत और 'चिदम्बरा' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुए।
- सुमित्रानन्दन पन्त की 'ग्राम्या' कृति का सम्बन्ध 'ग्रामीण परिवेश' से है। पन्त जी ने 'ग्राम्या' में गाँव की विविध समस्याओं का आकलन किया है।
- 'युगवाणी' में मार्क्स और गाँधी के सिद्धान्तों को पुस्तक से पढ़कर छन्दोबद्ध किया गया है।
- पन्त जी ने अपनी पहली कविता 'गिरजे का घण्टा' की रचना सन् 1916 में की।
- 'गुंजन' को उनका अन्तिम छायावादी काव्य संग्रह कहा जा सकता है।

32. 'चिदम्बरा' के रचनाकार हैं—

- (a) प्रसाद (b) पन्त
(c) निराला (d) महादेवी वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. पन्त जी की 'ग्राम्या' कृति का सम्बन्ध है—

- (a) ग्रामीण परिवेश से (b) प्रगतिवादी दृष्टि से
(c) कल्पना लोक से (d) नई कविता से

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. 'लोकायतन' के रचयिता हैं -

- (a) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (b) बालकृष्ण शर्मा नवीन
(c) माखनलाल चतुर्वेदी (d) सुमित्रानन्दन पन्त

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. पन्त की पहली रचना है—

- (a) वीणा (b) ग्रन्थि
(c) गिरजे का घण्टा (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. सुमित्रानन्द पन्त की सुप्रसिद्ध कविता 'परिवर्तन' उनके किस काव्यसंकलन में सर्वप्रथम प्रकाशित हुई थी?

- (a) गुंजन (b) ग्राम्या
(c) पल्लव (d) युगान्त

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

सुमित्रानन्दन पन्त की सुप्रसिद्ध कविता 'परिवर्तन' उनके काव्यसंकलन 'पल्लव' में सर्वप्रथम प्रकाशित हुई।

37. अरविन्द दर्शन से प्रभावित हिन्दी के कवि हैं—

- (a) जयशंकर प्रसाद (b) निराला
(c) सुमित्रानन्दन पन्त (d) मैथिलीशरण गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

सुमित्रानन्दन पन्त ने अरविन्द दर्शन के आधार पर नया दर्शन ढूँढ़ने का प्रयास किया है, फिर भी उनकी रचनाओं पर अरविन्द दर्शन की गहरी छाप है। अरविन्द दर्शन को अपनाकर पन्त छायावाद से निकलने की चेष्टा करते हुए पुनः उसी क्षेत्र में प्रविष्ट हो जाते हैं। कला और बूढ़ा चाँद, रश्मिहान्ध, गीतहंस, स्वर्णिमचक्र, समाधिता जैसी रचनाओं पर अरविन्द की छाप स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है।

38. इनमें से कौन-सा कवि अपने रचनाकाल के अंतिम दौर में प्रगतिवाद के भौतिक दर्शन के साथ-साथ अरविन्द-दर्शन से प्रभावित हुआ?

- (a) जयशंकर प्रसाद (b) सुमित्रानन्दन पन्त
(c) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (d) रामधारी सिंह 'दिनकर'

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. अपने काव्य जीवन के उत्तर में अरविन्द दर्शन से प्रभावित कवि हैं—

- (a) महादेवी वर्मा (b) सुमित्रानन्दन पन्त
(c) जयशंकर प्रसाद (d) अज्ञेय

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40.अरविन्द दर्शन से बहुत ही प्रभावित थे।

- (a) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (b) जयशंकर प्रसाद
(c) सुमित्रानन्दन पन्त (d) महादेवी वर्मा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?

- (a) पन्त को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है
- (b) 'पल्लव' पन्त की रचना है
- (c) 'लोकायतन' महाकाव्य की श्रेणी में आता है
- (d) पन्त भारतेन्दु युग के कवि हैं

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

सुमित्रानन्दन पन्त, भारतेन्दु युग के नहीं बल्कि, छायावाद युग के प्रमुख कवि हैं। इन्हें 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा जाता है। पन्त काव्य में प्रकृति के मनोरम रूपों का मधुर और सरस चित्रण मिलता है। 'आँसू की बालिका', 'पर्वत-प्रदेश में प्रवास' आदि कविताओं में प्रकृति के मनोहर चित्र विद्यमान हैं, जिनमें कवि की जन्मभूमि के प्राकृतिक सौन्दर्य का वैभव दिखायी देता है। अतः इस आधार पर हम कह सकते हैं कि पन्त जी प्रकृति के सुकुमार कवि हैं। 'पल्लव' (1928) पन्त जी की रचना है। 'लोकायतन' महाकाव्य की श्रेणी में माना जाता है।

42. किस छायावादी कवि को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा गया है?

- (a) सुमित्रानन्दन पन्त
- (b) जयशंकर प्रसाद
- (c) महादेवी वर्मा
- (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना महाकाव्य नहीं है?

- (a) कामायनी
- (b) प्रियप्रवास
- (c) साकेत
- (d) पल्लव

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

'पल्लव' महाकाव्य नहीं है। यह 1928 ई. में रचित सुमित्रानन्दन पन्त का आरम्भिक काव्य ग्रन्थ है। 'कामायनी' जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखा गया महाकाव्य, 'प्रियप्रवास' अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा लिखा गया महाकाव्य तथा 'साकेत' मैथिलीशरण गुप्त का महाकाव्य है।

44. हिन्दी साहित्य में 'महाप्राण' किस कवि के लिए प्रयुक्त होता है?

- (a) तुलसीदास
- (b) निराला
- (c) जयशंकर प्रसाद
- (d) सूरदास

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

हिन्दी साहित्य में 'महाप्राण' सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के लिए प्रयुक्त होता है। निराला जी ने स्वच्छन्दतावादी विचारधारा के साथ बड़ी प्रसिद्ध गद्य रचनाएँ 'चतुरी चमार', 'बिल्लेसुर बकरिहा' आदि प्रस्तुत कीं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- निराला जी ने अपनी विवाहिता पुत्री के निधन से विक्षुब्ध होकर 'सरोज स्मृति' की रचना की।
- निराला जी कलकत्ता में रामकृष्ण मिशन के पत्र 'समन्वय' का सम्पादन भार भी संभाला। इसके बाद 'मतवाला' के सम्पादक मंडल में सम्मिलित हुए।
- लखनऊ में 'गंगा पुस्तकमाला' का सम्पादन करने के साथ 'सुधा' के सम्पादकीय लिखने लगे।
- निराला जी की प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं-अनामिका (1923), परिमल (1930), गीतिका (1936), तुलसीदास (1938), कुकुरमुत्ता, अणिमा, नये पत्ते, बेला, अर्चना और आराधना इत्यादि।
- 'परिमल' में गीत भी हैं और मुक्तक छन्द भी, मधुर भावों से अनुप्राणित प्रणयगीत भी हैं।
- गीतिका मुख्यतः शृंगारिक रचना है।
- इनकी अत्यधिक समर्थ काव्य रचना 'राम की शक्तिपूजा' और शोक-गीत 'सरोज स्मृति' हैं।
- 'पंचवटी प्रसंग' काव्य की रचना सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने की है।
- 'पंचवटी' नाम की एक रचना मैथिलीशरण गुप्त की भी है।

45. 'पंचवटी प्रसंग' काव्य के रचयिता हैं-

- (a) मैथिलीशरण गुप्त
- (b) निराला
- (c) जयशंकर प्रसाद
- (d) केशवदास

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. 'अनामिका' काव्य किनके द्वारा रचित है?

- (a) अज्ञेय
- (b) निराला
- (c) धूमिल
- (d) सुमन

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. 'परिमल' किस कवि की रचना है?

- (a) मैथिलीशरण गुप्त
- (b) जयशंकर प्रसाद
- (c) रामधारी सिंह 'दिनकर'
- (d) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

48. 'गीतिका' के रचनाकार का नाम है-

- (a) प्रसाद (b) पन्त
(c) निराला (d) मुकुटधर पाण्डेय

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. 'निराला' का जन्म कहाँ हुआ था?

- (a) उत्तर प्रदेश (b) उड़ीसा
(c) बंगाल (d) बिहार

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

स्वच्छन्दतावादी विचारधारा के कवि निराला जी का जन्म 21 फरवरी, 1896 को महिषादल राज्य, मेदिनीपुर (बंगाल) नामक ग्राम में हुआ था। इनका पैतृक गृह उन्नाव जिले के गढ़कोला गांव में था। इनके पिता का नाम रामसहाय त्रिपाठी तथा पत्नी का नाम मनोहरा देवी था। 15 अक्टूबर, 1961 को इलाहाबाद अब प्रयागराज में इनका निधन हुआ था।

50. साहित्यिक क्षेत्र में सर्वाधिक विरोध किसका हुआ था?

- (a) प्रसाद (b) निराला
(c) दिनकर (d) हरिऔध

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

निराला को केवल व्यक्ति के रूप में ही परिस्थितियों का तीव्र विरोध नहीं सहना पड़ा, वरन् कवि के रूप में भी उनका प्रबल विरोध हुआ। इसका प्रधान कारण तो उनकी मौलिकता है, जो कवि के दीप्त अहंकार की साहित्यिक अभिव्यक्ति है। सन् 1916 में 'जूही की कली' का प्रकाशन उस युग के साहित्यचेताओं के लिए एक चुनौती बन कर सामने आया। उसमें व्यक्त प्रणय-केलि के चित्र और मुक्त छन्द का शक्तिशाली शिल्प-दोनों ही तत्कालीन मान्यताओं से मेल नहीं खाते थे, किन्तु निराला अपनी धुन के पक्के और फक्कड़ स्वभाव के व्यक्ति थे। इसलिए उन्होंने सबकी उपेक्षा की। उनके काव्य में आरम्भ से ही विविधता के दर्शन होते हैं।

51. निम्न पंक्तियाँ किस प्रसिद्ध लम्बी कविता से उद्धृत हैं?

प्रतिपल परिवर्तित व्यूह, भेद कौशल-समूह।

राक्षस-विरुद्ध प्रत्यूह, क्रुद्ध कपि विषम।।

- (a) राम की शक्तिपूजा (b) बादल राग
(c) पेशोला की प्रतिध्वनि (d) शेर सिंह का शस्त्र-समर्पण

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त पंक्तियाँ 'निराला' द्वारा रचित 'राम की शक्तिपूजा' से अवतरित हैं। इसमें कवि ने राम-रावण युद्ध का वर्णन करते हुए धर्म और अधर्म के शाश्वत संघर्ष का चित्रण किया है। राम धर्म के प्रतीक हैं और रावण अधर्म का। 'राम की शक्तिपूजा' की रचना सन् 1936 में हुई।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- निराला की लम्बी रचना (कविता) है-राम की शक्तिपूजा, सरोज स्मृति, बादल राग, तुलसीदास तथा कुकुरमुत्ता।
- निराला के उपन्यास हैं- अप्सरा, अल्का, प्रभावती, निरुपमा, उच्छृंखलता, काले-कारनामे, पुराण कथा, महाभारत।
- निराला के निबन्ध संग्रह हैं- प्रबन्ध परिचय, प्रबन्ध प्रतिभा, बंगभाषा का उच्चारण, प्रबन्ध पद्य, प्रबन्ध प्रतिमा, चाबुक, चयन, संघर्ष आदि।
- निराला के अनुवाद हैं- आनन्दमठ, विश्व विकर्ष, कृष्णकान्त का विल, कपाल कुण्डला, दुर्गेश नन्दिनी, राज रानी, देवी चौधरानी, चन्द्रशेखर, रजनी, श्रीरामकृष्ण वचनामृत, भारत में विवेकानन्द, राजयोग।

52. निराला की निम्नलिखित कविताओं में से कौन 'लम्बी कविता' नहीं है?

- (a) भिक्षुक (b) कुकुरमुत्ता
(c) सरोज स्मृति (d) राम की शक्तिपूजा

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

53. 'निराला' की 'बादल राग' कविता का सम्बन्ध है-

- (a) छायावादी सौन्दर्य से (b) प्रगतिवादी चेतना से
(c) प्रयोगवादी चेतना से (d) प्रकृति के सौन्दर्य से

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

निराला की 'बादल राग' परिमल से अवतरित है। यह वातावरण प्रधान रचना है। कवि ने इस कविता के माध्यम से प्रकृति के कठोर रूप का चित्रण किया है। इसमें मुख्यतः ध्वनि, नाद और रूपक के माध्यम से युद्ध और विप्लव का रचनात्मक वातावरण तैयार किया गया। रचनात्मकता ही उसकी अन्तर्दृष्टि है। विधवा, दीन और भिक्षुक में 'सहने' के माध्यम से जिस करुणा का सृजन किया गया है, वह बादल में गर्जन-तर्जन, विप्लव और प्रहार में बदल गयी है। इसी आधार पर निराला की 'बादल राग' कविता का सम्बन्ध प्रकृति के सौन्दर्य से है।

54. 'बादल राग' के रचयिता हैं-

- (a) प्रसाद (b) पन्त
(c) निराला (d) महादेवी

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. 'धिक् जीवन जो पाता ही आया है विरोध'- पंक्ति में किसके जीवन-सत्य की अभिव्यक्ति मिलती है?

- (a) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (b) हनुमान
(c) लक्ष्मण (d) विभीषण

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोधा'
उपर्युक्त पंक्तियाँ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की कृति 'राम की शक्ति पूजा' से ली गई हैं। इसमें मौजूद हताशा की, पराजय की, अकेले रह जाने की पीड़ा तथा निराशा का बोध कराती है। यहाँ निराला ने राम के ही नहीं, बल्कि अपने अभावग्रस्त जीवन की भी गहरी जूँज को प्रदर्शित करते हैं।

56. मुक्त छन्द के प्रणेता हैं—

- (a) निराला (b) नागार्जुन
(c) जयशंकर प्रसाद (d) महादेवी वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

मुक्त छन्द के प्रणेता सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं। निराला की कविता का समारम्भ मुक्तवृत्त से होता है। 'जूही की कली' (निराला के मतानुसार 1916) उनकी पहली रचना है और यह मुक्तवृत्त में है। मुक्तवृत्त में छन्दोबद्ध रचना के तुक, मात्रा आदि के अवरोधक तत्व निःशेष हो जाते हैं।

57. निराला की 'जूही की कली' उदाहरण है—

- (a) मात्रिक छन्द का (b) वार्षिक छन्द का
(c) मुक्त छन्द का (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

58. रबड़ छन्द या केंचुआ छन्द किस कवि की कविताओं को लक्ष्य कर कहा गया है?

- (a) दिनकर (b) धूमिल
(c) निराला (d) मुक्तिबोध

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

रबड़ छन्द या केंचुआ छन्द सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की कविताओं को लक्ष्य कर कहा गया है। मुक्त छन्द की स्वच्छन्द प्रवृत्ति का परिहास करते हुए इसे रबड़ छन्द, केंचुआ छन्द, कंगारू छन्द इत्यादि नाम दिए गए।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' और सुमित्रानन्दन पन्त को मुक्त छन्द को हिन्दी काव्य में संस्थापित करने का श्रेय है।
- ☛ जयशंकर प्रसाद ने कुछ कविताएँ मुक्तक छन्द में रची जैसे-पेशोला की प्रतिध्वनि, परन्तु व्यापक रूप से वे मुक्त छन्द को स्वीकार न कर सके।

59. निराला की अन्तिम कविता है—

- (a) राम की शक्तिपूजा
(b) तुलसीदास
(c) सरोज स्मृति
(d) पत्रोत्कण्ठित जीवन का विष बुझा हुआ है

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की अन्तिम कविता है—

पत्रोत्कण्ठित जीवन का विष बुझा हुआ है

आशा का प्रदीप जलता है, हृदय-कुंज में,

अंधकार पथ एक रश्मि से सुझा हुआ है,

दिङ्निर्णय ध्रुव से जैसे नक्षत्र-पुंज में।

यह 1961 में लिखी गयी है। 'पत्रोत्कण्ठित' में एक पंक्ति है—'सिद्ध योगियों जैसे या साधारण मानव/ताक रहा है भीष्म शरों के कठिन सेज पर।'

60. 'प्रिय स्वतन्त्र रव अमृत मन्त्र नव' पंक्ति वाली कविता का सम्बन्ध है—

- (a) जयशंकर प्रसाद से (b) भवानी प्रसाद मिश्र से
(c) सुमित्रानन्दन पन्त से (d) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' से

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'प्रिय स्वतन्त्र रव अमृत मन्त्र नव' पंक्ति वाली कविता का सम्बन्ध सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' से है। उनकी यह कविता छन्दमुक्त के अन्तर्गत 'वर दे' शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित है। निराला जी ने काव्य, उपन्यास, कहानी, समालोचना, निबन्ध आदि लिखे हैं।

61. निम्नलिखित में निराला की व्यंग्यपरक कविता कौन-सी है?

- (a) तुलसीदास (b) कुकुरमुत्ता
(c) सरोज स्मृति (d) तोड़ती पत्थर

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'कुकुरमुत्ता' सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा 1941 ई. में रचित व्यंग्यपरक कविता है, जिसका मूल स्वर प्रगतिवादी है। यह निराला के काव्य संकलन 'नये पते' में संकलित है।

62. छायावाद को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' किसने कहा है?

- (a) जयशंकर प्रसाद (b) महादेवी वर्मा
(c) नन्ददुलारे वाजपेयी (d) डॉ. नगेन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

छायावाद को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' डॉ. नगेन्द्र ने कहा। डॉ. नगेन्द्र की प्रमुख कृतियाँ हैं-रीतिकाव्य की भूमिका, भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका, रस सिद्धान्त, अरस्तू का काव्यशास्त्र, काव्य में उदात्त तत्व, काव्य बिम्ब, नई समीक्षा आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- महादेवी वर्मा के अनुसार, "छायावाद प्रकृति के बीच जीवन का उद्गीत है।"
➤ डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार, "आत्मा और परमात्मा का गुप्त वाग्विलास रहस्यवाद है और वही छायावाद है।"
➤ शान्तिप्रिय द्विवेदी के अनुसार, "जिस प्रकार 'मैटर ऑफ फैक्ट' (इतिवृत्तात्मक) के आगे की चीज छायावाद है, उसी प्रकार छायावाद के आगे की चीज रहस्यवाद है।"

63. 'छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है' यह कथन है-

- (a) नन्ददुलारे वाजपेयी का (b) महादेवी वर्मा का
(c) डॉ. नगेन्द्र का (d) डॉ. रामविलास शर्मा का

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

64. छायावाद को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' किसने कहा है?

- (a) सुमित्रानन्दन पन्त (b) डॉ. नगेन्द्र
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) जयशंकर प्रसाद

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

65. इनमें से कौन उत्तर छायावादी कवि नहीं है?

- (a) नरेन्द्र शर्मा (b) रामकुमार वर्मा
(c) बच्चन (d) अंचल

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

रामकुमार वर्मा उत्तर छायावादी कवि नहीं हैं। डॉ. रामकुमार वर्मा का नाम छायावाद के द्वितीय वर्ग के कवियों में सर्वाधिक उल्लेखनीय है। उनके 'रूपराशि', 'निशीथ', 'चित्ररेखा', 'आकाशगंगा' आदि काव्य संग्रहों में छायावादी पद्धति की रचनाएँ संकलित हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- छायावाद के प्रथम वर्ग के कवियों में रामनरेश त्रिपाठी 'नवीन', माखनलाल चतुर्वेदी, भगवतीचरण वर्मा आदि हैं।
➤ छायावाद के द्वितीय वर्ग के कवियों में डॉ. रामकुमार वर्मा, उदय शंकर भट्ट, मोहन लाल महतो 'वियोगी', लक्ष्मीनारायण मिश्र, जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज', गोपाल सिंह नेपाली, केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', आरसी प्रसाद सिंह हैं।

प्रगतिवाद

1. हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी चेतना की अभिव्यक्ति जिस काव्यधारा में देखने को मिलती है, उस धारा को कहा जाता है-

- (a) प्रगतिवाद (b) प्रयोगवाद
(c) जन्मवाद (d) अकविता

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(a)

सन् 1935 से आगे के कुछ वर्ष प्रगतिवाद युग के वर्ष हैं। प्रगतिवाद, मार्क्सवादी दर्शन के आधार पर चलता है, जिसमें वर्ग चेतना की प्रधानता है। ऐसा समझना चाहिए कि राजनीति में जो मार्क्सवाद है, काव्य में वही प्रगतिवाद। प्रगतिवाद मार्क्सवाद का साहित्यिक संस्करण है। शुद्ध प्रगतिवादी कवियों के नाम नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शिवमंगल सिंह 'सुमन' और गजानन माधव 'मुक्तिबोध' आदि हैं। प्रगतिवादी कविता पर जैसे मार्क्स का प्रभाव है, वैसे प्रयोगवादी कविता पर फ्रायड का। प्रगतिवाद को साम्यवाद का साहित्यिक संस्करण कहा गया है।

2. प्रगतिवादी काव्य सृष्टि है?

- (a) दार्शनिक (b) वर्ग चेतना प्रधान
(c) वैयक्तिक यथार्थ (d) यथास्थितिवादी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'द्वन्द्वात्मक भौतिक विकासवाद' किस काव्यधारा का आधार है?

- (a) नई कविता (b) प्रगतिवाद
(c) समानान्तर कविता (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

प्रगतिवाद का उदय छायावाद के समाप्तिकाल में सन् 1936 के आस-पास सामाजिक चेतना के साथ आरम्भ हुआ। यह मार्क्सवादी दर्शन (द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद) के आलोक में सामाजिक चेतना और भावबोध को अपना लक्ष्य बना कर चला। राजनीतिक दासता देश में एक ओर पूँजीवाद और सामन्तवाद की शोषक शक्तियों को प्रश्रय दे रही थी, तो दूसरी ओर जनसामान्य के लिए भयावह गरीबी, अशिक्षा, असुविधा और अपमान की सृष्टि कर रही थी। साहित्य भी इससे प्रभावित हुआ, जिससे प्रगतिवादी साहित्य का आन्दोलन आरम्भ हुआ। वर्ष 1935 में ई. एम. फास्टर के सभापतित्व में पेरिस (लन्दन) में 'प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन' (प्रगतिशील लेखक संघ) नामक अन्तरराष्ट्रीय संस्था का प्रथम अधिवेशन हुआ। यहीं पर भारतीयों में से कुछ समाजवादी विचारधारा वालों ने 'भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना की जिनमें मुल्कराज आनन्द और सज्जाद जहीर शामिल थे। वर्ष 1936 में सज्जाद जहीर और डॉ. मुल्कराज आनन्द के प्रयत्नों से भारतवर्ष में भी इस संस्था की शाखा खुली और प्रेमचन्द की अध्यक्षता में लखनऊ में इसका प्रथम अधिवेशन हुआ। प्रगतिवादी काव्यधारा में छायावाद की जीवनशून्य होती हुई व्यक्तिवादी वाक्की काव्यधारा की प्रतिक्रिया भी निहित थी।

4.प्रगतिवाद का आधार है।

- (a) रहस्यवाद (b) हालावाद
(c) प्रकृतिवाद (d) द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. प्रगतिशील लेखक संघ किस स्तर की संस्था है?

- (a) राष्ट्रीय (b) अन्तरराष्ट्रीय
(c) राज्य स्तरीय (d) हिन्दी भाषी प्रांतीय

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'प्रगतिशील लेखक संघ' के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता की थी—

- (a) प्रेमचन्द ने (b) नागार्जुन ने
(c) राही मासूम रजा ने (d) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. लखनऊ में आयोजित प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता की थी—

- (a) यशपाल ने (b) दिनकर ने

(c) निराला ने

(d) प्रेमचन्द ने

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना कब की गयी थी?

- (a) 1926 (b) 1936
(c) 1946 (d) 1939

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. लखनऊ में आयोजित 1936 के प्रगतिशील लेखक संघ के ऐतिहासिक आयोजन के अध्यक्ष थे—

- (a) प्रेमचन्द (b) जयशंकर प्रसाद
(c) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (d) मुल्कराज आनन्द

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना लन्दन में किसे प्रयत्न से हुई थी?

- (a) प्रेमचन्द
(b) निर्मल वर्मा
(c) मुल्कराज आनन्द व सज्जाद जहीर
(d) नागार्जुन व केदारनाथ अग्रवाल

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. प्रगतिवाद के जन्म में किसका योगदान है?

- (a) छायावादी रोमानियत एवं पलायनवादी प्रवृत्ति,
(b) प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना
(c) मार्क्सवादी प्रभाव
(d) उपर्युक्त सभी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. प्रगतिवाद के अन्तर्गत कौन-सा विचार अमान्य है?

- (a) यथार्थवाद (b) रूपवाद
(c) पदार्थवाद (d) समाजवाद

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

प्रगतिवाद के अन्तर्गत यथार्थवाद, पदार्थवाद तथा समाजवाद शामिल हैं। प्रगतिवाद के रूप सम्बन्धी मत में चन्द्रबली सिंह का मत है कि “विचारधारा पर सही जोर देने के साथ ही प्रगतिवादी आन्दोलन में काफी बड़े पैमाने पर साहित्य के रूपगत पक्ष की उपेक्षा की प्रवृत्ति रही।” अतः स्पष्ट है कि प्रगतिवाद में रूपवाद शामिल नहीं है।

13. निम्नलिखित प्रवृत्तियों में से एक ‘प्रगतिवाद’ की प्रवृत्ति नहीं है—

- (a) धर्म, ईश्वर तथा व्यक्तिवाद में आस्था
- (b) सामाजिकता का आग्रह
- (c) शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति एवं शोषण वर्ग के प्रति घृणा
- (d) जनसामान्य के प्रति लोकमंगल की कामना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

प्रगतिवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं—(i) प्राचीन रूढ़ियों एवं मान्यताओं का विरोध, (ii) मानवतावादी प्रवृत्ति, (iii) शोषक वर्ग के प्रति घृणा और शोषितों के प्रति सहानुभूति, (iv) विद्रोह एवं क्रान्ति की भावना, (v) समाज का यथार्थवादी चित्रण, (vi) नारी के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण, (vii) मार्क्सवादी दर्शन के आलोक में सामाजिक चेतना एवं (viii) ईश्वर के प्रति अनास्था।

14. वैद्यनाथ मिश्र किसका वास्तविक नाम था?

- (a) नागार्जुन
- (b) मुक्तिबोध
- (c) रघुवीर सहाय
- (d) धूमिल

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

‘बाबा’ के नाम से प्रसिद्ध कवि नागार्जुन का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था। ये प्रगतिवादी विचारधारा के कवि हैं। इनका जन्म 30 जून, 1911 को मधुबनी (बिहार) के तिरौनी नामक गाँव में हुआ था। आधुनिक हिन्दी काव्य को और समृद्ध करने वाले नागार्जुन का 5 नवम्बर, 1998 को ख्वाजा सराय, दरभंगा (बिहार) में निधन हो गया।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- नागार्जुन ने 1935 में ‘दीपक’ (मासिक) तथा 1942-43 में विश्वबन्धु (साप्ताहिक) पत्रिका का सम्पादन किया।
- हिन्दी साहित्य में उन्होंने ‘नागार्जुन’ तथा मैथिली में ‘यात्री’ उपनाम से रचनाओं का सृजन किया।
- मैथिली में नवीन भावबोध की रचनाओं का प्रारम्भ उनका महत्वपूर्ण कविता-संग्रह ‘चित्र’ से माना जाता है।
- नागार्जुन ने संस्कृत तथा बांग्ला में भी काव्य-रचना की है।
- ‘पत्रहीन नग्न गाछ’ (मैथिली कविता संग्रह) के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया।

➤ इनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं—युगधारा, प्यासी पथराई आँखें, सतरंगे पंखों वाली, तालाब की मछलियाँ, हजार-हजार बाहों वाली, पुरानी जूतियों का कोरस, तुमने कहा था, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, मैं मिलटरी का बूढ़ा घोड़ा, रत्नगर्भा, ऐसे भी हम क्या : ऐसे भी तुम क्या, पका है कटहल, भस्मांकुर।

➤ इनकी अन्य कृतियों में शामिल हैं—बलचनमा, रतिनाथ की चाची, कुम्भी पाक, उग्रतारा, जमनिया का बाबा, वरुण के बेटे।

15. नागार्जुन किस वर्ग के कवि हैं?

- (a) छायावादी
- (b) प्रगतिवादी
- (c) प्रयोगवादी
- (d) द्विवेदी युगीन

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. नागार्जुन किस काव्यधारा के कवि हैं?

- (a) प्रगतिवाद
- (b) प्रयोगवाद
- (c) अकविता
- (d) समकालीन कविता

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. कबीर के उपरान्त हर विध्वंसकारी और जनविरोधी शक्ति को सर्वाधिक खुली चुनौती देने वाले साहित्यकार हैं—

- (a) निराला
- (b) नागार्जुन
- (c) दिनकर
- (d) हरिऔध

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

नागार्जुन ने अपने समाज में व्याप्त समस्या तथा बुराइयों को जितनी गहराई तथा धमकेदार तरीके से उठाया है, उतना शायद कबीर के अलावा किसी ने नहीं उठाया है। नागार्जुन ने भ्रष्टाचार, अवसरवादिता जैसी सामाजिक कुरीतियों पर चोट की, राजनीति की गरिमा तथा लोकतंत्र के मायावी जाल को तार-तार करते हुए उसके वास्तविक चेहरों को सामने लाते हैं। पूंजीपति वर्ग के शोषण एवं अत्याचारों का विरोध करते हैं तथा मजदूरों, किसानों एवं छात्रों के हित की बात को बड़े जोरदार ढंग से सामने रखते हैं। बाबा नागार्जुन एक सशक्त कवि होते हुए एक समाज सुधारक की भूमिका निभाते हैं। डॉ. नामवर सिंह उन्हें कबीर की परम्परा के कवि मानते हैं।

18. 'प्रगतिवाद' के सन्दर्भ में इनमें से एक कथन सही नहीं है, वह है-

- (a) प्रगतिवाद जन-जीवन के साथ प्रकृति और कल्पनालोक में सौन्दर्य खोजता है।
- (b) प्रगतिवाद ने पहली बार साहित्यिक चेतना को यथार्थवाद की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी।
- (c) प्रगतिवाद की मूल प्रेरणा मार्क्सवाद से विकसित हुई थी।
- (d) प्रगतिवाद सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति को ही रचना का उद्देश्य मानता है।

G.I.C. (प्रवक्त) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

प्रगतिवाद सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति को ही रचना का उद्देश्य मानता है। प्रगतिवाद ने पहली बार साहित्यिक चेतना को यथार्थवाद की ओर होने की प्रेरणा दी, जो मार्क्सवाद से विकसित हुई। प्रगतिवाद ने सौन्दर्य को नये दृष्टिकोण से देखा। वह वर्तमान जनजीवन में सौन्दर्य खोजता है। सौन्दर्य का सम्बन्ध हमारे हार्दिक आवेगों और मानसिक चेतना दोनों से होता है। इन दोनों का सम्बन्ध सामाजिक सम्बन्धों से होता है।

19. प्रगतिवादी समीक्षक हैं-

- (a) रामचन्द्र शुक्ल
- (b) रामविलास शर्मा
- (c) गुलाब राय
- (d) श्यामसुन्दर दास

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

रामविलास शर्मा हिन्दी में प्रगतिवादी समीक्षा-पद्धति के एक प्रमुख स्तम्भ थे। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के बाद डॉ. रामविलास शर्मा ही एक ऐसे आलोचक के रूप में स्थापित होते हैं जो भाषा, साहित्य और समाज को एक साथ रखकर मूल्यांकन करते हैं। उनकी आलोचना प्रक्रिया में केवल साहित्य ही नहीं होता, बल्कि वे समाज, अर्थ, राजनीति, इतिहास को एक साथ लेकर साहित्य का मूल्यांकन करते हैं। रामविलास शर्मा की समीक्षा कृतियों में विशेष उल्लेखनीय हैं-प्रेमचन्द और उनका युग (1953), निराला (1946), भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1954), प्रगति और परम्परा (1954), भाषा और संस्कृति (1954), भाषा और समाज (1961), निराला की साहित्य साधना (1969)।

20. प्रगतिवादी कवि हैं-

- (a) जयशंकर प्रसाद
- (b) मुक्तिबोध
- (c) केदारनाथ अग्रवाल
- (d) हरिवंशराय बच्चन

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। इनका पहला काव्य संग्रह 'युग की गंगा' आजादी के पहले मार्च, 1947 में प्रकाशित हुआ। केदारनाथ अग्रवाल ने मार्क्सवादी दर्शन को जीवन का आधार

मानकर जनसाधारण के जीवन की गहरी व व्यापक संवेदना को अपनी कृतियों में मुखरित किया। केदारनाथ अग्रवाल के अन्य प्रमुख कविता संग्रह हैं- फूल नहीं रंग बोलते हैं, गुलमेंहदी, हे मेरी तुम!, बोलेबोल अबोल, जमुन जल तुम, कहें केदार खरी खरी, मार प्यार की थापें आदि।

21. 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' के रचनाकार हैं-

- (a) केदारनाथ अग्रवाल
- (b) नागार्जुन
- (c) त्रिलोचन
- (d) नरेश मेहता

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. 'जमुन जल तुम' काव्य के रचनाकार हैं-

- (a) भवानीप्रसाद मिश्र
- (b) धूमिल
- (c) शिवमंगल सिंह
- (d) केदारनाथ अग्रवाल

डायट (प्रवक्त) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. इनमें से कौन-सी रचना केदारनाथ अग्रवाल की नहीं है?

- (a) युग की गंगा
- (b) नींद के बादल
- (c) आग का झरना
- (d) युगधारा

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a&d)

युग की गंगा तथा नींद के बादल केदारनाथ अग्रवाल की काव्य कृति हैं जबकि युगधारा नागार्जुन की कृति है। केदारनाथ अग्रवाल ने 'आग का आझना' भी लिखा है, किन्तु विकल्प में 'आग का झरना' है। अतः विकल्प में दो रचनाएँ केदारनाथ अग्रवाल की नहीं हैं। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपने प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (d) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

24. "अबे सुन वे गुलाब

भूल मत गर पाई खुशबू रंगो अब"

-काव्य पंक्तियों का सम्बन्ध है-

- (a) प्रगतिवादी कविता से
- (b) प्रयोगवादी कविता से
- (c) समानान्तर कविता से
- (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की प्रगतिवादी रचना 'कुकुरमुत्ता' से ली गई हैं। इनकी अन्य प्रगतिवादी रचनाएँ हैं-अणिमा, नये पत्ते, बेला तथा अर्चना।

25. प्रगतिवाद के प्रमुख कवि नहीं हैं-

- (a) नागार्जुन (b) दिनकर
(c) अज्ञेय (d) मुक्तिबोध

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

अज्ञेय जी प्रगतिवाद के प्रमुख कवि नहीं, बल्कि प्रयोगवाद एवं नयी कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि हैं। नागार्जुन, दिनकर एवं मुक्तिबोध प्रगतिवाद के प्रमुख कवि हैं।

26. निम्नलिखित में से किस लम्बी कविता के रचयिता मुक्तिबोध हैं?

- (a) पेशोला की प्रतिध्वनि (b) अँधेरे में
(c) राम की शक्ति पूजा (d) असाध्य वीणा

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

‘अँधेरे में’ कविता के रचयिता गजानन माधव मुक्तिबोध हैं। इनके अन्य काव्य संग्रह हैं-चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी-भूरी खाक धूल, अन्तर्दर्शन, आत्मसंवाद, ब्रह्मरक्षस, भूल गलती, चम्बल की घाटी में आदि। राम की शक्तिपूजा ‘निराला’ की लम्बी कविता तथा असाध्य वीणा ‘अज्ञेय’ की है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ‘मुक्तिबोध’ का पूरा नाम गजानन माधव मुक्तिबोध है।
- इनका जन्म ग्वालियर (मध्य प्रदेश) के एक कस्बे में हुआ था।
- ये अध्यापक, पत्रकार, विशिष्ट विचारक कवि, कथाकार और समीक्षक के रूप में समादृत रहे।
- उन्होंने ‘अँधेरे’ कविता की लम्बी व्याख्या करते हुए ‘अस्मिता की खोज’ की बात उठाई है।

27. ‘चाँद का मुँह टेढ़ा है’ के रचयिता हैं—

- (a) नागार्जुन (b) मुक्तिबोध
(c) धर्मवीर भारती (d) धूमिल

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. ‘भूल गलती’ कविता के कवि हैं—

- (a) नागार्जुन (b) केदारनाथ अग्रवाल
(c) त्रिलोचन (d) मुक्तिबोध

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. ‘अँधेरे में’ कविता किसने लिखी है?

- (a) मुक्तिबोध (b) नागार्जुन
(c) त्रिलोचन (d) धूमिल

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. ‘कामायनी : एक पुनर्विचार’ नामक आलोचना ग्रंथ के लेखक हैं

- (a) राम स्वरूप चतुर्वेदी (b) राम विलास शर्मा
(c) डॉ. नगेंद्र (d) गजानन माधव ‘मुक्तिबोध’

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

‘कामायनी : एक पुनर्विचार’ नामक आलोचना ग्रंथ के लेखक गजानन माधव ‘मुक्तिबोध’ हैं। मुक्तिबोध जी ने ‘कामायनी : एक अध्ययन’ के नाम से आलोचना पुस्तक की पांडुलिपि तैयार की थी, लेकिन वह प्रकाशित होकर बाजार में नहीं आ पायी। इसी पुस्तक को उन्होंने पुनः संशोधित-परिवर्द्धित करके ‘कामायनी : एक पुनर्विचार (1961) के नाम से प्रकाशित कराया। ‘मुक्तिबोध’ के जीवन-काल में उनकी एक उल्लेखनीय पुस्तक ‘भारत : इतिहास और संस्कृति’ मध्य प्रदेश, शिक्षा विभाग द्वारा सेकेण्डरी स्कूल के छात्रों के लिए प्रकाशित हुई।

31. रहस्य पुरुष का बिम्ब मुक्तिबोध की किस कविता में नहीं है?

- (a) मेरे सहचर मित्र (b) अँधेरे में
(c) इस चौड़े ऊँचे टीले पर (d) मुझे पुकारती हुई

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

मुक्तिबोध की ‘ब्रह्मरक्षस’ एवं ‘अँधेरे में’ कविताओं में फैंटेसी है अर्थात् एक जादुई कथा में आधुनिक जीवन अनुभवों की अभिव्यक्ति है। इन कविताओं में गहरा मानसिक संघर्ष, तनाव तथा छटपटाहट है।

32. गजानन माधव मुक्तिबोध की रचना ‘चाँद का मुँह टेढ़ा है’ में कौन-सी कविता संकलित नहीं है?

- (a) जन्मदिन की धूप में (b) एक स्वप्नकथा
(c) भूल गलती (d) ब्रह्मरक्षस

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

गजानन माधव मुक्तिबोध की रचना ‘चाँद का मुँह टेढ़ा है’ में भूल गलती, एक स्वप्नकथा, ब्रह्मरक्षस, पता नहीं, डूबता चाँद कब डूबेगा, मुझे याद आते हैं आदि कविताएँ संकलित हैं। ‘चाँद का मुँह टेढ़ा है’ का प्रकाशन सन् 1964 में हुआ था। जबकि ‘जन्मदिन की धूप में’ कविता केदारनाथ सिंह द्वारा रचित है, जो ‘अकाल में सारस’ कविता संग्रह में संकलित है।

33. मुक्तिबोध की किस पुस्तक को प्रतिबन्धित किया गया था?

- (a) विपात्र (b) एक साहित्यिक की डायरी
(c) चौद का मुँह टेढ़ा है (d) भारत : इतिहास और संस्कृति

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

मुक्तिबोध की पुस्तक 'भारत : इतिहास और संस्कृति' को प्रतिबन्धित किया गया था। मध्य प्रदेश शासन द्वारा 'भद्रता और नैतिकता' के विरुद्ध ठहराई गई इस पुस्तक पर मध्य प्रदेश न्यायालय में मुकदमा चला था। जिसका निर्णय था कि इसके दस आपत्तिजनक अंशों को हटाकर इसे पुनः प्रकाशित किया जा सकता है। पाठ्य पुस्तक संस्करण की भूमिका में मुक्तिबोध ने लिखा है कि यह इतिहास की पुस्तक नहीं है। इस अर्थ में कि सामान्यतः इतिहास में राजाओं, युद्धों और राजनैतिक उलट-फेरों का जैसा विवरण रहता है, वैसा इसमें नहीं है। युद्धों और राजवंशों के विवरण में न अटककर मैंने अपने समाज और उसकी संस्कृति के विकास-पथ को अंकित किया है।

34. त्रिलोचन शास्त्री की कविताएँ हिन्दी के अतिरिक्त किस अन्य उपभाषा में हैं?

- (a) ब्रज (b) मैथिली
(c) अवधी (d) भोजपुरी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

त्रिलोचन शास्त्री की कविताएँ हिन्दी के अलावा अवधी बोली (पूर्वी हिन्दी) में हैं। त्रिलोचन का साहित्य सफर पत्रकारिता से शुरू हुआ और आगे हिन्दी साहित्य के तीन प्रगतिशील कवियों में एक स्तम्भ माने गये हैं। यहीं से वास्तव में अवधी कविताओं में तरक्की देखने को मिलती है। त्रिलोचन जी ने अवधी में एक अच्छी रचना 'अमोला' लिखी है, जिसमें 2700 बरवै एकसाथ हैं।

35. निम्नलिखित में दिनकर की काव्य रचना नहीं है -

- (a) हुंकार (b) कुरुक्षेत्र
(c) उर्वशी (d) त्रिधारा

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'त्रिधारा' दिनकर की काव्य रचना नहीं, बल्कि सुभद्राकुमारी चौहान की रचना है। इनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं-बिखरे मोती (1932), उन्मादिनी (1934), सीधे-साधे चित्र (1947), मुकुल और मिला तेज से तेज इत्यादि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ बुन्देलखण्डी लोकशैली में लिखी गई सुभद्राकुमारी चौहान की कविता 'झाँसी की रानी' अपने समय में काफी प्रसिद्ध हुई।

- ☛ भारतीय तटरक्षक सेना ने 28 अप्रैल, 2006 को सुभद्राकुमारी चौहान की राष्ट्रप्रेम की भावना को सम्मानित करने के लिए 'तटरक्षक जहाज' को 'सुभद्रा' नाम दिया है।

- ☛ भारतीय डाक-तार विभाग ने 6 अगस्त, 1976 को सुभद्राकुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक डाक-टिकट जारी किया।

- ☛ रामधारी सिंह दिनकर की प्रमुख रचनाएँ हैं-रेणुका (1935), हुंकार (1940), रसन्ती (1940), द्वन्द्वगीत (1940), कुरुक्षेत्र (1946), सम्पत्ति (1947), रश्मिरथी (1952), उर्वशी (1961), परशुराम की प्रतीक्षा (1963), इतिहास के आँसू, धूप और धुआँ, दिल्ली, नीम के पत्ते, नील कुसुम, संस्कृति के चार अध्याय और हारे को हरिनाम इत्यादि।

- ☛ 'रेणुका' दिनकर का प्रथम काव्य-संग्रह है।

- ☛ उर्वशी इनका दूसरा विशिष्ट प्रबन्ध है, जिसे गीतनाट्य भी कहा गया है। कथा का पाँच अंकों में विभाजन और कथोपकथन पद्धति के कारण इसे नाट्य की स्थूल संज्ञा दी जा सकती है, पर इसमें नाटकीयता का अभाव है। मूलतः यह प्रबन्ध काव्य है।

36. 'हारे को हरिनाम' शीर्षक काव्यग्रन्थ के रचनाकार हैं—

- (a) मैथिलीशरण गुप्त (b) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(c) वियोगी हरि (d) सुमित्रानन्दन पन्त

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. 'संस्कृति के चार अध्याय' किसकी रचना है?

- (a) अज्ञेय (b) मुक्तिबोध
(c) जयशंकर प्रसाद (d) दिनकर

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. रामधारी सिंह 'दिनकर' की किस कृति को 'आधुनिक युग की गीता' कहा गया है?

- (a) रेणुका (b) हुंकार
(c) कुरुक्षेत्र (d) उर्वशी

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

रामधारी सिंह 'दिनकर' की कृति 'कुरुक्षेत्र' को 'आधुनिक युग की गीता' कहा गया है। युद्ध की समस्या को लेकर लिखे गये प्रबन्ध काव्यों में कुरुक्षेत्र का स्थान बहुत ऊँचा है। 'कुरुक्षेत्र' एक काव्यात्मक गीत है, जिससे आध्यात्मिक चिन्तन के स्थान पर आधुनिक जीवन के प्रश्नों का चिन्तन है।

39. रामधारीसिंह दिनकर की काव्यकृति कौन-सी है?

- (a) लोकायतन (b) कुरुक्षेत्र
(c) आर्यावर्त (d) उन्मुक्त

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. “दो राह समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,

सिंहासन खाती करो कि जनता आती है।”

यह पंक्तियाँ किसकी कविता से उद्धृत हैं?

- (a) शिवमंगलसिंह सुमन (b) रामधारी सिंह ‘दिनकर’
(c) मैथिलीशरण गुप्त (d) महादेवी वर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त पंक्तियाँ रामधारी सिंह ‘दिनकर’ के ‘जनतन्त्र का जन्म’ नामक शीर्षक से उद्धृत हैं।

41. बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’ का सर्वप्रथम प्रकाशित काव्य संग्रह है-

- (a) क्वासि (b) रश्मिरेखा
(c) उर्मिला (d) कुंकुम

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’ सन् 1930 तक कवि रूप में यशस्वी हो चुके थे, परन्तु पहला कविता संग्रह ‘कुंकुम’ 1936 ई. में प्रकाशित हुआ। इस गीत संग्रह का मूल स्वर यौवन के पहले उद्गम प्रणयावेग एवं प्रखर राष्ट्रीयता का है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’ की प्रथम रचना ‘आह्वान’ 1918 ई. में ‘प्रतिभा पत्रिका’ में प्रकाशित हुई थी। आह्वान का वास्तविक नाम ‘जीव ईश्वर वार्तालाप’ है।
- उनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ-रश्मिरेखा (1951), अपलक (1952) और क्वासि काव्य संग्रह हैं।
- 1931 ई. में गणेश शंकर विद्यार्थी की मृत्यु के पश्चात कई वर्षों तक वे ‘प्रताप’ पत्रिका के प्रधान सम्पादक के रूप में कार्य करते रहे।
- हिन्दी की राष्ट्रीय काव्य धारा को आगे बढ़ाने वाली पत्रिका ‘प्रभा’ का सम्पादन भी उन्होंने 1921-1923 ई. में किया था।

42. नवगीत दशक-1, 2, 3 का सम्पादक कौन था?

- (a) शम्भूनाथ सिंह (b) अज्ञेय
(c) नरेश मेहता (d) उमाशंकर तिवारी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

नवगीतकार योगेन्द्रदत्त शर्मा की प्रतिभा से प्रभावित होकर डॉ. शम्भूनाथ सिंह ने नवगीत दशक योजना में उन्हें प्रमुख कवि के रूप में संकलित किया। उनके द्वारा सम्पादित नवगीत दशक-1,2,3 हैं।

□ प्रयोगवाद

1. प्रयोग अपने आप में इष्ट नहीं है, वरन् वह साधन है- यह कथन किस ‘वाद’ से संबंधित है?

- (a) प्रगतिवाद (b) छायावाद
(c) यथार्थवाद (d) प्रयोगवाद

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

‘अज्ञेय’ (पूरा नाम- सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन) ने प्रयोगवाद के बारे में अपनी ‘दूसरी तार सप्तक’ भूमिका में लिखा है कि ‘प्रयोग का कोई वाद नहीं है। हम वादी नहीं रहे, न ही हैं। प्रयोग अपने आप में इष्ट या साध्य नहीं है। अतः हमें ‘प्रयोगवादी’ कहना उतना की सार्थक या निरर्थक है, जितना हमें ‘कवितावादी’ कहना।

2. ‘अज्ञेय’ का पूरा नाम है-

- (a) रायकृष्णदास (b) कन्हैया लाल
(c) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन (d) हरिशंकर परसाई

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. प्रयोगवाद के प्रवर्तक के अनुसार प्रयोगवादी कवि का मुख्य तथ्य क्या था?

- (a) नये काव्य उपकरणों का प्रयोग
(b) भावुकता के स्थान पर बौद्धिकता की प्रतिष्ठा
(c) नई राहों का अन्वेषण
(d) काव्य की पूर्व परम्परा का निषेध

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

सन् 1943 में ‘तार सप्तक’ का प्रकाशन होते ही स्पष्ट हो गया कि कविता ने प्रगतिवाद से भिन्न चेतना ग्रहण करनी प्रारम्भ कर दी है। इस भिन्न चेतना का निर्माण प्रगतिवाद की मान्यताओं को उलटकर हुआ हो, ऐसा नहीं है। हाँ अपने से पहले काव्यान्दोलन के रुढ़िगत स्वरूप को इसमें अवश्य ही नकारने की घोषणा की गई। समग्र रूप से इस चेतना का निर्माण युगीन परिवेश (निराश, कुण्ठा, व्यष्टि और समष्टि का संघर्ष) और युग-व्याप्त राजनीतिक-सामाजिक दर्शन के समन्वय से हुआ था। तार सप्तक की योजना फुटकर लघु संकलनों की परेशानियों से बचने के लिए तैयार की गई। जब प्रकाशन योजना सामने आ गई, तब कहीं यह सोचा

गया कि संकलित कवि अन्वेषी-दृष्टिकोण के हों। भूमिका में अज्ञेय ने स्पष्ट किया है कि “उनके (संकलित कवियों के) एकत्र होने का कारण ही यह है कि वे किसी एक स्कूल के नहीं हैं, किसी मंजिल पर पहुँचे हुए नहीं हैं, अभी राही हैं—राही नहीं, राहों के अन्वेषी। उनमें मतैक्य नहीं है, सभी महत्वपूर्ण विषयों पर उनकी राय अलग-अलग है—जीवन के विषय में, समाज और धर्म और राजनीति के विषय में काव्यवस्तु और शैली के, छन्द और तुक के, कवि के दायित्वों के प्रत्येक विषय में उनका आपस में मतभेद है।..... वे सब परस्पर एक-दूसरे पर, एक-दूसरे की रुचियों, कृतियों और आशाओं-विशवासों पर, एक-दूसरे की जीवन परिपाटी पर और यहाँ तक कि एक-दूसरे के मित्रों और कुत्तों पर भी हँसते हैं।” अतः स्पष्ट है कि प्रयोगवाद के प्रवर्तक (अज्ञेय) के अनुसार, प्रयोगवादी कवि का मुख्य तथ्य ‘नई राहों का अन्वेषण’ है।

4. ने प्रयोगवाद को सर्वाधिक प्रभावित किया।

- (a) मार्क्सवाद (b) अस्तित्ववाद
(c) प्रगतिवाद (d) छायावाद

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

प्रयोगवाद पर अस्तित्ववाद का गहरा प्रभाव था। नयी कविता, प्रयोगवाद से भिन्न होकर, एक रूढ़ अर्थ में तब प्रयुक्त होने लगी जब सन् 1954 में इलाहाबाद से ‘नयी कविता’ नामक संकलन प्रकाशित होने लगा। आरम्भ में ये नयी कविता वाले प्रयोगवाद से अपना सम्बन्ध जोड़ते थे। किन्तु प्रयोगवाद पर अज्ञेय का एकाधिकार था; अज्ञेय से प्रयोग के आचार्यों की खटक गयी, तब नयी कविता की धारा बहुत-कुछ अस्तित्ववाद से प्रभावित थी। इसी से आगे चलकर वह धारा भी फूटी जो किसी भी जीवन-मूल्य को स्वीकार न करती थी। नयी कविता को प्रभावित करने वाले अस्तित्ववाद से मुख्य टक्कर मार्क्सवाद की थी।

5. निम्नलिखित में से एक कथन असत्य है-

- (a) ‘प्रयोगवाद’ का जन्म ‘तार सप्तक’ के प्रकाशन के साथ माना जाता है।
(b) प्रयोगवाद में प्रयोग इष्ट नहीं, साधन माना गया है।
(c) प्रयोगवादी कविता हासोमुख मध्यवर्गीय समाज के जीवन का चित्र है।
(d) नयी कविता प्रयोगवाद का विकसित रूप नहीं है।

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

‘नयी कविता’ नाम स्वतंत्रता के बाद लिखी गयी उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया, जो अपनी वस्तु-छवि और रूप-छवि दोनों में पूर्ववर्ती प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास होकर भी विशिष्ट हैं। अतः विकल्प (d) असत्य है। शेष कथन सही हैं।

6. प्रयोगवादी कवियों की रचनाएँ, किस सप्तक में संगृहीत हैं?

- (a) तार सप्तक (b) दूसरा सप्तक
(c) तीसरा सप्तक (d) चौथा सप्तक

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

हिन्दी में प्रयोगवाद का प्रारम्भ सन् 1943 में ‘अज्ञेय’ द्वारा सम्पादित ‘तार सप्तक’ के प्रकाशन से माना जाता है। प्रयोगवादी कवियों की रचनाएँ ‘तार सप्तक’ में संगृहीत हैं। तार सप्तक में ‘सात कवि’ शामिल हैं। प्रयोगवाद को प्रपद्यवाद और नयी कविता के नाम से भी जाना जाता है। डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने इसे मुन्नी, युवती और बहू की संज्ञा दी। अज्ञेय जी ने इसे ‘राहों के अन्वेषी’ कहा है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- तार सप्तक (1943) के कवि-याद करने का सूत्र-अमुने गिरा प्रभा) अज्ञेय, मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र जैन, गिरिजा कुमार माथुर, रामविलास शर्मा, प्रभाकर माचवे, भारत भूषण अग्रवाल।
- दूसरे सप्तक (1951) के कवि-याद करने का सूत्र-शह भर शनघ) शमशेर बहादुर सिंह, हरिनारायण व्यास, भवानी प्रसाद मिश्र, रघुवीर सहाय, शकुन्तला माथुर, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती।
- तीसरे सप्तक (1959) के कवि-याद करने का सूत्र-केकुकी विप्र सम) केदारनाथ सिंह, कुँवर नारायण, कीर्ति चौधरी, विजयदेव नारायण साहि, प्रयग नारायण त्रिपाठी, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, मदन वात्स्यायन।
- चौथे सप्तक (1979) के कवि-याद करने का सूत्र-श्री अरासुरा स्वन) श्रीराम वर्मा, अवधेश कुमार, राजकुमार कुंभज, सुमन राजे, राजेन्द्र किशोर, स्वदेश भारतीय, नन्द किशोर आचार्य।

7. अज्ञेय कौन-से वाद के कवि हैं?

- (a) प्रगतिवाद (b) प्रयोगवाद
(c) छायावाद (d) इनमें से कोई नहीं है।

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. तार सप्तक में संकलित कवियों को ‘राहों के अन्वेषी’ कहा था—

- (a) मुक्तिबोध (b) अज्ञेय
(c) भारतभूषण अग्रवाल (d) प्रभाकर माचवे

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. ‘प्रयोगवाद’ की जन्मदात्री पत्रिका है-

- (a) तार सप्तक (b) प्रतीक
(c) नये पत्ते (d) नयी कविता

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. निम्नलिखित में से कौन 'तार सप्तक' का कवि नहीं है?

- (a) शमशेर बहादुर सिंह (b) गिरिजा कुमार माथुर
(c) मुक्तिबोध (d) प्रभाकर माचवे

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. इनमें से कौन 'तार सप्तक' में शामिल नहीं है?

- (a) अज्ञेय (b) शमशेर
(c) मुक्तिबोध (d) नेमिचन्द्र जैन

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. निम्नलिखित में से तार सप्तक में कौन कवि शामिल नहीं था?

- (a) प्रभाकर माचवे (b) नेमिचन्द्र जैन
(c) भारत भूषण अग्रवाल (d) रामधारी सिंह दिनकर

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. भवानीप्रसाद मिश्र की कविताएँ किस सप्तक में हैं?

- (a) पहला तार सप्तक (b) दूसरा सप्तक
(c) तीसरा सप्तक (d) चौथा सप्तक

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. निम्नलिखित में से कौन-सा कवि 'दूसरा सप्तक' में सम्मिलित नहीं था?

- (a) भवानी प्रसाद मिश्र (b) शकुन्तला माथुर
(c) शमशेर बहादुर सिंह (d) मुक्तिबोध

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. इनमें से 'दूसरा सप्तक' में संकलित कवि हैं :

- (a) रघुवीर सहाय (b) केदारनाथ सिंह
(c) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना (d) नेमिचन्द्र जैन

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. सन् 1951 में प्रकाशित 'दूसरा सप्तक' में कौन-सी कवयित्री शामिल थीं?

- (a) अमृता भारती (b) कीर्ति चौधरी

(c) शकुन्तला माथुर

(d) सुमन राजे

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. केदारनाथ सिंह किस सप्तक के संकलित कवि हैं?

- (a) तार सप्तक (b) दूसरा सप्तक
(c) तीसरा सप्तक (d) चौथा सप्तक

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. 'चौथा सप्तक' में संकलित कवयित्री हैं—

- (a) शकुन्तला माथुर (b) सुमन राजे
(c) मणिकामोहिनी (d) कीर्ति चौधरी

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. 'तार सप्तक' में कौन-सा कवि सम्मिलित नहीं है?

- (a) भारत भूषण अग्रवाल (b) मुक्तिबोध
(c) नेमिचन्द्र जैन (d) रघुवीर सहाय

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. 'तार सप्तक' का प्रकाशन वर्ष है—

- (a) सन् 1940 (b) सन् 1943
(c) सन् 1955 (d) सन् 1958

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. 'तार सप्तक' का प्रकाशन वर्ष है—

- (a) सन् 1936 (b) सन् 1943
(c) सन् 1946 (d) सन् 1956

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. 'तार सप्तक' का सम्बन्ध किस काव्यधारा से है?

- (a) प्रगतिवाद (b) प्रयोगवाद
(c) हालावाद (d) अकविता

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. 'आत्महत्या के विरुद्ध' कविता संकलन के कवि हैं-

- (a) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना (b) धर्मवीर भारती
(c) रघुवीर सहाय (d) मुक्तिबोध

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर-(c)

'आत्महत्या के विरुद्ध' कविता संकलन के कवि रघुवीर सहाय हैं। ये 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित दूसरा सप्तक के प्रमुख कवि हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- रघुवीर सहाय की अन्य प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं-
- **कविता संग्रह-** सीढ़ियों पर धूप में, हँसो-हँसो जल्दी हँसो, लोग भूल गए हैं, कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ, एक समय था इत्यादि।
- **कहानी संग्रह-** रास्ता इधर से है, जो आदमी हम बना रहे हैं।
- **निबन्ध संग्रह-** दिल्ली मेरा परदेश, लिखने का कारण, ऊबे हुए सुखी, वे और नहीं होंगे जो मारे जाएँगे, लहरें और तरंग, अर्थात्, यथार्थ का अर्थ, भँवर इत्यादि।
- **अनुवाद-** बरनमवन (शेक्सपियर के नाटक 'मैकबेथ' का अनुवाद), तीन हंगारी नाटक इत्यादि।

24. 'कुआनो नदी' कविता संग्रह के कवि हैं-

- (a) त्रिलोचन (b) भारतभूषण अग्रवाल
(c) अज्ञेय (d) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर-(d)

'कुआनो नदी' कविता संग्रह के कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना हैं। इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं-काठ की घंटियाँ, बाँस का पुल, एक सूनी नाव, गर्म हवाएँ, जंगल का दर्द इत्यादि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सन् 1983 में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना को कविता संग्रह 'खूँटियों पर टँगें लोग' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- 'उड़े हुए रंग' इनका उपन्यास है।
- 'सोया हुआ जल' और 'पागल कुत्तों का मसीहा' नाम से इन्होंने दो लघु उपन्यास लिखे।
- 'अँधेरे पर अँधेरा' संग्रह में इनकी कहानियाँ संकलित हैं।
- 'बकरी' नामक इनका नाटक काफी लोकप्रिय रहा।
- बालोपयोगी साहित्य में इनकी कृतियाँ-भौं-भौं-खों-खों, ताख की नाक, बतूता का जूता और महँगू की टाई महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।
- 'कुछ रंग कुछ गंध' शीर्षक से इनका यात्रा वृत्तांत भी प्रकाशित हुआ।
- 'शमशेर' और 'नेपाली कविताएँ' नामक कृतियों का सम्पादन भी इन्होंने किया।

25. 'कुआनो नदी' काव्य संग्रह के रचनाकार हैं-

- (a) धूमिल (b) कुँवर नारायण

(c) दुष्यन्त कुमार

(d) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर-(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. 'नकेनवाद' किस काव्य धारा के लिए प्रयुक्त हुआ था?

- (a) छायावादी काव्य (b) प्रगतिवादी काव्य
(c) प्रयोगवादी काव्य (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर-(d)

प्रयोगवाद के भीतर ही 'प्रपद्यवाद' या 'नकेनवाद' भी पनपा, लेकिन वह प्रयोगवाद की एक छोटी शाखा-मात्र बनकर रह गया। नकेनवाद बिहार में प्रचलित हुआ। 'नकेन', नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार और नरेश मेहता के नामों के प्रथम अक्षर से बना है। नकेनवादी तीनों कवियों ने 'प्रयोग-दशसूत्री' में प्रयोगवाद और प्रयोगशीलता में अन्तर स्पष्ट किया है। ये प्रयोग को ही काव्य का एकमात्र लक्ष्य मानते हैं।

27. 'नकेनवाद' नामक साहित्यिक आन्दोलन के अग्रणी हैं-

- (a) जगदीश गुप्त, नरेश मेहता और अज्ञेय
(b) नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार और नरेश मेहता
(c) नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार और नागार्जुन
(d) नरेश मेहता, केसरी कुमार और निर्मल वर्मा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर-(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. इनमें से कौन-सा कवि 'नकेनवाद' से जुड़ा है?

- (a) केसरी कुमार (b) केदारनाथ सिंह
(c) नरेश मेहता (d) केदारनाथ अग्रवाल

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर-(*)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

29. इनमें से कौन 'प्रपद्यवाद' से संबंधित नहीं हैं?

- (a) नलिन विलोचन शर्मा (b) प्रयागनारायण त्रिपाठी
(c) नरेश (d) केसरी कुमार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर-(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. 'घोर अहंनिष्ठ व्यक्तिवाद' किस काव्यधारा की प्रवृत्ति है?

- (a) छायावाद (b) प्रगतिवाद
(c) प्रयोगवाद (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर-(c)

प्रयोगवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं— 1. सम-सामयिक जीवन का यथार्थ चित्रण, 2. घोर अहंनिष्ठ वैयक्तिकता, 3. विद्रोह का स्वर, 4. लघु मानव की प्रतिष्ठा, 5. अनास्थावादी तथा संशयात्मक स्वर, 6. आस्था तथा भविष्य के प्रति विश्वास।

□ नयी कविता

1. नयी कविता के प्रवर्तक थे-

- (a) प्रताप नारायण मिश्र (b) प्रेमचन्द
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) घनानन्द

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(*)

नई कविता भारतीय स्वतन्त्रता के बाद लिखी गयी उन कविताओं को कहा गया, जिनमें परम्परागत कविता से आगे नये भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्प-विधान का अन्वेषण किया गया। यह भी कहा जाता सकता है कि प्रयोगवाद के बाद हिन्दी कविता की जो नवीन धारा विकसित हुई वह नयी कविता है। नयी कविता के प्रवर्तक अज्ञेय हैं।

2. नयी कविता के प्रमुख लक्षण हैं -

- (a) अनुभूति की सच्चाई और बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि
(b) शोषित वर्ग की पीड़ा और पूंजीपतियों की घोर निन्दा
(c) प्रकृति चित्रण और सौन्दर्यबोध
(d) इनमें से कोई भी नहीं

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

नयी कविता के दो तत्व प्रमुख हैं- अनुभूति की सच्चाई और बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि। वह अनुभूति क्षण की हो या एक समूचे काल की, किसी सामान्य व्यक्ति की हो या विशिष्ट पुरुष की, आशा की हो या निराशा, अपनी सच्चाई में कविता के लिए और जीवन के लिए भी अमूल्य है। नयी कविता में बुद्धिवाद नवीन यथार्थवादी दृष्टि के रूप में भी है और नवीन जीवन-चेतना की पहचान के रूप में भी।

3. 'नयी कविता' पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ-

- (a) सन् 1953 में (b) सन् 1954 में
(c) सन् 1955 में (d) सन् 1956 में

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

सन् 1954 में 'नयी कविता' पत्रिका का प्रकाशन इलाहाबाद (अब प्रयागराज) से हुआ। 1947 में जब अज्ञेय ने 'प्रतीक' का प्रकाशन आरम्भ किया, तब मुक्तिबोध की प्रसिद्ध कविता 'मुझे पुकारती हुई पुकार' प्रकाशित हुई।

4.'नयी कविता' पत्रिका का प्रकाशन वर्ष है।

- (a) 1952 (b) 1953

(c) 1954

(d) 1955

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'नयी कविता' की प्रमुख प्रवृत्ति है—

- (a) बौद्धिकता का प्राधान्य
(b) यथार्थवाद का अति आग्रह
(c) कुण्ठा, निराशा, संदेह की अभिव्यक्ति
(d) उपर्युक्त सभी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

नयी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं—(i) बौद्धिकता का प्राधान्य (ii) यथार्थवाद का अति आग्रह (iii) कुण्ठा, निराशा, संदेह की अभिव्यक्ति (iv) कथ्य की व्यापकता और दृष्टि की उन्मुक्तता (v) मानवतावाद की नई परिभाषा आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'नयी कविता' का नामकरण प्रयोगवादी कवियों के द्वारा ही किया गया।
➤ 'नयी कविता' के संस्थापकों में जगदीश गुप्त और रामस्वरूप चतुर्वेदी का महत्वपूर्ण योगदान है।

6. 'लघुमानव की धारणा' किसकी प्रवृत्तिगत विशेषता है?

- (a) नयी कविता (b) दलित-विमर्श
(c) प्रगतिवाद (d) छायावाद

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2016

उत्तर—(a)

लघु मानव का अर्थ है- वह सामान्य मनुष्य, जो अपनी सारी संवेदना, भूख-प्यास और मानसिक आंच को लिए-दिए उपेक्षित था। इस लघु मानव का अर्थ यदि मनुष्य की लघुता को खोज-खोज कर सत्य-रूप में उसकी प्रतिष्ठा करने से है, तो निश्चय ही यह अतिवादी, प्रतिक्रियावादी और असत्य जीवन दृष्टि है। नयी कविता की प्रवृत्तियों की परीक्षा करने पर उसकी सबसे पहली विशिष्टता जीवन के प्रति उसकी आस्था में दिखाई पड़ती है। आज की क्षणवादी और लघु मानववादी दृष्टि जीवन मूल्यों के प्रति नकारात्मक नहीं स्वीकारात्मक दृष्टि है। अतः लघु मानव की धारणा नयी कविता की प्रवृत्तिगत विशेषता है।

7. 'नयी कविता' परम्परा का तिरस्कार है और 'नयी कहानी' परम्परा का विस्तार। यह कथन है-

- (a) शैलेश मटियानी (b) राजेन्द्र यादव
(c) महीपसिंह (d) नामवर सिंह

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'नयी कविता' परम्परा का तिरस्कार है और 'नयी कहानी' परम्परा का विस्तार। यह कथन राजेन्द्र यादव का है।

हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास

□ निबन्ध

1. हिन्दी निबन्ध का उत्कर्ष काल है-

- (a) भारतेन्दु युग (b) द्विवेदी युग
(c) शुक्ल युग (d) शुक्लोत्तर युग

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

आचार्य शुक्ल के मार्गदर्शन से द्विवेदी युग के पश्चात का निबन्ध लेखक परिचय, विवरण अथवा भावोद्रेक के मोह को छोड़कर, अनुशीलन और आलोचना के साथ वस्तु के मूल तत्व की शोध में प्रवृत्त हुआ और वस्तु की अपनी सामर्थ्य-सीमा के साथ बौद्धिक व्याख्या और विवेचन करने लगा। इस नए काल के निबन्ध लेखक अधिकांशतः आलोचनात्मक निबन्ध लिखने में प्रवृत्त हुए अर्थात् वे पहले आलोचक हैं, बाद में निबन्ध लेखक। इसी कारण शुक्ल युग के निबन्ध प्रौढ़ एवं शक्ति-सम्पन्न हैं। विकास की दृष्टि से यह युग (शुक्ल युग) 'उत्कर्ष काल' है। विषय, शैली, स्वरूप, भाव तथा भाषा के विचार से इस युग में हिन्दी निबन्ध का सर्वांगीण विकास हुआ।

2. 'कविता क्या है?' निबन्ध के लेखक हैं-

- (a) रामचन्द्र शुक्ल (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) अध्यापक पूर्ण सिंह (d) कुबेरनाथ राय

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का निबन्ध संग्रह चिन्तामणि है, इसके तीन भाग हैं। चिन्तामणि के प्रमुख निबन्ध हैं- भाव या मनोविकार, उत्साह, श्रद्धा और भक्ति, करुणा, लज्जा और ग्लानि, घृणा, ईर्ष्या, भय, क्रोध, कविता क्या है, काव्य में लोक मंगल की साधनावस्था। रामचन्द्र शुक्ल द्वारा रचित अन्य निबन्ध मानस की धर्मभूमि, रसात्मक बोध के विविध रूप, तुलसी का भक्ति मार्ग, काव्य में अभिव्यञ्जनाविधि, मित्रता, अध्ययन आदि हैं।

3. 'कविता क्या है' निबन्ध के लेखक कौन हैं?

- (a) श्यामसुन्दर दास (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. नगेन्द्र (d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबन्ध-संग्रह 'चिन्तामणि' के अब तक कितने भाग प्रकाशित हुए हैं?

- (a) एक (b) दो
(c) तीन (d) चार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबन्ध संग्रह का नाम है-

- (a) चिन्तामणि (b) झरना
(c) आँसू (d) कामायनी

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'चिन्तामणि' किस निबन्धकार का महत्वपूर्ण निबन्ध संग्रह है?

- (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) गुलाब राय (d) महादेवी वर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. "धर्म की रसात्मक अनुभूति का नाम भक्ति है।"

उपर्युक्त कथन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के किस निबन्ध का अंश है?

- (a) श्रद्धा और भक्ति (b) मानस की धर्मभूमि
(c) लोभ और प्रीति (d) कविता क्या है?

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने निबन्ध 'मानस की धर्मभूमि' में लिखा है "धर्म की रसात्मक अनुभूति का नाम भक्ति है, यह हम कहीं पर कह चुके हैं। धर्म है ब्रह्म के सत्स्वरूप की व्यक्त प्रवृत्ति, जिनकी असीमता का आभास अखिल विश्व स्थिति में मिलता है। इस प्रवृत्ति का साक्षात्कार परिवार और समाज ऐसे छोटे क्षेत्रों से लेकर समस्त भू-मण्डल और अखिल विश्व तक के बीच किया जा सकता है।"

8. 'सुलोचना' निबन्ध संकलन है-

- (a) रामचन्द्र शुक्ल (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(c) बालकृष्ण भट्ट (d) जैनेन्द्र कुमार

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

हिन्दी में आधुनिकता के पहले रचनाकार माने जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के पितामह कहे जाते हैं। कविता, नाटक, निबन्ध तथा व्याख्यान में अविस्मरणीय योगदान देने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। 'सुलोचना' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का निबन्ध है।

9. निबन्ध-संग्रह 'शब्दिता' के निबन्धकार हैं-

- (a) विवेकी राय (b) निर्मल वर्मा
(c) धर्मवीर भारती (d) पं. विद्यानिवास मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर-(c)

धर्मवीर भारती ने 'ठेले पर हिमालय, पश्यन्ती, शब्दिता आदि निबन्ध संग्रहों में आधुनिकतावादी आन्दोलनों पर विचार किया है और अनेक स्थापित मान्यताओं का पुनराख्यान भी किया है।

10. 'अशोक के फूल' निबन्ध रचित है-

- (a) महादेवी वर्मा द्वारा (b) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा
(c) रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा (d) नागार्जुन द्वारा

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर-(b)

'अशोक के फूल' निबन्ध के लेखक डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं। द्विवेदी जी के अन्य प्रमुख निबन्ध संग्रह हैं- कुटज, विचार-प्रवाह, नाखून क्यों बढ़ते हैं, देवदास, बसन्त आ गया, वर्षा धनपति से घनश्याम तक, मेरी जन्म भूमि, घर जोड़ने की माया, कल्पलता, आलोक पर्व, विचार और वितर्क। रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित निबन्ध हैं -ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से, अर्द्धनारीश्वर, पीपल, उजली आग, संस्कृति के चार अध्याय। क्षणदा, श्रृंखला की कड़ियाँ, अबला और सबला, साहित्यकार की आस्था आदि महादेवी वर्मा के निबन्ध संग्रह हैं।

11. 'अशोक के फूल' निबन्ध के रचयिता हैं-

- (a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) गिरिजाकुमार माथुर
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) कुबेरनाथ राय

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर-(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. 'आलोक पर्व' निबन्ध के रचनाकार हैं-

- (a) विद्यानिवास मिश्र (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) प्रभाकर माचवे (d) कुँवर नारायण

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर-(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को कौन-सा निबन्ध संकलन इनमें है?

- (a) अशोक के फूल (b) कुटज
(c) कल्पलता (d) उपर्युक्त सभी

नवोदय विद्यालय (प्रावक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर-(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' यह किस विधा की रचना है?

- (a) एकांकी नाटक (b) निबन्ध
(c) उपन्यास (d) कहानी

G.I.C. (प्रावक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर-(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' के निबन्धकार हैं-

- (a) गुलाब राय (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) श्यामसुन्दर दास (d) रामचन्द्र शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर-(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. इनमें से कौन-सा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का निबन्ध नहीं है?

- (a) कल्पलता (b) कुटज
(c) अशोक के फूल (d) कल्पवृक्ष

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर-(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. 'रसज्ञ-रञ्जन' किस सुप्रसिद्ध निबन्धकार की कृति है?

- (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) बाबू गुलाब राय
(d) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर-(d)

'रसज्ञ-रञ्जन' आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का निबन्ध है। उनके अन्य निबन्ध हैं- कालिदास और उनकी कविता, सुकवि संकीर्तन, अतीत स्मृति, सम्पत्तिशास्त्र, कौटिल्य कुठार, कालिदास की निरंकुशता, वनिता विलाप, साहित्य सन्दर्भ, अद्भुत आलाप, चरित चर्या, प्राचीन चिह्न, पुरावृत्त, दृश्य दर्शन, पुरातत्व प्रसंग आदि।

18. निम्नलिखित में से निबन्ध संग्रह और उसके लेखक का एक युग्म गलत है, वह है-

- (a) 'युगसन्धियों पर' - सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
 (b) 'शब्दिता' - प्रभाकर माचवे
 (c) 'मल्लिनाथ की परम्परा' - रवीन्द्रनाथ त्यागी
 (d) 'विरामचिह्न' - रामविलास शर्मा

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'युगसन्धियों पर' सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' की, 'मल्लिनाथ की परम्परा' रवीन्द्रनाथ त्यागी की तथा 'विराम चिह्न' रामविलास शर्मा द्वारा लिखित निबन्ध संग्रह है, जबकि 'शब्दिता' प्रभाकर माचवे की नहीं बल्कि धर्मवीर भारती द्वारा लिखित निबन्ध संग्रह है। अतः विकल्प (b) सुमेलित नहीं है।

19. निम्नलिखित निबन्ध-संग्रहों को उनके लेखकों के साथ सुमेलित कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए:

निबन्ध-संग्रह

लेखक

अ) मैंने सिल पहुंचाई

1. हरिशंकर परसाई

ब) सुनो भाई साधो

2. शिवप्रसाद सिंह

स) शिखरों के सेतु

3. कुबेरनाथ राय

द) रस आखेटक

4. विद्यानिवास मिश्र

अ

ब

स

द

(a)

1

3

4

2

(b)

4

1

2

3

(c)

2

4

1

3

(d)

4

2

3

1

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

सही सुमेलन है-

निबन्ध-संग्रह

लेखक

मैंने सिल पहुंचाई

1. विद्यानिवास मिश्र

सुनो भाई साधो

2. हरिशंकर परसाई

शिखरों के सेतु

3. शिवप्रसाद सिंह

रस आखेटक

4. कुबेरनाथ राय

20. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?

- (a) 'मन पवन की नौका'-कुबेरनाथ राय का निबन्ध-संग्रह है।
 (b) 'विचार और वितर्क'- हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबन्ध-संग्रह है।
 (c) 'कौन तू फुलवा बीनन हारी'- विवेकीराय का निबन्ध है।
 (d) चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' द्विवेदी युग के निबन्धकार हैं।

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

'कौन तू फुलवा बीनन हारी' विद्यानिवास मिश्र का निबन्ध है। शेष कथन सही हैं।

21. 'बसन्त आ गया, पर कोई उत्कण्ठा नहीं' शीर्षक निबन्ध के लेखक का नाम है-

- (a) बालमुकुन्द गुप्त (b) प्रताप नारायण मिश्र
 (c) विद्यानिवास मिश्र (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

'बसन्त आ गया, पर कोई उत्कण्ठा नहीं' शीर्षक निबन्ध के लेखक विद्यानिवास मिश्र हैं। मिश्रजी के निबन्धों से एक ऐसे व्यक्ति का चित्र सामने आता है, जो भारतीय शाश्वत् परम्परा को उनके मूल्यबोध को बेहतरीन ढंग से व्यक्त करने में सर्वथा सक्षम है। इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं- परम्परा बन्धन नहीं, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, कंटीले तारों के आर-पार, संचारिणी, कौन तू फुलवा बीनन हारी, अस्मिता के लिए, भ्रमरानन्द के पत्र, अंगद की नियति, चितवन की छाँव, कदम की फूली डाल, तुम चंदन हम पानी, आँगन का पँछी और बंजारा मन, मैंने सिल पहुँचाई, साहित्य की चेतना, महाभारत का काव्यार्थ, लागौ रंग हरी, अग्निस्थ आदि।

22. 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' किसका ललित निबन्ध-संग्रह है?

- (a) रामवृक्ष बेनीपुरी (b) कुबेरनाथ राय
 (c) विद्यानिवास मिश्र (d) हरिशंकर परसाई

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबन्ध अपने समय में बड़ा चर्चित रहा है। इस निबन्ध के लेखक हैं-

- (a) प्रतापनारायण मिश्र (b) विद्यानिवास मिश्र
 (c) कुबेरनाथ राय (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. इनमें से कौन ललित निबन्धकार नहीं हैं?

- (a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) रामचन्द्र शुक्ल
 (c) कुबेरनाथ राय (d) विद्यानिवास मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

अज्ञेय ने कृष्ण बिहारी मिश्र की पुस्तक 'बेहया का जंगल' की भूमिका में लिखा है, "ललित निबन्ध एक सर्जनात्मक विधा इसलिए है कि वह निबन्ध चिन्तन की ही नहीं, निबन्ध कल्पना की खुली छूट देता है। बल्कि वह कल्पना ही तो है, जो चिन्तन को निबन्ध करती है और इसीलिए चिन्तन की निबन्धता व्यक्तिव्यंजक हो जाती है। कल्पना अगर मुक्त है, तो उसे किसी अंचल के साथ जोड़ना कुछ विशेष अर्थ नहीं रखता, लेकिन रचना जो बिम्ब उभारती है उसका स्रोत भले ही कहीं और, किसी अरूप संसार में हो, अगर उसका मूर्तन करता है, तो कोई स्थूल आधार आवश्यक है और इसलिए परिवेश का महत्व हो जाता है।" और यह संयोग है कि पूर्वांचल के परिवेश में ही अधिकांश ललित निबन्धकार जन्में। हजारि प्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, विद्यानिवास मिश्र, शिवप्रसाद सिंह, कुबेरनाथ राय, विवेकी राय, कृष्ण बिहारी मिश्र-ये सभी पूर्वांचल के हैं। शिवप्रसाद सिंह का मानना है कि इन लेखकों को पूर्वांचल की समृद्ध लोक संस्कृति की विरासत अपने आप प्राप्त हुई। अतः स्पष्ट है कि रामचन्द्र शुक्ल ललित निबन्धकार नहीं हैं।

25. निम्नलिखित में से कौन-सा निबन्धकार ललित निबन्धकार नहीं है?

- (a) रामविलास शर्मा (b) कुबेरनाथ राय
(c) विद्यानिवास मिश्र (d) हजारि प्रसाद द्विवेदी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(*)

कुबेरनाथ राय, विद्यानिवास मिश्र तथा हजारि प्रसाद द्विवेदी प्रतिष्ठित ललित निबन्धकार माने जाते हैं। रामविलास शर्मा ने आलोचनात्मक निबन्ध तो लिखे ही हैं, पर ललित निबन्धों की भी सृष्टि की है। अतः स्पष्ट है कि दिये गये विकल्प में सभी उत्तर सही हैं।

26. पत्रकारिता के स्तर से निबन्ध शैली को विकसित करने वाले प्रमुख लेखक हैं-

- (a) माखन लाल चतुर्वेदी (b) शिवपूजन सहाय
(c) रामकृष्ण बेनीपुरी (d) गुलाबराय

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

पत्रकारिता के स्तर से निबन्ध शैली को विकसित करने वाले लेखकों में रामकृष्ण बेनीपुरी का नाम प्रमुख है। उनकी शैली में राष्ट्रीयता, भावुकता और ओजस्विता का मिला-जुला रूप माखनलाल चतुर्वेदी का स्मरण दिलाता है। इस प्रकार के निबन्धों में विचार तत्व कम तथा भावावेग अधिक रहता है। 'गेहूँ और गुलाब' (1950) तथा 'वन्दे वाणी विनायकौ' (1957) बेनीपुरी के प्रमुख निबन्ध संकलन हैं।

27. 'वन्दे वाणीविनायकौ' इनमें से किसका निबन्ध-संग्रह है?

- (a) रामकृष्ण बेनीपुरी (b) विवेकी राय
(c) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (d) कुबेरनाथ राय

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. बालमुकुन्द गुप्त रचित निबन्ध-संग्रह का नाम है-

- (a) भारतमित्र (b) प्रज्ञा मित्र
(c) शिवसागर की चिट्ठियाँ (d) शिवशम्भु के चिट्ठे

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

बालमुकुन्द गुप्त रचित निबन्ध-संग्रह का नाम 'शिवशम्भु का चिट्ठा' है। ये चिट्ठे 'भारतमित्र' में 1904-1905 में प्रकाशित हुए थे। ये तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड कर्जन को सम्बोधित करके लिखे गये हैं। लेखक ने कर्जन के भारत-विरोधी कारनामों पर ओजपूर्ण, तीखी एवं व्यंग्यात्मक शैली में प्रहार किया है।

29. 'शिवशम्भु के चिट्ठे' के लेखक हैं-

- (a) बालमुकुन्द गुप्त (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) प्रतापनारायण मिश्र (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. 'शिवशम्भु का चिट्ठा' किसके निबन्धों का संकलन है?

- (a) प्रतापनारायण मिश्र (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) राधाकृष्ण दास (d) बालमुकुन्द गुप्त

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. "भों" निबन्ध के लेखक हैं-

- (a) पं. विद्यानिवास मिश्र (b) सरदार पूर्ण सिंह
(c) हरिशंकर परसाई (d) प्रतापनारायण मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

प्रतापनारायण मिश्र ने दाँत, भों, वृद्ध, धोखा, खुशामद, आप, नारी, परीक्षा, ह, द, समझदार की मौत है, बात, मुच्छ-जैसे साधारण विषयों पर भी चमत्कारपूर्ण और असाधारण निबन्ध लिखे। इनके अन्य निबन्ध-संग्रह-प्रताप पीयूष, निबन्ध नवनीत एवं प्रताप समीक्षा हैं।

32. प्रतापनारायण मिश्र के निबन्धों की प्रधान विशेषता है।

- (a) सरलता (b) क्लिष्टता
(c) गम्भीरता (d) विनोदप्रियता

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

प्रतापनारायण मिश्र के निबन्धों की प्रधान विशेषता विनोदप्रियता है। इनकी शैली में एक प्रकार का मनमौजीपन है। उनमें कटुता नहीं है। विनोदपूर्ण वक्रता तथा बैसवाड़ी बोली की सहज ग्रामीण स्वच्छन्दता ने उनकी शैली को अत्यन्त सजीव बना दिया।

33. शिकार सम्बन्धी रोचक निबन्धों के रचनाकार हैं-

- (a) श्रीराम वर्मा (b) श्रीराम शर्मा
(c) श्रीकान्त वर्मा (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

शिकार सम्बन्धी रोचक निबन्धों के रचनाकार श्रीराम शर्मा हैं। पं. श्रीराम शर्मा ने शिकार से सम्बन्धित अनेक निबन्ध लिखे हैं।

34. 'प्रसाद, पन्त और मैथिलीशरण' नामक निबन्ध-संग्रह किसका है?

- (a) रामकृष्ण बेनीपुरी (b) अज्ञेय
(c) दिनकर (d) मुक्तिबोध

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'प्रसाद, पन्त और मैथिलीशरण', रामधारी सिंह 'दिनकर' की व्यावहारिक समीक्षा सम्बन्धी कृति है, न कि निबन्ध संग्रह। अपनी समीक्षा में इन्होंने आधुनिक कवियों में मैथिलीशरण को सर्वश्रेष्ठ माना है। उनकी दृष्टि में मैथिलीशरण जी ने आर्य संस्कृति को जगाया है। पराधीन देश को अपनी शक्ति की याद दिलाई है, इतिहास को काव्य रूप में रूपान्तरित किया है। 'पन्त' जी का महत्व नवजागरण के आनन्द और उल्लास को स्वर देने के कारण और 'प्रसाद' जी दार्शनिकता, ज्ञान-गरिमा, विद्या-वैभव और कवित्व की समृद्ध साधना के कारण हैं। इनके अन्य निबन्ध संग्रह हैं- मिट्टी की ओर, अर्द्धनारीश्वर, खड्ग और वीणा, मन्दिर और राजभवन, कर्म और वाणी, हृदय की राह, ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से, और चाहिए किरण जगत को और चाहिए चिनगारी, दीपक की लौ अपनी ओर, हड्डी का चिराग आदि।

35. 'अर्द्धनारीश्वर' निबन्ध-संग्रह के रचनाकार का नाम है-

- (a) शान्तिप्रिय द्विवेदी (b) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(c) अज्ञेय (d) वासुदेवशरण अग्रवाल

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. 'निषाद बाँसुरी' की रचना विधा है-

- (a) कहानी (b) रेखाचित्र
(c) संस्मरण (d) ललित निबन्ध

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

कुबेरनाथ राय द्वारा लिखित 'निषाद बाँसुरी' ललित निबन्ध है। इनका पहला निबन्ध संग्रह 'प्रिया नीलकण्ठी' 1968 ई. में प्रकाशित हुआ। इनके अन्य निबन्ध संग्रह हैं- रस आखेटक (1970), गन्ध मादन (1972), विषाद योग (1973), पर्ण मुकुट (1978), महाकवि की तर्जनी (1979), कामधेनु (1980), पत्र मणिपुतुल के नाम (1980), मन पवन की नौका (1982), किरात नदी में चन्द्रमधु (1983), दृष्टि अभिसार (1984), त्रेता का वृहतसम (1986), मराठ (1993), उत्तर कुरु (1994), वाणी का क्षीरसगर (1998), अंधकार में अग्निशिखा (1998), आगम की नाव (2008) आदि। कुबेरनाथ राय पहले 'माधुरी' और 'विशाल भारत' में वैचारिक निबन्ध लिखते थे।

37. 'प्रिया नीलकण्ठी' तथा 'निषाद बाँसुरी' किसके निबन्ध संग्रह हैं?

- (a) रमेश चन्द्र शाह (b) विद्यानिवास मिश्र
(c) कुबेरनाथ राय (d) श्रीराम परिहार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. केवल छः निबन्ध लिखकर निम्नलिखित में से किस लेखक ने हिन्दी जगत में ख्याति अर्जित की है?

- (a) माधवप्रसाद मिश्र (b) पूर्ण सिंह
(c) प्रतापनारायण मिश्र (d) गोविंदनारायण मिश्र

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

सरदार पूर्ण सिंह आलोच्य युग (द्विवेदी युग) के श्रेष्ठ निबन्धकार हैं। उन्होंने कुल छः निबन्ध लिखकर आलोचकों का ध्यान आकृष्ट कर लिया है। इनके निबन्ध नैतिक और सामाजिक विषयों से संबद्ध हैं। गद्य में आवेगशील और व्यक्तित्व-व्यंजक का लाक्षणिक शैली का प्रयोग इनकी विशेषता है।

39. हिन्दी साहित्य में सरदार पूर्ण सिंह की ख्याति किस रूप में है?

- (a) एक आलोचक के रूप में (b) एक नाटककार के रूप में
(c) एक निबन्धकार के रूप में (d) एक व्यंग्यकार के रूप में

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

सरदार पूर्ण सिंह का जन्म 17 फरवरी, 1881 को पाकिस्तान के एबटाबाद नामक स्थान पर हुआ था। हिन्दी साहित्य में सरदार पूर्ण सिंह की ख्याति एक निबन्धकार के रूप में है, क्योंकि इन्होंने शोध से सम्बन्धित बहुत सारे लेख अंग्रेजी में लिखे हैं। हिन्दी में इन्होंने कम ही लेख लिखे हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सरदार पूर्ण सिंह के प्रमुख कविता संग्रह हैं—खुले मैदान, खुले आसमानी रंग।
- सच्ची वीरता, कन्यादान, पवित्रता, आचरण की सभ्यता, मजदूरी और प्रेम, अमरीका का मस्ताना योगी वाल्ट विटमैन आदि इनके सभी निबन्ध 'सरस्वती' पत्रिका में छपे।

40. सरदार पूर्ण सिंह विख्यात हैं—

- (a) कवि के रूप में
- (b) निबन्धकार के रूप में
- (c) नाटककार के रूप में
- (d) व्यंग्यकार के रूप में

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. 'मजदूरी और प्रेम' शीर्षक निबन्ध के लेखक की एक रचना है:

- (a) साहित्य की महत्ता
- (b) आचरण की सभ्यता
- (c) मेरी जन्मभूमि
- (d) बनजारा मन

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. 'आचरण की सभ्यता' निबन्ध के लेखक हैं—

- (a) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
- (b) अध्यापक पूर्ण सिंह
- (c) श्यामसुन्दर दास
- (d) बालमुकुन्द गुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. इनमें से कौन-सा निबन्ध अध्यापक पूर्ण सिंह का नहीं है?

- (a) आचरण की सभ्यता
- (b) मजदूरी और प्रेम
- (c) गेहूँ और गुलाब
- (d) कन्यादान

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. 'विक्रमोर्वशी की मूल कथा' नामक निबन्ध के लेखक हैं—

- (a) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'
- (b) रामचन्द्र शुक्ल
- (c) अज्ञेय
- (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने 'विक्रमोर्वशी की मूल कथा', 'अमंगल के स्थान पर मंगल शब्द', 'मारेसि मोहिं कुठांव' तथा 'कछुआ धर्म' आदि निबन्ध लिखे हैं।

45. 'मारेसि मोहिं कुठांव' एवं 'कछुआ धर्म' निबन्ध के लेखक हैं—

- (a) बाबू गुलाब राय
- (b) बालमुकुन्द गुप्त
- (c) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'
- (d) सरदार पूर्ण सिंह

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. किस प्रकार के निबन्धों में समास शैली प्रयुक्त होती है?

- (a) भावात्मक
- (b) विवरणात्मक
- (c) वर्णनात्मक
- (d) विचारात्मक

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

विचारात्मक निबन्धों के प्रणयन में लेखकों ने 'समास' एवं 'व्यास' दोनों प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया। विषय-प्रधान निबन्धों को विवरणात्मक, वर्णनात्मक, भावात्मक तथा विचारात्मक निबन्धों के वर्गों में विभक्त किया जाता है। वर्णनात्मक और विवरणात्मक निबन्ध शैली की दृष्टि से बहुत करीब हैं। इनके प्रतिपादन की पद्धति में अन्तर होता है। विचारात्मक निबन्धों की प्रतिपादन की पद्धति को ध्यान में रखते हुए विश्लेषणात्मक अथवा विवेचनात्मक निबन्ध भी कहा गया है। इस प्रकार के निबन्धों को सूत्रात्मक वाक्य रचना की शैली वाला निबन्ध भी कहते हैं। यही समास शैली है। प्रत्येक वाक्य के विचार होते हैं और एक वाक्य दूसरे वाक्य का पूरक होता है अर्थात् संक्षेप में व्यक्त किया जाता है। इसके विपरीत व्यास शैली होती है। भावात्मक निबन्धों में लेखक के भाव की तरंगें होती हैं। किसी भी पूर्व स्मृति, किसी प्राचीन कलाकृति, किसी स्मरणीय दृश्य, कल्पना की उड़ान अथवा इसी प्रकार के किसी भावनापूर्ण प्रसंग से लेखक भावुक हो जाता है। इसमें भी धारा शैली और तरंग शैली नामक दो भेद किये गये हैं।

47. किस प्रकार के निबन्धों में बुद्धितत्व प्रमुख होता है?

- (a) भावात्मक
- (b) वर्णात्मक
- (c) विवरणात्मक
- (d) विचारात्मक

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

विचारात्मक निबन्धों में बुद्धितत्व को और भावात्मक निबन्धों में रागात्मक तत्व को प्रधानता मिलती है। शैली तत्व सभी में समान रूप में रहता है। वर्णनात्मक और विवरणात्मक दोनों ही प्रकार के निबन्धों में कहीं विचारात्मकता तथा कहीं भावात्मकता की प्रधानता हो सकती है, विचारात्मकता एवं भावात्मकता का भी मिश्रण होना सम्भव है।

□ नाटक एवं एकांकी

1. 'सम्भवामि युगे-युगे' नाटक के रचयिता हैं-

- (a) जि.जे. हरिजीत (b) मनमोहन ठाकुर
(c) विष्णु प्रभाकर (d) परिणिता

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (PGT) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

'सम्भवामि युगे-युगे' नाटक के रचयिता जि.जे. हरिजीत हैं। इनका यह नाटक सामाजिक एवं पौराणिक नाटक है, जो सन् 1980 में प्रकाशित हुआ था। इस नाटक को कर्नाटक सरकार से पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- हरिजीत जी ने कन्नड़, अंग्रेजी तथा हिन्दी भाषाओं में नाटकों की रचनाएँ की हैं।
- 'रंगायन', 'खरगोश की नौकरी' इनका एकांकी संग्रह हैं।
- हुमायूँ, उत्तर मृच्छकटिका (एक पहिए की गाड़ी), रेल सत्याग्रह, खामोश एमर्जेन्सी जारी है, एक और विक्रमोर्वशीय, ओह ! युनिवर्सिटी, सम्राट स्कन्धगुप्त, प्रिंसिपल परशुराम, विद्रोही, एक संघर्ष कथा, वैतरणी के पार नाटक हैं।

2. इनमें से 'नाग बोडस' द्वारा लिखित नाटक है—

- (a) खूबसूरत बहू (b) योर्स फेथफुली
(c) यमगाथा (d) अमृतापुत्र

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

'नाग बोडस' एक लोकप्रिय भारतीय नाटककार और हिन्दी कथाकार थे। इनकी पहचान मुख्यतः नाटककार के रूप में ही थी। इनकी रचनाएँ हैं— 'खूबसूरत बहू', थेकू बाबा लोचनदास, नर-नारी, कृति-विकृति आदि।

3. नाटक और नाटककार की दृष्टि से एक युग्म अशुद्ध है—

- (a) चारुमित्र-राजकुमार वर्मा (b) एक घूँट-जयशंकर प्रसाद
(c) टूटते परिवेश-विष्णु प्रभाकर (d) आषाढ़ का एक दिन-सुरेन्द्र वर्मा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'आषाढ़ का एक दिन' मोहन राकेश द्वारा रचित नाटक है। 1959 में इसे सर्वश्रेष्ठ नाटक के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। शेष युग्म सही हैं।

4.हिन्दी का प्रथम मौलिक नाटक है।

- (a) आनन्द रघुनन्दन (b) नीलदेवी
(c) अन्धेर नगरी (d) प्रहलाद चरित

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

महाराज विश्वनाथ सिंह कृत 'आनन्द रघुनन्दन' (अनुमानतः 1700 ई.) शास्त्रीय नियमों के अनुसार नान्दी, विष्कम्भक, भरतवाक्य आदि का प्रयोग किया गया है और रंग निर्देश (संस्कृत भाषा में) भी दिये गये हैं। इसलिए विद्वानों ने इसे हिन्दी का प्रथम नाटक माना है, किन्तु इसमें नाट्यदृष्टि से अनेक दोष हैं। अन्धेर नगरी (1881) तथा नीलदेवी (1881) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और 'प्रहलाद चरित्र' (1888) श्रीनिवासदास कृत नाटक हैं।

5. बाबू तोताराम ने जोसेफ एडीसन के नाटक 'कैटो' का अनुवाद किस नाम से किया है?

- (a) रहस्य कथा (b) कृतान्त
(c) गुप्तचर (d) ऐज यू लाइक इट

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

बाबू तोताराम ने जोसेफ एडीसन के नाटक 'कैटो' का अनुवाद 'कृतान्त' (1879) शीर्षक से किया था।

6. जयशंकर प्रसाद के 'करुणालय' का नाट्य रूप है—

- (a) एकांकी (b) प्रतीकात्मक नाटक
(c) ऐतिहासिक नाटक (d) गीतिनाट्य

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

हिन्दी में गीतिनाट्य परम्परा की प्रथम रचना 'करुणालय' (1913) है, जो जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखी गयी है। प्रसाद ने कुल 12 नाटकों की रचना की है, जो इस प्रकार हैं—सज्जन (1910), प्रायश्चित (1913), राज्यश्री (1914), विशाखा (1921), अजातशत्रु (1922), जनमेजय का नागयज्ञ (1926), कामना (1927), स्कन्दगुप्त (1928), एक घूँट (1929), चन्द्रगुप्त (1931) और ध्रुवस्वामिनी (1933)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'करुणालय' में हरिश्चन्द्र और विश्वामित्र के प्रसिद्ध पौराणिक आख्यान का आधार लिया गया है।
- 'सज्जन' का कथानक 'महाभारत' से लिया गया है।
- 'प्रायश्चित' में जयचन्द्र के मूर्खतापूर्ण कुचक्र के कारण पृथ्वीराज का अन्त दिखाया गया है।

7. जयशंकर प्रसाद के नाटकों का सही क्रम है—

- (a) अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, कामना, विशाखा
(b) विशाखा, अजातशत्रु, कामना, स्कन्दगुप्त
(c) स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, विशाखा, कामना
(d) कामना, विशाखा, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'जनमेजय का नागयज्ञ' के लेखक हैं—

- (a) पन्त (b) निराला
(c) प्रसाद (d) हरिऔध

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. हिन्दी में गीतिनाट्य परम्परा की प्रथम रचना और उसके रचनाकार हैं—

- (a) करुणालय — जयशंकर प्रसाद
(b) अनाघ — मैथिलीशरण गुप्त
(c) उन्मुक्त — सियारामशरण गुप्त
(d) अन्धायुग — धर्मवीर भारती

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. हिन्दी का सर्वप्रथम गीतिनाट्य है—

- (a) अनाघ (b) प्रभात
(c) करुणालय (d) पंचवटी-प्रसंग

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित गीतिनाट्य है—

- (a) राज्यश्री (b) विशाखा
(c) करुणालय (d) ध्रुवस्वामिनी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. निम्नलिखित में से कौन-सा नाटक जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित है?

- (a) ध्रुवस्वामिनी (b) कृष्णार्जुन युद्ध
(c) रुक्मिणी परिणय (d) प्रेमलोक

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की रचना किसने की?

- (a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) प्रतापनारायण मिश्र
(c) हरिकृष्ण जौहर (d) जयशंकर प्रसाद

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. "कुमार! यह मृत्यु और निर्वासन का सुख, यह तुम अकेले ही लोगे यह नहीं हो सकता।" किस नाटक की पंक्ति है?

- (a) जनमेजय का नागयज्ञ (b) एक घूँट
(c) कामना (d) ध्रुवस्वामिनी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

जयशंकर प्रसाद द्वारा 1933 ई. में रचित नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' में ध्रुवस्वामिनी चन्द्रगुप्त से कहती है, "कुमार! यह मृत्यु और निर्वासन का सुख, तुम अकेले ही लोगे! ऐसा नहीं हो सकता"।

15. "वीरता जब भागती है, तो अपने पीछे राजनीति के छलछिद्र की धूल उड़ाती है।" उपर्युक्त कथन 'प्रसाद' के किस नाटक का है?

- (a) अजातशत्रु (b) स्कन्दगुप्त
(c) चन्द्रगुप्त (d) ध्रुवस्वामिनी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

"वीरता जब भागती है, तो अपने पीछे राजनीति के छलछिद्र की धूल उड़ाती है।" यह पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद कृति 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के प्रथम अंक की हैं। ध्रुवस्वामिनी नाटक के प्रमुख पात्र चन्द्रगुप्त, रामगुप्त, शिखरस्वामी, ध्रुवस्वामिनी, मंदाकिनी, कोमा, आचार्य मिहिरदेव, शकराज हैं।

16. 'अलका' जयशंकर प्रसाद के किस नाटक की पात्र है?

- (a) ध्रुवस्वामिनी (b) विशाखा
(c) स्कन्दगुप्त (d) चन्द्रगुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

जयशंकर प्रसाद के नाटक 'चन्द्रगुप्त' पर बंगला साहित्य के नाटककार द्विजेन्द्र लाल रॉय के नाटक का सीधा प्रभाव माना जाता है। स्वयं द्विजेन्द्र लाल रॉय के नाटकों पर आंग्ल प्रभाव स्पष्ट है। फलस्वरूप प्रसाद के इस नाटक पर भी आंग्ल प्रभाव है। राजनीतिक कुचक्र की आँधी में भटकती हुई नारी का चित्रण विदेशी साहित्य की विशेषता रही है। चन्द्रगुप्त में अलका, सुवासिनी आदि नारी पात्रों का जो राजनीतिक उलझनपूर्ण चित्रण हुआ है, वह आंग्ल प्रभाव ही है। पाश्चात्य आधुनिक नाटकों की भाँति यहाँ भी स्त्रियाँ गुप्तचर बनती हैं। मालविका, अलका, सुवासिनी आदि प्रमुख स्त्री पात्र प्रायः गुप्तचर का काम करती हैं।

17. चन्द्रगुप्त नाटक की नायिका है।

- (a) अलका (b) कल्याणी
(c) मालविका (d) कार्नेलिया

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

डॉ. कृष्णलाल अपनी पुस्तक 'साहित्यिक निबन्ध' में लिखते हैं कि चन्द्रगुप्त नाटक की नायिका का प्रश्न एक पहेली बनकर रह गया है। कार्नेलिया नाटक के प्रारम्भ में दिखाई देती है और इसके पश्चात् फिर अन्त में। इस प्रकार नायिका को जो प्रमुखता और महत्व प्राप्त होना चाहिए, वह कार्नेलिया को प्राप्त नहीं है, पर वह नायिका नहीं है 'कल्याणी' बहुत दूर तक नाटक की सम्भावित नायिका होने का दिखाई देती है। डॉ. दशरथ झा 'हिन्दी नाटक की रूपरेखा' में लिखते हैं कि फलभोक्ता एक दृष्टि से चन्द्रगुप्त ठहरता है। क्योंकि चन्द्रगुप्त को स्वराज्य तथा कार्नेलिया दोनों प्राप्त होते हैं। डॉ. झा 'प्रसाद के नाटकों पर संस्कृत नाट्य साहित्य का प्रभाव' में लिखते हैं कि 'कल्याणी' भी उपयुक्त नेत्री हो सकती थी, पर यहाँ नाटककार का उद्देश्य कुछ उच्चतर उपलब्धि का था वह कार्नेलिया-चन्द्रगुप्त का संयोग कराकर दो विभिन्न संस्कृतियों के संगम के द्वारा अपनी उदार-मानवतावादी अन्तर्दृष्टि का परिचय देता है। इस प्रकार कार्नेलिया को चन्द्रगुप्त नाटक की नायिका कहा जा सकता है।

18. निम्नलिखित में से एक जयशंकर प्रसाद रचित नाटक नहीं है—

- (a) अजातशत्रु (b) स्कन्दगुप्त
(c) ध्रुवस्वामिनी (d) तितली

आश्रम पद्धति (प्राक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'तितली' जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित उपन्यास है। शेष सभी उनके द्वारा लिखे गए नाटक हैं।

19. निम्नलिखित में से कौन-सा नाटक जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नहीं है?

- (a) स्कन्दगुप्त (b) चन्द्रगुप्त
(c) कर्बला (d) ध्रुवस्वामिनी

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'कर्बला' जयशंकर प्रसाद का नाटक नहीं, बल्कि प्रेमचन्द द्वारा 1924 ई. में लिखा गया है। प्रेमचन्द ने केवल तीन नाटकों की रचना की—संग्राम (1923), कर्बला (1924) तथा प्रेम और बेदी (1933)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ऐतिहासिक नाटकों में सबसे अधिक सफलता 'प्रसाद' को मिली।
- 'प्रसाद' के नाटकों में राष्ट्रीय चेतना देखी जा सकती है।
- इनके नाटक अभिनय की दृष्टि से पूर्णतः सफल नहीं थे।

20. निम्नलिखित में से कौन-सा नाटक प्रसाद का नहीं है?

- (a) जनमेजय का नागयज्ञ (b) स्कन्दगुप्त
(c) ध्रुवस्वामिनी (d) सिन्दूर की होली

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

'सिन्दूर की होली' प्रसाद का नाटक नहीं, बल्कि लक्ष्मीनारायण मिश्र का नाटक है। इस नाटक में दो पात्र मनोरमा और चन्द्रकान्ता एक-दूसरे के विरोधी हैं। मनोरमा वैधव्य का समर्थन करती है और चन्द्रकान्ता रोमैटिक प्रेम का। मनोरमा का विधवा-विवाह का विरोध स्वयं बुद्धिवाद का विरोध करने लगता है और रोमैटिक चन्द्रकान्ता का तर्क बुद्धिवाद हो जाता है। शेष प्रसाद के नाटक हैं।

21. कल्यांतर..... है।

- (a) काव्य नाटक (b) गीतिनाट्य
(c) महाकाव्य (d) खण्डकाव्य

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'कल्यांतर' गिरिजा कुमार माथुर कृति गीतिनाट्य है, जो सैद्धान्तिक और सूचनापरक होने के कारण रचनात्मक नहीं बन सका।

22. 'मुद्राराक्षस' नाटक का नायक कौन है?

- (a) सिद्धार्थक (b) समीद्धार्थक
(c) चाणक्य (d) चन्द्रगुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

मुद्राराक्षस संस्कृत का ऐतिहासिक नाटक है, जिसके रचयिता विशाखदत्त हैं। इसकी रचना चौथी शताब्दी में हुई थी। इस महत्वपूर्ण नाटक को हिन्दी में सर्वप्रथम अनूदित करने का श्रेय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को है जिन्होंने 1878 ई. में 'मुद्राराक्षस' नाम से अनुवाद किया। इस नाटक का नायक चाणक्य है।

23. 'एक और द्रोणाचार्य' किसकी नाट्यकृति है?

- (a) सुरेन्द्र वर्मा (b) लक्ष्मीनारायण लाल
(c) शंकर शेष (d) भीष्म साहनी

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

'एक और द्रोणाचार्य' (1977) शंकर शेष की नाट्यकृति है। इनके अन्य नाटक हैं—'रक्तबीज' (1982), 'खजुराहो का शिल्पी' (1982), 'बाद का पानी' (1983), 'आधी रात के बाद' (1983), 'पोस्टर' (1983), 'चेहरे' (1983) आदि।

24. 'चन्द्रावली' नाटिका के लेखक हैं—

- (a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) लक्ष्मीनारायण मिश्र
(c) लक्ष्मीनारायण लाल (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

चन्द्रावली नाटिका के लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं। भारतेन्दु के नाटकों को दो वर्गों में रखा जा सकता है— मौलिक तथा अनूदित। मौलिक के अन्तर्गत भारत जननी, वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति, सत्य हरिश्चन्द्र, श्री चन्द्रावली नाटिका, विषय विषमौषधम्, भारत दुर्दशा, नीलदेवी, अन्धेर नगरी तथा अनूदित के अन्तर्गत विद्या सुन्दर, रत्नावली, धनन्जय विजय, कर्पूर मंजरी, पाखण्ड विडम्बन्, मुद्राराक्षस एवं दुर्लभ बन्धु हैं। इनकी अपूर्ण कृतियों में प्रेम जोगिनी (नाटिका) तथा सतीप्रताप, प्रवास नाटक, नवमल्लिका, रत्नावली एवं मृच्छकटिक (सभी गीतिरूपक) शामिल हैं।

25. इनमें से कौन-सा भारतेन्दु जी का अनूदित नाटक है?

- (a) भारत दुर्दशा (b) चन्द्रावली
(c) नीलदेवी (d) विद्या सुन्दर

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. 'भारत दुर्दशा' नाटक के रचनाकार हैं—

- (a) जयशंकर प्रसाद (b) डॉ. रामकुमार वर्मा
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. 'पाँचवें पैगम्बर' नाटक के लेखक हैं—

- (a) राधाकृष्ण दास (b) किशोरी लाल गोस्वामी
(c) जयशंकर प्रसाद (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

पाँचवें (चूसा) पैगम्बर नाटक के लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं। उन्होंने इस नाटक के माध्यम से समाज सुधार के उन सभी प्रयासों का जम कर मजाक उड़ाया है, जिन सुधारों का वे अपने वैचारिक निबन्धों में खुलकर विरोध नहीं कर सकते थे। ध्यातव्य हो कि पैगम्बरी धर्मों की खिल्ली उड़ते हुए उन्होंने एक पाँचवें पैगम्बर 'चूसा' की कल्पना की है, जो मूसा का बिगड़ा रूप है। यह समस्त दुर्गुणों की खान है। इस दुर्गुणों की श्रेणी में भारतेन्दु ने चोरी, दलाली आदि को तो रखा ही है, साथ ही विधवा विवाह तथा स्त्री समानता जैसी मांगों को और दूसरे धर्मों के रीति-रिवाजों को भी भारतेन्दु ने इन बुराइयों की श्रेणी में ही रखकर इन सबका जमकर मजाक उड़ाया है।

28. इनमें से कौन-सा नाटक भारतेन्दु जी का नहीं है?

- (a) भारत दुर्दशा (b) नीलदेवी
(c) प्रेम जोगिनी (d) रणधीर प्रेममोहिनी

T.G.T. परीक्षा, 2011

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

लाला श्रीनिवासदास जी ने रणधीर प्रेममोहिनी (1878), प्रह्लादचरित, तप्तासंवरण (1883) तथा संयोगिता स्वयंवर (1885) नामक चार नाटक लिखे। भारत दुर्दशा (नाट्यरासक), नीलदेवी (ऐतिहासिक गीतिरूपक एवं वियोगान्त) तथा प्रेम जोगिनी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटक हैं। रणधीर प्रेममोहिनी हिन्दी का प्रथम दुःखान्त नाटक है।

29. हिन्दी का प्रथम दुःखान्त नाटक कौन-सा है?

- (a) अन्धेर नगरी (b) भारत दुर्दशा
(c) रणधीर प्रेममोहिनी (d) कलि-कौतुक

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. 'संयोगिता स्वयंवर' है—

- (a) नाटक (b) उपन्यास
(c) कहानी (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'चौपट चपेट' नाटक के लेखक हैं—

- (a) भारतेन्दु (b) नाथूराम शर्मा
(c) प्रेमघन (d) किशोरीलाल गोस्वामी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'चौपट चपेट' नाटक के लेखक किशोरीलाल गोस्वामी हैं। इनकी अन्य रचनाएँ इस प्रकार हैं— उपन्यास—त्रिवेणी वा सौभाग्य श्रेणी, प्रणयिनी-परिणय, हृदय हारिणी का आदर्श रमणी, लवंगलता वा आदर्श बाला, सुल्ताना रजिया बेगम वा रंग महल में हलाहल, मातृमाधव, मदन-मोहिनी, गुलबहार, हीराबाई वा बेहवाई का बोरका (ऐतिहासिक उपन्यास), इन्दुमती वा वनविहंगिनी (ऐतिहासिक उपन्यास) आदि **कविता संग्रह**—किशोरी सतसई। **नाटक**—मयंक मंजरी।

32. शृंगार और वीर रस प्रधान नाटक है-

- (a) मयंक मंजरी (b) बकरी
(c) सच्चा धर्म (d) माधवी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर-(a)

किशोरीलाल गोस्वामी कृत नाटक 'मयंक मंजरी' (1891) शृंगार और वीर रस प्रधान नाटक है।

33. 'सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' किसकी नाट्य कृति है?

- (a) सुरेन्द्र वर्मा (b) रामकुमार वर्मा
(c) महादेवी वर्मा (d) भगवतीचरण वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर-(a)

'सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' 1975 ई. में सुरेन्द्र वर्मा द्वारा लिखा गया नाटक है। उनके अन्य नाटक हैं-द्रौपदी (1972), सेतुबन्ध (1972), नायक खलनायक विदूषक (1972), आठवाँ सर्ग (1976), छोटे सैयद बड़े सैयद (1982), एक दूनी एक (1987), शकुन्तला की अँगूठी (1990), कैद-ए-हयात (1993) और रत्ति का कंगन (2010) आदि।

34. 'हानूश' नाटक के रचनाकार हैं-

- (a) कुसुम कुमार (b) रमेश बख्शी
(c) भीष्म साहनी (d) मोहन राकेश

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर-(c)

'हानूश' नाटक के रचनाकार भीष्म साहनी हैं। इसकी रचना 1977 ई. में की गयी। यह नाटक चेकोस्लोवाकिया में प्रचलित एक लोक-कहानी पर आधारित है। इनके अन्य नाटक हैं-कबिरा खड़ा बाजार में (1981), माधवी (1985), मुआवजे (1993), रंग दे बसन्ती चोला (1998) और आलमगीर (1999)। कुसुम कुमार के प्रमुख नाटक हैं-संस्कार को नमस्कार, ओम क्रान्ति-क्रान्ति, सुनो सेफाली, दिल्ली ऊँचा सुनती है, रावण लीला, मादा मिट्टी, सलामी मंच, पवन चतुर्वेदी की डायरी आदि। जबकि रमेश बख्शी के प्रमुख नाटक हैं-देवयानी का कहना, तीसरा हाथी, वामाचार, यादों के घर, कसे हुए तार आदि।

35. 'विश्वामित्र' नाटक के लेखक हैं-

- (a) गोविन्द बल्लभ पन्त (b) उदयशंकर भट्ट
(c) लक्ष्मीनारायण मिश्र (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर-(b)

'विश्वामित्र' नाटक 1938 ई. में उदयशंकर भट्ट द्वारा लिखा गया है। इनके अन्य प्रमुख नाटक हैं-विक्रमादित्य (1933), दाहर या सिन्ध पतन (1934), अंबा (1935), सागर विजय (1937), मत्स्यगन्धा (1937), राधा (1941), मुक्ति पथ (1944), शक-विजय (1949), अशोकनवन्दिनी (1959), गुरु द्रोण का अन्तर्निरीक्षण (1959), अश्वत्थामा (1959), असुर सुन्दरी (1972)। गोविन्द बल्लभ पन्त के प्रमुख नाटक हैं- राजमुकुट (1935), कुमार हृदय का भग्नावशेष (1936), अन्तःपुर का छिद्र (1940), तुलसीदास (1974), आत्मदीप (1978)। लक्ष्मीनारायण मिश्र के प्रमुख नाटक हैं- अशोक (1926), गरुड़ ध्वज (1945), नारद की वीणा (1946), वत्सराज (1950), चक्रव्यूह (1954) तथा अश्वमेध आदि।

36. 'चरणदास चोर' किसकी नाट्यकृति है?

- (a) मुद्राराक्षस (b) बलराज पण्डित
(c) हबीब तनवीर (d) नाग बोडस

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर-(c)

'चरणदास चोर' हबीब तनवीर की नाट्यकृति है। इसका प्रकाशन 1975 ई. में हुआ। इनके अन्य प्रमुख नाटक हैं-आगरा बाजार (1954), शतरंज के मोहरे (1954), लाला शोहरत राय (1954), मिट्टी की गाड़ी (1958), गाँव का नाम ससुराल मोर नाम दामाद (1973), पोंगा पण्डित, द ब्रोकेन ब्रिज (1995), जहरीली हवा (2002), राज रक्त (2006) आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- हबीब तनवीर का पहला नाटक 'आगरा बाजार' है।
- 'चरणदास चोर' एडिन वर्ग इन्टरनेशनल ड्रामा फेस्टिवल (1982) में पुरस्कृत होने वाला पहला भारतीय नाटक था।
- तनवीर को 'थिएटर का विश्वकोश' कहा जाता है।
- तनवीर अच्छे अभिनेता, निर्देशक, नाट्य लेखक, गीतकार, कवि, गायक व संगीतकार भी थे।

37. 'लहरों के राजहंस' के नाटककार हैं-

- (a) मोहन राकेश (b) विष्णु प्रभाकर
(c) अमृतलाल नागर (d) अमृत राय

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर-(a)

'लहरों के राजहंस' 1963 ई. में मोहन राकेश द्वारा लिखा गया नाटक है। इनके अन्य प्रमुख नाटक हैं-आषाढ़ का एक दिन (1958), आधे-अधूरे (1969) आदि। विष्णु प्रभाकर के प्रमुख नाटक हैं- डॉक्टर (1958), युगे-युगे क्रान्ति (1969), टूटते परिवेश (1974), कुहासा और किरण (1975), डरे हुए लोग (1978), वन्दिनी (1979), अब और नहीं (1981), सत्ता के आर-पार (1981), श्वेत कमल (1984) आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मोहन राकेश प्रयोगशील नाटककार थे।
- आषाढ़ का एक दिन नाटक कालिदास के काव्यनिक जीवनवृत्त पर आधारित है।
- 'लहरों के राजहंस' का कथनक अश्वघोष के 'सौन्दरानन्द' कृति पर आधारित है।
- 'आधे-अधूरे' नाटक मध्यम वर्ग की पारिवारिक जीवन की समस्या पर आधारित है।

38. मध्यम वर्ग की पारिवारिक समस्या को दर्शाने वाला नाटक है—

- (a) जनमेजय का नागयज्ञ (b) अन्धायुग
(c) आधे-अधूरे (d) तमस

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. निम्नलिखित में मोहन राकेश लिखित एक नाटक है—

- (a) जनमेजय का नागयज्ञ (b) सिन्दूर की होली
(c) मिस्टर अभिमन्यु (d) लहरों के राजहंस

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. इनमें गौतम बुद्ध के आख्यान पर आधारित नाटक है—

- (a) टूटते परिवेश (b) जय-पराजय
(c) अजातशत्रु (d) लहरों के राजहंस

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

लहरों के राजहंस, मोहन राकेश का नाटक है। यह भोग-अभोग या पार्थिव-अपार्थिव के संघर्ष का नाटक है। यह संघर्ष यहाँ सुंदरी और गौतम बुद्ध की विपरीत जीवन दृष्टियों के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है। इस नाटक में सुंदरी और गौतम बुद्ध के बीच हो रहे संघर्ष में जय-पराजय का प्रमाण वे दोनों स्वयं नहीं हैं यहाँ इसकी कसौटी नंद है। इसलिए इस नाटक का मूल द्वंद्व सुंदरी, नंद और गौतम बुद्ध के त्रिकोणों में उलझा हुआ है। यह अद्भुत नाटकीय-विडम्बना है कि ये तीनों व्यक्ति अलग-अलग जीतकर भी हार जाते हैं।

41. कौन-सा नाटक मोहन राकेश कृत नहीं है?

- (a) लहरों के राजहंस (b) आधे-अधूरे
(c) रक्त कमल (d) आषाढ़ का एक दिन

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'रक्त कमल' मोहन राकेश की कृति नहीं है, बल्कि लक्ष्मीनारायण लाल की कृति है। शेष नाटक मोहन राकेश के हैं।

42. महाभारत की कथा पर आधारित नाटक है—

- (a) अन्धायुग (b) अन्धी गली
(c) कोणार्क (d) आधे-अधूरे

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'अन्धायुग' (1955) महाभारत की कथा पर आधारित है। इसके लेखक धर्मवीर भारती हैं। 'कोणार्क' जगदीश चन्द्र माथुर का नाटक है। 'अन्धी गली' उपेन्द्रनाथ 'अश्व' का नाटक है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'अन्धायुग' में महाभारत के अठारहवें दिन की संध्या से प्रभास तीर्थ में कृष्ण के देहावसान के क्षणों तक की कथा ली गई है।
- 'अन्धायुग' एक सशक्त आधुनिक त्रासदी है।
- 'अन्धायुग' एक गीतनाट्य है।

43. 'शारदीया' के नाटककार हैं—

- (a) मोहन राकेश (b) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल
(c) जगदीश चन्द्र माथुर (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'शारदीया' 1959 ई. में लिखा गया जगदीश चन्द्र माथुर का एक नाटक है। इस नाटक की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है, जो उन्नीसवीं शती के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में तत्कालीन समाज एवं मानवीय सम्बन्धों की अन्तरंग झाँकी प्रस्तुत करता है। इनके अन्य प्रमुख नाटक हैं—कोणार्क (1951), पहला राजा (1969), दशरथ नन्दन (1974), रघुकुल रीति (1985) आदि। 'दशरथ नन्दन' नाटक रामचरितमानस पर आधारित है। 'रघुकुल रीति' इनके मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ। यह भी रामलीला पर आधारित है।

44. 'कोणार्क' नाटक की रचना किसने की?

- (a) मोहन राकेश (b) जगदीश चन्द्र माथुर
(c) भुवनेश्वर (d) रामकुमार वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. प्रभुसत्ता सम्पन्न शासक वर्ग एवं गरीब शिल्पी के मध्य संघर्ष-कथा को किस नाटक की विषय-वस्तु बनाया गया है?

- (a) कोणार्क (b) शारदीया
(c) शिल्पी (d) आदमी का जहर

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

जगदीश चन्द्र माथुर ने 'कोणार्क' नाटक में विभिन्न प्रकार के पात्रों, घटनाओं आदि को इस प्रकार संयोजित किया है कि वे विशिष्ट नाटकीय स्थितियों में संश्लिष्ट हो उठते हैं। इसमें संघर्ष के कई आयाम उभरते हैं—प्रभुसत्ता और गरीब शिल्पी के बीच का संघर्ष। वस्तुतः कोणार्क का निर्माण एक गहरे अन्तर्द्वन्द्व का परिणाम है।

46. 'सती चन्द्रावली' और 'अमरसिंह राठौर' नाटकों की रचना किसने की?

- (a) राधाचरण गोस्वामी (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) प्रताप नारायण मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

पं. राधाचरण गोस्वामी ने कई बहुत ही अच्छे मौलिक नाटक लिखे हैं, जैसे— सुदामा नाटक, सती चन्द्रावली, अमरसिंह राठौर, तन मन धन श्री गोसाई जी के अर्पण। इनमें से सती चन्द्रावली और अमरसिंह राठौर बड़े नाटक हैं।

47. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की नाट्य कृति का नाम है—

- (a) तिलचट्टा (b) शूतुरमुर्गा
(c) अन्धों का हाथी (d) बकरी

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना मूलतः कवि हैं। इनका पहला नाटक 'बकरी' व्यंग्यात्मक है। यह 1974 ई. में प्रकाशित हुआ। इनके दो अन्य नाटक 'लड़ाई' (1979) और 'अब गरीबी हटाओ' आदि हैं। 'लड़ाई' सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कहानी का नाट्य रूपान्तरण है, जबकि 'अब गरीबी हटाओ' में भ्रष्टाचार, उत्पीड़न, अन्याय आदि को मूर्त रूप दिया गया है।

48. बकरी किसकी रचना है?

- (a) विशाखदत्त (b) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
(c) कुंवर नारायण (d) हरिजीत

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. 'बकरी' नाटक के रचयिता हैं—

- (a) मोहन राकेश (b) उपेन्द्रनाथ अशक
(c) हबीब तनवीर (d) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

50. 'शकुन्तला' नाटक का खड़ी बोली गद्य में अनुवाद किया—

- (a) राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने (b) राजा लक्ष्मण सिंह ने
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने (d) गिरिधर दास ने

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'शकुन्तला' नाटक का खड़ी बोली गद्य में अनुवाद राजा लक्ष्मण सिंह ने 1861 ई. में किया। रघुवंश (1878) और मेघदूत (1882) का भी उन्होंने हिन्दी गद्य में अनुवाद किया।

51. भारतेन्दु युग की केन्द्रीय विधा है?

- (a) उपन्यास (b) कहानी
(c) नाटक (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

भारतेन्दु युग की केन्द्रीय विधा नाटक है। भारतेन्दु युग के लेखकों को नाटक और निबन्ध में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई।

52. 'नहुष' नाटक लिखा गया है—

- (a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के द्वारा (b) वियोगी हरि के द्वारा
(c) शिवमंगल सिंह 'सुमन' के द्वारा (d) गोपालचन्द्र के द्वारा

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अनुसार, विशुद्ध नाटक रीति का ध्यान रखकर हिन्दी का सर्वप्रथम मौलिक नाटक 'नहुष' उनके पिता गोपालचन्द्र (गिरिधरदास) द्वारा 1859 ई. में लिखा गया था।

53. 'नहुष' नाटक के नाटककार हैं—

- (a) गोपालचन्द्र उर्फ गिरिधरदास (b) ब्रजराज दास
(c) सीताराम दास (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

54. 'नहुष' नाटक के लेखक बाबू गिरिधरदास का भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से क्या सम्बन्ध था?

- (a) पिता का (b) दादा का
(c) परदादा का (d) भाई का

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. 'उत्तर प्रियदर्शी' नामक गीतिनाट्य के लेखक कौन हैं?

- (a) अज्ञेय (b) मुक्तिबोध
(c) प्रसाद (d) हरिकृष्ण प्रेमी

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'उत्तर प्रियदर्शी' नामक गीतिनाट्य के लेखक अज्ञेय हैं। इसका प्रकाशन 1967 ई. में हुआ, जिसमें अशोक का अपने ही भीतर के नरक को भोगने तथा बाहरी और भीतरी नरक से ऊपर उठने का वर्णन है। 'उत्तर प्रियदर्शी' का पहला मंचन नई दिल्ली में 'त्रिवेणी कला संग्राम' के खुले रंगमंच पर 6 मई, 1967 ई. को सम्पन्न हुआ। इस गीतिनाट्य में 'प्रेरणा' शीर्षक के अन्तर्गत इसके कथानक के आधार पर प्रकाश डाला गया है।

56. 'पृथ्वीराज की आँखें' शीर्षक के रचयिता हैं—

- (a) उदयशंकर भट्ट (b) लक्ष्मीनारायण मिश्र
(c) रामकुमार वर्मा (d) सेठ गोविन्ददास

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'पृथ्वीराज की आँखें' शीर्षक नाटक के रचयिता रामकुमार वर्मा हैं। ऐतिहासिक आधार पर डॉ. रामकुमार वर्मा प्रथम सफल नाटककार थे। वर्ष 1930 में इन्होंने पहला एकांकी 'बादल की मृत्यु' लिखा। रेशमी टाई, सप्तकिरण, रूपरंग, रिमझिम, चारुमित्रा, विभूति, रजतरश्मि, ऋतुराज, दीपदान, इन्द्रधनुष, पांचजन्य, कौमुदी महोत्सव, मयूर पंख, खट्टे-मीठे एकांकी, ललित एकांकी, कैलेण्डर का आखिरी पन्ना, जूही के फूल आदि इनकी एकांकी हैं। डॉ. रामकुमार के नाटकों में विजय पर्व, कला और कृपाण, नाना फड़नवीस, सत्य का स्वप्न प्रमुख हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- डॉ. रामकुमार वर्मा के शब्दों में "जिस देश के पास हिन्दी जैसी मधुर भाषा है, वह देश अंग्रेजी के पीछे दीवाना क्यों है? स्वतन्त्र देश के नागरिकों को अपनी भाषा पर गर्व करना चाहिए। हमारी भावभूमि भारतीय होनी चाहिए। हमें जूटन की ओर नहीं ताकना चाहिए।"
- कोई उन्हें नाटक सम्राट मानता है, तो कोई हिन्दी एकांकी का जनक। कोई कहता है आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के बाद अगर किसी ने प्रामाणिक हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा है, तो वे डॉ. रामकुमार वर्मा ही हैं।
- वर्मा जी ने कवि मन से 'एकलव्य', 'उत्तरायण' एवं 'ओ अहल्या' जैसे कालजयी सांस्कृतिक महाकाव्य लिखे हैं।

57. 'उत्तरायण' किसकी कृति है?

- (a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) गणपति चन्द्र गुप्त (d) रामकुमार वर्मा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

58. निम्नलिखित नाटककारों में ऐतिहासिक नाटककार कौन हैं?

- (a) लक्ष्मीनारायण लाल (b) डॉ. धर्मवीर भारती
(c) उपेन्द्रनाथ अशक (d) डॉ. रामकुमार वर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

59. 'रेल का विकट खेल' नाटक के रचनाकार हैं—

- (a) भारतेन्दु (b) प्रताप नारायण मिश्र
(c) बालकृष्ण भट्ट (d) प्रेमघन

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

'रेल का विकट खेल' बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित नाटक है। इनके अन्य प्रमुख नाटक हैं—दमयन्ती स्वयंवर, वृहन्नला, वेणी संहार, कलिराज की सभा, शिक्षादान, बाल विवाह आदि।

60. 'शिवसाधना' नाटक है—

- (a) प्रसाद का (b) हरिकृष्ण का
(c) सेठ गोविन्द दास का (d) उदयशंकर भट्ट का

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'शिवसाधना' 1937 ई. में हरिकृष्ण प्रेमी द्वारा लिखा गया नाटक है। इनके अन्य नाटक हैं—स्वर्णविहान (1930), रक्षाबन्धन (1934), पाताल विजय (1936), प्रतिशोध (1937)। सेठ गोविन्द दास के प्रमुख नाटक हैं—हर्ष (1935), प्रकाश (1935), कर्तव्य-दो भाग (1935)।

61. 'मादा कैक्टस' नाटक किसने लिखा है?

- (a) रांगेय राघव (b) लक्ष्मीनारायण लाल
(c) हरिकृष्ण 'प्रेमी' (d) जयशंकर प्रसाद

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'मादा कैक्टस' (1959) नाटक डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा रचित है। इस नाटक में प्रेम और विवाह को कला-साधना के परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास किया गया है। अन्धा कुआँ (1955), सुन्दर रस (1959), तीन आँखों वाली मछली (1960), सूखा सरोवर (1960), रक्त कमल (1962), रातरानी (1962), दर्पण (1963), सूर्यमुख (1968), कलंकी (1969), मिस्टर अभिमन्यु (1971), करप्रयू (1972), राम की लड़ाई, नरसिंह कथा, एक सत्य हरिश्चन्द्र, चतुर्भुज राक्षस, पंचपुरुष, गंगामाटी आदि इनकी अन्य कृतियाँ हैं।

62. 'अन्धा कुआँ' के रचनाकार हैं—

- (a) लक्ष्मीनारायण भारद्वाज (b) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल
(c) मोहन राकेश (d) धर्मवीर भारती

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

63. 'अंजोदीदी' किस विधा की रचना है?

- (a) कविता (b) नाटक
(c) कहानी (d) उपन्यास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

अंजोदीदी (1954) उपेन्द्रनाथ अशक की सर्वाधिक प्रौढ़ नाट्य कृति है। इसकी केन्द्रीय पात्र अंजोदीदी हैं, जो बहुत अनुशासन प्रिय हैं। अशक जी के अन्य नाटक हैं—'जय-पराजय' (1937), 'छटां बेटा' (1940), 'कैद' (1945), 'उल्लू' (1946), 'भंवर' (1950), 'अलग-अलग रास्ते' (1954) आदि।

64. 'रसगंधर्व' नाटक के रचयिता हैं—

- (a) मोहन राकेश (b) मणि मधुकर
(c) सुरेन्द्र वर्मा (d) शंकर शेष

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'रसगंधर्व' नाटक के रचयिता मणि मधुकर हैं। इनके अन्य नाटक इस प्रकार हैं—बुलबुल सराय, दुलारी बाई, खेला पोलमपुर, हे बोधिवृक्ष, इकतारे की आँख और इलायची बेगम है।

65. 'डॉक्टर' नामक कृति की विधा है—

- (a) नाटक (b) प्रहसन
(c) कहानी (d) गीति परक

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

विष्णु प्रभाकर कृत 'डॉक्टर' नामक नाटक, मनोवैज्ञानिक-सामाजिक नाटक है, जिसमें डॉ. अनीला के सन्दर्भ में भावना और नैतिक कर्तव्य का संघर्ष दिखाया गया है। प्रभाकर जी का एक अन्य नाटक 'समाधि' भी है।

66.को नुक्कड़ नाटक के जनक कहते हैं।

- (a) भीष्म साहनी (b) हबीब तनवीर
(c) सफदर हाशमी (d) प्रसन्ना हेगड

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

सफदर हाशमी को नुक्कड़ नाटक का जनक कहते हैं। हाशमी ने नुक्कड़ नाटक को एक नई दिशा दी। डॉ. लाल बहादुर वर्मा ने गोरखपुर में 'संचेतना' नामक संस्था का गठन करके नुक्कड़ नाटकों की शुरुआत की। नुक्कड़ नाटक न केवल वास्तविक जीवन में बल्कि चलचित्र माध्यम में भी काफी महत्व रखता है। नुक्कड़ नाटक का इस्तेमाल स्वयंसेवी संस्थाओं, थियेटर समूहों, बुद्धिजीवी वर्ग, सामाजिक कार्यकर्ताओं और छात्रों द्वारा सामाजिक व राजनीतिक मुद्दों पर जनता के बीच जागरूकता लाने के लिए किया जा रहा है। नुक्कड़ नाटक ने भी 'तीसरे थियेटर' के रूप में अपनी एक अलग पहचान बनायी है। हिन्दी फिल्म 'हल्ला बोल' ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ नुक्कड़ के माध्यम से आवाज उठाई है।

67. हिन्दी का पहला 'रेडियो नाटक' माना जाता है—

- (a) सीमारेखा (b) राधाकृष्ण
(c) सेठ बांकेलाल (d) युगसंधि

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

हिन्दी में रेडियो-नाटक का जन्म 1937 में रेडियो में प्रसारित पहला हिन्दी नाटक आचार्य चतुरसेन शास्त्री लिखित 'राधाकृष्ण' से माना जाता है।

68. पण्डित जवाहरलाल नेहरू और ब्रह्मवर्त के पृथु के बीच विलक्षण साम्य किस नाटक में है?

- (a) कोणार्क (b) शारदीय
(c) भारत दुर्दर्शा (d) पहला राजा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

नेहरूयुगीन मोहभंग के यथार्थ को 1964 में तुगलक में कन्नड़ रंगकर्मी और नाटककार गिरीश करनाड ने मध्यकालीन मुस्लिम शासक मुहम्मद बिन तुगलक के रूपक प्रस्तुत किया, तो 1969 में इसी विषय पर इसी पद्धति में हिन्दी नाटककार जगदीशचन्द्र माथुर ने 'पहला राजा' नाटक लिखा। खास बात यह है कि दोनों नाटकों में नेहरूयुगीन द्वन्द्व और चिन्ता केन्द्र है। करनाड ने इसे मुहम्मद बिन तुगलक के ऐतिहासिक चरित्र के रूपक प्रस्तुत किया है, जबकि माथुर ने इसे महाभारत के राजधर्मानुशासन पर्व में वर्णित पृथु के मिथक व्यक्तित्व में रूपान्तरित किया है। 'पहला राजा' माथुर का अन्तिम नाटक है। यह अपनी प्रयोगधर्मिता तथा युगीन समस्याओं के विन्यास के लिए प्रसिद्ध है। 'पहला-राजा' में नेहरूयुगीन लोकतंत्र की समस्याओं को लिया गया है, जो आज और अधिक जटिल हो गई हैं। बच्चन सिंह के अनुसार, इस नाटक में जवाहरलाल नेहरू लक्षणावृत्ति से स्वतन्त्र भारत के पहले राजा कहे जा सकते हैं। पृथु की अनेक विशेषताएँ नेहरू से मिलती-जुलती हैं। अतः पृथु का कथानक नेहरूयुगीन समस्याओं को उठाने के लिए वस्तुनिष्ठ समीकरण बन जाता है।

69. दृश्य काव्य की विधा है—

- (a) नाटक (b) निबन्ध
(c) उपन्यास (d) गीतिकाव्य

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

रंगमंच पर अभिनय द्वारा प्रस्तुत करने की दृष्टि से लिखी गयी तथा पात्रों एवं संवादों पर आधारित एक से अधिक अंकों वाली दृश्यात्मक साहित्यिक रचना को नाटक कहते हैं। हिन्दी में मौलिक नाटकों का आरम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है।

70. हिन्दी में यथार्थवादी एकांकी के जनक हैं—

- (a) रामकुमार वर्मा (b) उपेन्द्रनाथ अशक
(c) उदयशंकर भट्ट (d) भुवनेश्वर

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

डॉ. रामकुमार वर्मा आधुनिक हिन्दी साहित्य के 'एकांकी सम्राट' के रूप में जाने जाते हैं। सन् 1930 में रचित 'बादल की मृत्यु' उनका पहला एकांकी है। इस दृष्टि से उन्हें 'हिन्दी एकांकी का जनक' माना जाता है। यह एकांकी पश्चिमी नाट्य-विधान का पूरा ध्यान रखकर लिखा गया है। डॉ. वर्मा ने रूप-विधान तो पश्चिम से लिया है, किन्तु उनके नाटकों की आत्मा भारतीय है। पाश्चात्य ढंग के एकांकी का सूत्रपात अधिकांश विद्वान भुवनेश्वर प्रसाद के 'कारवाँ' से मानते हैं। डॉ. वर्मा के एकांकी, प्रेम और सेक्स की समस्याओं से सम्बन्धित हैं। ये एकांकी मानसिक अन्तर्द्वन्द्व की आधार भूमि पर यथार्थवादी कलेवर में समाज और जीवन की वस्तुस्थिति तक पहुँचते हैं। पर इन एकांकियों में लेखक की आदर्शवादी सोच इतनी गहरी है कि वे आदर्शवादी झोंक में यथार्थ को मनमाना नाटकीय मोड़ दे बैठते हैं। इसलिए उनके स्त्री पात्र शिक्षा और नए संस्कारों के बावजूद प्रेम और जीवन का मोह त्यागकर प्रेम के लिए उत्सर्ग कर बैठते हैं, मानो उत्सर्ग या प्राणान्त ही सच्चे प्रेम की कसौटी हो।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 1940 ई. में डॉ. नगेन्द्र ने कहा था "हिन्दी-एकांकी का इतिहास गत दस वर्षों में सिमटा हुआ था।"
- श्रीरामनाथ 'सुमन', 'चारुमित्रा' (1942) की भूमिका में डॉ. रामकुमार वर्मा को हिन्दी एकांकी का जन्मदाता मानते हैं।
- डॉ. सत्येन्द्र इसका सूत्रपात भारतेन्दु से स्वीकार करते हैं।
- डॉ. सोमनाथ गुप्त 'प्रसाद' के 'एक घूँट' से एकांकी नाटकों का प्रारम्भ मानते हैं।
- 'अज्ञेय' जी ने भी लगभग यही मत स्वीकार करते हुए लिखा है— 'प्रसाद का 'एक घूँट' भी एकांकी है।रूप विधान की दृष्टि से वह आधुनिक एकांकी के बहुत निकट है और ऐसा माना जा सकता है कि आधुनिक एकांकी की परम्परा वहीं से आरम्भ होती है।"

- उदयशंकर भट्ट द्वारा रचित एकांकी संग्रह 'अभिनव एकांकी' 1940 में प्रकाशित हुआ था। स्त्री का हृदय, चार एकांकी, समस्या का अंत, धूम शिखा, अन्धकार और प्रकाश, आदिम युग, पर्दे के पीछे, आज का आदमी, सात प्रहसन आदि उनके अन्य एकांकी संकलन हैं।
- भुवनेश्वर द्वारा रचित एकांकी तौबे के कोड़े, आज़ादी की नींद, सिकन्दर आदि हैं।

71. आधुनिक एकांकी के जनक माने जाते हैं—

- (a) उदयशंकर भट्ट (b) जयशंकर प्रसाद
(c) रामकुमार वर्मा (d) जगदीशचन्द्र माथुर

P.G.T. परीक्षा, 2004

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

72. 'रुपया तुम्हें खा गया' एकांकी के लेखक हैं—

- (a) भगवतीचरण वर्मा (b) रघुवंशी
(c) राजीव सक्सेना (d) विनय रंजन

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'रुपया तुम्हें खा गया' एकांकी के लेखक भगवतीचरण वर्मा हैं।

73. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना एकांकी है?

- (a) सुहाग के नूपुर (b) परिन्दे
(c) गुल की बन्नो (d) नदी प्यासी थी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'नदी प्यासी थी' धर्मवीर भारती द्वारा लिखित एकांकी है जबकि 'परिन्दे' तथा 'गुल की बन्नो' कहानियाँ हैं, जिनके लेखक क्रमशः निर्मल वर्मा एवं धर्मवीर भारती हैं। 'सुहाग के नूपुर' अमृतलाल नागर द्वारा लिखित उपन्यास है।

74. 'प्रकाश और परछाई' किस एकांकीकार की रचना है?

- (a) धर्मवीर भारती (b) विष्णु प्रभाकर
(c) बेचन शर्मा उग्र (d) हरिकृष्ण प्रेमी

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

विष्णु प्रभाकर के एकांकी संग्रह हैं—'बारह एकांकी' (1958), 'दस बजे रात' (1959), 'ये रेखाएं ये दायरे' (1963), 'ऊँचा पर्वत गहरा सागर' (1966), प्रकाश और परछाई, 'मेरे प्रिय एकांकी' (1970), 'मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी' (1979)।

75. 'कबूतरखाना' किस एकांकीकार की रचना है?

- (a) विनोद रस्तोगी (b) मोहन राकेश
(c) भुवनेश्वर (d) जगदीशचन्द्र माथुर

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

जगदीशचन्द्र माथुर की एकांकी है-कबूतरखाना, मकड़ी का जाला, भोर का तारा, ओ मेरे सपने, घोंसले, रीढ़ की हड्डी, खंडहर।

76. उपेन्द्रनाथ 'अश्क' रचित 'जोंक' किस प्रकार की एकांकी है?

- (a) प्रतीकात्मक (b) सामाजिक व्यंग्य
(c) मनोवैज्ञानिक (d) राजनैतिक व्यंग्य

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपेन्द्रनाथ 'अश्क' रचित जोंक एक सामाजिक एकांकी है, जो हास्य व्यंग्य प्रधान है। तूफान से पहले, चरवाहे आदि इनके प्रसिद्ध एकांकी हैं। देवताओं की छाया में, पर्दा उठाओ, पर्दा गिराओ, अन्धी गली तथा पच्चीस श्रेष्ठ एकांकी उनके एकांकी संग्रह हैं। लक्ष्मी का स्वागत, पापी और सूखी डाली में कौटुम्बिक व्यवस्था को नये दृष्टिकोण से देखा गया है। 'विवाह के दिन' इनका प्रहसन है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'अश्क' ने विशेष रूप से सामाजिक श्रेणी के एकांकियों की रचना की। इनकी 'कइसा साब कइसी बीबी, जोंक, पक्का गाना, घपले आदि रचनाएँ हास्य व्यंग्य प्रधान प्रतीकात्मक रचनाएँ हैं।
- रंग-मंच से घनिष्ठ परिचय होने के कारण उनकी एकांकी अभिनय की दृष्टि से बहुत सफल रही हैं।

□ कहानी

1. कहानी और कहानीकार की दृष्टि से एक युग्म अशुद्ध है

- (a) वापसी - उषा प्रियंवदा (b) यही सच है - मन्नू भंडारी
(c) जयदोल - अज्ञेय (d) टेस - जैनेन्द्र

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'टेस' कहानी फणीश्वरनाथ रेणु की है। शेष युग्म सही हैं।

2. इनमें से कौन-सी हिन्दी की पहली कहानी मानी जाती है?

- (a) इन्दुमती (b) ग्यारह वर्ष का समय
(c) दुलाईवाली (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

भारतेन्दु युग में कहानियाँ नहीं लिखी गईं। कुछ कथात्मक शैली के निबन्ध अवश्य लिखे गये थे, जो पढ़ने में अत्यन्त रोचक थे। कहानियों का विकास आलोच्य युग (द्विवेदी युग) में हुआ। 'सरस्वती' (1900) पत्रिका के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी कहानी का जन्म मान्य है। किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' कहानी 'सरस्वती' में 1900 ई. में इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। यह शेक्सपियर के 'टेम्पेस्ट' नाटक के आधार पर लिखी गयी है। इसी वर्ष 'सुदर्शन' में माधव प्रसाद मिश्र की 'मन की चंचलता' कहानी प्रकाशित हुई। 1902 ई. में 'सरस्वती' में भगवानदीन 'बी.ए.' की 'प्लेग की चुड़ैल' कहानी प्रकाशित हुई। यह वास्तविक परिस्थिति का चित्र प्रस्तुत करने वाली रचना है। 'सरस्वती' में ही रामचन्द्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' (1903) और बंगमहिला की 'दुलाईवाली' (1907) शीर्षक कहानियाँ प्रकाशित हुईं। अतः इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि 'इन्दुमती' हिन्दी की पहली कहानी है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 1909 ई. में वृन्दावनलाल वर्मा ने 'राखीबंद भाई' लिखकर ऐतिहासिक कहानियों की परम्परा को जन्म दिया।
- 1909 ई. में काशी से 'इन्दु' का प्रकाशन हुआ। इसमें जयशंकर प्रसाद की भावात्मक कहानियाँ प्रकाशित हुईं। इन कहानियों का संग्रह 'छाया' (1912) नाम से प्रकाशित हुआ।

3. 'इन्दुमती' कहानी के लेखक हैं-

- (a) मास्टर भगवानदास (b) किशोरीलाल गोस्वामी
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'इन्दुमती' किसकी छाया मानी जाती है?

- (a) ओथेलो की (b) मैकबेथ की
(c) टेम्पेस्ट की (d) मर्वेट ऑफ वेनिस की

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'इन्दुमती' नामक कहानी सर्वप्रथम कब और कहाँ प्रकाशित हुई थी?

- (a) सन् 1900 में सरस्वती में (b) सन् 1900 में विशाल भारत में
(c) सन् 1903 में सरस्वती में (d) इनमें से किसी में भी नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. आधुनिक हिन्दी कहानी का आरम्भ 'सरस्वती' पत्रिका के सन् 1900 ई. में प्रकाशित अंक की किस कहानी से माना जाता है?
- (a) इन्दुमती (b) नासिकेतोपाख्यान
(c) रानी केतकी की कहानी (d) यमलोक की यात्रा

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. आधुनिक खोजों के अनुसार पहली मौलिक कहानी है-

- (a) रानी केतकी की कहानी
(b) पंच परमेश्वर
(c) उसने कहा था
(d) एक टोकरी भर मिट्टी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

आधुनिक खोजों के अनुसार, पहली मौलिक कहानी एक टोकरी भर मिट्टी (1901) है। जिसके लेखक माधवराव सप्रे हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- प्रयाग से निकलने वाली प्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'सरस्वती' के पहले अंक (1900 ई.) से आधुनिक हिन्दी कहानी का जन्म होता है।
➤ नई खोजों के आधार पर यह सिद्ध हो गया कि शुक्ल जी की कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' के पहले ही सन् 1901 में 'एक टोकरी भर मिट्टी' नामक कहानी 'छत्तीसगढ़ मित्र' नामक मासिक पत्रिका में छपी थी।

8. 'हत्या' नामक कहानी के लेखक हैं-

- (a) अज्ञेय (b) जैनेन्द्र कुमार
(c) मुक्तिबोध (d) प्रेमचन्द

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'हत्या' नामक कहानी के लेखक जैनेन्द्र कुमार हैं। उनकी अन्य प्रमुख कहानियाँ हैं-खेल, अपना-अपना भाग्य, वातायन, बाहुबली, नीलम देश की राज कन्या, ध्रुवयात्रा, दो चिड़ियाँ, पाजेब, एक दिन आदि। इनकी कहानियों का मुख्य विषय नारी है।

9. निम्नांकित में मनोविश्लेषण प्रधान कथाकार कौन नहीं है?

- (a) इलाचन्द्र जोशी (b) अज्ञेय
(c) सुदर्शन (d) जैनेन्द्र

P.G.T. परीक्षा, 2004, 2009

उत्तर—(c)

सुदर्शन मनोविश्लेषण प्रधान कथाकार नहीं हैं, जबकि इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय तथा जैनेन्द्र मनोविश्लेषण प्रधान उपन्यासकार/कथाकार हैं। सुदर्शन का वास्तविक नाम पण्डित बद्रीनाथ भट्ट था। सुदर्शन की कहानियों का मुख्य लक्ष्य समाज व राष्ट्र को स्वच्छ व सुदृढ़ बनाना था। इनका दृष्टिकोण सुधारवादी था। 'हार की जीत' सुदर्शन की पहली कहानी थी, जो 1920 ई. में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। लाहौर की उर्दू पत्रिका 'हजार दास्तां' में इनकी अनेक कहानियाँ प्रकाशित हुईं। इनकी प्रमुख रचनाएँ-सच का सौदा, अठन्नी का चोर, साइकिल की सवारी, तीर्थ यात्रा, पत्थरों का सौदागर और पृथ्वी वल्लभ आदि हैं।

10. 'हार की जीत' कहानी लेखक हैं-

- (a) विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' (b) भगवती प्रसाद वाजपेयी
(c) सुदर्शन (d) पाण्डेय बेचन शर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'हार की जीत' कहानी के लेखक कौन हैं?

- (a) विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' (b) प्रेमचन्द
(c) सुदर्शन (d) डॉ. राम विलास शर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. 'रक्षाबंधन' कहानी के लेखक हैं-

- (a) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (b) वृन्दावनलाल वर्मा
(c) विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' (d) इनमें से कोई नहीं

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

पं. विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' की पहली कहानी 'रक्षाबंधन' 1913 में सरस्वती में छपी।

13. इनमें प्रवासी कहानीकार हैं-

- (a) विभूति नारायण राय (b) तेजेन्द्र शर्मा
(c) ममता कालिया (d) रवीन्द्र कालिया

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

तेजेन्द्र शर्मा प्रवासी (भारतीय-अमेरिकी) कहानीकार हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- अपराधबोध का प्रेत, एक बार फिर होली, दीवार में रास्ता, ओवर-फ्लो पार्किंग, काला सगर, गंदगी का बक्सा, ढिबरी टाइट, चरमाहट, देह की कीमत, पासपोर्ट के रंग तथा सपने मरते नहीं।

14. 'गुलाबी बन्नो' कहानी के लेखक हैं—

- (a) त्रिलोचन (b) धर्मवीर भारती
(c) शमशेर बहादुर सिंह (d) कुँवर नारायण

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उ.प्र.माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में 'गुलाबी बन्नो' कहानी के लेखक का नाम पूछा गया है। प्रस्तुत विकल्पों में इस कहानी का कोई लेखक नहीं है, जबकि इस कहानी का शुद्ध नाम 'गुल की बन्नो' है, जिसके लेखक धर्मवीर भारती हैं।

15. 'कोठरी की बात' कहानी अदभूत है। इसके लेखक हैं—

- (a) अज्ञेय (b) निर्मल वर्मा
(c) कृष्णा सोबती (d) रजनी गुप्ता

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'कोठरी की बात, इन्द्र की बेटी, चिड़ियाघर, आदम की डायरी, गृहत्याग, पुलिस की सीटी, जिज्ञासा, हारिति, अकलंक, छाया, नीली हँसी, मुस्लिम-2 भाई-2, शरणदाता, पुरुष का भाग्य, अछूते फूल, ताज की छाया में इत्यादि अज्ञेय की कहानियाँ हैं।

16. जैनेन्द्र की पहली कहानी-संग्रह कब प्रकाशित हुई?

- (a) 1934 (b) 1929
(c) 1939 (d) 1937

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

जैनेन्द्र की पहली कहानी-संग्रह 'खेल' 1928 ई. में प्रकाशित हुई। इसके बाद फाँसी 1929 ई. में प्रकाशित हुई। उचित विकल्प न होने के कारण 1929 ई. माना जा सकता है। इनके अन्य कहानी संग्रह हैं-वातायन (1930 ई.), नीलम देश की राजकन्या (1933 ई.), एक रात (1934 ई.), दो चिड़ियाँ (1935 ई.), पाजेब (1942 ई.), जयसंधि (1949 ई.) आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- जैनेन्द्र प्रेमचन्द युग के कहानीकार हैं।
- इनकी समस्त कहानियाँ 'जैनेन्द्र की कहानियाँ' शीर्षक से दस भागों में प्रकाशित हैं।
- जैनेन्द्र की कहानियों के माध्यम से पहली बार हिन्दी साहित्य में 'व्यक्ति' को महत्व मिला।
- ये मनोवैज्ञानिक कहानीकार हैं।

17. उदय प्रकाश द्वारा रचित कौन-सी कहानी नहीं है?

- (a) तिरिछ (b) पाल गोमरा का स्कूटर
(c) पीली आँधी (d) दरियाई घोड़ा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'पीली आँधी' (1996 ई.), उदय प्रकाश की कहानी नहीं है। यह प्रभा खेतान कृत उपन्यास है। उदय प्रकाश के कहानी संग्रह हैं-दरियाई घोड़ा (1989 ई.), तिरिछ (1989 ई.), और अन्त में प्रार्थना (1994 ई.), पाल गोमरा का स्कूटर (1997 ई.), पीली छतरी वाली लड़की (2001 ई.), दत्तात्रेय का दुःख (2002 ई.), मोहनदास (2006 ई.), वारेन हेस्टिंग्स का सांड, सूनी कारीगर, अबूतर-कबूतर, रात में हारमोनियम, एक भाषा हुआ करती है आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'मोहनदास,' उदय प्रकाश की आत्मकथात्मक कृति है। यह विश्व की आधी दर्जन भाषाओं में अनूदित हो चुकी है।
- ये प्रसिद्ध कथाकार, पत्रकार और फिल्मकार थे।
- वर्ष 2004 में हॉलैंड के प्रख्यात 'अन्तरराष्ट्रीय कविता उत्सव' में वे भारतीय कवि के रूप में भाग ले चुके हैं।

18. 'पाल गोमरा का स्कूटर' कहानी के लेखक हैं—

- (a) प्रिंसेवद (b) स्वयं प्रकाश
(c) उदय प्रकाश (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. 'वारेन हेस्टिंग्स का सांड' शीर्षक कहानी के लेखक हैं—

- (a) स्वयं प्रकाश (b) अरुण प्रकाश
(c) उदय प्रकाश (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. निर्मल वर्मा की चर्चित कहानी-संग्रह है—

- (a) परिन्दे (b) तलाश
(c) बंजर (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

'निर्मल वर्मा' की चर्चित कहानी संग्रह 'परिन्दे' है। इसका प्रकाशन 1960 ई. में हुआ था। इनके अन्य कहानी संग्रह हैं-जलती झाड़ी (1965 ई.), पिछली गर्मियों में (1968 ई.), बीच बहस में (1973 ई.), कव्ठे और कालापानी (1983 ई.), सूखा तथा अन्य कहानियाँ (1995 ई.) आदि। परिन्दे को डॉ. नामवर सिंह ने 'नयी कहानी' की पहली कृति माना है।

21. फणीश्वरनाथ रेणु की कौन-सी कहानी है?

- (a) रसप्रिया (b) रस आखेटक
(c) रसिकप्रिया (d) प्रिया नीलकण्ठी

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी रसप्रिया है। उनकी अन्य कहानियाँ हैं— 'तीसरी कसम' उर्फ 'मारे गये गुलफाम', 'अग्निखोर', 'आदिम रात्रि की महक', 'तुमरी', 'अच्छे आदमी'।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- एक श्रावणी दोपहर की धूप तथा अच्छे आदमी फणीश्वरनाथ रेणु के मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई।
- ये नयी कहानी के प्रारम्भकर्ता हैं।
- रेणु को पूर्णिया जिले की भूमि के प्रति निश्चल और गहरा लगाव था।
- 'तीसरी कसम' उर्फ 'मारे गए गुलफाम' पर 'तीसरी कसम' नामक फिल्म बनायी गयी थी। यह कहानी ग्रामीण अंचल पर आधारित है।

22. 'तीसरी कसम' फिल्म किस लेखक की कहानी पर बनायी गयी थी?

- (a) प्रेमचन्द (b) फणीश्वरनाथ रेणु
(c) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (d) जैनेन्द्र कुमार

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

23. कहानीकार के रूप में विख्यात पुरातत्ववेत्ता हैं -

- (a) पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
(b) विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक
(c) पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी
(d) राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का नाम पुरातत्ववेत्ता, भाषा पण्डित और कहानीकार के रूप में विख्यात है। उन्होंने केवल तीन कहानियाँ लिखकर जो यश प्राप्त किया है, वह अन्य साहित्यकारों के लिए दुर्लभ है। उनकी प्रथम कहानी 'सुखमय जीवन' (सं. 1968) 'भारत मित्र' में प्रकाशित हुई थी।

24. 'मलबे का आदमी' कहानी का कथ्य क्या है?

- (a) साम्रादायिकता (b) पर्यावरण
(c) प्रदूषण (d) भारत-पाक विभाजन

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

मोहन राकेश की कहानी 'मलबे का आदमी' 1947 के भारत-पाक विभाजन के फलस्वरूप पैदा हुई मनःस्थिति पर आधारित है। देश के विभाजन की परिणति व्यापक रक्तपात में ही नहीं हुई, बल्कि दो सम्प्रदायों के बीच दुराव, संदेह, त्रास, डर, घृणा आदि मानसिक अवधारणाओं में भी हुई।

25. निम्नलिखित में से राजेन्द्र यादव की कहानी कौन-सी है?

- (a) एक और जिन्दगी (b) जहाँ लक्ष्मी कैद है
(c) तलाश (d) एक दिन

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'जहाँ लक्ष्मी कैद है', 'अभिमन्यु की आत्मकथा', 'छोटे-छोटे ताजमहल', 'किनारे से किनारे तक', 'प्रतीक्षा', 'टूटना और अन्य कहानियाँ', 'अपने पार' इत्यादि राजेन्द्र यादव के प्रमुख कहानी संग्रह हैं। 'एक और जिन्दगी' मोहन राकेश की, 'तलाश', 'कमलेश्वर की तथा 'एक दिन' जैनेन्द्र की रचित कहानी है।

26. 'नयी कहानी-आन्दोलन' के प्रमुख कहानीकार हैं-

- (a) मोहन राकेश (b) जैनेन्द्र
(c) यशपाल (d) इलाचन्द्र जोशी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'नयी कहानी-आन्दोलन' के प्रमुख कहानीकार मोहन राकेश हैं। नयी कहानी का आन्दोलन सन् 1950 से 1960 के बीच के कालखण्ड का उल्लेखनीय इतिहास है, जिसने रूप तथा वस्तु दोनों ही क्षेत्र में हिन्दी कहानी को नये आयाम दिये। इस आन्दोलन के अन्य प्रमुख कहानीकार हैं-राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, मार्कण्डेय, फणीश्वरनाथ रेणु, धर्मवीर भारती, हरिशंकर परसाई, भैरव प्रसाद गुप्त आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सन् 1960 से बाकायदे 'नयी कहानियाँ' नामक पत्रिका भैरव प्रसाद गुप्त के सम्पादकत्व में प्रकाशित होने लगी।
- सन् 1960 के बाद 'नयी कहानी' के स्थान पर 'अ-कहानी' आन्दोलन का विकास हुआ।
- अ-कहानी के संस्थापक डॉ. गंगा प्रसाद विमल हैं।
- सचेतन कहानी के पुरोधा डॉ. महीप सिंह हैं।

27. नयी कहानी की विशेष उपलब्धि किस क्षेत्र में रही है?

- (a) बदलते सामाजिक-पारिवारिक रिश्तों के चित्रण में
(b) महानगरीय संत्रास के चित्रण में
(c) व्यक्ति के अकेलेपन के चित्रण में
(d) राजनीतिक मोहभंग के चित्रण में

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

नयी कहानी यथार्थ और जीवन की वास्तविकताओं के अंकन के आधार पर अपने को पिछली कहानी से अलग करती है। नयी कहानी में कहानी के परम्परागत और रूढ़ तत्वों के आधार पर कहानी के मूल्यांकन का विरोध किया गया। 'काल के प्रवाह में' व्यक्ति की सामाजिकता का बोध और स्थिति ही आज की कहानी की विषय-वस्तु है। कथाकार व्यक्ति को उसकी समग्रता में देखने का आग्रह करता है। व्यक्ति को उसके सामाजिक परिवेश, मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों तथा व्यावहारिक जीवन के तकाजों तथा अन्य आवश्यकताओं की एक संश्लिष्ट प्रक्रिया के रूप में पाना चाहता है। नयी कहानी ने राजनीति के प्रति उदासीनता और उपेक्षा का रुख अपनाया। नयी कहानी की विशेष उपलब्धि बदलते सामाजिक पारिवारिक रिश्तों के चित्रण में रही है।

28. इनमें से शिवमूर्ति की कहानी नहीं है—

- (a) भरतनाट्यम् (b) तिरियाचरित्तर
(c) कसाईबाड़ा (d) अकर्मक क्रिया

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'अकर्मक क्रिया' शिवमूर्ति की कहानी नहीं, बल्कि से.रा.यात्री की कहानी है, अन्य कहानियाँ शिवमूर्ति की हैं। से.रा.यात्री की अन्य रचनाएँ हैं—
उपन्यास—दराजों में बन्द दस्तावेज, लौटते हुए, कई अँधेरों के पार, अपरिचित शेष, चांदनी के आर-पार, बीच की दरार, टूटते दायरे आदि।
कहानी संग्रह—केवल पिता, धरातल, टापू पर अकेले, दूसरे चेहरे, काल विदूषक सिलसिला, खंडित संवाद आदि।

29. 'कसाईबाड़ा' कहानी के लेखक हैं—

- (a) शिवमूर्ति (b) सतीश जमाली
(c) अखिलेश (d) मंजूर एहतेशाम

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

'कसाईबाड़ा' कहानी के लेखक शिवमूर्ति हैं। इसका प्रकाशन 1980 ई. में हुआ। इनकी अन्य कहानियाँ हैं—भरतनाट्यम्, सिरी उपमा जोग, तिरिया चरित्तर, केशर कस्तूरा, अकाल-दंड आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- शिवमूर्ति की ख्याति उनकी प्रसिद्ध कहानी कसाईबाड़ा से हुई है।
- इस कहानी का नाट्य-रूपान्तर भी हुआ है और अनेक संस्थाओं द्वारा इसका मंचन भी हुआ है।
- इस कहानी में चार प्रमुख पात्र—शनीचरी, प्रधान, लीडर और दरोगा हैं।

30. हिन्दी की प्रसिद्ध कहानी 'कसाईबाड़ा' के लेखक हैं—

- (a) ओम प्रकाश वाल्मीकि (b) कैवल भारती
(c) शिवमूर्ति (d) शयाराज सिंह 'बेचैन'

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. निम्नलिखित में से ओमप्रकाश वाल्मीकि का कहानी-संग्रह है?

- (a) दिवास्वप्न (b) नमक का कैदी
(c) छतरी (d) अपाहिज

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

ओमप्रकाश वाल्मीकि का कहानी-संग्रह 'छतरी' है। 'सलाम' और 'घुसपैठिये' इसके पूर्व प्रकाशित इनकी कहानी संग्रह हैं। ये सभी कहानियाँ दलित समाज के यथार्थ का चित्रण प्रस्तुत करती हैं।

32. 'राजा निरबंसिया' कहानी के लेखक हैं—

- (a) पानू खोलिया (b) कमलेश्वर
(c) हरिशंकर परसाई (d) रवीन्द्र कालिया

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'राजा निरबंसिया' (1957 ई.) कहानी के लेखक कमलेश्वर हैं। इनके अन्य कहानी-संग्रह हैं—कस्बे का आदमी (1958 ई.), खोई हुई दिशाएँ (1963 ई.), मांस का दरिया (1966 ई.), बयान (1973 ई.), आजदी मुबारक (2002 ई.)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 1972 ई. में कमलेश्वर ने समान्तर कहानी का आन्दोलन चलाकर युवा कहानीकारों को आकृष्ट किया था।
- इनकी समस्त कहानियों का संग्रह—'समग्र कहानियाँ' शीर्षक से 2001 ई. में प्रकाशित हुआ।
- नयी कहानी के दौर में राजा निरबंसिया, खोई हुई दिशाएँ, मांस का दरिया, जॉर्ज पंचम की नाक, अपना एकान्त कहानियाँ विशेष चर्चित हुई हैं।
- समान्तर कहानी के दौर में मानसरोवर के हंस, इतने अच्छे दिन, कितने पाकिस्तान जैसी कहानियाँ सराही गयीं।

33. 'समानान्तर कहानी' के प्रवर्तक हैं—

- (a) मोहन राकेश (b) राजेन्द्र यादव
(c) कमलेश्वर (d) हिमांशु जोशी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. प्रेमचन्द की कहानियों की संख्या लगभग—

- (a) 200 (b) 300
(c) 400 (d) 500

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने प्रेमचन्द की कहानियों की संख्या लगभग तीन सौ (300) माना है। प्रेमचन्द की कहानियों पर हिन्दी में अनेक शोध किये जा चुके हैं, परन्तु उनकी कहानियों की संख्या- निर्धारण में परस्पर विरोधी सूचनाएँ उपलब्ध हैं, जिनमें कुछ एक की चर्चा निम्नलिखित पंक्तियों में की जा सकती है। प्रेमचन्द का अपना बयान है- “मेरी कहानियों की कुल संख्या लगभग ढाई सौ है।” आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी लिखते हैं- “प्रेमचन्द जी की कहानियों की संख्या 300 के लगभग है। इसके अतिरिक्त उनकी उर्दू कहानियों की संख्या भी 100 से ऊपर है।” इस प्रकार आचार्य वाजपेयी के अनुसार, कहानियों की संख्या 400 (चार सौ) होती है।

नोट- प्रश्न में यह स्पष्ट नहीं है कि कुल कहानियों के बारे में पूछा जा रहा है या केवल हिन्दी कहानियों को। अतः हिन्दी कहानियों को आधार मानकर (b) सही उत्तर माना जा सकता है।

35. ‘नमक का दारोगा’ कहानी के लेखक हैं-

- (a) जयशंकर प्रसाद (b) प्रेमचन्द
(c) गुलाब राय (d) रामचन्द्र शुक्ल

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

‘नमक का दारोगा’ कहानी के लेखक प्रेमचन्द हैं। इनकी अन्य प्रमुख कहानियाँ हैं-सौत, पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, रानी सारन्धा, शंखनाद, बैंक का दिवाला, बूढ़ी काकी, कफन आदि।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ‘सौत’ (1915) प्रेमचन्द की पहली कहानी है।
- ‘कफन’ (1936) अन्तिम कहानी है।
- ‘पंच परमेश्वर’ में ग्राम पंचायत के आदर्श को उभारा गया है।
- ‘नमक का दारोगा’ में ईमानदारी और ‘बड़े घर की बेटी’ में संयुक्त परिवार की मर्यादा प्रतिष्ठित की गयी है।
- प्रेमचन्द कृत अन्य प्रमुख कहानियाँ हैं—मिस पद्मा, आहुति, कश्मीरी सेब, दो बहनें, मंत्र, कप्तान साहब, झाँकी, दण्ड, दुर्गा का मन्दिर, दूसरी शादी, दो बैलों की कथा, प्रेरणा, जुलूस, घरजमाई, काशी में आगमन, क्रिकेट मैच, आत्माराम आदि।

➤ प्रेमचन्द की अन्य कहानियाँ हैं- बलिदान (1918), आत्माराम (1920), बूढ़ी काकी (1921), विचित्र होली (1921), गृहदाह (1922), हार की जीत (1922), परीक्षा (1923), आपबीती (1923), उद्धार (1924), सवा सेर गेहूँ (1924), शतरंज के खिलाड़ी (1925), माता का हृदय (1925), कजाकी (1926), सुजान भगत (1927), इस्तीफा (1928), अलंगोझा (1929), पूस की रात (1930), तावान (1931), होली का उपहार (1931), ठाकुर का कुआँ (1932), बेटों वाली क्खिवा (1932), ईदगाह (1933), नशा (1934), बड़े भाई साहब (1934) आदि।

36. ‘प्रेरणा’ नामक कहानी रचित है-

- (a) नगेन्द्र द्वारा (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा
(c) जयशंकर प्रसाद द्वारा (d) प्रेमचन्द द्वारा

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. प्रेमचन्द की अन्तिम कहानी थी-

- (a) ईदगाह (b) कफन
(c) ठाकुर का कुआँ (d) बड़े घर की बेटी

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. कौन-सी कहानी घटना प्रधान है?

- (a) आत्माराम (b) आत्मसंगीत
(c) पंच परमेश्वर (d) जादू

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

कथावस्तु के आधार प्रेमचन्द की कहानियों के तीन वर्ग बनाये गये हैं, यथा घटना प्रधान, चरित्र प्रधान तथा भाव प्रधान। प्रेमचन्द जी ने ऐसी भी कहानियाँ लिखी हैं, जिनमें तीनों उपकरणों का सुन्दर सामंजस्य है। जैसे-पंच परमेश्वर, मंत्र आदि।

39. झबरा किस कहानी का पात्र है?

- (a) कफन (b) पूस की रात
(c) दो बैलों की कहानी (d) ईदगाह

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

‘झबरा’ प्रेमचन्द कृत कहानी ‘पूस की रात’ का पात्र है। इस कहानी के पात्र-हल्कू, मुन्नी, सहना एवं झबरा हैं। ‘झबरा’ हल्कू के कुते का नाम है।

40. 'कफन' कहानी में घीसू और माधव कफन के पैसे का क्या करते हैं?

- (a) पूड़ियाँ खरीद कर खाते हैं (b) बोतल भर शराब पीते हैं
(c) इनमें से कोई काम नहीं करते (d) उपर्युक्त दोनों काम करते हैं

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'कफन' कहानी में घीसू और माधव कफन के पैसे से शराब, पूड़ियाँ, भूनी हुई मछली आदि खरीद कर खाते हैं।

41. 'दामुल का कैदी' के लेखक कौन हैं?

- (a) प्रसाद (b) सुदर्शन
(c) प्रेमचन्द (d) यशपाल

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'दामुल का कैदी' के लेखक प्रेमचन्द हैं। यह उनकी प्रारम्भिक कहानी है। इस पर लोकवार्ताओं का प्रभाव है। 'दामुल का कैदी' कथानक लिखने में पुनर्जन्म का भी सहारा लिया गया है।

42. निम्नलिखित में से किस कहानी के लेखक प्रेमचन्द नहीं हैं?

- (a) बड़े घर की बेटा (b) मिस पद्मा
(c) ठाकुर का कुआँ (d) छोटा जादूगर

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

'छोटा जादूगर' जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखी गयी कहानी है, जबकि शेष कहानियाँ प्रेमचन्द की हैं।

43. प्रेमचन्द की कौन-सी कृति अंग्रेजों द्वारा जब्त कर ली गई थी?

- (a) काया कल्प (b) सोजेवतन
(c) निर्मला (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

सोजेवतन, यानी देश का दर्द प्रेमचन्द की उर्दू कहानियों का यह पहला संग्रह 1907 में 'नवाब राय' (घर का नाम धनपत राय) के नाम से छपा। अंग्रेजी हुकमरानों को इन कहानियों में बगावत की गूँज सुनाई दी। हमीरपुर के कलक्टर ने प्रेमचन्द को बुलवाकर उनसे इन कहानियों के बारे में पूछताछ की। प्रेमचन्द ने अपना जुर्म कुबूल किया। उन्हें कड़ी चेतावनी दी गई और सोजेवतन की 500 प्रतियाँ जो अंग्रेजी हुकूमत के अफसरों ने जगह-जगह से जब्त की थीं, उनको सरेआम जलाने का हुक्म दिया। सोजेवतन में पाँच कहानियाँ थीं, जिसमें मुंशी जी की सबसे पहली छोटी कहानी 'दुनियाँ सबसे अनमोल रत्न' भी शामिल है। इसके बाद वे 'प्रेमचन्द' नाम से लेखन कार्य करने लगे।

44. प्रेमचन्द की कृति, जिसे ब्रिटिश शासन द्वारा जब्त कर लिया गया था, है-

- (a) सोजेवतन (b) कर्मभूमि
(c) गबन (d) निर्मला

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. प्रेमचन्द की किस कृति को प्रतिबन्धित किया गया था?

- (a) कर्बला (b) सोजेवतन
(c) निर्मला (d) गबन

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. प्रेमचन्द उर्दू में किस नाम से लिखते थे?

- (a) धनपत राय (b) नवाब राय
(c) गणपत राय (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. 'गुण्डा' कहानी 'प्रसाद' के किस कहानी संग्रह में संकलित है?

- (a) इन्द्रजाल (b) आकाशदीप
(c) प्रतिध्वनि (d) आँधी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

'गुण्डा' कहानी इन्द्रजाल कहानी संग्रह में संकलित है, जिसके लेखक जयशंकर प्रसाद हैं। इन्द्रजाल कहानी-संग्रह में कुल 14 कहानियाँ हैं। इसका प्रकाशन सन् 1936 में हुआ था। इसमें इन्द्रजाल, सलीम, छोटा जादूगर, नूरी, परिवर्तन, सन्देह, भीख में, चित्रवाले पत्थर, चित्र मन्दिर, गुण्डा, अनबोला, देवरथ, विराम चिह्न और सालवती कहानियाँ हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- जयशंकर प्रसाद की प्रथम कहानी 'ग्राम' 1911 ई. में इन्दु में प्रकाशित हुई।
- छाया (1912), प्रथम कहानी-संग्रह है, जिसमें 5 कहानियाँ-ग्राम, चन्दा, रसिया बालम, मदन-मृणालिनी, तानसेन शामिल हैं। छाया के दूसरे संस्करण (1918) में 6 कहानियाँ शामिल की गई हैं-शरणगत, सिन्दूर की शपथ, वित्तौड़ का उद्धार, अशोक, जहाँआरा और गुलाम।
- कहानी-संग्रह प्रतिध्वनि (1926) में 15 कहानियाँ-प्रसाद, गूढ़भाई, गुदड़ी के लाल, अघोरी के लाल, पाप की पराजय, सहयोग, पत्थर की पुकार, उस पार का योगी, करुणा की विजय, खंडहर की लिपि, कलावती की शिक्षा, चक्रवर्ती का स्तम्भ, दुखिया, प्रतिभा, प्रलय हैं।

➤ कहानी-संग्रह आकाशदीप (1929) में 19 कहानियाँ-आकाशदीप, ममता, स्वर्ण के खंडहर, सुनहला साँप, हिमालय का पथिक, भिखारिन, प्रतिध्वनि, कला, देवदासी, समुद्र-संतरण, बैरागी, बंजारा, चूड़ीवाला, अपराधी, प्रणय चिह्न, रूप की छाया, ज्योतिष्मती, रमला और बिसाती हैं।

➤ कहानी संग्रह आँधी (1929) में 11 कहानियाँ हैं-आँधी, मधुआ, दासी, घीसू, बेड़ी, व्रतभंग, ग्राम-गीत, विजया, अमिट स्मृति, नीरा और पुरस्कार।

48. प्रसाद की 'गुण्डा' कहानी में इतिहास के किस युग का चित्रण है?

- (a) सल्तनत युग
(b) मुगल शासकों का युग
(c) विक्टोरिया का शासन
(d) ईस्ट इंडिया कम्पनी का समय

दिल्ली केंद्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

प्रसाद की 'गुण्डा' कहानी का विषय क्षेत्र आरम्भिक ब्रिटिश काल के इतिहास से जुड़ा है। इस कहानी में गुण्डा नन्हकू सिंह की पुरुष वृत्ति और अन्तस में छुपी प्रेम-भावना के उदात्त रूप को व्यक्त किया गया है। इस कहानी में बलवंत सिंह, राजा चेतसिंह, अलाउद्दीन कुबरा, मनियार सिंह (नन्हकू सिंह) और राजमाता पन्ना ये सारे पात्र ऐतिहासिक हैं।

49. नारी पात्र 'मधुलिका' का सम्बन्ध किस कहानी से है?

- (a) आकाशदीप (b) पुरस्कार
(c) देवदासी (d) इन्द्रजाल

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

एक खास प्रकार के नारी पात्रों की सृष्टि में जयशंकर प्रसाद जी अद्वितीय हैं, जो अपने निश्चल प्रेम, त्याग और बलिदान से पाठकों पर अमिट छाप छोड़ जाते हैं। 'आकाशदीप' की चम्पा, 'देवरथ' की सुमाता तथा 'पुरस्कार' की मधुलिका आदि प्रसाद जी की अनुपम नारी सृष्टि हैं।

50. कहानी-संग्रह 'दूसरा ताजमहल' की लेखिका हैं-

- (a) नासिरा शर्मा (b) क्षमा कौल
(c) ममता कालिया (d) अनिता जैन

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

इलाहाबाद में जन्मी नासिरा शर्मा सृजनात्मक लेखन के साथ ही स्वतन्त्र पत्रकारिता में संलग्न हैं। कहानी, उपन्यास, नाटक, लेख तथा सांस्कृतिक एवं कलात्मक गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध नासिरा जी की कहानी-संग्रह 'दूसरा ताजमहल' ख्याति प्राप्त है। इनकी अन्य कहानी-संग्रह हैं-शामी

कागज, इब्ने मरियम संगसार, सबीना के चालीस चोर, खुदा की वापसी, इंसानी नस्ल तथा बुतखाना। इनके प्रमुख उपन्यास हैं-सात नदियाँ एक समन्दर, शात्मली, ठीकरे की मँगनी, जिन्दा मुहावरे, अक्षयवट, कुईयाँजान, जीरो रोड आदि। दहलीज, प्लेटफॉर्म नं. सेवेन आदि इनके प्रमुख नाटक हैं। राष्ट्र और मुसलमान, औरत के लिए औरत, किताब के बहाने इनके प्रसिद्ध लेख हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- क्षमा कौल द्वारा रचित उपन्यास 'दर्दपुर' है।
➤ ममता कालिया द्वारा लिखित कहानी-संग्रह हैं- छुटकारा, उसका यौवन, जाँच अभी जारी है, प्रतिदिन और चर्चित कहानियाँ।

51. निम्नलिखित में से कौन-सा कहानी-संग्रह नासिरा शर्मा का है?

- (a) चल खूसरो घर आपने (b) स्वीमिंग पूल
(c) बोलने वाली औरत (d) पत्थर गली

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

नासिरा शर्मा की प्रमुख कहानी-संग्रह हैं-पत्थर गली (1986), 'संगसार' (1993), 'इब्ने मरियम' (1994), 'सबीना के चालीस चोर' (1997), 'खुदा की वापसी' (1998), 'इंसानी नस्ल' (2001), 'दूसरा ताजमहल' (2002)।

52. 'दुलाई वाली' किस विधा की रचना है?

- (a) कहानी (b) रेखाचित्र
(c) उपन्यास (d) संस्मरण

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

'दुलाई वाली' कहानी विधा की रचना है। इसकी लेखिका बंग महिला (राजेन्द्र बाला घोष) हैं। यह हिन्दी की पहली कहानी लेखिका हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- शिल्पविधि की दृष्टि से हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी है- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कृत 'ग्यारह वर्ष का समय'।
➤ कुछ आलोचक 'दुलाई वाली' कहानी को हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी मानते हैं।

53. हिन्दी की पहली कहानी लेखिका हैं-

- (a) चन्द्रकिरण सौनरेक्सा (b) बंग महिला
(c) होमवती देवी (d) चन्द्रमुखी ओझा

T.G.T. परीक्षा, 2011

दिल्ली केंद्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

54. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित 'ग्यारह वर्ष का समय' किस विधा की रचना है?

- (a) कहानी (b) उपन्यास
(c) डायरी (d) संस्मरण

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी की प्रथम कहानी किसे मानते हैं?

- (a) ग्यारह वर्ष का समय (b) इन्दुमती
(c) दुलाई वाली (d) गुलबहार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' 1900 ई. में प्रकाशित हुई। रामचन्द्र शुक्ल ने इसे हिन्दी की पहली कहानी माना है। बच्चन सिंह ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' में लिखा है कि गोस्वामी जी की ही कहानी 'प्रणयिनी परिणय' (1887) को पहली कहानी माना जा सकता है, यद्यपि इसे गोस्वामी जी ने उपन्यास कहा है। गोस्वामी ने इन्दुमती को भी उपन्यास कहा है। कुछ लोग माधवराव सप्ते की कहानी 'टोकरी भर मिट्टी' (1901) को पहली कहानी कहते हैं, पर तिथि को देखते हुए 'प्रणयिनी-परिणय' या 'इन्दुमती' ही पहली कहानी हो सकती है।

56. अपने जीवन-काल में सिर्फ तीन कहानियों की रचना कर हिन्दी कथा साहित्य में अपनी अमिट पहचान बना लेने वाले रचनाकार का नाम है—

- (a) इलाचन्द्र जोशी (b) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
(c) अज्ञेय (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की प्रसिद्ध कहानी 'उसने कहा था' संवत् 1972 में पहले महायुद्ध के समय में निकली थी। उसमें वचन निभाने की वीरता और भावुकता से पूर्ण एक सजीव चित्र है। गुलेरी जी ने 'बुद्ध का काँटा', 'सुखमय जीवन' और 'उसने कहा था' तीन कहानियाँ लिखकर अपूर्व ख्याति प्राप्त कर ली।

57. 'बुद्ध का काँटा' कहानी के लेखक हैं—

- (a) बेचन शर्मा 'उग्र' (b) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
(c) प्रेमचन्द (d) विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'

T.G.T. पुनर्परीक्षा 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

58. निम्नलिखित में से कौन-सी कहानी पं. चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' कृत नहीं है?

- (a) सुखमय जीवन (b) बुद्ध का काँटा
(c) ग्यारह वर्ष का समय (d) उसने कहा था

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

59. 'एक पति के नोट्स' कहानी के लेखक हैं—

- (a) गिरिराज किशोर (b) महेन्द्र भल्ला
(c) गोविन्द मिश्र (d) राजी सेठ

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'एक पति के नोट्स' (1967 ई.) कहानी नहीं है। यह एक उपन्यास है, जिसके लेखक महेन्द्र भल्ला हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं—दूसरी तरफ (1976 ई.), उड़ने से पेक्षर (1987 ई.), दो देश और तीसरी उदासी (1997 ई.)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'एक पति के नोट्स' में कथानायक अपनी पत्नी सीता की एकरसता से बोर होकर अपने पड़ोसी की पत्नी संध्या की ओर बढ़ता है। उसे घर बुलाकर सम्बन्ध स्थापित करता है, किन्तु यहाँ उसे कुछ नया अनुभव नहीं होता।
- इस उपन्यास में सेक्स के माध्यम से आज के जीवन की ऊब और निरर्थकता को प्रकट किया गया है।
- 'दूसरी तरफ' उपन्यास में कथा नायक जीविका की तलाश में विदेश जाता है।

60. 'हरी बिन्दी' किस साहित्यकार की कहानी है?

- (a) मैत्रेयी पुष्पा (b) ऊषा प्रियंवदा
(c) मृदुला गर्ग (d) मन्नू भंडारी

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'हरी बिन्दी' मृदुला गर्ग द्वारा लिखी गयी कहानी है। इनके द्वारा रचित कहानी-संग्रह शहर के नाम, मेरे देश की माटी, अहा एवं कहानियाँ-रगेशियर से, यहाँ कमलिनी खिलती हैं, जुगगी चाचा की मोटर साइकिल, बाल गुरु, खुश किस्मत, बेंच पर बूढ़े आदि हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मैत्रेयी पुष्पा कृत कहानियाँ हैं—लालमनियाँ तथा अन्य कहानियाँ (कहानी संग्रह), त्रिया हठ (कहानी-संग्रह), फैसला, सिस्टर, सेंध, अब फूल नहीं खिलते, बोझ, पगला गई है, भागवती, छॉह, तुम किसकी हो बिन्नी? आदि।
- ऊषा प्रियंवदा द्वारा रचित कहानी-संग्रह जिंदगी और गुलाब के फूल, एक कोई दूसरा, मेरी प्रिय कहानियाँ आदि हैं।

61. 'सफेद कौआ' कहानी के लेखक हैं—

- (a) मंजुल भगत (b) रमेश बतरा
(c) मृदुला गर्ग (d) सुरेन्द्र तिवारी

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

'सफेद कौआ' (1986) में प्रकाशित कहानी की लेखिका मंजुल भगत हैं। ये मृदुला गर्ग की बहन हैं। इनकी अन्य कहानियाँ हैं— गुलमोहर के गुच्छे (1974), टूटा हुआ इन्द्रधनुष (1976), क्या छूट गया (1976), आत्महत्या के पहले (1979), कितना छोटा सफर (1979), बावन पत्ते एक जोकर (1982), दूत (1992), बूंद (1998), अंतिम बयान (2001)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मंजुला की पहली कहानी 'शादी की साल गिरह' और अन्तिम कहानी 'ठंडमार सिंह' है।
- क्या छूट गया और टूटा हुआ इन्द्रधनुष लम्बी कहानियाँ हैं। इन्हें लघु उपन्यास भी कहा जाता है।
- गुलमोहर के गुच्छे में मुख्यतः नारी के विभिन्न रूपों और स्थितियों का ही चित्रण किया गया है।
- 'सफेद कौआ' में अपनी कथा भूमि को विस्तृत किया है।
- इनके ग्यारह कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

62. 'जंक्शन' कहानी के लेखक हैं -

- (a) मुक्तिबोध (b) अज्ञेय
(c) दूधनाथ सिंह (d) यशपाल

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

'जंक्शन' कहानी मुक्तिबोध की है, जिसमें निम्न वर्ग के प्रति उनकी घृणा करने की मनोवृत्ति का परिचय मिलता है।

63. 'सतह से उठता आदमी' की विधा है—

- (a) काव्य (b) कहानी
(c) नाटक (d) नाट्य काव्य

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

'सतह से उठता आदमी', कहानी विधा है, जिसके लेखक राजानन माधव 'मुक्तिबोध' हैं। उनके द्वारा रचित अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं— कविता-संग्रह चौंद का मुँह टेढ़ा है, भूरी-भूरी खाक धूला कहानी-संग्रह काठ का सपना, विपात्र, सतह से उठता आदमी है। इनकी आलोचनात्मक कृतियाँ इस प्रकार हैं—कामाखी : एक पुनर्विचार, नई कविता का आत्मसंघर्ष, नये साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, समीक्षा की समस्याएँ, एक साहित्यिक की डायरी आदि।

64. निम्नांकित में से कौन कथाकार नहीं है?

- (a) कृष्णा सोबती (b) ममता कालिया
(c) निर्मला जैन (d) मृणाल पाण्डेय

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

निर्मला जैन कथाकार नहीं, बल्कि आलोचक हैं। रस सिद्धान्त और सौन्दर्यशास्त्र (1967), आधुनिक साहित्य : मूल्य और मूल्यांकन (1980), हिन्दी आलोचना 20वीं शताब्दी (1982), आधुनिक हिन्दी काव्य : रूप और संरचना (1984), कथा प्रसंग : यथा प्रसंग (2000), डॉ. नगेन्द्र (2003), काव्य चिन्तन की पश्चिमी परम्परा (2006), कथा समय में तीन हस्तक्षर (2011), हिन्दी आलोचनात्मक का दूसरा पाठ (2013), प्लेटो के काव्य सिद्धान्त, कविता के प्रति संसार आदि इनकी आलोचनात्मक पुस्तकें हैं।

65. 'सीट नं. 6' किस लेखिका का कहानी-संग्रह है?

- (a) मन्नू भंडारी (b) मंजुल भगत
(c) ममता कालिया (d) इंदुबाली

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

'सीट नं. 6' ममता कालिया की कहानी-संग्रह है। इसका प्रकाशन वर्ष 2014 में हुआ है। 'काके दी हट्टी', 'मुखौटा' तथा 'नयी सदी की पहचान' इनकी अन्य कहानी-संग्रह हैं।

उपन्यास

1. डॉ. काशीनाथ सिंह द्वारा लिखित उपन्यास 'उपसंहार' की कथावस्तु का आधार है—

- (a) सीता-निष्कासन के बाद राम का जीवन
(b) महाभारत-युद्ध के बाद कृष्ण का जीवन
(c) ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध का जीवन
(d) दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद गाँधी का जीवन

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

डॉ. काशीनाथ सिंह द्वारा लिखित उपन्यास 'उपसंहार' 'महाभारत-युद्ध के बाद कृष्ण के जीवन' पर आधारित कथावस्तु है। इस उपन्यास में श्रीकृष्ण के सद्कार्यों का बखान नहीं, बल्कि उस द्वारकाधीश कृष्ण का उत्तरार्ध है, जिसे महाभारत युद्ध के पश्चात उस युद्ध की विभिषिका ने कहीं दूर नेपथ्य में धकेल दिया गया है।

2. 'अपने-अपने अजनबी' उपन्यास के लेखक हैं—

- (a) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(b) प्रभाकर माचवे
(c) भगवतीचरण वर्मा
(d) यशपाल

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

'अपने-अपने अजनबी' उपन्यास के रचनाकार सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' हैं। यह उपन्यास 'अज्ञेय' के अन्य उपन्यासों से भिन्न प्रकृति की रचना है। इस उपन्यास में यथार्थ बोध के वैयक्तिक पक्ष की प्रधानता है। इस रचना को कुछ विद्वानों ने अस्तित्ववादी चेतना का उपन्यास माना है। 'अज्ञेय' ने इसकी रचना दो पात्रों, योके और सेल्मा के माध्यम से की है।

3. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए—

सूची-I

(उपन्यास)

- (A) अल्मा कबूतरी
(B) छप्पर
(C) मुक्तिपर्व
(D) आवां

सूची-II

(रचनाकार)

- (i) जय प्रकाश कर्दम
(ii) चित्रा मुद्गल
(iii) मैत्रेयी पुष्पा
(iv) मोहनदास नैमिषारण्य

कूट:

- (A) (B) (C) (D)
(a) ii iv i iii
(b) iv iii ii i
(c) i ii iii iv
(d) iii i iv ii

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

(उपन्यास)

- अल्मा कबूतरी
छप्पर
मुक्तिपर्व
आवां

सूची-II

(रचनाकार)

- मैत्रेयी पुष्पा
जय प्रकाश कर्दम
मोहनदास नैमिषारण्य
चित्रा मुद्गल

4. ' 'शेखर : एक जीवनी' को मैं हिन्दी के पाँच सबसे महत्वपूर्ण उपन्यासों में मानता हूँ।'—प्रसिद्ध उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी' के सन्दर्भ में यह सूक्तिपरक अभिमत इनमें से किसका है?

- (a) डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी (b) डॉ. रामकमल राय

(c) डॉ. विद्यानिवास मिश्र

(d) डॉ. नामवर सिंह

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

' 'शेखर : एक जीवनी' को मैं हिन्दी के पाँच सबसे महत्वपूर्ण उपन्यासों में मानता हूँ।' यह सूक्तिपरक अभिमत डॉ. नामवर सिंह का है।

5. समाज से उपेक्षित भंगियों की जीवन-गाथा.....उपन्यास में है।

- (a) जुलूस (b) नाच्यों बहुत गोपाल
(c) मैला आँचल (d) परती परिकथा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'नाच्यों बहुत गोपाल' यशस्वी साहित्यकार अमृतलाल नागर का, उनके अब तक के उपन्यासों की लीक से हटकर सर्वथा मौलिक उपन्यास है। इसमें 'मेहतर' कहे जाने वाले अछूतों में भी अछूत, अभागे अंत्यजों के चारों ओर की कथा का ताना-बाना बुना गया है और उनके अंतरंग जीवन की करुणामयी रसार्द्र और हृदयग्राही झाँकी प्रस्तुत की गई है। ढाई-तीन वर्षों के अथक परिश्रम से, विभिन्न मेहतर बस्तियों के सर्वेक्षण व वहाँ के निवासियों के 'इंटरव्यू' के आधार पर लिखी गयी इस बृहद् औपन्यासिक कृति में नागर जी ने सहृदय कथाकार और सजग समाजशास्त्री का अद्भुत समन्वय हुआ है।

6. 'तीसरी सत्ता' उपन्यास के लेखक का क्या नाम है?

- (a) गिरिराज किशोर (b) श्रीलाल शुक्ल
(c) गोविन्द मिश्र (d) निर्मल वर्मा

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

तीसरी सत्ता, लोग, जुगलबन्दी, ढाई घर, इन्द्र सुने, यथा प्रस्तावित आदि उपन्यास के लेखक गिरिराज किशोर हैं। इनकी अन्य रचनाएँ निम्न हैं—
कहानी संग्रह—नीम के फूल, चार मोती बेआब, पेपरवेट, रिश्ता और अन्य कहानियाँ, शहर-दर-शहर, यह देह किसकी है? आदि।
नाटक—नरमेघ, प्रजा ही रहने दो, चेहरे-चेहरे किसके चेहरे, केवल मेरा नाम लो, जुर्म आयद, काठ की तोप, लघु नाटक—मोहन का दुःख आदि।

7. 'तीस-चालीस-पचास' उपन्यास के लेखक हैं :

- (a) केशवप्रसाद मिश्र (b) भैरवप्रसाद
(c) राजेन्द्र प्रसाद (d) प्रभाकर माचवे

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

प्रभाकर माचवे के तीन उपन्यास 'दर्द के पैवन्द', 'किसलिए' तथा 'तीस-चालीस-पचास' इन तीनों उपन्यासों में आधुनिक जीवन की मूल्यहीनता एवं खोखलेपन के वर्णन का प्रयास किया गया है।

8. 'फांस' उपन्यास के लेखक हैं-

- (a) पंकज विष्ट (b) संजीव
(c) शिवमूर्ति (d) मिथिलेश्वर

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर-(b)

'फांस' उपन्यास के लेखक संजीव हैं। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि है- देशभर में लगभग पिछले दो दशकों से बढ़ रही किसानों की आत्महत्याएँ। हालाँकि उपन्यास में महाराष्ट्र के यवतमाल जिले के बनगाँव नामक गाँव का चित्रण किया गया है, लेकिन इसमें अंध्र प्रदेश व कर्नाटक के किसानों सहित भारत के उन सभी किसानों की कहानियाँ शामिल हैं, जिन्हें पहले जी.एम.बी.जों का इस्तेमाल करने के लिए फुसलाया गया और फिर कर्ज दिया गया। लेकिन सूखे की मार और कुछ प्रकृति के साथ अत्याचार के कारण सीधे-साधे किसानों की जिन्दगी कर्ज और सूखे के बोझ तले होने के कारण आत्महत्या की तरफ बढ़ती गई।

9. निम्नलिखित में से कौन-सा उपन्यास कमलेश्वर का नहीं है?

- (a) काली आँधी (b) डाक बंगला
(c) चौखट (d) कितने पाकिस्तान

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर-(c)

कमलेश्वर का नाम नयी कहानी आन्दोलन से जुड़े अगुआ कथाकारों में आता है। उनकी पहली कहानी 1948 में प्रकाशित हुई थी, परन्तु 'राजा निरबंया' (1957) से वे बड़े कथाकार बन गये। कमलेश्वर ने तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। उनकी कहानियों में 'मांस का दरिया' नीली झील, तलाश, बयान, नागमणि, अपना एकान्त, आसक्ति, जिन्दा-मुर्दे, जार्ज पंचम की नाक, मुर्दों की दुनिया, कसबे का आदमी एवं स्मारक आदि उल्लेखनीय हैं। चौघट उपन्यास के रचनाकार द्रोणवीर कोहली हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➤ कमलेश्वर की अन्य कृतियाँ इस प्रकार हैं-

उपन्यास- एक सड़क सत्तावन गलियाँ, डाक बंगला, तीसरा आदमी, समुद्र में खोया आदमी, काली आँधी, लौटे हुए मुसाफिर, वही बात, आगामी अतीत, सुबह दोपहर शाम, रेगिस्तान, एक और चन्द्रकान्ता, कितने पाकिस्तान आदि।

नाटक- अधूरी आवाज, रेत पर लिखे नाम, हिन्दोस्ताँ हमारा।

10. चंद हसीनों के खतून.....किसकी रचना है?

- (a) आगा हश्र काश्मीरी (b) मुंशी अजमेरी
(c) पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' (d) मुंशी सदासुख लाल

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर-(c)

वर्ष 1927 में प्रकाशित पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' के लघु व्यंग्य उपन्यास 'खुदाराम' और 'चंद हसीनों के खतून' में तीक्ष्ण व्यंग्य की बानगी प्रस्तुत है।

11. किस भाषा में उपन्यास को 'कादम्बरी' कहते हैं?

- (a) संस्कृत (b) तमिल
(c) गुजराती (d) मराठी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर-(d)

'मराठी' में उपन्यास के अर्थ में कादम्बरी शब्द एक जातिवाचक संज्ञा बन गया है।

12. उपन्यास और उपन्यासकार की दृष्टि से एक युग्म अशुद्ध है-

- (a) नीला चाँद - शिवप्रसाद सिंह
(b) महाभोज - उषा प्रियंवदा
(c) सारा आकाश - राजेन्द्र यादव
(d) मुझे चाँद चाहिए - सुरेन्द्र वर्मा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर-(b)

महाभोज, मन्नू भण्डारी का उपन्यास है। शेष युग्म सही हैं।

13. 'अजय की डायरी' (देवराज) किस विधा की कृति है?

- (a) डायरी (b) उपन्यास
(c) नाटक (d) कहानी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर-(b)

देवराज नन्द किशोर मूलतः चिंतक हैं और उनकी साहित्य चिंता भी उनकी व्यापक संस्कृति-चिंता के अन्तर्गत उपलब्ध रूप में ही है। ये मानवतावादी परम्परा के विचारक हैं और कृति के बजाय कृतित्व के लिए आवश्यक वातावरण और प्रेरणाओं को स्पष्ट करने में सहज उत्साह का अनुभव करते हैं। देवराज नन्द किशोर की अन्य रचनाएँ हैं- पथ की खोज (उपन्यास), साहित्य चिंता, आधुनिक समीक्षा, छायावाद का पतन, साहित्य और संस्कृति, अजय की डायरी (उपन्यास), संस्कृति का दार्शनिक विवेचन, इतिहास पुरुष (कविता संग्रह), प्रतिक्रियाएँ, मैं, वे और आप (उपन्यास)। इनकी सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक संस्कृति का दार्शनिक विवेचन है।

14. निम्नलिखित में से कौन-सी औपन्यासिक कृति "घनीभूत वेदना की केवल एक रात में देखे हुए विजन (vision) को शब्दबद्ध करने का प्रयत्न है"?

- (a) भूले-बिसरे चित्र (b) अनामदास का पोथा
(c) अपने-अपने अजनबी (d) शेखर: एक जीवनी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर-(d)

लाहौर जेल में रहते वक्त तत्कालीन परिस्थितियों के मुताबिक अज्ञेय के मन में फाँसी की सजा निश्चित हो गई थी। उस रात के वक्त जो घनीभूत वेदना उनके भीतर उमड़ आयी थी, उसी की परिणति है 'शेखर एक जीवनी'। अज्ञेय के ही शब्दों में "घनीभूत वेदना की केवल एक रात में देखे हुए विजन (Vision) को शब्दबद्ध करने का प्रयत्न है।" अपने जीवन का संभावित अन्त, फाँसी की छाया में उन्होंने अपना जीवन का मूल्य, अर्थ एवं सिद्धि को स्थापित करना चाहा। 'शेखर एक जीवनी' उपन्यास दो खण्डों में विभक्त है, जिसका मुख्य पात्र शेखर है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➤ 'शेखर एक जीवनी' वस्तुतः जीवनी मूलक उपन्यास है, जिसमें एक जीवन की वास्तविकता का साक्षात्कार होता है, तो दूसरी ओर औपन्यासिक शिल्प एवं कल्पना के स्थापत्य का अनायास रूप से दर्शन होती है। 'शेखर एक जीवनी' को एक 'चरित्र उपन्यास' की संज्ञा दी जा सकती है। 'भूले-बिसरे चित्र' भगवती चरण वर्मा का उपन्यास है। अनामदास का पोथा, हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचना है। 'अपने-अपने अजनबी', 'अज्ञेय' द्वारा लिखित उपन्यास है।

15. 'यह पथ बंधु था' उपन्यास के लेखक हैं—

- (a) नरेश मेहता (b) प्रभाकर माचवे
(c) भैरव प्रसाद गुप्त (d) रांगेय राघव

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'यह पथ बंधु था' (1962) उपन्यास के लेखक नरेश मेहता हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं— डूबते मस्तूल (1954), धूमकेतु : एकश्रुति (1962), दो एकांत (1964), नदी यशस्वी है (1967), प्रथम फाल्गुन (1968), उत्तर कथा (भाग एक-1979, भाग दो- 1982)।

16. इनमें से कौन-सा उपन्यास प्रेम विवाह और सेक्स से सम्बन्धित है?

- (a) इरावती (b) तितली
(c) कंकाल (d) इनमें से कोई नहीं

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित उपन्यास 'कंकाल' प्रेम विवाह और सेक्स से सम्बन्धित है, जिसमें समाज की त्याज्य, अवैध और अज्ञात-कुलशील संतानों की कथा कही गई है।

17. 'दुःखम-सुखम' उपन्यास की लेखिका हैं—

- (a) चित्रा मुद्गल (b) प्रभा खेतान
(c) ममता कालिया (d) नासिरा शर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'दुःखम-सुखम' (2009) उपन्यास की लेखिका ममता कालिया हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं— बेघर (1971), नरक दर नरक (1975), प्रेम कहानी (1980), लड़कियाँ (1987), एक पत्नी के नोट्स (1997), दौड़ (2000) और अँधेरे का ताला (2009)।

18. निम्न में से कौन उपन्यास एवं उपन्यासकार का युग्म सही नहीं है?

- (a) महाभोज-मन्नू भण्डारी (b) आवां-चित्रा मुद्गल
(c) तत्सम-राजी सेठ (d) मुझे सूरज चाहिए-सुरेन्द्र वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

विकल्प (d) युग्म गलत है। सुरेन्द्र वर्मा ने 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास लिखा है, न कि 'मुझे सूरज चाहिए'। महाभोज-मन्नू भण्डारी का, आवां-चित्रा मुद्गल का तथा तत्सम-राजी सेठ का उपन्यास है।

19. 'सुरंग में सुबह' उपन्यास के लेखक हैं—

- (a) शिवमूर्ति (b) मिथिलेश्वर
(c) संजीव (d) अमरकान्त

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'सुरंग में सुबह' उपन्यास के लेखक मिथिलेश्वर हैं। इनके अन्य उपन्यास इस प्रकार हैं—झुनिया (1980), युद्धस्थल (1981), प्रेम न बाड़ी ऊपजै (1995), यह अन्त नहीं (2000) एवं एक थी मुनिना।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➤ मिथिलेश्वर को 'बाबूजी' कहानी-संग्रह के लिए मध्य प्रदेश साहित्य परिषद द्वारा वर्ष 1976 के 'अखिल भारतीय मुक्तिबोध पुरस्कार', 'बन्द रास्तों के बीच' कहानी-संग्रह के लिए सोवियत रूस द्वारा वर्ष 1979 के 'सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार', 'मेघना का निर्णय' कहानी-संग्रह के लिए उत्तर-प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा वर्ष 1982 के 'यशपाल पुरस्कार' तथा निखिल भारत बंग साहित्य द्वारा राज्य के सर्वोत्कृष्ट हिन्दी लेखन के लिए वर्ष 1983 के 'अमृत पुरस्कार' से पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया।

20. सुरेन्द्र वर्मा कृत प्रसिद्ध उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' की नायिका हैं—

- (a) वर्षा वशिष्ठ (b) अनन्या
(c) महुआ (d) मधूलिका

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

सुरेन्द्र वर्मा कृत प्रसिद्ध उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' की नायिका हैं-वर्षा वशिष्ठा। इस उपन्यास में सुरेन्द्र वर्मा ने समाज, रंगमंच और सिने जगत से जुड़े विभिन्न पहलुओं को छूने की कोशिश की है। वर्ष 1996 में इस रचना के लिए इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया। सुरेन्द्र वर्मा की अन्य रचनाएँ हैं-

उपन्यास- 'अँधेरे से परे', दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, काटना शामी का वृक्ष, पद्म पंखुरी की धार से।

कहानी-संग्रह-जहाँ बारिश नहीं।

नाटक-सेतुबंध, द्रौपदी, सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, आठवाँ सर्ग, छोटे सैयद बड़े सैयद, एक-दूनी-एक, शकुंतला की अंगूठी।

21. 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास के लेखक हैं-

- (a) विक्रम सेठ (b) सुरेन्द्र वर्मा
(c) रांगेय राघव (d) अरुन्धती राय

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. 'शेष कादम्बरी' उपन्यास की लेखिका हैं-

- (a) मृदुला गर्ग (b) रुषा प्रियंवदा
(c) मन्नू भण्डारी (d) अलका सारावगी

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'शेष कादम्बरी' उपन्यास की लेखिका अलका सारावगी हैं। उनके अन्य उपन्यास हैं- 'कलि-कथा : वाया बाईपास' (1998), कोई बात नहीं (2004) और ब्रेक के बाद (2008)।

23. 'लालटीन की छत' के लेखक हैं-

- (a) भीष्म साहनी (b) रुषा प्रियंवदा
(c) निर्मल वर्मा (d) नरेन्द्र कोहली

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

'लालटीन की छत' (1974) एक उपन्यास है, जिसके लेखक निर्मल वर्मा हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं- वे दिन (1964), एक विथड़ा सुख (1979), रात का रिपोर्ट (1989), अंतिम अरण्य (2000)।

24. 'लालटीन की छत'.....की रचना है।

- (a) मन्नू भंडारी (b) कृष्णा सोबती
(c) ममता कालिया (d) निर्मल वर्मा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. 'वे दिन' किस गद्यात्मक विधा की रचना है?

- (a) संस्मरण (b) कहानी
(c) यात्रा-वृत्तांत (d) उपन्यास

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. 'निष्कवच' उपन्यास की लेखिका हैं :

- (a) क्षमा कौल (b) सूर्यबाला
(c) मधु काँकरिया (d) राजीसेठ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'निष्कवच' राजीसेठ का उपन्यास है। इनका एक अन्य उपन्यास तत्-सम है। 'अंधे मोड़ से आगे', 'तीसरी हथेली', 'यात्रा-मुक्त', 'दूसरे देश काल में', 'यह कहानी नहीं' कहानी संग्रह है।

27. निम्नलिखित में से अमृतराय का उपन्यास है-

- (a) विषाद मठ (b) हुजूर
(c) बीज (d) दुःख मोचन

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

अमृतराय के पहले उपन्यास 'बीज' (1952) में दूसरे महायुद्ध, सन् बयालीस की क्रान्ति, बंगाल का दुर्भिक्ष, आजाद हिन्द फौज, विद्यार्थियों का जुलूस और आन्दोलन, स्वाधीनता दिवस आदि घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान जीवन की विषमताओं का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास पर मार्क्सवादी प्रभाव है। इनके अन्य उपन्यास हैं- नागफनी का देश (1953), हाथी के दाँत (1956), सुख-दुःख (1969), भटियाली (1969) आदि।

28. 'जुलूस' उपन्यास के लेखक हैं-

- (a) नागार्जुन (b) मोहन राकेश
(c) कमलेश्वर (d) फणीश्वरनाथ रेणु

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'जुलूस' (1965) उपन्यास फणीश्वरनाथ रेणु का है। जुलूस में पूर्वी बंगाल से आये शरणार्थियों की समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है। इनके अन्य उपन्यास हैं- मैला आँचल (1954), परती परिकथा (1957), दीर्घ तपा (1963), कितने चौराहे (1966) और पल्टूबाबू रोड (1979)। रामरतन राय (1971) 'रेणु' का अधूरा उपन्यास है। इसमें 'अंचलिकता' का वह रूप नहीं रह गया है, जो 'मैला आँचल' या 'परती परिकथा' में है।

29. आंचलिक उपन्यासों का प्रवर्तक किसे माना जाता है?

- (a) नागार्जुन (b) शिवपूजन सहाय
(c) फणीश्वरनाथ रेणु (d) शिवप्रसाद मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास ही सही अर्थों में 'आंचलिक' हैं। 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' में ग्रामांचलों के जितने विशद और सवाक् चित्र देखने को मिलते हैं, उतने अन्य तथाकथित आंचलिक उपन्यासों में नहीं। अतः फणीश्वरनाथ रेणु को आंचलिक उपन्यासों का प्रवर्तक माना जाता है। उन्होंने पहला 'मैला आँचल' लिखा तत्पश्चात् 'परती परिकथा'। रेणु के 'मैला आँचल' के प्रकाशन के पूर्व नागार्जुन का 'बालचनमा' (1952) प्रकाशित हो चुका था, पर इसे आंचलिक नहीं कहा गया, यद्यपि इसमें आंचलिकता का कम रंग नहीं है।

30. हिन्दी का पहला आंचलिक उपन्यास है—

- (a) मैला आँचल (b) परती परिकथा
(c) आधागाँव (d) वरुण के बेटे

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'मैला आँचल' किस प्रकार का उपन्यास है?

- (a) राजनीतिक (b) आदर्शवादी
(c) आंचलिक (d) ऐतिहासिक

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. 'आवारा मसीहा' किस उपन्यासकार की जीवनी से सम्बन्धित है?

- (a) शरत्चन्द्र (b) बंकिम चन्द्र
(c) अमृतलाल नागर (d) विमल मित्र

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

'आवारा मसीहा' उपन्यास, उपन्यासकार 'शरत्चन्द्र' की जीवनी से सम्बन्धित है। इसके लेखक विष्णु प्रभाकर हैं। ज्ञान चन्द्र जैन ने कथा शेष में अमृतलाल नागर की जीवनी लिखी है।

33. 'आवारा मसीहा' किसकी जीवनी पर आधारित उपन्यास है?

- (a) प्रेमचन्द (b) बंकिमचन्द्र
(c) शरत्चन्द्र (d) रवीन्द्रनाथ ठाकुर

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. 'चतुरी चमार' उपन्यास है—

- (a) प्रेमचन्द (b) निराला
(c) भगवती चरण वर्मा (d) जैनेन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'चतुरी चमार' निराला द्वारा लिखा गया उपन्यास है। इनके अन्य उपन्यास हैं—उप्सरा, अलक, निरुपमा, प्रभावती, कुल्लीभाट, बाते करनमे आदि।

35. श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास 'राग दरबारी' का 'रंगनाथ की वापसी' शीर्षक से नाट्यान्तर किसने किया है?

- (a) गिरीश रस्तोगी (b) कुसुम कुमार
(c) शोभना भूटानी (d) शान्ति मेहरोत्रा

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

गिरीश रस्तोगी ने श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास 'राग दरबारी' का नाट्य रूपान्तर 'रंगनाथ की वापसी' नाम से किया था।

36. 'राग दरबारी' के रचनाकार का नाम है—

- (a) मोहन राकेश (b) श्रीलाल शुक्ल
(c) हरिशंकर परसाई (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. श्रीलाल शुक्ल की रचना है—

- (a) आषाढ़ का एक दिन (b) कटरा बी आरजू
(c) राग दरबारी (d) सारा आकाश

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. निम्नलिखित उपन्यासों में श्रीलाल शुक्ल का कौन-सा उपन्यास है?

- (a) एक चिथड़ा सुख (b) तीसरा आदमी
(c) उखड़े हुए लोग (d) सीमाएँ टूटती हैं

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास हैं—सूनी घाटी का सूरज (1957), अज्ञातवास (1962), राग दरबारी (1968), आदमी का जहर (1972), सीमाएँ टूटती हैं (1973), मकान (1976), पहला पड़ाव (1987), विश्रामपुर का सन्त (1998), बब्बर सिंह और उसके साथी (1999), राग विराग (2001)। एक चिथड़ा सुखा निर्मल वर्मा, तीसरा आदमी-कमलेश्वर तथा उखड़े हुए लोग-राजेन्द्र यादव का उपन्यास है।

नोट—'तीसरा आदमी' विष्णु प्रभाकर का एकांकी संग्रह भी है।

39. 'सरकटी लाश' उपन्यास के लेखक हैं-

- (a) बाबू देवकी नाथ खत्री (b) गोपालराम गहमरी
(c) लज्जाराम मेहता (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

जासूसी उपन्यासों का प्रवर्तन गोपालराम गहमरी ने किया था। गोपालराम गहमरी अंग्रेज उपन्यासकार सर ऑर्थर कानन डायल से प्रभावित थे। उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'ए स्टडी इन स्कारलेट' (1887) को गोपालराम गहमरी ने 'गोविन्द राम' (1905) शीर्षक से हिन्दी में रूपान्तरित किया। सरकटी लाश (1900), खूनी कौन (1900), बेकसूर की फाँसी (1900), बेगुनाह का खून (1900), जमुना का खून (1900), डबल जासूस (1900), मायाविनी (1901), चक्करदार चोरी (1901), जासूस की भूल (1901), अद्भूत खून (1902), जासूस पर जासूसी (1904), जासूस चक्कर में (1906), इन्द्रजातिक जासूस (1910), लाइन पर लाश (1910), खूनी का भेद (1910), गुप्त भेद (1913), जासूस की ऐयारी (1914) आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

40. 'झूला नट' उपन्यास की रचनाकार हैं-

- (a) मैत्रेयी पुष्पा (b) मृदुला गर्ग
(c) रुषा प्रियंवदा (d) शिवानी

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'झूला नट' उपन्यास की रचनाकार मैत्रेयी पुष्पा हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं- स्मृतिदंश (1990), बेतवा बहती रही (1993), इदन्नमम (1994), चाक (1997), अल्मा कबूतरी (2000), अग्न पाखी (2001), विजन (2002), कहे ईसुरीफाग (2004), त्रिया हठ (2005) तथा गुनाह-बेगुनाह (2011) आदि।

41. 'चाक' उपन्यास की लेखिका हैं-

- (a) मैत्रेयी पुष्पा (b) मृदुला गर्ग
(c) ममता कालिया (d) मन्नू भण्डारी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. 'कठ गुलाब' किसकी रचना है?

- (a) मैत्रेयी पुष्पा (b) चित्रा मुद्गल
(c) मृदुला गर्ग (d) अलका सरावगी

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'कठ गुलाब' एक उपन्यास है, जिसकी लेखिका मृदुला गर्ग हैं। इसकी रचना 1996 में की गई। इनके अन्य उपन्यास हैं- उसके हिस्से की धूप (1975), वंशज (1976), चितकोबरा (1979), अनित्य (1980), मैं और मैं (1984) तथा मिलजुल मन (2009)।

43. 'मिलजुल मन' उपन्यास की लेखिका हैं-

- (a) कृष्णा सोबती (b) मन्नू भण्डारी
(c) मृदुला गर्ग (d) रुषा प्रियंवदा

डायट (प्रावक्त) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

44. 'महाभोज' उपन्यास की लेखिका हैं-

- (a) ममता कालिया (b) कृष्णा सोबती
(c) मन्नू भण्डारी (d) शानी

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'महाभोज' (1979) मन्नू भण्डारी द्वारा लिखा गया एक राजनीतिक उपन्यास माना गया है। इसका परिवेश वैयक्तिक या पारिवारिक न होकर सामाजिक है। मन्नू भण्डारी के अन्य उपन्यास हैं- आपका बण्टी (1971) तथा एक इंच मुस्कान (जिसे राजेन्द्र यादव के साथ मिलकर लिखा) आदि।

45. राजेन्द्र यादव एवं मन्नू भण्डारी द्वारा संयुक्त रूप से लिखा गया उपन्यास है-

- (a) सारा आकाश (b) आपका बण्टी
(c) मुर्दा सराय (d) एक इंच मुस्कान

P.G.T. परीक्षा, 2002, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. इनमें से कौन-सा सहयोगी उपन्यास है?

- (a) महाभोज (b) उखड़े हुए लोग
(c) एक इंच मुस्कान (d) आपका बण्टी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. 'आपका बण्टी' उपन्यास की लेखिका हैं-

- (a) मृदुला गर्ग (b) कृष्णा सोबती
(c) रुषा प्रियंवदा (d) मन्नू भण्डारी

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

48. 'आपका बंटी' उपन्यास किसने लिखा है?

- (a) मन्नू भण्डारी (b) निरुपमा सेवती
(c) शिवानी (d) राजी सेठ

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. 'जिन्दगीनामा' किसकी रचना है?

- (a) मन्नू भण्डारी (b) मुदुला गर्ग
(c) कृष्णा सोबती (d) ऊषा प्रियंवदा

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

कृष्णा सोबती के दो उपन्यास 'सूरजमुखी अँधेरे के' (1972) और 'जिन्दगीनामा' (1979) विशेष प्रसिद्ध हैं। इस उपन्यास में नारी जीवन की एक मनोवैज्ञानिक समस्या को उभारा गया है, जबकि 'जिन्दगीनामा' में पंजाब की विगत शती की जिन्दगी का पूरा ब्योरा प्रस्तुत किया गया है।

50. कृष्णा सोबती की कौन-सी कृति सांझी संस्कृति पर है?

- (a) मित्रो मरजानी (b) हम हशमत
(c) जिन्दगीनामा (d) यारों का यार

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

51. 'वैशाली की नगर वधू' नामक उपन्यास के लेखक हैं-

- (a) वृन्दावनलाल वर्मा
(b) आचार्य चतुरसेन शास्त्री
(c) इलाचन्द्र जोशी
(d) यशपाल

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'वैशाली की नगर वधू' (1949) एक ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसके लेखक आचार्य चतुरसेन शास्त्री हैं। इनके अन्य ऐतिहासिक उपन्यास हैं- सोमनाथ (1954), वयं रक्षामः (1955)।

52. 'वैशाली की नगर वधू' किसकी रचना है?

- (a) वृन्दावनलाल वर्मा (b) अमृतलाल नागर
(c) चतुरसेन शास्त्री (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

53. 'मानस का हंस' उपन्यास के लेखक हैं-

- (a) अमृतलाल नागर (b) यशपाल
(c) रेणु (d) अज्ञेय

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'मानस का हंस' (1972) एक जीवनीपरक उपन्यास है, जिसे 'तुलसीदास' को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। इसके लेखक अमृतलाल नागर हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं- शतरंज के मोहरे, सात घूँघट वाला मुखड़ा (1968), एकदा नैमिषारण्ये (1972), खंजन नयन (1981), करवट (1985) पीढ़ियाँ (1990)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अमृतलाल नागर ने 'सूरदास' के जीवन को केन्द्र में रखकर 'खंजन नयन' नामक उपन्यास लिखा है।
- 'शतरंज के मोहरे' में अवध की नवाबी का हासोमुख जीवन सफलतापूर्वक चित्रित है।

54. इनमें से कौन-सा उपन्यास जीवनीपरक है?

- (a) खंजन नयन (b) मृगनयनी
(c) आपका बंटी (d) कलिकथा : वाया बाईपास

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. इनमें से कौन-सा उपन्यास राही मासूम रजा द्वारा लिखित है?

- (a) नूतन ब्रह्मचारी (b) आधा गाँव
(c) काला जल (d) पुनर्नवा

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

राही मासूम रजा एक आंचलिक उपन्यासकार थे। इनका 'आधा गाँव' शिया मुसलमानों की जिन्दगी पर लिखा गया पहला उपन्यास है। इसमें भारत विभाजन के पहले और बाद की जिन्दगी को उभारा गया है। इनके अन्य प्रमुख उपन्यास हैं- टोपी शुक्ला, ओस की बूँद, सीन 75, हिम्मत जौनपुरी, दिल एक सादा कागज आदि।

56. 'आधा गाँव' इनमें से किस विधा की रचना है?

- (a) कहानी (b) उपन्यास
(c) नाटक (d) संस्मरण

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2016

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

57. 'टोपी शुक्ला' के लेखक हैं—

- (a) श्रीलाल शुक्ल (b) राही मासूम रजा
(c) मोहन राकेश (d) मन्नू भण्डारी

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

58. 'आधा गाँव' उपन्यास है—

- (a) कृष्णा सोबती (b) रेणु
(c) राही मासूम रजा (d) भगवती चरण वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

59. 'आधा गाँव' के लेखक हैं—

- (a) मेहरुन्सिा परवेज (b) शानी
(c) राही मासूम रजा (d) असगर वजाहत

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

60. इनमें से कौन आंचलिक उपन्यासकार है?

- (a) प्रेमचन्द (b) जयशंकर प्रसाद
(c) राही मासूम रजा (d) जैनेन्द्र कुमार

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

61. निम्नलिखित में से कौन-सा उपन्यासकार एक आंचलिक उपन्यासकार है?

- (a) यशपाल (b) जैनेन्द्र कुमार
(c) राही मासूम रजा (d) अज्ञेय

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

फणीश्वरनाथ रेणु ने सर्वप्रथम अपनी प्रथम कृति 'मैला आँचल' (1954) को ही आंचलिक उपन्यास के नाम से अभिहित किया। प्रथम संस्करण की भूमिका में उन्होंने लिखा था— 'यह है मैला आँचल, एक आंचलिक उपन्यास'। उन्होंने प्रेमचन्द के उपन्यासों में आंचलिकता खोजी। यही नहीं शिवपूजन सहाय के 'देहाती दुनिया' (1926) और वृन्दावनलाल वर्मा के 'झाँसी की रानी' (1946) तथा 'मृगनयनी' को भी आंचलिक उपन्यासों की श्रेणी में ले लिया गया। प्रस्तुत विकल्पों में राही मासूम रजा आंचलिक उपन्यासकार हैं, जिनका 'आधा गाँव' आंचलिक उपन्यास है।

62. देश-विभाजन की त्रासदी किस उपन्यास में वर्णित है?

- (a) राग दरबारी (b) गबन
(c) झूठा सच (d) इन्हीं हथियारों से

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'झूठा सच' प्रगतिवादी उपन्यासकार यशपाल द्वारा लिखा गया है, जो देश-विभाजन की त्रासदी पर आधारित है। 'झूठा सच' यशपाल द्वारा दो भागों में लिखा गया है। इस उपन्यास का पहला भाग 'वतन और देश' 1958 ई. में प्रकाशित हुआ, जबकि दूसरा भाग 'देश का भविष्य' 1960 ई. में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास के मुख्य पात्र हैं— तारा, पुरी और कनका। यशपाल के अन्य प्रमुख उपन्यास हैं— पार्टी कामरेड, दादा कामरेड, देशद्रोही मनुष्य के रूप, अमिता, दिव्या, तेरी मेरी उसकी बात आदि।

63. 'झूठा सच' उपन्यास के लेखक हैं—

- (a) अज्ञेय (b) मुक्तिबोध
(c) यशपाल (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

64. 'सूरज किरन की छाँव' - आंचलिक उपन्यास के लेखक हैं—

- (a) राजेन्द्र अवस्थी (b) शैलेश मटियानी
(c) देवेन्द्र सत्यार्थी (d) उदयशंकर भट्ट

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

'सूरज किरन की छाँव' राजेन्द्र अवस्थी का पहला उपन्यास है। यह एक आंचलिक उपन्यास है।

65. निम्नलिखित में से कौन-सा उपन्यास नागार्जुन का नहीं है?

- (a) बलचनमा (b) रतिनाथ की चाची
(c) वरुण के बेटे (d) परती परिकथा

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'परती परिकथा' नागार्जुन का उपन्यास नहीं, बल्कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' का उपन्यास है। शेष उपन्यास नागार्जुन के हैं। नागार्जुन का पहला उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' 1948 ई. में प्रकाशित हुआ था। बलचनमा (1952), नई पौध (1953), बाबा बटेश्वर नाथ (1954), वरुण के बेटे (1957), दुखमोचन (1957), कुम्भी पाक (1960), हीरक जयन्ती (1961), उग्रतारा (1963), इमरतिया (1968), पारो (1975), गरीब दास (1979) आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं।

66. साम्प्रदायिक समस्या पर लिखा गया उपन्यास कौन है?

- (a) तमस (b) बलचनमा
(c) अपने-अपने अजनबी (d) बूँद और समुद्र

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

‘तमस’ भीष्म साहनी का साम्प्रदायिक समस्या पर लिखा गया उपन्यास है, जिसमें भारत-विभाजन के पूर्व हिन्दू-मुस्लिम दंगों का जायजा लिया गया है। यह दो भागों में है- पहले भाग में शहरी दंगों की डाक्युमेंट्री है, तो दूसरे भाग में एक परिवार के माध्यम से गाँव के दंगों का चित्रण किया गया है। इनके अन्य उपन्यास हैं- बसन्ती, कुन्ती, भाग्य रेखा, कड़ियाँ झरोखे, मैयादास की माड़ी।

67. निम्नलिखित रचनाओं में कौन-सी ऐसी पुस्तक है, जो भारत-पाकिस्तान विभाजन को लेकर नहीं लिखी गई है?

- (a) तमस (b) आधा गाँव
(c) कितने पाकिस्तान (d) राग दरबारी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

भारत-पाकिस्तान विभाजन को लेकर ‘राग दरबारी’ पुस्तक नहीं लिखी गयी है। यह प्रसिद्ध व्यंग्य उपन्यासकार श्रीलाल शुक्ल की रचना है। भीष्म साहनी द्वारा रचित ‘तमस’, राही मासूम रजा द्वारा रचित ‘आधा गाँव’ तथा कमलेश्वर द्वारा रचित ‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास भारत-पाकिस्तान विभाजन को लेकर लिखी गयी है।

68. निम्नलिखित में से किस उपन्यास का कथानक भारत-पाकिस्तान विभाजन पर आधारित नहीं है?

- (a) झूठा-सच (b) तमस
(c) आधा गाँव (d) कर्मभूमि

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

‘कर्मभूमि’ (1932 ई.) उपन्यास, जो प्रेमचन्द द्वारा लिखा गया है, भारत-पाकिस्तान विभाजन पर आधारित नहीं, बल्कि इसमें नागरिक और ग्रामीण दोनों जीवन-धाराओं पर आधारित यथार्थवादी राजनैतिक चित्रण किया गया है। शेष सभी उपन्यास भारत-पाकिस्तान विभाजन पर आधारित हैं।

69. पाप और पुण्य के चिरंतन नैतिक प्रश्न को किस उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है?

- (a) सामर्थ्य और सीमा (b) चित्रलेखा
(c) भूले-बिसरे चित्र (d) आखिरी दाँव

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

‘चित्रलेखा’ भगवती चरण वर्मा की औपन्यासिक कृति है। भगवती चरण वर्मा को उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठित करने वाला उनका उपन्यास चित्रलेखा है, जिसमें पाप-पुण्य के चिरंतन नैतिक प्रश्न को प्रस्तुत किया गया है। इनके अन्य प्रमुख उपन्यास हैं- पतन, तीन वर्ष, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, आखिरी दाँव, भूले-बिसरे चित्र, रेखा, सीधी-सच्ची बातें तथा सबहिं-नचावत रामगोसाई।

70. ‘चित्रलेखा’ किसकी औपन्यासिक कृति है?

- (a) भगवती चरण वर्मा (b) भगवती प्रसाद बाजपेयी
(c) उदयशंकर भट्ट (d) विष्णु प्रभाकर

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

71. ‘बावनदास’ इनमें से किस उपन्यास का पात्र है?

- (a) गोदान (b) परती परिकथा
(c) बलचनमा (d) मैला आँचल

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

मैला आँचल उपन्यास का पात्र ‘बावनदास’, कालीचरण, कमली तथा डॉ. प्रशान्त हैं। परती परिकथा के पात्र जितेन्द्र तथा इरावती हैं। होरी, गोबर, मातादीन, दातादीन, अलगू, मंगरू, धनिया, सिलिया, झुनिया आदि गोदान के पात्र हैं।

72. ‘गोबर’ प्रेमचन्द के किस उपन्यास का पात्र है?

- (a) प्रेमाश्रम (b) गबन
(c) गोदान (d) निर्मला

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

73. ‘वर्ग-वैषम्य’ एवं ‘वर्ग-चेतना’ प्रेमचन्द के किस उपन्यास का मूल आधार है?

- (a) गबन (b) गोदान
(c) निर्मला (d) प्रेमाश्रम

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

प्रेमचन्द ‘प्रेमाश्रम’ उपन्यास में प्रेम के माध्यम से हृदय परिवर्तन द्वारा समाज की आर्थिक विषमताओं को हटाकर रामराज्य स्थापित करना चाहते हैं। यह उपन्यास वर्ग-वैषम्य एवं वर्ग-चेतना पर आधारित है। प्रेमाश्रम के किसान जमींदारों की बेगारी, धोस तथा अत्याचार के विरुद्ध तन कर खड़े हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- प्रेमचन्द के 'प्रेमाश्रम' उपन्यास पर गाँधीवाद का प्रभाव है।
- वस्तुतः यह हिन्दी का पहला राजनीतिक उपन्यास है।
- 'प्रेमाश्रम' प्रेमचन्द के 'गोशए आफियत' का हिन्दी अनुवाद है।

74. प्रेमचन्द का कौन-सा उपन्यास गाँधीवाद से प्रभावित है?

- (a) गोदान (b) कर्मभूमि
(c) रंगभूमि (d) सेवासदन

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

प्रेमचन्द का उपन्यास 'रंगभूमि' के गाँधीवादी नायक सूरदास का व्यक्तित्व अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। सूरदास का साधन-शुद्धि का आग्रह, मशीनीकरण का विरोध, पूँजीवादी संस्कृति की उपेक्षा, प्राचीनकाल से चली आयी समन्तवादी संस्कृति के प्रति आकर्षण आदि विचार गाँधीवाद का प्रभाव सूचित करते हैं। कर्मभूमि में गाँधी के व्यावहारिक कार्यक्रमों का गाँवों में प्रचार दिखाया गया है। सूत-कतई, बुनाई, हरिजनोद्धार, शराबबंदी, मुर्दा जानवरों का मांस-भक्षण न करना, विभिन्न जातियों में रोटी-व्यवहार, मन्दिर-प्रवेश का आन्दोलन इत्यादि को पढ़ते समय गाँधी-युग का वातावरण साकार होता जान पड़ता है। 'गोदान' में आकर 'प्रेमचन्द' समाजवाद की ओर कदम बढ़ाते दिखाई पड़ते हैं, लेकिन गाँधीवाद तत्त्व प्रेमचन्द के व्यक्तित्व से विलुप्त नहीं हुआ। अतः स्पष्ट है कि प्रेमचन्द का उपन्यास 'रंगभूमि' गाँधीवाद से प्रभावित है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) बताया है, जबकि मुरली मनोहर प्रसाद सिंह तथा रेखा अवस्थी द्वारा सम्पादित पुस्तक 'प्रेमचन्द : किताब महत्ता और वर्तमान अर्थवत्ता' में 'हिन्दी उपन्यास परम्परा' (नन्ददुलारे वाजपेयी द्वारा सम्पादित) अध्याय के अन्तर्गत पृष्ठ 192-194 तक (संस्करण-2008) यह उद्धृत है कि प्रेमचन्द के उपन्यास 'रंगभूमि' में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, नागरिक, ग्रामीण के साथ विभिन्न वर्गों और स्थितियों की योजना एवं गाँव तथा नगरों के परिवारों का वर्णन किया गया। इसके लिखे जाने के समय गाँधीजी का सत्याग्रह आन्दोलन पराक्राष्टा पर था। गाँधीजी के सामाजिक, राजनीतिक तथा आदर्शमूलक विचारों से यह उपन्यास प्रभावित है। सूरदास नामक अन्धा पात्र भारतीय ग्रामीण जीवन का प्रतीक है तथा गाँधीवादिता में पगा हुआ है। वह अन्धा निर्बल हेने पर भी निष्ठावान है। विनय, सोफिया और प्रभुसेवक आदि के चित्रणों में भी गाँधीवादी जीवनदृष्टि का प्रभाव है। 'रंगभूमि' गाँधीवादी उपन्यास इसलिए कहा जाता है कि यह गाँधीजी की राजनीतिक चेतना से अनुप्राणित है। 'रंगभूमि' प्रेमचन्द की उपन्यासकला का एक विकसित सोपान है। गाँधीवाद का प्रभाव साहित्य या जीवन पर जैसा भी कुछ पड़ा वह 'रंगभूमि' में दिखाई पड़ता है। चरित्रों की विविधता, बहुलता (औपन्यासिक बाहुल्य) और तत्कालीन जीवन की व्यापकता का चित्रण 'रंगभूमि' की अपनी विशेषता है। 'कर्मभूमि' में न तो 'रंगभूमि' जैसी आदर्शवादिता है और न 'गबन' जैसी विषय की एकाग्रता और समाहार है। 'कर्मभूमि' में सामान्य जीवन की धारा व वास्तविकता अधिक है, गाँधीवादी प्रभाव कम है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'रंगभूमि' में सर्वहारा और पूँजीपति के बीच सीधा संघर्ष चित्रित है।
- 'सूरदास' बनारस के पांडेपुर गाँव का एक किसान है।
- रंगभूमि में तीन पात्र हैं- महेन्द्र कुमार, सूरदास तथा जनसेवक।
- प्रेमचन्द ने रंगभूमि में पहली बार प्रतीकों का प्रयोग किया है।

75. 'सूरदास' प्रेमचन्द के किस उपन्यास का प्रमुख पात्र है?

- (a) कर्मभूमि (b) प्रेमाश्रम
(c) सेवासदन (d) रंगभूमि

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

76. 'सूरदास' किस उपन्यास का पात्र है?

- (a) रंगभूमि (b) कर्मभूमि
(c) गबन (d) मानस का हंस

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

77. 'सूरदास' प्रेमचन्द के किस उपन्यास का पात्र है?

- (a) वरदान (b) प्रतिज्ञा
(c) गोदान (d) रंगभूमि

P.G.T. परीक्षा, 2004

U.P.P.S.C. (एलटी ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

78. 'सूरदास' किस उपन्यास का चर्चित पात्र है?

- (a) गोदान (b) कर्मभूमि
(c) रंगभूमि (d) कायाकल्प

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

79. 'चौगाने हस्ती' नामक उर्दू उपन्यास प्रेमचन्द ने हिन्दी में किस नाम से लिखा?

- (a) रंगभूमि (b) कर्मभूमि
(c) गबन (d) गोदान

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

आरम्भ में प्रेमचन्द अपने उपन्यास पहले उर्दू में लिखते थे और फिर स्वयं उनका हिन्दी रूपान्तर करते थे। 'रंगभूमि', 'सेवासदन' और प्रेमाश्रम क्रमशः 'चौगाने हस्ती', 'बाजारे-हुस्न' और 'गोएश-अफियत' नाम से उर्दू में लिखे गए थे, किन्तु प्रकाशित पहले ये हिन्दी में ही हुए। 'जलवए ईसार' का रूपान्तर 'वरदान' 1921 ई. में प्रकाशित हुआ तथा 'हमखुर्मा व हमसवाब' के पूर्व प्रकाशित हिन्दी-रूपान्तर 'प्रेमा' अर्थात् दो सखियों का विवाह को परिष्कृत कर उन्होंने 'प्रतिज्ञा' (1929) शीर्षक से उसे सर्वथा नये रूप में प्रकाशित कराया।

प्रेमचन्द द्वारा लिखा गया सेवासदन पहला हिन्दी उपन्यास है, जिसे स्वयं प्रेमचन्द ने 'हिन्दी का बेहतरीन नॉवेल' कहा है। यह उनके उर्दू उपन्यास 'बाजारे हुस्न' (1914) का हिन्दी रूपान्तरण है। यह भारतेन्दु युग से चली आ रही वैचारिक समस्याओं- दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, वेश्यावृत्ति आदि का प्रथम रचनात्मक रूपायन है। वस्तुतः यह आर्य समाज की सुधारवादी संरचना के समानान्तर साहित्यिक रचना थी। चूँकि यह उपन्यास 'बाजारे हुस्न' हिन्दी का रूपान्तरण है, इसलिए स्पष्ट है कि इसकी समस्या भी वेश्या जीवन की ही समस्या है।

80. उर्दू उपन्यास चौगाने हस्ती (प्रेमचन्द) का हिन्दी रूपान्तरण है -

- (a) गबन (b) मंगल सूत्र
(c) गोदान (d) रंगभूमि

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

81. प्रेमचन्द का एक सशक्त उपन्यास 'गोदान' है-

- (a) राजनैतिक (b) धार्मिक
(c) सामाजिक (d) ऐतिहासिक

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'गोदान' प्रेमचन्द का अन्तिम और सर्वश्रेष्ठ सामाजिक उपन्यास है। यह उनकी प्रौढ़तम कृति है। गोदान में प्रेमचन्द का सम्पूर्ण जीवन-अनुभव सिमट कर केन्द्रीभूत हो गया है। 'होरी' उपन्यास का नायक है। वह किसानों का प्रतिनिधि है। धर्म के ठेकेदारों, छोटे-बड़े महाजनों और जमींदारों के जाल में उलझा हुआ मर्यादावादी किसान घिसते-घिसते मजदूर हो जाता है और पिसते-पिसते शव। दूसरी ओर सभ्य नागरिक समाज की स्थिति भी सामाजिक उत्थान के लिए आशाप्रद नहीं है।

82. निम्नलिखित उपन्यासों में से प्रेमचन्द का अन्तिम उपन्यास है-

- (a) सेवासदन (b) निर्मला
(c) प्रेमाश्रम (d) गोदान

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

83. प्रेमचन्द द्वारा उर्दू भाषा में लिखा गया उपन्यास 'बाजारे हुस्न' का हिन्दी रूपान्तरण है-

- (a) कायाकल्प (b) सेवासदन
(c) गबन (d) रंगभूमि

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

84. गोदान उपन्यास है-

- (a) यथार्थवादी
(b) आदर्शोन्मुख यथार्थवादी
(c) आदर्शवादी
(d) यथार्थोन्मुख आदर्शवादी

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

जीवन के अन्तिम दिनों में प्रेमचन्द की आदर्शवादी आस्था हिल उठी थी। 'सेवासदन' से लेकर 'गोदान' तक आते-आते भीतर ही भीतर उनके विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो चुके थे। 'गोदान' उनकी परिपक्व जीवन दृष्टि का परिणाम है। यहाँ तक आते-आते प्रेमचन्द का आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, यथार्थोन्मुख आदर्शवाद बन गया है।

85. प्रेमचन्द के निम्नलिखित उपन्यासों को रचना वर्ष के सिलसिलेवार क्रम में सजाइए-

- (क) गबन (ख) गोदान
(ग) सेवासदन
(a) क → ख → ग (b) ग → क → ख
(c) ख → क → ग (d) ग → ख → क

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

प्रेमचन्द ने कुल ग्यारह उपन्यास लिखे, जो इस प्रकार हैं-

उपन्यास	प्रकाशन वर्ष
1- सेवासदन	— 1918 ई.
2- वरदान	— 1921 ई.
3- प्रेमाश्रम	— 1922 ई.
4- रंगभूमि	— 1925 ई.
5- कायाकल्प	— 1926 ई.
6- निर्मला	— 1927 ई.
7- प्रतिज्ञा	— 1929 ई.
8- गबन	— 1931 ई.
9- कर्मभूमि	— 1932 ई.
10- गोदान	— 1936 ई.
11- मंगलसूत्र	— अपूर्ण

86. निम्नांकित उपन्यासों का कालक्रमानुसार सही विकल्प चिह्नित कीजिए—

- (a) प्रेमाश्रम, कर्मभूमि, गोदान, गबन
(b) गबन, गोदान, प्रेमाश्रम, कर्मभूमि
(c) प्रेमाश्रम, गबन, कर्मभूमि, गोदान
(d) कर्मभूमि, प्रेमाश्रम, गबन, गोदान

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

87. 'मंगलसूत्र' शीर्षक अधूरे उपन्यास के लेखक का नाम है—

- (a) मोहन राकेश (b) प्रेमचन्द
(c) शैलेश मटियानी (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

88. इनमें से कौन-सा उपन्यास प्रेमचन्द का नहीं है?

- (a) गोदान (b) सेवासदन
(c) कर्मभूमि (d) शेखर : एक जीवनी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

शेखर : एक जीवनी, अज्ञेय का उपन्यास है, शेष उपन्यास प्रेमचन्द के हैं। हिन्दी उपन्यास की विकास-यात्रा में 'शेखर : एक जीवनी' एक नए मोड़ का प्रतीक है, इसमें एक नवीन मनोविश्लेषण पद्धति का प्रयोग विविध शिल्प तकनीकों के साथ किया गया। यह एक खास ढंग का रोमांटिक उपन्यास है।

89. 'प्रतिज्ञा' उपन्यास के लेखक हैं—

- (a) नागार्जुन (b) रेणु
(c) प्रेमचन्द (d) यशपाल

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'प्रतिज्ञा' उपन्यास के लेखक प्रेमचन्द हैं, यह एक सामाजिक उपन्यास है। इसमें विधवाओं और अछूतों का प्रश्न उठाया गया है। इसी उपन्यास के साथ प्रेमचन्द ने एक और उपन्यास 'निर्मला' भी लिखा। 'निर्मला' में दहेज की कुप्रथा और अनमेल विवाह का भीषण परिणाम दिखाया गया है।

90. 'वीरांगना' नामक उपन्यास के रचयिता हैं—

- (a) जयशंकर प्रसाद (b) रामनरेश त्रिपाठी
(c) जगन्नाथ (d) रामधारी सिंह

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'वीरांगना' नामक उपन्यास के लेखक रामनरेश त्रिपाठी हैं। त्रिपाठी जी सिद्धहस्त साहित्यकार थे। इनको प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता के रूप में पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई थी। त्रिपाठी जी की अन्य प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं—**मुक्तक**-मारवाड़ी मनोरंजन, आर्य संगीत शतक, **कविता**-विनोद, क्या होमरूल लोगे, मानसी, **काव्य**-मिलन, पथिक, स्वप्न, **कहानी**-तरकस, आँखों देखी कहानियाँ, **उपन्यास**-वीरबाला, मारवाड़ी और पिशाचिनी, सुभद्रा और लक्ष्मी, **नाटक**-जयंत, प्रेमलोक, वफाती चाचा, अजनबी, पैसा परमेश्वर, बा और बापू, कन्या का तपोवन तथा **व्यंग्य**-दिमागी ऐयाशी, स्वप्नों के चित्र।

91. 'भागवन्ती' उपन्यास के रचयिता हैं—

- (a) सुदर्शन (b) ज्ञानेन्द्र
(c) रामकृष्ण बेनीपुरी (d) अज्ञेय

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'भागवन्ती' उपन्यास के रचयिता सुदर्शन हैं। इनका पूरा नाम पं. बदरीनाथ भट्ट था। उपन्यास तथा कहानी के क्षेत्र में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। हृदय की परख, अमर अभिलाषा, हृदय की प्यास आदि इनके उपन्यास अत्यन्त लोकप्रिय हुए हैं। इन्हें 'शहरी मध्यवर्ग का प्रतिनिधि लेखक' कहा जा सकता है।

92. 'वयं रक्षामः' है—

- (a) निबन्ध-संग्रह (b) काव्य ग्रन्थ
(c) संस्कृत नाटक (d) उपन्यास

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

आचार्य चतुरसेन शास्त्री के द्वारा लिखित उपन्यास वयं रक्षामः है। इसका मुख्य पात्र रावण है। यह रचना रावण से सम्बन्धित घटनाओं का जिक्र करती है और उनका दूसरा पहलू दिखाती है।

93. निम्नलिखित कथाकृतियों में किसका सम्बन्ध काशी से नहीं है?

- (a) काशी का अस्सी
(b) गली आगे मुड़ती है
(c) झीनी-झीनी बीनी चदरिया
(d) अलग-अलग वैतरणी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

शिवप्रसाद सिंह की 'अलग-अलग वैतरणी' आंचलिक उपन्यास है, जिसका सम्बन्ध 'करैता' गाँव से है। 'काशी का अस्सी' उपन्यास काशीनाथ सिंह द्वारा रचित है। इस उपन्यास का सम्बन्ध काशी से है। 'गली आगे मुड़ती है' शिवप्रसाद सिंह की कृति है। इसमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के घर का पता बताया गया है। 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' अब्दुल बिस्मिल्लाह का उपन्यास है। यह उपन्यास बनारस के बुनकरों को लेकर लिखा गया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- शिवप्रसाद सिंह की अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं-वैश्वानर (काशी-1), नीला चाँद (काशी-2), कोहरे में युद्ध, दिल्ली दूर है, शैलूष, मंजूषिमा, औरत, अन्धकूप, एक यात्रा सतह के नीचे, अमृता, मानसी गंगा, किस-किस को नमस्ते करूँ, उत्तर योगी आदि।

94. हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यास 'अनामदास का पोथा' में किस उपनिषद् के सर्वाधिक स्थलों का प्रयोग हुआ है?

- (a) कठोपनिषद्
(b) छान्दोग्य उपनिषद्
(c) याज्ञवल्क्य उपनिषद्
(d) वृहदारण्यक उपनिषद्

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'अनामदास का पोथा' आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी 'द्वारा लिखित उपन्यास है। इस उपन्यास में उपनिषदों की पृष्ठभूमि में चलती एक बहुत ही मासूम सी प्रेमकथा का वर्णन है। साथ ही साथ उपनिषदों की व्याख्या समझने का प्रयास, मानव जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में विचारों के मानसिक द्वन्द्व व उनके उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास इस उपन्यास की महत्वपूर्ण विशेषताएँ व उपलब्धियाँ हैं। इस उपन्यास में परिलक्षित लेखक का उपनिषद्-ज्ञान व मानवीय मनोभावों को समझने की क्षमता व उनको अपनी कलम से सजीव कर देने की क्षमता निश्चित ही प्रशंसनीय है। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि 'छान्दोग्य उपनिषद्' में वर्णित कथा है जिसके अनुसार, दो पक्षियों की वार्ता सुनकर राजा ने 'रैक' नामक 'पीठ खुजलाने वाले बैलगाड़ी वाले साधु' महिला जानी और उसकी शरण में जाकर ज्ञान याचना की।

95. 'अनामदास का पोथा' शीर्षक उपन्यास के लेखक हैं—

- (a) वृन्दावनलाल वर्मा (b) भगवती चरण वर्मा
(c) अमृतलाल नागर (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

'अनामदास का पोथा' नामक ऐतिहासिक उपन्यास के लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं। द्विवेदी जी के उपन्यास इतिहास के तथ्यों पर आधारित नहीं हैं, उनमें कल्पना के आधार पर ऐतिहासिक वातावरण की अर्थवान सृष्टि की गयी है। यह अर्थवत्ता उनके ऐतिहासिक दृष्टिकोण की देन है। वे किसी कालखण्ड को जीवंत रूप में प्रस्तुत करने के साथ-साथ उसे वर्तमान की ज्वलंत समस्याओं के साथ भी जोड़ते चलते हैं और इस सन्दर्भ में ही समग्रतः उनका गम्भीर जीवन दर्शन का भी प्रतिफल हो जाता है। इनके अन्य उपन्यास बाणभट्ट की आत्मकथा, चारु चन्द्रलेख, पुनर्नवा आदि हैं।

96. निम्न में से कौन-सा समूह आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों को दर्शाता है?

- (a) अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा
(b) बाणभट्ट की आत्मकथा, चारु चन्द्रलेख, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा
(c) झूठा सच, दादा कामरेड, देशद्रोही, दिव्या
(d) सोमनाथ धर्मपुत्र, वयं रक्षामः, आत्मदाह

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

97. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' किसकी औपन्यासिक कृति है?

- (a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) डॉ. नगेन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

98. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' है—

- (a) एक नाटक (b) एक आत्मकथा
(c) एक जीवनी (d) एक उपन्यास

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

99. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के लेखक हैं—

- (a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

100. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' है—

- (a) एक कहानी (b) एक उपन्यास
(c) एक आत्मकथा (d) इनमें से कुछ भी नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

101. 'चारु चन्द्रलेख' के उपन्यासकार हैं-

- (a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) भगवती चरण वर्मा
(c) वृन्दावनलाल वर्मा (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

102. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी किस धारा के उपन्यासकार हैं?

- (a) सांस्कृतिक मिथकीय (b) सामाजिक-सांस्कृतिक
(c) प्रयोगवादी (d) प्रगतिवादी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी सामाजिक-सांस्कृतिक विचारधारा के उपन्यासकार थे। इसकी झलक इनके 'कबीर' पुस्तक में मिलती है।

103. 'भट्टिनी' किस उपन्यास की नायिका है?

- (a) बाणभट्ट की आत्मकथा (b) चित्रलेखा
(c) दिव्या (d) पुनर्नवा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

हजारी प्रसाद द्विवेदी कृति 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास में प्रधान पात्र बाण है। इस उपन्यास में भट्टिनी तथा निपुणिका प्रमुख स्त्री पात्र हैं।

104. हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों के प्रकाशन का सही अनुक्रम है-

- (a) अनामदास का पोथा, पुनर्नवा, बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचन्द्र लेख
(b) बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचन्द्र लेख, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा
(c) पुनर्नवा, अनामदास का पोथा, चारुचन्द्र लेख, बाणभट्ट की आत्मकथा
(d) चारुचन्द्र लेख, अनामदास का पोथा, बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी उच्चक्रेटि के शोधकर्ता, निबन्धकार उपन्यासकार एवं आलोचक थे। इन्होंने सिद्ध साहित्य, जैन साहित्य एवं अपभ्रंश साहित्य को प्रकाश में लाकर भक्ति-साहित्य पर उच्चस्तरीय समीक्षात्मक ग्रन्थों की रचना की। ये विशेष रूप से वैयक्तिक एवं भावनात्मक निबन्धों की रचना करने में अद्वितीय रहे। इनके उपन्यासों का सही कालक्रम है- बाणभट्ट की आत्मकथा (1943), चारुचन्द्र लेख (1963), पुनर्नवा (1973) तथा अनामदास का पोथा (1973)।

105. पंडित किशोरीलाल गोस्वामी का उपन्यास निम्नलिखित में से कौन नहीं है?

- (a) तरुण तपस्विनी
(b) रजिया बेगम वा रंगमहल में हलाहल
(c) राजकुमारी
(d) भोजपुर का ठग

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

भोजपुर का ठग पंडित किशोरीलाल गोस्वामी का उपन्यास नहीं, बल्कि गोपालराम गहमरी का उपन्यास है। पंडित किशोरीलाल गोस्वामी ने सामाजिक और ऐतिहासिक विषयों पर लगभग पैंसठ उपन्यास लिखे हैं। उनमें कुछ उपन्यास त्रिवेणी, स्वर्गीय कुसुम वा कुसुम कुमारी, प्रणयिनी परिणय, लवंगलता वा आदर्श बाला, सुख शर्वरी, लीलावती, प्रेममयी, राजकुमारी, तारा, चपला वा नव्य समाज चित्र, कनक कुसुम वा मस्तानी, तरुण तपस्विनी वा कुटीरवासिनी, लखनऊ की कब्र वा शाही महलसरा, रजिया बेगम वा रंगमहल में हलाहल, इन्दुमती वा वन-विहंगिनी, मालती माधव वा मदन मोहिनी आदि हैं।

106. 'रजिया बेगम' किसकी रचना है?

- (a) गोपालराम गहमरी (b) किशोरीलाल गोस्वामी
(c) श्रद्धाराम फुल्लौरी (d) प्रसाद

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

107. प्रसाद द्वारा रचित इरावती कैसा उपन्यास है?

- (a) सामाजिक (b) ऐतिहासिक
(c) पौराणिक (d) यथार्थवादी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

प्रसाद के दो सामाजिक उपन्यास 'कंकाल' तथा 'तितली' पर्याप्त चर्चित रहे हैं। उन्होंने एक ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखा जिसका नाम है 'इरावती', किन्तु यह उपन्यास उनके असामयिक निधन के कारण अधूरा रह गया। 'इरावती' में शुंगकालीन ऐतिहासिक कथा-वस्तु को बड़ी सहजता से चित्रित किया जा रहा था तथा बौद्धकालीन रूढ़ियों और विकृतियों के प्रति विद्रोह की सृष्टि की परिणति से निश्चय ही यह उपन्यास ऐतिहासिक उपन्यास बन जाता, लेकिन प्रसाद जी इसे पूरा नहीं कर सके। 'कंकाल' में प्रसाद जी ने व्यक्ति की स्वतन्त्रता का समर्थन किया है। 'कंकाल' की कथा का केन्द्र है- प्रयाग, काशी, हरिद्वार, मथुरा, वृन्दावन आदि। 'तितली' के द्वारा उन्होंने प्रेम के आदर्श स्वरूप की व्याख्या की और साथ ही इसमें ग्रामीण समस्याओं का भी चित्रण किया गया है।

108. जयशंकर प्रसाद के अधूरे उपन्यास का नाम है-

- (a) मंगलसूत्र (b) तितली
(c) इरावती (d) कंकाल

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

109. “कंकाल एक प्रकार से पाप और पुण्य की समस्या का उपन्यास है।”

इस कथन के समकक्ष जयशंकर प्रसाद के बाद निम्नलिखित में से किस उपन्यास में इस समस्या को मुख्य रूप से उठाया गया है?

- (a) गोदान (b) अमृत और विष
(c) नदी के द्वीप (d) चित्रलेखा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में लिखा गया भगवतीचरण वर्मा का सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यास ‘चित्रलेखा’ है। इसके केन्द्र में पाप और पुण्य का विषय है, जिसमें एक संन्यासी सांसारिकता की ओर अग्रसर होना चाहता है, लेकिन नायिका चित्रलेखा उसे फटकारती है तथा उसकी खुद की रुचि संन्यास में हो जाती है। ‘चित्रलेखा’ में महान योगी कुमार गिरि और भोग-विलास तथा वासना में लिप्त शासक बीजगुप्त के चरित्र की पारस्परिक तुलना में अप्रत्याशित रूप से पाप और पुण्य की नई परिभाषा गढ़ते हैं और अपने शिक्षक से अन्तिम पाठ इस प्रकार सुनते हैं- संसार में पाप कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है। मनुष्य अपना स्वामी नहीं है, वह परिस्थितियों का दास है- विवश है। कर्ता नहीं है, वह केवल साधन मात्र है फिर पाप और पुण्य कैसा।

110. निम्न में से ‘मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार’ किसे कहा जा सकता है?

- (a) इलाचन्द्र जोशी (b) जैनेन्द्र
(c) अज्ञेय (d) मनोहरश्याम जोशी

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(*)

दिये गये विकल्पों में इलाचन्द्र जोशी, जैनेन्द्र तथा अज्ञेय तीनों मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार हैं। अतः इस प्रश्न के तीन विकल्प सही हैं। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (d) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

111. ‘गुलाम मंडी’ उपन्यास की लेखिका हैं-

- (a) मैत्रेयी पुष्पा (b) मृदुला गर्ग
(c) महुआ माझी (d) निर्मला भुराड़िया

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

‘गुलाम मंडी’ उपन्यास की लेखिका निर्मला भुराड़िया हैं। इसमें मानव तस्करी की वैश्विक समस्या को तथा किन्नरों के जीवन की त्रासदी और सामाजिक उपेक्षा के दर्द को बहुत ही मार्मिकता के साथ सामने लाया गया है। इनके अन्य उपन्यास हैं- ‘फिर कोई प्रश्न करो नचिकेता’ और ‘खुशी का विज्ञान’।

112. ‘दीवार में एक खिड़की रहती थी’ उपन्यास की रचना किसने की?

- (a) गिरिराज किशोर (b) काशीनाथ सिंह
(c) अरुण कमल (d) विनोद कुमार शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

‘दीवार में एक खिड़की रहती थी’ उपन्यास की रचना विनोद कुमार शुक्ल ने की है। ‘नौकर की कमीज’ (1979), ‘खिलेगा तो देखेंगे’ इनके अन्य उपन्यास हैं। विनोद कुमार शुक्ल हिन्दी के प्रसिद्ध कवि और उपन्यासकार हैं। शुक्ल जी को ‘दीवार में एक खिड़की रहती थी’ उपन्यास के लिए वर्ष 1999 में ‘साहित्य अकादमी पुरस्कार’ प्रदान किया गया।

113. ‘भूतनाथ’ उपन्यास के रचयिता हैं-

- (a) राधाकृष्ण दास
(b) जगमोहन सिंह
(c) देवकीनन्दन खत्री
(d) गोपालराम गहमरी

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

‘भूतनाथ’ उपन्यास के रचयिता देवकीनन्दन खत्री हैं। उन्होंने चन्द्रकान्ता, चन्द्रकान्ता सन्तति, काजर की कोठरी, नरेन्द्र मोहिनी, कुसुम कुमारी, वीरेंद्र वीर उर्फ कटोरा भर खून, गुप्त गोदना जैसी अन्य रचनाएँ कीं। भूतनाथ (1907-1913) अपूर्ण थी। अपनी असामयिक मृत्यु के कारण वे इस उपन्यास के केवल छः भागों को लिख पाये। आगे के शेष पन्द्रह भाग उनके पुत्र ‘दुर्गाप्रसाद खत्री’ ने पूर्ण किये।

114. ‘गली आगे मुड़ती है’ के लेखक हैं-

- (a) नामवर सिंह (b) शिवप्रसाद सिंह
(c) अज्ञेय (d) मोहन राकेश

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

‘गली आगे मुड़ती है’ उपन्यास के लेखक शिवप्रसाद सिंह हैं। शिवप्रसाद सिंह कृत अन्य प्रमुख उपन्यास हैं- ‘अलग-अलग वैतरणी’ (पहला उपन्यास), ‘नीला चाँद’ आदि।

115. 'नीला चाँद' उपन्यास के लेखक हैं-

- (a) रांगेय राघव (b) सुरेन्द्र वर्मा
(c) शैलेश मटियानी (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

116. 'नूतन ब्रह्मचारी कृति' के लेखक हैं-

- (a) श्रीनिवासदास (b) बालमुकुन्द गुप्त
(c) किशोरीलाल गोस्वामी (d) बालकृष्ण भट्ट

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

भारतेन्दु मंडली के प्रधान सदस्य बालकृष्ण भट्ट जी ने 'नूतन ब्रह्मचारी' तथा 'सौ अजान एक सुजान' नामक उपन्यास लिखे।

117. 'सौ अजान एक सुजान' नामक उपन्यास के लेखक कौन थे?

- (a) प्रेमचन्द (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) गोपालराम गहमरी (d) लज्जाराम मेहता

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

118. 'नूतन ब्रह्मचारी' है-

- (a) नाटक (b) उपन्यास
(c) कहानी संग्रह (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

119. 'काला जल' का कथानक किस समस्या से सम्बन्धित है?

- (a) स्त्री उत्पीड़न (b) दलित समस्या
(c) भ्रष्टाचार (d) साम्प्रदायिकता

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'काला जल' गुलशेर खॉं शानी का बहुचर्चित उपन्यास है, जो सन् 1965 में 'काला जल बिल आखिर' नाम से प्रकाशित हुआ। शानी ने यह उपन्यास तब लिखा, जब वे महज 27-28 साल के थे। इस सामाजिक उपन्यास में एक विशाल पैमाने पर निम्न मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार का परिवेश, दुःख-दर्द और संघर्ष का कच्चा चिट्ठा मौजूद है। इस उपन्यास में विभाजन के बाद फैली घृणा की आग और उसमें झुलस रहे पारस्परिक सम्बन्धों को परखा गया है। उपन्यास तीन खण्डों में विभक्त है। इनके अन्य उपन्यास 'साँप और सीढ़ी', 'एक लड़की की डायरी' एवं 'नदी और सीपियाँ' सामाजिक उपन्यास हैं।

120. 'काला जल' उपन्यास के लेखक हैं-

- (a) बदीउज्जमाँ (b) रमेश वक्षी
(c) शानी (d) कृष्णा सोबती

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

121. 'मृगनयनी' उपन्यास के रचनाकार हैं-

- (a) वृन्दावनलाल वर्मा (b) रांगेय राघव
(c) राहुल सांकृत्यायन (d) आचार्य चतुरसेन

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

'मृगनयनी' (1950) उपन्यास के रचनाकार वृन्दावनलाल वर्मा हैं। इनके अन्य प्रमुख उपन्यास हैं- लगन (1928), संगम (1928), प्रेम की भेंट (1928), गढ़ कुण्डार (1930), कुण्डली चक्र गढ़ (1932), विराटा की पत्नी (1936), झाँसी की रानी (1946), कचनार (1947), अमरबेल (1953) आदि।

122. ठेठ हिन्दी में उपन्यास लिखने वाले कौन हैं?

- (a) निराला (b) प्रेमचन्द
(c) प्रसाद (d) हरिऔध

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' में उपन्यास-लेखन की प्रतिभा नहीं थी। इनके उपन्यास 'अधखिला फूल' (1907) में धार्मिक अन्ध विश्वासों का दुष्परिणाम दिखाया गया है। 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' (1899) प्रसिद्ध रचना है, किन्तु इसमें कथा-विन्यास की अपेक्षा भाषा के विशिष्ट प्रयोग पर लेखक की अधिक दृष्टि रही है।

123. 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' उपन्यास की रचना किस हिन्दी कवि ने की है?

- (a) भारतेन्दु (b) हरिऔध
(c) रत्नाकर (d) प्रसाद

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

124. पद्यात्मक भावभूमि पर 'श्यामा स्वप्न' नामक उपन्यास की सर्जना किसने की?

- (a) श्रीनिवासदास (b) ठाकुर जगमोहन सिंह
(c) राजा लक्ष्मण सिंह (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

ठाकुर जगमोहन सिंह (1857-1899 ई.) मध्य प्रदेश की विजय राघवगढ़ रियासत के राजकुमार थे। काशी में इन्होंने संस्कृत एवं अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त की। वहीं पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से सम्पर्क हुआ। उनकी काव्य कृतियाँ- प्रेमसंपत्ति (1885), श्यामालता (1885), श्यामा-सरोजनी (1886), देवयानी (1886) तथा श्यामा स्वप्न हैं। 'श्यामा स्वप्न' शीर्षक उपन्यास में उन्होंने प्रसंगवश कुछ कविताओं का समावेश किया है। उनके द्वारा अनूदित 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' ब्रजभाषा की सरस कृतियाँ हैं। सरस-मधुर ब्रजभाषा उनकी रचनाओं की अन्यतम विशेषताएँ हैं।

125. 'त्यागपत्र' उपन्यास के लेखक का नाम है-

- (a) यशपाल (b) भगवतीचरण वर्मा
(c) वृन्दावनलाल वर्मा (d) जैनेन्द्र कुमार

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

'त्यागपत्र' उपन्यास के लेखक जैनेन्द्र कुमार हैं। जैनेन्द्र द्वारा रचित अन्य उपन्यास हैं- परख, सुनीता, कल्याणी, सुखदा, विवर्त, जयवर्द्धन, तपोभूमि, मुक्तिबोध आदि। उनके उपन्यास 'मुक्तिबोध' पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया था।

126. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किसे हिन्दी का पहला उपन्यास माना है?

- (a) देवरानी-जेठानी की कहानी (b) परीक्षा गुरु
(c) भाग्यवती (d) नूतन ब्रह्मचारी

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

भारतेन्दु-युग के लेखकों को उपन्यास-रचना की प्रेरणा बंगला और अंग्रेजी के उपन्यासों से प्राप्त हुई। हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास लाला श्रीनिवास का 'परीक्षा गुरु' (1882) माना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल भी इसे हिन्दी का प्रथम उपन्यास मानते हैं। हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाले लाला श्रीनिवास दास को हिन्दी में आधुनिक ढंग का पहला उपन्यास लिखने का गौरव प्राप्त है।

127. हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास है-

- (a) परीक्षा गुरु (b) भाग्यवती
(c) नूतन ब्रह्मचारी (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

128. 'परीक्षा गुरु' को किस समालोचक ने हिन्दी का प्रथम उपन्यास स्वीकार किया है?

- (a) जॉर्ज ग्रियर्सन (b) मिश्र बन्धु
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

129. 'परीक्षा गुरु' उपन्यास के लेखक हैं-

- (a) सीताराम दास (b) लाला श्रीनिवास दास
(c) प्रताप नारायण मिश्र (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

130. 'परीक्षागुरु' उपन्यास का प्रथम प्रकाशन कब हुआ था?

- (a) 1877 ई. (b) 1882 ई.
(c) 1890 ई. (d) 1893 ई.

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

131. देवकीनन्दन खत्री जी के उपन्यास 'चन्द्रकान्ता' को हिन्दी का प्रथम उपन्यास किसने माना?

- (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. नामवर सिंह (d) डॉ. श्रीकृष्णलाल

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

देवकीनन्दन खत्री के उपन्यास 'चन्द्रकान्ता' को हिन्दी का प्रथम उपन्यास डॉ. श्रीकृष्णलाल ने माना है। जबकि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'परीक्षा गुरु' उपन्यास को हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास माना है, जिसके लेखक श्रीनिवास हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भारतेन्दु के 'पूर्णप्रकाश' और 'चन्द्रमा' उपन्यास को हिन्दी का पहला उपन्यास माना है।

132. हिन्दी का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है -

- (a) झाँसी की रानी (b) नूरजहाँ
(c) हृदय हरिणी (d) सम्राट अशोक

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

हिन्दी का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास 'हृदय हरिणी' है। जिसके लेखक किशोरीलाल गोस्वामी हैं, जो हिन्दी के प्रथम ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं। 'हृदय हरिणी वा आदर्श रमणी' 1904 में पुस्तक - रूप में प्रकाशित हुआ था।

133. 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' किस उपन्यासकार की कृति है?

- (a) राही मासूम रजा (b) अब्दुल बिस्मिल्लाह
(c) असगर वजाहत (d) मुद्राराक्षस

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' (1986) अब्दुल बिस्मिल्लाह की औपन्यासिक कृति है। इस उपन्यास में बनारस के बुनकरों का जीवन यथार्थ पूरी संश्लिष्टता में सजीव हो उठा है, जिसमें गरीब निम्न मध्यमवर्गीय जुलाहों के शोषण की कहानी है। इनके अन्य उपन्यास हैं- समर शेष (1980), जहरवाद (1987), दन्तकथा (1990), मुखड़ा क्या देखें (1996), अपित्र आख्यान (2008), रावी लिखता है, (2010)।

134. अब्दुल बिस्मिल्लाह कृत 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' में किसका चित्रण है?

- (a) कबीर के जीवनकाल का
(b) भारत की साम्प्रदायिक समस्या का
(c) बुनकरों के जीवन संघर्ष का
(d) इनमें से कोई नहीं।

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

135. 'संन्यासी' किसकी कृति है?

- (a) यशपाल (b) नागार्जुन
(c) निराला (d) इलाचन्द्र जोशी

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

'संन्यासी' इलाचन्द्र जोशी की एक औपन्यासिक कृति है। इलाचन्द्र जोशी एक मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार हैं। पर्दे की रानी, प्रेत और छाया, निर्वासित तथा जहाज का पंछी आदि इनके उपन्यास हैं।

136. 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास विशेषकर किस पर केन्द्रित है?

- (a) पं. जवाहरलाल नेहरू (b) महात्मा गाँधी
(c) लाल बहादुर शास्त्री (d) विनोबा भावे

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'पहला गिरमिटिया' उपन्यास गाँधीजी के दक्षिण अफ्रीकी अनुभव पर आधारित है। इसके लेखक गिरिराज किशोर हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं- लोग, चिड़ियाघर, दो, इंद्र सुने, दावेदार, तीसरी सत्ता, यथा प्रस्तावित, परिशिष्ट, असलाह, अन्तर्ध्वंस, ढाई घर तथा यातना घर।

137. 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास के लेखक हैं—

- (a) विनोद कुमार शुक्ल (b) रमेशचन्द्र शाह
(c) अनामिका (d) गिरिराज किशोर

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

138. 'बया का घोंसला' उपन्यास के लेखक हैं—

- (a) धर्मवीर भारती (b) लक्ष्मीनारायण लाल
(c) देवेन्द्र सत्यार्थी (d) फणीश्वरनाथ रेणु

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

प्रश्न में केवल 'बया का घोंसला' पूछा गया है, जबकि इसका पूरा नाम 'बया का घोंसला और साँप' (1953) है। इस उपन्यास के लेखक लक्ष्मीनारायण लाल हैं। इनके अन्य उपन्यास हैं- धरती की आँखें (1951), काले फूल का पौधा (1955), रूपाजीवा (1959), बड़ी चम्पा छोटी चम्पा (1961), मन वृन्दावन (1966), प्रेम अपवित्र नदी (1972), बड़के भैया (1973), हरा समन्दर गोपी चन्दर (1974), श्रृंगार (1975), बसंत की प्रतीक्षा (1975), देवीना (1976), पुरुषोत्तम (1983), गली अनारकली (1985) तथा कनाट प्लेस (1986)।

139. 'रूपाजीवा' उपन्यास है—

- (a) लक्ष्मीनारायण लाल का
(b) लक्ष्मीनारायण शर्मा का
(c) राजेन्द्र यादव का
(d) अमृतलाल नागर का

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

140. नटों के जीवन संघर्ष का उल्लेख किस उपन्यास में नहीं है?

- (a) कब तक पुकारूँ (b) शैलूष
(c) झूलानट (d) सेवासदन

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

सेवासदन में नटों के जीवन संघर्ष का उल्लेख नहीं है, बल्कि यह वेश्यावृत्ति पर आधारित है। शेष उपन्यासों में नटों के जीवन संघर्ष का उल्लेख है।

141. उपन्यास के तत्वों में कौन-सा नहीं है?

- (a) कथावस्तु (b) चरित्रचित्रण
(c) कथोपकथन (d) रंग निर्देश

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

विद्वानों के अनुसार उपन्यास के छः तत्वों को मान्यता दी गई है—
1. कथावस्तु, 2. पात्र एवं चरित्र चित्रण, 3. कथोपकथन, 4. भाषा शैली,
5. देश काल एवं वातावरण तथा 6. उद्देश्य। रंग निर्देश उपन्यास का तत्व नहीं है, यह नाटक का तत्व है।

□ जीवनी

1. 'अकाल पुरुष गाँधी' किसने इस जीवनी की रचना की है?

- (a) जैनेन्द्र (b) अज्ञेय
(c) डॉ. देवराज (d) प्रभाकर माचवे

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'अकाल पुरुष गाँधी' जीवनी के रचनाकार जैनेन्द्र कुमार हैं, जिसका प्रकाशन सन् 1968 में हुआ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- हिन्दी में जीवनी लिखने की परम्परा का उद्भव भारतेन्दु युग में 1881 ई. के आस-पास हुआ। गोपाल शर्मा शास्त्री ने उस युग की महान विभूति स्वामी दयानन्द सरस्वती पर हिन्दी की पहली जीवनी 'दयानन्द दिग्विजय' लिखी।

2. 'गणेश शंकर विद्यार्थी' रचित गाँधी की जीवनी है—

- (a) बापू (b) श्री गाँधी
(c) कर्मवीर गाँधी (d) अकाल पुरुष गाँधी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

गणेश शंकर विद्यार्थी रचित गाँधीजी की जीवनी का नाम 'श्री गाँधी' है। घनश्याम दास बिड़ला ने 'बापू' नामक जीवनी तथा जैनेन्द्र कुमार ने 'अकाल पुरुष गाँधी' नामक जीवनी लिखी।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- कुछ प्रमुख जीवनीकार तथा जीवनी के लेखक इस प्रकार हैं—

जीवनी	जीवनीकार
देशभक्त लाला लाजपत राय	नवजादिकलाल श्रीवास्तव
बालगंगाधर तिलक	ईश्वरी प्रसाद शर्मा
गाँधी-मीमांसा	रामदयाल तिवारी
गाँधी जी कौन हैं	रामनरेश त्रिपाठी
गाँधी गौरव	नरोत्तमदास व्यास
चम्पारण में महात्मा गाँधी	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
लाजपत महिमा	नन्दकुमार देव
चन्द्रशेखर आजाद	मन्मथनाथ गुप्त

3. गाँधीजी की जीवनी 'महात्मा गाँधी' के लेखक हैं—

- (a) रामचन्द्र वर्मा (b) सम्पूर्णानन्द
(c) ईश्वरी प्रसाद शर्मा (d) केशव प्रसाद सिंह

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

गाँधीजी की जीवनी 'महात्मा गाँधी' (1921 ई.) के लेखक रामचन्द्र वर्मा हैं। 'महात्मा गाँधी' के जीवन पर लिखे गये ग्रन्थों में लक्ष्मण प्रसाद भारद्वाज कृत महात्मा गाँधी (1939 ई.), घनश्यामदास बिड़ला कृत बापू (1940 ई.), ज्योति प्रसाद मिश्र 'निर्मल' कृत-महात्मा गाँधी (1940 ई.), सुशील नायर कृत बापू के कारावास की कहानी (1949) आदि उल्लेखनीय हैं।

4. 'मनीषी की लोकयात्रा' किसकी जीवनी है?

- (a) प्रेमचन्द की (b) निराला की
(c) कविराज गोपीनाथ की (d) शरत्चन्द्र की

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

भगवती प्रसाद सिंह द्वारा रचित 'मनीषी की लोकयात्रा' जीवनी है। इसमें कविराज गोपीनाथ की जीवन-कथा का वर्णन है।

5. 'कलम का सिपाही' कृति के लेखक हैं—

- (a) प्रेमचन्द (b) विष्णु प्रभाकर
(c) अमृतराय (d) रामविलास शर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'कलम का सिपाही' एक जीवनी प्रधान कृति है, जिसके लेखक अमृतराय हैं। इसमें मुंशी प्रेमचन्द की जीवनी लिखी गयी है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- हिन्दी में प्रेमचन्द की जीवनी उनकी पत्नी शिवरानी देवी ने 'प्रेमचन्द घर में' (1944) नाम से लिखी।
➤ शिवरानी देवी ने प्रेमचन्द को परिवार के सन्दर्भ में देखा और अमृतराय ने युग जीवन के सन्दर्भ में।
➤ प्रेमचन्द की तीसरी जीवनी 'कलम का मजदूर' (1964) मदन गोपाल ने लिखी है।

6. प्रेमचन्द की जीवनी 'कलम का मजदूर' के रचनाकार हैं—

- (a) अमृतराय (b) मदन गोपाल
(c) शिवरानी देवी (d) विष्णु प्रभाकर

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'कलम का सिपाही' हिन्दी गद्य की किस विधा की रचना है?

- (a) आत्मकथा (b) रिपोर्टाज
(c) संस्मरण (d) जीवनी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'कलम का सिपाही' का लेखक कौन हैं?

- (a) प्रेमचन्द (b) अमृतराय
(c) शरतचन्द्र (d) दयानन्द सरस्वती

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. 'आवारा मसीहा' किसकी जीवनी है?

- (a) प्रेमचन्द (b) शरतचन्द्र
(c) पन्त (d) निराला

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

साहित्यकार शरतचन्द्र की जीवनी 'आवारा मसीहा' है, जिसके लेखक विष्णु प्रभाकर हैं। प्रेमचन्द की जीवनी 'कलम का सिपाही' के रचनाकार अमृतराय हैं। पन्त की जीवनी 'सुमित्रानन्दन पंत : जीवन और साहित्य' के रचनाकार शान्ति जोशी एवं निराला की जीवनी 'निराला की साहित्य साधना' के रचनाकार रामविलास शर्मा हैं।

10. 'आवारा मसीहा' इनमें से किस साहित्यकार की जीवनी है?

- (a) रवीन्द्रनाथ ठाकुर (b) बंकिमचन्द्र बनर्जी
(c) शरतचन्द्र चटर्जी (d) नागार्जुन

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'आवारा मसीहा' किस उपन्यासकार की जीवनी से सम्बन्धित है?

- (a) शरतचन्द्र (b) बंकिम चन्द्र
(c) विमल मित्र (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. 'आवारा मसीहा' किस विधा की रचना है?

- (a) उपन्यास (b) कहानी
(c) जीवनी (d) आत्मचरित

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'आवारा मसीहा' के लेखक हैं—

- (a) विष्णु प्रभाकर (b) श्रीलाल शुक्ल
(c) रमेश कुंतल मेघ (d) रमेश चन्द्र शाह

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. इनमें से कौन-सा लेखक जीवनी लेखक नहीं है?

- (a) रामविलास शर्मा (b) अज्ञेय
(c) अमृतराय (d) विष्णु प्रभाकर

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. निम्नलिखित में से एक कृति एक प्रसिद्ध साहित्यकार के जीवन पर आधारित उपन्यासात्मक जीवनी है—

- (a) शेखर एक जीवनी (b) आवारा मसीहा
(c) गुड़िया भीतर गुड़िया (d) अन्या से अनन्या तक

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. निम्न में से कौन-सी कृति जीवनी विधा से सम्बन्धित नहीं है?

- (a) चौरासी वैष्णव की वार्ता
(b) बसेरे से दूर
(c) भक्तमाल
(d) मालवीयजी के साथ तीस दिन

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'बसेरे से दूर' हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा है। गोकुलनाथ कृत चौरासी वैष्णवों की वार्ता (1558 ई.), नाभादास कृत भक्तमाल एवं राम नरेश त्रिपाठी कृत मालवीय जी के साथ तीस दिन जीवनी विधा से सम्बन्धित हैं।

17. इनमें से एक कृति जीवनी नहीं है—

- (a) आवारा मसीहा (b) कलम का सिपाही
(c) अन्या से अनन्या (d) शिखर से सागर

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

‘अन्या से अनन्या’ स्त्री व्यथा की आत्मकथा है। इसकी लेखिका प्रभा खेतान हैं। ‘आवारा मसीहा’ शरतचन्द्र की जीवनी है। इसके लेखक विष्णु प्रभाकर हैं। ‘कलम का सिपाही’ मुंशी प्रेमचन्द की जीवनी है, जिसके लेखक अमृतराय हैं। ‘शिखर से सागर तक’ अज्ञेय की जीवनी है। इसके लेखक राम कमल राय हैं।

18. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को केन्द्र में रखकर लिखी गई पुस्तक

‘व्योमकेश दरवेश’ के लेखक हैं—

- (a) राजदेव सिंह (b) केदारनाथ सिंह
(c) विश्वनाथ त्रिपाठी (d) रमेश कुन्तल मेघ

U.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

‘व्योमकेश दरवेश’ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की जीवनी है, जिसे विश्वनाथ त्रिपाठी ने लिखा है। इसका प्रकाशन 2011 में हुआ। यह हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अब तक लिखी तीन श्रेष्ठ जीवनियों— कलम का सिपाही, निराला की साहित्य साधना तथा आवारा मसीहा के बाद चौथी श्रेष्ठ जीवनी है। इस पुस्तक में ‘रचना और रचनाकार’ शीर्षक के अन्तर्गत द्विवेदी जी पर लिखे गए आलोचनात्मक आलेख भी एकत्र संकलित हैं।

□ आत्मकथा

1. ‘यादों की बारात’ किसकी आत्मकथा है?

- (a) राही मासूम रजा
(b) फणीश्वरनाथ रेणु
(c) जोश मलिहाबादी
(d) सुमित्रानन्दन पन्त

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

‘यादों की बारात’ जोश मलिहाबादी की आत्मकथा है। इनका नाम शबीर हसन खां ‘जोश’ था। इनका जन्म 5 दिसम्बर, 1894 को मलिहाबाद (लखनऊ) के एक जागीरदार घराने में हुआ था। इनके पिता का नाम बशीर अहमद खां ‘वशीर’ था। इनके पिता और दादा भी अच्छे शायर थे। इन्होंने ‘कलीम’ नाम की मासिक पत्रिका निकाली तथा ‘मन की जीत’, ‘एक रात’ और ‘गुलामी’ के गाने लिखे।

2. विधा की दृष्टि से ‘अस्ति और भवति’ कृति क्या है?

- (a) आत्मकथा (b) पत्र-साहित्य
(c) उपन्यास (d) निबन्ध

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

‘अस्ति और भवति’ विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की आत्मकथा है। इसका प्रथम प्रकाशन वर्ष 2014 में हुआ।

3. ‘एक कहानी यह भी’ आत्मकथा की लेखिका हैं—

- (a) रमणिका गुप्ता (b) मन्नू भण्डारी
(c) कुसुम अंसल (d) प्रभा खेतान

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

‘एक कहानी यह भी’ की लेखिका मन्नू भण्डारी हैं। मन्नू भण्डारी ने इस रचना में अपने लेखनीय जीवन की कहानी उतार दी है। यह उनकी आत्मकथा तो नहीं है, लेकिन इसमें उनके भावात्मक और सांसारिक जीवन के उन पहलुओं पर भरपूर प्रकाश पड़ता है, जो उनकी रचना-यात्रा में निर्णायक रहे। यह एक आत्मपरक शैली में लिखी हुई आत्मकथा है। इसमें बड़े ही प्रभावशाली ढंग से दर्शाया गया है कि बालिकाओं को किस तरह की पाबंदियों का सामना करना पड़ता है।

4. निम्नलिखित में से कृति आत्मकथा नहीं है—

- (a) अर्धकथा (b) निज वृत्तांत
(c) अब मैं नाच्यों बहुत गोपाल (d) मेरी आत्मकहानी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

‘अब मैं नाच्यों बहुत गोपाल’ यशस्वी साहित्यकार अमृतलाल नागर का उनके अब तक के उपन्यासों की लीक से हटकर सर्वथा मौलिक उपन्यास है। इस उपन्यास में मेहता कहे जाने वाले अछूतों में भी अछूत, अभागे अंत्यजों के चारों ओर कथा का ताना-बाना बुना गया है और उनके अंतरंग जीवन की करुणामयी रसार्द्र और हृदयग्राही झांकी प्रस्तुत की गई है। अन्य रचनाओं के लेखक हैं—अर्धकथा (आत्मकथा)—बनारसीदास चतुर्वेदी, निज वृत्तांत (आत्मकथा)—अम्बिका दत्त व्यास, मेरी आत्मकथा (आत्मकथा)—श्यामसुन्दर दास है।

5. ‘गालिब छूटी शराब’ इनमें से किसकी आत्मकथा है?

- (a) मुद्राराक्षस (b) कमलेश्वर
(c) मोहन राकेश (d) रवीन्द्र कालिया

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

‘संस्मरण’ हिन्दी गद्य साहित्य की आकर्षक, सुरुचिकर एवं आधुनिकतम विधा है। जीवन अभिव्यक्ति की यह विधा संस्मरण पर आधारित है या कहा जाए ‘स्व’ की स्मृतियों का शब्दांकन है। ‘गालिब छूटी शराब’ रवीन्द्र कालिया का आत्मकथात्मक संस्मरण है। इस पुस्तक के माध्यम से रवीन्द्र कालिया ‘स्व’ के साथ-साथ पूरे साहित्य जगत से पाठक को पूरे सुरुचिपूर्ण ढंग से परिचित कराते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- गालिब की अन्य रचनाएँ हैं-
- **कहानी संग्रह**-नौ साल छोटी पत्नी, काला रजिस्टर, गरीबी हटाओ, बाँके लाल, गली कूचे, चकैया नीम, सत्ताइस साल की उम्र तक, जरा सी रोशनी आदि।
- **उपन्यास**-खुदा सही सलामत, एबीसीडी, 17 रानाडे रोड।
- **संस्मरण**-स्मृतियों की जन्मपत्नी, कामरेड मोनालिजा, सृजन के सहयात्री, आदि।
- **व्यंग्य-राग** मिलावट मालकाँस, नींद क्यों रातभर नहीं आती।

6. इनमें से कौन-सी कृति आत्मकथा है?

- (a) कलम का सिपाही (b) चीड़ों पर चाँदनी
(c) अर्द्धकथानक (d) बाणभट्ट की आत्मकथा

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

जब कोई व्यक्ति अपनी जीवनी स्वयं लिखता है, तब उसे ‘आत्मकथा’ कहते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से हिन्दी की प्रथम आत्मकथा बनारसीदास जैन कृत ‘अर्द्धकथानक’ मानी गई है। बनारसीदास का ‘अर्द्धकथानक’ एक अद्वितीय और अनोखी रचना है। यह हिन्दी में लिखी हुई पहली आत्मकथा मानी जाती है। बनारसीदास ने अपनी आत्मकथा समकालीन ब्रजभाषा में सन् 1641 में लिखी। उस समय वे 55 वर्ष के थे। जैन शास्त्रों के अनुसार, मनुष्य का पूर्ण जीवनकाल 110 वर्षों का होता है, इसलिए बनारसीदास ने अपनी इस 55 वर्षों की कहानी को ‘अर्ध कथान’ कहा है, परन्तु यह उनकी पूर्ण कथा ही कही जा सकती है, क्योंकि ‘अर्द्धकथानक’ लिखने के दो-तीन वर्षों बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। हिन्दी साहित्य का मध्यकाल ब्रज, अवधी, राजस्थानी आदि भाषाओं में पद्य साहित्य का रचनाकाल था, इसीलिए बनारसीदास ने अपनी इस आत्मकथा को दोहा-चौपाई शैली में पद्य में ही लिखा है। प्रकारांतर से मूल पाठ के साथ हिन्दी गद्यानुवाद को जोड़कर इसे पुनः प्रकाशित किया गया। हिन्दी में आत्मकथा साहित्य के लेखन की परम्परा का श्रीगणेश इसी से माना जाता है। ‘कलम का सिपाही’ अमृतराय द्वारा लिखित प्रेमचन्द की ‘जीवनी’, ‘चीड़ों पर चाँदनी’ निर्मल वर्मा का ‘यात्रा वृत्तांत’ तथा ‘बाणभट्ट की आत्मकथा’ हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित ‘ऐतिहासिक उपन्यास’ है।

7. अर्द्धकथानक किस विधा की रचना है?

- (a) उपन्यास (b) जीवनी
(c) नाटक (d) आत्मकथा

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. ‘अर्द्धकथानक’ नामक कृति की विधा क्या है?

- (a) जीवनी (b) आत्मकथा
(c) रिपोर्टाज (d) यात्रा साहित्य

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. बनारसीदास जैन ने लिखी थी-

- (a) हिन्दी की पहली जीवनी (b) हिन्दी की पहली आत्मकथा
(c) हिन्दी की पहली कहानी (d) हिन्दी की पहली काव्य नाटिका

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. ‘अर्द्धकथानक’ है-

- (a) जीवनी (b) आत्मकथा
(c) संस्मरण (d) रिपोर्टाज

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. ‘अर्द्धकथानक’ किस विधा की रचना है?

- (a) जीवनी (b) उपन्यास
(c) आत्मकथा (d) नाटक

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. ‘नेतजी सुभाषचन्द्र बोस’ द्वारा लिखित अपनी आत्मकथा का क्या नाम है?

- (a) तरुण के स्वप्न (b) परिव्राजक की प्रजा
(c) कुछ आप बीती कुछ जग बीती (d) आत्मनिरीक्षण

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

नेताजी सुभाषचन्द्र द्वारा लिखित आत्मकथा 'तरुण के स्वप्न' (1935) नामक शीर्षक से है, जिसको गिरीशचन्द्र जोशी ने इसी शीर्षक नाम से अनूदित किया है। 'परिव्राजक की प्रजा' (1952) संस्मरणात्मक शैली में रचित शान्तिप्रिय द्विवेदी की आत्मकथा, 'आत्मनिरीक्षण' (1957) सेठ गोविन्ददास की आत्मकथा है। दक्षिण भारतीय लेखक होने के बावजूद नरदेव शास्त्री ने 'आप बीती जग बीती' (1957) आत्मकथा लिखी।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- हिन्दी में अनूदित प्रथम आत्मकथा महर्षि दयानन्द की है। दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखी आत्मकथा हिन्दी से अंग्रेजी में, अंग्रेजी से उर्दू तथा उर्दू से हिन्दी में अनूदित हुई है। 1904 ई. में मुंशी दयाराम ने उर्दू से हिन्दी में, 1912 ई. में देवेन्द्र मुखोपाध्याय ने अंग्रेजी से हिन्दी में इसका अनुवाद किया।
- 1915 ई. में अंग्रेजी में के.टी. वाशिंगटन की आत्मकथा 'अप फ्रॉम स्लेवरी' का अनुवाद पंडित लक्ष्मीनारायण गर्दे द्वारा 'आत्मोद्धार' नाम से हुआ।
- गुजराती में लिखी गई महात्मा गाँधी की आत्मकथा हरिभाऊ उपाध्याय ने 'सत्य के प्रयोग' (1927) शीर्षक से अनूदित किया।
- जवाहरलाल नेहरू की आत्मकथा 'माई स्टोरी' का अनुवाद हरिभाऊ उपाध्याय ने 'मेरी कहानी' शीर्षक से किया।
- शचीन्द्रनाथ सान्याल की बंगला भाषा में लिखी आत्मकथा हिन्दी में 'बंदी जीवन' (1938) नाम से अनूदित हुई।
- डॉ. राधाकृष्णन की आत्मकथा को शालिग्राम ने 'सत्य की खोज' नाम से अनूदित किया।
- सत्यानन्द अग्निहोत्री कृत 'मुझमें देव-जीवन का विकास' (1910) तथा स्वामी दयानन्द कृत 'जीवन चरित्र' (1917) आत्मकथा है।

13. 'आत्मनिरीक्षण' किसकी आत्मकथा है?

- (a) वियोगी हरि (b) आचार्य चतुरसेन
(c) सेठ गोविन्ददास (d) वृन्दावनलाल वर्मा

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

हिन्दी के प्रबल पक्षधर तथा समर्थ नाटककार सेठ गोविन्ददास ने अपनी आत्मकथा 1957 में 'आत्मनिरीक्षण' (1957) शीर्षक से लिखी है। इस आत्मकथा में उन्होंने महात्मा गाँधी तथा जवाहरलाल नेहरू के विचारों की आलोचना भी की है।

14. हिन्दी में दलित साहित्य की पहली आत्मकथा किसने लिखी?

- (a) ओमप्रकाश वाल्मीकि (b) मोहनदास नैमिषारण्य
(c) कौसल्या बैसन्त्री (d) सूरजपाल ने

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

हिन्दी में दलित साहित्य की पहली आत्मकथा मोहनदास नैमिषारण्य द्वारा रचित 'अपने-अपने पिंजरे' (1995) है। तत्पश्चात ओमप्रकाश वाल्मीकि ने 'जूठन' (1997) तथा सूरजपाल चौहान ने 'तिरस्कृत' नामक दलित आत्मकथाएँ लिखीं।

15. 'जूठन' किस लेखक की आत्मकथात्मक कृति है?

- (a) ओमप्रकाश वाल्मीकि (b) मोहनदास नैमिषारण्य
(c) कौशल्या बैसन्त्री (d) डॉ. भगवानदास

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. 'अपने-अपने पिंजरे' आत्मकथा के लेखक हैं—

- (a) श्योराज सिंह 'बेचन' (b) मोहनदास नैमिषारण्य
(c) सूरजपाल चौहान (d) ओमप्रकाश वाल्मीकि

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. 'जूठन' किस रचनाकार की आत्मकथा है?

- (a) नैमिषारण्य (b) ओमप्रकाश वाल्मीकि
(c) रामविलास शर्मा (d) हरिवंशराय बच्चन

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. निम्न में से दलित आत्मकथा नहीं है?

- (a) अपने-अपने पिंजरे (b) जूठन
(c) तिरस्कृत (d) मेरी असफलताएँ

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

मेरी असफलताएँ (1941) बाबू गुलाब राय का निबन्ध संग्रह है, शेष दलित आत्मकथाएँ हैं।

19. 'मणिकर्णिका' आत्मकथा है—

- (a) कैवल भारती की (b) मोहन नैमिषारण्य की
(c) जयप्रकाश कर्दम की (d) तुलसीराम की

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

दलित चिंतक तुलसीराम द्वारा लिखित आत्मकथा 'मुर्दहिया' अपशकुन से शुभ शकुन तक के सफर को वर्णित करती है। इनकी आत्मकथा का दूसरा भाग 'मणिकर्णिका' वर्ष 2014 में प्रकाशित हुआ। यह आत्मकथा तत्कालीन समाज का सम्पूर्ण विवरण है।

20. 'मुर्दहिया' किस लेखक की आत्मकथा है?

- (a) तुलसीराम (b) ओमप्रकाश वाल्मीकि
(c) सूरजपाल चौहान (d) जयप्रकाश कर्दम

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. 'रसीदी टिकट' इनमें से किसकी आत्मकथा है?

- (a) अमृता प्रीतम (b) कृष्णा सोबती
(c) अमृत राय (d) खुशवंत सिंह

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'रसीदी टिकट' अमृता प्रीतम की आत्मकथा है।

22. 'मुड़ मुड़ के देखता हूँ'- यह राजेन्द्र यादव की रचना है।

- (a) उपन्यास (b) कहानी
(c) जीवनी (d) आत्मकथा

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'मुड़ मुड़ के देखता हूँ' राजेन्द्र यादव की आत्मकथा रचना है। इन्होंने कहानी, उपन्यास, कविता, समीक्षा निबन्ध, आत्मकथा आदि विधाओं में रचनाएँ की हैं।

23. निम्नलिखित में कौन-सा जोड़ा सुमेलित नहीं है?

(आत्मकथा)

(लेखक)

- (क) मेरी जीवन यात्रा - राहुल सांकृत्यायन
(ख) सिंहावलोकन - यशपाल
(ग) नीड़ का निर्माण फिर - हरिवंशराय बच्चन
(घ) बसेरे से दूर - अज्ञेय
(a) केवल (क) (b) (ख) और (ग) दोनों
(c) केवल (ग) (d) केवल (घ)

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'बसेरे से दूर' (1977) आत्मकथा हरिवंशराय बच्चन द्वारा लिखी गयी है। शेष जोड़े सुमेलित हैं।

24. रामविलास शर्मा की आत्मकथा 'अपनी धरती अपने लोग' कितने खण्डों में विभक्त है?

- (a) दो (b) तीन
(c) एक (d) चार

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

रामविलास शर्मा कृत आत्मकथा 'अपनी धरती अपने लोग' तीन खण्डों में विभक्त है, जो 1996 में प्रकाशित हुई। इनकी प्रमुख आत्मकथा 'घर की बात' भी है।

25. 'सिंहावलोकन' किसकी आत्मकथा है?

- (a) महादेवी वर्मा की (b) यशपाल की
(c) नागार्जुन की (d) हरिवंशराय 'बच्चन' की

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

यशपाल की आत्मकथा 'सिंहावलोकन' तीन भागों में प्रकाशित हुई, जिसका प्रथम भाग 1951 में, द्वितीय भाग 1952 में तथा तृतीय भाग 1955 में प्रकाशित हुआ।

26. यशपाल की आत्मकथा है-

- (a) नीड़ का निर्माण फिर (b) सिंहावलोकन
(c) मेरी जीवन-यात्रा (d) मेरा जीवन-प्रवाह

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. 'मेरा जीवन-प्रवाह' किसकी आत्मकथा है?

- (a) राहुल सांकृत्यायन (b) वियोगी हरि
(c) शान्तिप्रिय द्विवेदी (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

वियोगी हरि की आत्मकथा 'मेरा जीवन-प्रवाह' 1948 में प्रकाशित हुई जिसमें समाज के निम्न वर्ग का मार्मिक वर्णन किया गया है।

28. हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा के कितने भाग प्रकाशित हैं?

- (a) एक (b) दो
(c) तीन (d) चार

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

हिन्दी के लोकप्रिय कवि हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा चार खण्डों में प्रकाशित है। वे हैं- (1) क्या भूलूँ क्या याद करूँ (1969 ई.), (2) नीड़ का निर्माण फिर (1970 ई.), (3) बसेरे से दूर (1977 ई.) तथा (4) दशद्वार से सोपान तक (1985 ई.)।

29. 'क्या भूँ, क्या याद करूँ' किसकी आत्मकथा है?

- (a) कुबेर नाथ राय (b) हरिवंशराय 'बच्चन'
(c) महादेवी वर्मा (d) शिवप्रसाद सिंह

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. डॉ. हरिवंशराय बच्चन की कृति 'क्या भूँ, क्या याद करूँ? किस विधा में लिखी गई एक प्रतिनिधि गद्य-कृति है?

- (a) संस्मरण (b) उपन्यास
(c) रेखाचित्र (d) आत्मकथा

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'क्या भूँ, क्या याद करूँ' किस विधा की रचना है?

- (a) कविता (b) आत्मकथा
(c) संस्मरण (d) रेखाचित्र

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. इनमें से कौन-सी कृति 'आत्मकथा' विधा में है?

- (a) कलम का सिपाही (b) क्या भूँ, क्या याद करूँ
(c) अतीत के चलचित्र (d) जहाज का पंछी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. 'मेरी जीवन-यात्रा' किसकी आत्मकथा है?

- (a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) राहुल सांकृत्यायन (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'मेरी जीवन-यात्रा' (1946 ई.) राहुल सांकृत्यायन की आत्मकथा है। इसको उन्होंने पाँच खण्डों में प्रस्तुत किया है।

34. राहुल सांकृत्यायन की आत्मकथा का नाम है-

- (a) मेरी जीवन कथा (b) मेरी जीवन-यात्रा
(c) क्या भूँ, क्या याद करूँ (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. 'कस्तूरी कुंडल बसै' आत्मकथा है-

- (a) शीला झुनझुनवाला की
(b) मैत्रेयी पुष्पा की
(c) कुसुम अंचल की
(d) गोपाल प्रसाद व्यास की

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'कस्तूरी कुंडल बसै' (2002), मैत्रेयी पुष्पा कृत आत्मकथा है। शीला झुनझुनवाला कृत आत्मकथा 'कुछ कही कुछ अनकही', कुसुम अंचल कृत आत्मकथा 'जो कहा नहीं गया' (1996) एवं गोपाल प्रसाद व्यास कृत आत्मकथा 'कहो व्यास, कैसी कही'? (1995) है।

36. निम्नलिखित आत्मकथाएँ और उनके लेखकों में से कौन-सा युग्म सही है?

- (a) सहचर है समय : अमृता प्रीतम
(b) कस्तूरी कुण्डल बसै : प्रभा खेतान
(c) टुकड़े-टुकड़े दास्तान : अमृतलाल नागर
(d) घर की बात : चतुरसेन शास्त्री

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

विकल्प (c) का युग्म सही है। 'सहचर है समय' के लेखक रामदरश मिश्र, 'कस्तूरी कुण्डल बसै' की लेखिका मैत्रेयी पुष्पा तथा 'घर की बात' के लेखक गुरुदत्त हैं।

□ संस्मरण तथा रेखाचित्र

1. 'सन् बयालिस के संस्मरण' इनमें से किस लेखक की संस्मरणात्मक कृति है?

- (a) पद्मसिंह शर्मा (b) श्रीराम शर्मा
(c) मन्मथनाथ गुप्त (d) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'सन् बयालिस के संस्मरण' के लेखक श्रीराम शर्मा जी हैं। इनके अन्य संस्मरण हैं 'वे जीते कैसे हैं' तथा बोलती प्रतिमाएँ हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में संस्मरण आधुनिक काल की विधा है। हिन्दी संस्मरण को विकास की दिशा में बढ़ाने वाले प्रमुख साहित्यकार हैं-रामवृक्ष बेनीपुरी-माटी की मूरतें, मील के पथर। देवेन्द्र सत्यार्थी-क्या गोरी का सांवरी तथा 'रेखाएँ बोल उठीं' कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर'- 'भूले हुए चेहरे' तथा 'माटी हो गई सोना'।

2. कृष्णा सोबती द्वारा लिखित संस्मरण कृति है—

- (a) हम हशमत
- (b) स्मृतियों का शुक्ल-पक्ष
- (c) सुधियाँ उस चन्दन के वन की
- (d) संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

कृष्णा सोबती अपनी संयमित अभिव्यक्ति और साफ-सुथरी रचनात्मकता के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने हिन्दी की कथा भाषा को विलक्षण ताजगी दी है। 'हम हशमत' उनके द्वारा कृत संस्मरण विधा की रचना है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- कृष्णा सोबती की अन्य कृतियों में शामिल हैं—सूरजमुखी अँधेरे के, दिलोदानिश, जिन्दगीनामा, ऐ लड़की, समय सरगम, मित्रों मरजानी, जैनी मेहरबान सिंह (सभी उपन्यास), बादलों के घेरे, डार से बिछुरी (दोनों कहानी-संग्रह), यारों के यार तिन पहाड़ (यात्रा विवरण)।
- अजीत कुमार और ओंकारनाथ श्रीवास्तव का संस्मरण 'बच्चन निकट से' (1968), काका साहेब कालेलकर का संस्मरण 'गाँधी संस्मरण और विचार' (1968), रामधारी सिंह 'दिनकर' का 'संस्मरण एवं श्रद्धांजलियाँ' (1969), पदुमकाल पुन्नालाल बख्शी का 'अन्तिम अध्याय' (1972), कमलेश्वर का 'मेरा हमदम मेरा दोस्त' (1975), विष्णु प्रभाकर का 'यादों की तीर्थयात्रा' (1981) तथा भीमसेन त्यागी का 'आदमी से आदमी तक' प्रमुख संस्मरण हैं।

3. 'कुछ आप बीती, कुछ जग बीती' संस्मरण के लेखक हैं—

- (a) बनारसी दास चतुर्वेदी
- (b) रामवृक्ष बेनीपुरी
- (c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- (d) बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन'

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'कविवचन सुधा' में सन् 1876 में प्रकाशित 'एक कहानी : कुछ आप बीती कुछ जग बीती' प्रथम मौलिक कृति है, जो भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का और हिन्दी साहित्य का भी पहला अधूरा मौलिक उपन्यास माना जा सकता है। परन्तु इसके नाम से यह प्रतीत होता है कि यह कहानी है, आत्मकथा है या संस्मरण है। इसके प्राप्त अंशों द्वारा यह प्रमाणित होता है कि यह अर्ध आत्मकथा है। डॉ. केसरी नारायण शुक्ल ने इसे 'भारतेन्दु के निबन्ध' में संकलित किया है। बाबू राधाकृष्ण दास ने भी भारतेन्दु के कथा साहित्य में इसका परिचय देते हुए लिखा है 'उन्होंने स्वयं एक उपन्यास लिखना आरंभ किया था, उसका नाम था "एक कहानी : कुछ आप बीती कुछ जग बीती।" 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' उपन्यास न होकर एक संस्मरण मात्र है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आधुनिक हिन्दी निर्माताओं में पं. बनारसीदास चतुर्वेदी एक कर्मठ लेखक और पत्रकार के रूप में विख्यात हैं। उन्होंने हिन्दी लेखन और पत्रकारिता को अन्तरराष्ट्रीय आयाम दिया। 'विश्व की विभूतियाँ' चतुर्वेदी जी का संस्मरणात्मक लेख संग्रह है। इसमें 15 संस्मरण हैं और वे सबके सब विदेशी हैं। प्रारम्भ में इसे 'सेतुबंध' नाम से प्रकाशित किया गया था। पं. बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने जुलाई, 1881 में 'आनन्दकादम्बिनी' (मासिक) एवं 1891 ई. में 'नागरी नीरद' साप्ताहिक-पत्र का प्रकाशन किया।

4. 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' किस विधा की रचना है?

- (a) आत्मकथा
- (b) जीवनी
- (c) संस्मरण
- (d) रेखाचित्र

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'याद हो कि न याद हो'-संस्मरण-कृति के लेखक हैं—

- (a) राजेंद्र यादव
- (b) अजितकुमार
- (c) काशीनाथ सिंह
- (d) विष्णुकांत शास्त्री

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

'याद हो कि न याद हो' काशीनाथ सिंह का संस्मरण है। इनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें 'काशी का अस्सी', 'घर का जोगी जोगड़ा' तथा 'कहनी उपखान' इत्यादि हैं।

6. 'रेखाएँ बोल उठीं' रेखाचित्र किसने लिखा है?

- (a) देवेन्द्र सत्यार्थी
- (b) शान्तिप्रिय द्विवेदी
- (c) शिवपूजन सहाय
- (d) उपेन्द्रनाथ अशक

P.G.T. परीक्षा, 2010

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

रेखाचित्र और संस्मरण परस्पर मिलती-जुलती विधाएँ हैं, जिनमें भेदक रेखा खींच पाना कठिन है। पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' के अनुसार, "प्रायः प्रत्येक संस्मरण लेखक रेखाचित्र लेखक है और प्रत्येक रेखाचित्र लेखक संस्मरण लेखक भी"। आनुपातिक दृष्टि से वैयक्तिकता एवं तटस्थता को देखकर ही यह निर्णय किया जाता है कि कोई रचना संस्मरण है या रेखाचित्र, क्योंकि रेखाचित्र वस्तुपरक अधिक होता है और संस्मरण में आत्मपरकता ज्यादा पायी जाती है। रेखाचित्र में लेखक का अपना व्यक्तित्व भी प्रकारान्तर से आ जाता है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपने प्रश्न में 'रेखाएँ बोल उठीं' में एक ही वर्ष के परीक्षा में दो प्रश्नों को कहीं संस्मरण दर्शाया है, तो कहीं रेखाचित्र। 'रेखाएँ बोल उठीं' देवेन्द्र सत्यार्थी का रेखाचित्र है। इनकी अन्य कृतियों में शामिल हैं— 'एक युग : एक प्रतीक', 'क्या गोरी क्या सौवरी' तथा 'कला के हस्तक्षर'।

7. देवेन्द्र सत्यार्थी के संस्मरण का नाम है—

- (a) माटी की मूरतें (b) अतीत के चलचित्र
(c) रेखाएँ बोल उठीं (d) दीप जले शंख बजे

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'माटी की मूरतें' नामक रेखाचित्र किसने लिखा?

- (a) महादेवी वर्मा (b) निराला
(c) सुमित्रानन्दन पन्त (d) रामवृक्ष बेनीपुरी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'माटी की मूरतें' नामक रेखाचित्र रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा रचित है। इनके अन्य रेखाचित्र हैं—लालतारा, गेहूँ और गुलाब आदि।

9. 'गेहूँ और गुलाब' की रचना विधा है—

- (a) उपन्यास (b) कहानी
(c) नाटक (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. 'लालतारा' की विधा है—

- (a) रेखाचित्र (b) संस्मरण
(c) जर्नल (d) यात्रावृत्त

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'माटी की मूरतें' किस विधा की रचना है?

- (a) संस्मरण (b) रेखाचित्र
(c) आत्मकथा (d) जीवनी

P.G.T. परीक्षा, 2004

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. 'माटी की मूरतें' के लेखक हैं—

- (a) पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय (b) रामवृक्ष बेनीपुरी
(c) राय देवीप्रसाद पूर्ण (d) पं. गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही'

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. बनारसीदास चतुर्वेदी के रेखाचित्र हैं—

- (a) रेखाचित्र (b) सेतुबन्ध
(c) उपर्युक्त दोनों (d) स्मारिका

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

'रेखाचित्र' और 'सेतुबन्ध' बनारसीदास चतुर्वेदी का रेखाचित्र है। बनारसीदास चतुर्वेदी इस बात को मानते हैं कि अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक ए.जी. गार्डिनर से अच्छा रेखाचित्रकार शायद ही कोई हुआ हो। गार्डिनर ने जो रेखाचित्र बनाए हैं, उसमें कहीं भी अपनी छाया नहीं पड़ने दी। उसमें जितने रंग हैं, वे सब चरितनायक के ही हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- तुर्गनेव को रेखाचित्रों के लेखन का पितामह माना जाता है।
- चतुर्वेदी जी ने अपने ग्रन्थ 'रेखाचित्र' की भूमिका में लिखा है "जिस आदमी को जीवन के विविध अनुभव प्राप्त नहीं हुए, जिसने आँखें खोलकर दुनिया नहीं देखी, जिसे कभी जीवन संग्राम में जमने का मौका नहीं मिला, जो संसार के भले-बुरे आदमियों के संसर्ग में नहीं आया, मनोवैज्ञानिक घातों, प्रतिघातों का जिसने अध्ययन नहीं किया और जिसने एकांत में बैठकर जिन्दगी के भिन्न-भिन्न प्रश्नों पर विचार नहीं किया भला वह क्या सजीव चित्रण कर सकता है।"
- बनारसीदास चतुर्वेदी ने लिखा है—"संस्मरण, रेखाचित्र और आत्मचरित इन तीनों का एक-दूसरे से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि एक की सीमा दूसरे से कहीं मिलती है और कहीं अलग हो जाती है, इसका निर्णय करना कठिन है।"
- सन् 1912 में चतुर्वेदी जी का पहला रेखाचित्र 'मर्यादा' में 'औरंगजेब' नाम से प्रकाशित हुआ था। वे मानते हैं कि उन्होंने लगभग सवा सौ रेखाचित्र लिखे होंगे। किन्तु इस पुस्तक में कुल 40 रेखाचित्र प्रकाशित हुए हैं।
- 'विश्व की विभूतियाँ' भी चतुर्वेदी जी का संस्मरणात्मक लेख संग्रह है। प्रारम्भ में इसे 'सेतुबन्ध' नाम से प्रकाशित किया गया था, किन्तु द्वितीय संस्करण में इसका नाम 'विश्व की विभूतियाँ' रख दिया गया।
- चतुर्वेदी जी का एक ग्रन्थ है 'हमारे आराध्य'। इस ग्रन्थ में 17 महापुरुषों का चरित्र-चित्रण किया गया है, उसी प्रकार 'विश्व की विभूतियाँ' में भी 15 संस्मरण हैं और वे सबके सब विदेशी हैं।

14. 'अमिट रेखाएँ' के संस्मरण रेखा चित्रकार हैं—

- (a) विष्णु प्रभाकर (b) सत्यवती मलिक
(c) देवेन्द्र सत्यार्थी (d) शिवपूजन सहाय

T.G.T. परीक्षा, 2011

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

‘अमिट रेखाएँ (1951) सत्यवती मलिक का संस्मरण रेखाचित्र है। विष्णु प्रभाकर के रेखाचित्र ‘जाने-अनजाने’, ‘कुछ शब्द कुछ रेखाएँ और ‘हँसते निर्झर दहकती भट्टी’ हैं। देवेन्द्र सत्यार्थी का रेखाचित्र ‘रेखाएँ बोली उठीं’ तथा शिवपूजन सहाय की रेखाचित्र ‘वे दिन वे लोग’ हैं।

15. ‘महादेवी वर्मा’ का रेखाचित्र इनमें से कौन-सा नहीं है?

- (a) अतीत के चलचित्र (b) पथ के साथी
(c) स्मृति की रेखाएँ (d) उपर्युक्त सभी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

हिन्दी के संस्मरणात्मक रेखाचित्र-साहित्य की श्रीवृद्धि में महादेवी वर्मा ने महत्वपूर्ण योगदान किया है। ‘अतीत के चलचित्र’ (1941), ‘स्मृति की रेखाएँ’ (1947), ‘पथ के साथी’ (1956), ‘स्मारिका’ (1971) और ‘मेरा परिवार’ (1972) उनके उल्लेखनीय रेखाचित्र-संग्रह हैं। यद्यपि महादेवी की रचनाओं की विधा के सम्बन्ध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद रहा है। इन्हें निबन्ध, संस्मरण और कहानी में से कोई एक संज्ञा भी दी जाती है, किन्तु अधिकांश विद्वान उन्हें संस्मरणात्मक रेखाचित्र ही मानते हैं। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) माना है।

16. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना ‘रेखाचित्र’ है?

- (a) पथ के साथी (b) शृंखला की कड़ियाँ
(c) यामा (d) दीपशिखा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. ‘स्मृति की रेखाएँ’ रेखांकन के रचनाकार हैं—

- (a) डॉ. श्याम सुन्दर दास (b) महादेवी वर्मा
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. महादेवी वर्मा द्वारा लिखित ‘पथ के साथी’ में निम्नलिखित में से किस साहित्यकार का संस्मरण नहीं है?

- (a) मैथिलीशरण गुप्त
(b) रवीन्द्रनाथ टैगोर
(c) सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’
(d) अयोध्या सिंह उपाध्याय ‘हरिऔध’

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

महादेवी वर्मा ने अपने संस्मरण ‘पथ के साथी’ में अपने समकालीन रचनाकारों का चित्रण किया है। ‘पथ के साथी’ में रवीन्द्रनाथ टैगोर, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’, सुमित्रानन्दन पन्त, सुभद्राकुमारी चौहान तथा सियारामशरण गुप्त के उत्कृष्ट शब्द-चित्र हैं।

19. महादेवी जी ने किस रचना में पशु-पक्षियों के रेखाचित्र प्रस्तुत किए हैं?

- (a) पथ के साथी (b) अतीत के चलचित्र
(c) स्मृति की रेखाएँ (d) मेरा परिवार

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

महादेवी वर्मा का रेखाचित्र ‘मेरा परिवार’ (1972) में पशु-पक्षियों के चित्र उकेरे गए हैं। पथ के साथी (1956) में उन्होंने समकालीन लेखकों के संस्मरणात्मक चित्रों का संकलन किया है।

20. निम्नलिखित में से कौन-सा रेखाचित्र महादेवी वर्मा का नहीं है?

- (a) अतीत के चलचित्र (b) स्मृति की रेखाएँ
(c) पथ के साथी (d) मंटो मेरा दुश्मन

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

‘मंटो मेरा दुश्मन’ महादेवी वर्मा का रेखाचित्र नहीं, बल्कि उपेन्द्रनाथ अशक का संस्मरण है। इनका एक अन्य संस्मरण है-बेदी : मेरा हमदम मेरा दोस्त।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ उपेन्द्रनाथ अशक के रेखाचित्र हैं—रेखाएँ और चित्र (1955 ई.)।
- ☛ ‘अशक’ ने चेहरे अनेक (पाँच भाग 1977-88 ई.) में अपनी जीवन कथा प्रस्तुत की है।

21. निम्न में से कौन रेखाचित्र विधा की रचना नहीं है?

- (a) कठगुलाब
(b) क्षण बोले कण मुस्काए
(c) पुरानी स्मृतियाँ
(d) रेखाएँ बोल उठीं

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

प्रतिष्ठित हिन्दी कथाकार मृदुला गर्ग का नवीनतम उपन्यास ‘कठगुलाब’ है, जबकि क्षण बोले कण मुस्काए, कन्हैया लाल मिश्र ‘प्रभाकर’ की। पुरानी स्मृतियाँ, प्रकाशचन्द्र गुप्त की और रेखाएँ बोल उठीं, देवेन्द्र सत्यार्थी का रेखाचित्र है।

22. महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित संस्मरण नहीं है—

- (a) अनुमोदन का अन्त
- (b) इधर-उधर की बातें
- (c) सभा की सभ्यता
- (d) विज्ञानाचार्य बसु का विज्ञान मन्दिर

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

‘अनुमोदन का अन्त’ (फरवरी, 1905), ‘सभा की सभ्यता’ (अप्रैल, 1907) तथा ‘विज्ञानाचार्य बसु का विज्ञान मन्दिर’ (जनवरी, 1918) महावीर प्रसाद द्विवेदी के संस्मरण हैं, जबकि ‘इधर-उधर की बातें’ (मई, 1918) रामकुमार खेमका का संस्मरण है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- जगद्विहारी सेठ ने ‘मेरी बड़ी छुट्टियों का प्रथम सप्ताह’ (जून, 1913), पांडुरंग खानखोजे ‘वाशिंगटन महाविद्यालय का संस्थापन दिनोत्सव’ (अक्टूबर, 1913) तथा प्यारेलाल मिश्र ने ‘लंदन का फाग या कुहरा’ (फरवरी, 1908) शीर्षक से संस्मरण लिखे हैं।
- काशी प्रसाद जायसवाल ने ‘इंग्लैण्ड के देहात में महाराज बनारस का कुआँ’ (जुलाई, 1907), जगन्नाथ खन्ना ने ‘अमेरिका आने वाले विद्यार्थियों को सूचना’ (दिसम्बर, 1911) तथा भोलादत्त पाण्डेय ने ‘मेरी नयी दुनिया सम्बन्धिनी रामकहानी’ (दिसम्बर, 1909) नामक शीर्षक से संस्मरण लिखे हैं।

23. निम्नलिखित में से कौन-सा संस्मरण-रेखाचित्र विधा की रचन नहीं है?

- (a) पद्मपराग
- (b) अतीत के चलचित्र
- (c) माटी की मूरतें
- (d) ज्योतिविहग

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

पद्मपराग, पद्मसिंह शर्मा, अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, माटी की मूरतें, रामवृक्ष बेनीपुरी का संस्मरण रेखाचित्र है। ज्योतिविहग, शांतिप्रिय द्विवेदी द्वारा सुमित्रानन्दन पन्त पर लिखी गई आलोचनात्मक पुस्तक है।

24. श्रीराम शर्मा की ‘बोलती प्रतिमा’ रचना की विधा है—

- (a) रेखाचित्र
- (b) संस्मरण
- (c) आत्मकथा
- (d) जीवनी

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

पं. श्रीराम शर्मा के रेखाचित्रों का संग्रह ‘बोलती प्रतिमा’ (1937) के नाम से प्रकाशित हुआ। उनका एक रेखाचित्र ‘जंगल के जीव’ भी है। वर्ष 1936-37 से हिन्दी रेखाचित्र में विकास की रेखाएँ क्रमिक रूप से मिलने लगती हैं।

25. ‘बोलती प्रतिमा’ के रचनाकार इनमें से कौन हैं?

- (a) पद्मसिंह शर्मा
- (b) श्रीराम शर्मा
- (c) बनारसीदास चतुर्वेदी
- (d) सेठ गोविन्ददास

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. ‘जंगल के जीव’ के रचनाकार कौन हैं?

- (a) प्रेमचन्द
- (b) बनारसीदास चतुर्वेदी
- (c) श्रीराम शर्मा
- (d) रामविलास शर्मा

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. ‘जंगल के जीव’ कृति के लेखक कौन हैं?

- (a) महादेवी वर्मा
- (b) श्रीराम शर्मा
- (c) रामवृक्ष बेनीपुरी
- (d) शिवपूजन सहाय

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. हिन्दी में रेखाचित्र के प्रथम रचयिता पं. पद्मसिंह शर्मा की रचना का नाम है—

- (a) पद्मपराग
- (b) पथ के साथी
- (c) दस तस्वीरें
- (d) रेखा और रंग

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

हिन्दी के प्रारम्भिक संस्मरण रेखाचित्रों के प्रवर्तक पद्मसिंह शर्मा माने जाते हैं। उनकी रचना ‘पद्मपराग’ रेखाचित्र है। पथ के साथी (1956 ई.) महादेवी वर्मा कृत रेखाचित्र है। दस तस्वीरें (1963 ई.) जगदीश चन्द्र माथुर कृत रेखाचित्र तथा ‘रेखा और रंग’ (1955) विनय मोहन शर्मा का रेखाचित्र है।

रिपोर्ताज

1. हिन्दी में रिपोर्ताज का आरम्भ किस युग में हुआ था?

- (a) द्विवेदी युग
- (b) भारतेन्दु युग
- (c) प्रसाद युग
- (d) प्रसादोत्तर युग/छायावादोत्तर युग

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

हिन्दी में रिपोर्टाज-लेखन की परम्परा शिवदान सिंह चौहान की रचना 'लक्ष्मीपुरा' (दिसम्बर, 1938) से आरम्भ हुई। 'हंस' के 'समाचार और विचार' तथा 'अपना देश' स्तम्भों के अन्तर्गत भी उनकी इस शैली की अनेक रचनाएँ प्रकाशित हुईं, जिनमें 'मौत के खिलाफ जिन्दगी की लड़ाई' विशेषरूपेण उल्लेखनीय है। छायावाद का काल 1918-1938 ई. तक माना जाता है। तत्पश्चात् छायावादोत्तर युग प्रारम्भ हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि हिन्दी में रिपोर्टाज का आरम्भ प्रसादोत्तर युग/छायावादोत्तर युग से हुआ था।

2. नवीन रिपोर्टाज की परम्परा किस रचना से आरम्भ होती है?

- (a) लक्ष्मीपुरा (b) तूफानों के बीच
(c) बंगाल का अकाल (d) स्वराज्य भवन

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'लक्ष्मीपुरा' किस विधा की रचना है?

- (a) यात्रावृत्त (b) निबन्ध
(c) रिपोर्टाज (d) डायरी

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. हिन्दी साहित्य के पहले रिपोर्टाज लेखक होने का श्रेय प्राप्त था?

- (a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) शिवदान सिंह चौहान (d) आनन्द कौसल्यायन

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'अल्मोड़े का बाजार' किस विधा की रचना है?

- (a) जीवनी (b) रिपोर्टाज
(c) प्रगीत (d) यात्रावृत्त

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'रिपोर्टाज' फ्रांसीसी भाषा का शब्द है। जिस रचना में वर्ण्य विषय का आँखों देखा तथा कानों सुना ऐसा विवरण प्रस्तुत किया जाये कि पाठक की हृदयतंत्री के तार झंकृत हो उठें और वह उसे भूल न सके, उसे 'रिपोर्टाज' कहते हैं। 'अल्मोड़े का बाजार' रिपोर्टाज विधा की रचना है। इसके लेखक प्रकाशचन्द्र गुप्त हैं। 'स्वराज्य भवन' और 'बंगाल का अकाल' उनके अन्य प्रमुख रिपोर्टाज हैं।

6. 'अल्मोड़े का बाजार' रिपोर्टाज के लेखक हैं—

- (a) भगवतशरण उपाध्याय (b) रघुवीर सहाय
(c) प्रकाशचन्द्र गुप्त (d) रांगेय राघव

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'बंगाल का अकाल' रिपोर्टाज के लेखक हैं—

- (a) रांगेय राघव
(b) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
(c) शिवदान सिंह चौहान
(d) धर्मवीर भारती

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(*)

'बंगाल का अकाल' रिपोर्टाज के लेखक प्रकाशचन्द्र गुप्त हैं। गुप्त जी का 'बंगाल का अकाल' शीर्षक रिपोर्टाज पर लिखे गये रिपोर्टाजों के बीच महत्वपूर्ण स्थान रखता है। डॉ. नगेन्द्र द्वारा सम्पादित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' ग्रन्थ में शिवदान सिंह चौहान की रचना 'लक्ष्मीपुरा' (रूपाभ - दिसम्बर, 1938) को हिन्दी का पहला रिपोर्टाज होने का श्रेय दिया गया है। रांगेय राघव ने सन् 1942 में अकालग्रस्त बंगाल की यात्रा की। यात्रा के बाद कुछ सशक्त रिपोर्टाज लिखे जो बाद में 'तूफानों के बीच' नाम से पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित हुआ। कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' द्वारा लिखे गये 'वेदों की खोज' (1927) नामक रिपोर्टाज को हिन्दी का पहला रिपोर्टाज होने का गौरव प्राप्त है। लेकिन आश्चर्य का विषय है कि ओमप्रकाश सिंहल एवं अन्य आलोचकों ने हिन्दी के एक महत्वपूर्ण हस्तक्षर कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर का कहीं उल्लेख तक नहीं किया।

8. 'बंगाल का अकाल' नामक रिपोर्टाज किसकी रचना है?

- (a) डॉ. धर्मवीर भारती (b) रांगेय राघव
(c) शिवदान सिंह चौहान (d) उपेन्द्रनाथ 'अशक'

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(*)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. 'तूफानों के बीच' नामक रिपोर्टाज के लेखक हैं—

- (a) शिवदान सिंह चौहान
(b) रांगेय राघव
(c) धर्मवीर भारती
(d) शमशेर बहादुर सिंह

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

1941 ई. में बंगाल के भीषण अकाल की काली छाया को रांगेय राघव ने रिपोर्टाज के माध्यम से सशक्त शैली में व्यक्त किया है। यह रिपोर्टाज, 'तूफानों के बीच में' शीर्षक से हंस पत्रिका में प्रकाशित हुआ था।

10. 'तूफानों के बीच' किस विधा की रचना है?

- (a) रिपोर्टाज (b) संस्मरण
(c) आत्मकथा (d) यात्रा-वृत्तांत

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'प्लाट का मोरचा' रिपोर्टाज के लेखक का नाम है—

- (a) रांगेय राघव (b) फणीश्वरनाथ रेणु
(c) शमशेर बहादुर सिंह (d) रामकृष्ण बेनीपुरी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

प्लाट का मोरचा, रिपोर्टाज के लेखक शमशेर बहादुर सिंह हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ऋणजल-धनजल, नेपाली क्रान्तिकथा, दानतुलसी की गंध, श्रुत-अश्रुतपूर्व फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखे गये रिपोर्टाज हैं।
- शिव सागर मिश्र के रिपोर्टाज 1965 में लड़े गये भारत-पाक युद्ध को आधार बनाकर लिखे गये हैं।
- धर्मवीर भारती ने सितम्बर, 1971 में मुक्तिवाहिनी के साथ बांग्लादेश की यात्रा की थी। इसी वर्ष भारतीय थल सेना के साथ वे भारत-पाक युद्ध के मोर्चे पर भी गए थे। इन दोनों ही रोमांचक घटनाओं पर आधृत रिपोर्टाजों को उन्होंने 'युद्धयात्रा' में संकलित किया है। इसके पहले ये रिपोर्टाज 'धर्मयुग' में प्रकाशित हुए थे।

12. 'प्लाट का मोरचा' शमशेर बहादुर सिंह कृत है—

- (a) कहानी (b) संस्मरण
(c) रिपोर्टाज (d) यात्रा वृत्तांत

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'विवेकी राय' द्वारा रचित कृति 'बाढ़ ! बाढ़ !! बाढ़ !!!' हिन्दी साहित्य की किस विधा की प्रसिद्ध रचना है?

- (a) जीवनी परक (b) रेखाचित्र
(c) संस्मरण परक (d) रिपोर्टाज साहित्य

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

विवेकी राय द्वारा रचित कृति 'बाढ़ ! बाढ़ !! बाढ़ !!!' रिपोर्टाज है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

रिपोर्टाज	लेखक
खून के छींटे	भगवतशरण उपाध्याय
एकलव्य के नोट्स	फणीश्वरनाथ रेणु
पेरिस के नोट्स	रामकुमार
धरती के लिए	कैलाश नारद
प्राग : एक स्वप्न	निर्मल वर्मा
क्या हमने कोई षड्यंत्र रचा था	सती कुमार

14. इनमें से कौन-सी गद्य विधाएँ विगत 15-20 वर्षों की देन हैं?

- (a) कहानी (b) उपन्यास
(c) रिपोर्टाज, फीचर लेखन (d) नाटक

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

रिपोर्टाज तथा फीचर लेखन नवीन विधा है, जो द्वितीय विश्वयुद्ध के आस-पास आरम्भ हुआ। अन्य विकल्पों में इससे पुरानी विधा है।

नोट—प्रश्न में 15-20 वर्षों की गद्य विधाएँ पूछा गया है, जबकि यह लगभग 70-75 वर्ष पुरानी विधा है।

इण्टरव्यू

1. 'जैनेंद्र जी के साथ कुछ घण्टे' इण्टरव्यू के लेखक हैं—

- (a) नन्द कुमार कोहली (b) श्रीराम शर्मा
(c) पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' (d) मनोहरश्याम जोशी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'नई धारा' पत्रिका ने 'हम इनसे मिले' शीर्षक से एक स्तंभ ही आरम्भ कर दिया था, जिसमें नन्द कुमार कोहली का 'जैनेंद्र जी के साथ कुछ क्षण' नामक इण्टरव्यू छपा था। प्रभाकर माचवे ने 1938 में जैनेंद्र कुमार का इण्टरव्यू लिया था, जो 'जैनेन्द्र के विचार' नामक पुस्तक में छपा था। 1952 ई. में डॉ. पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' कृत 'मैं इनसे मिला' में 18 कवियों कथाकारों तथा आलोचकों की भेंटवार्ताएँ संकलित हैं। इसके प्रथम भाग में गुलाब राय, राम नरेश त्रिपाठी, सुदर्शन, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', लक्ष्मीनारायण मिश्र, महादेवी वर्मा, शान्तिप्रिय द्विवेदी, सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' तथा द्वितीय भाग में इंद्र विद्या वाचस्पति, राय कृष्णदास, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', जैनेंद्र कुमार, यशपाल, दिनेशमंदिनी डालमिया, डॉ. नगेंद्र, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', प्रभाकर माचवे तथा विष्णु प्रभाकर से ली गयी भेंटवार्ताएँ प्रस्तुत की गयी हैं।

□ यात्रावृत्त

1. भारतेन्दु ने यात्रावृत्त सम्बन्धी कौन-सी रचना लिखी?

- (a) गया यात्रा (b) इलाहाबाद की यात्रा
(c) गंगा पार की यात्रा (d) सरयू पार की यात्रा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

भारतेन्दु की यात्रावृत्त सम्बन्धी रचना सरयू पार की यात्रा, मेंहदावल की यात्रा, लखनऊ की यात्रा और हरिद्वार की यात्रा उल्लेखनीय है। उनकी यात्रावृत्त रचनाएँ कविवचनसुधा पत्रिका में 1871 से 1879 ई. तक के अंकों में प्रकाशित होती रही हैं। 'गया की यात्रा' बालकृष्ण भट्ट की यात्रावृत्त सम्बन्धी रचना है।

2. निम्नलिखित में विष्णु प्रभाकर लिखित यात्रावृत्त कौन-सा है?

- (a) घाट-घाट का पानी (b) ज्योतिपुंज हिमालय
(c) दरख्तों के पार शाम (d) सागर के आर-पार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

विष्णु प्रभाकर की यात्रावृत्त है- 'ज्योतिपुंज हिमालय' (1982), 'राह चलते-चलते' (1985), 'हिमशिखरों की छाया में' (1988), 'हम सफर मिलते रहे' (1996), 'आकाश एक है' (1998), 'संपूर्ण यात्रावृत्त' (1999)

3. 'हमारी यात्रा' के यात्रा वृत्तांतकार हैं-

- (a) भगवानदास वर्मा (b) कल्याण चन्द्र
(c) लोचन प्रसाद पाण्डेय (d) यशपाल जैन

T.G.T. परीक्षा, 2011

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

'हमारी यात्रा' के यात्रा वृत्तांतकार लोचन प्रसाद पाण्डेय हैं। इनकी यह यात्रा वृत्तांत सितम्बर, 1915 में 'इन्दु' में छपी थी। भगवानदास वर्मा का यात्रा वृत्तांत 'लन्दन का यात्री' तथा यशपाल जैन की 'यूरोप यात्रा के संस्मरण' यात्रा वृत्तांत हैं।

4. 'लंका यात्रा का विवरण' - यात्रावृत्त के लेखक हैं

- (a) ठाकुर गदाधर सिंह (b) गोपालराय गहमरी
(c) स्वामी सत्यदेव परिब्राजक (d) राहुल सांकृत्यायन

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

द्विवेदी युग के गोपालराय गहमरी ने 'लंका यात्रा का विवरण' (1916) की रचना करके यात्रावृत्त संबंधी साहित्य की श्रीवृद्धि की है। उन्होंने रेल तथा जहाज द्वारा की गई अपनी लंका-यात्रा का विवरण प्रस्तुत किया है।

5. यात्रा-वृत्तांत के लेखक एवं यायावर के रूप में जिनकी प्रसिद्धि है, वे हैं-

- (a) नागार्जुन
(b) राहुल सांकृत्यायन
(c) सेठ गोविन्द दास
(d) महादेवी वर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

यात्रा लेखन में राहुल सांकृत्यायन का अन्यतम स्थान है। वे पक्के घुमक्कड़ थे और उनके जीवन का बहुत बड़ा भाग घूमने-फिरने में व्यतीत हुआ था। उन्होंने तिब्बत में सवा वर्ष (1933), मेरी यूरोप यात्रा (1935), मेरी तिब्बत यात्रा (1937), घुमक्कड़शास्त्र, श्रीलंका की यात्रा, मेरी लद्दाख यात्रा, रूस में पच्चीस मास, जापान की यात्रा आदि यात्रा-वृत्तांत कृतियों की रचना की है।

6. 'घुमक्कड़शास्त्र' यात्रावृत्त के लेखक हैं-

- (a) सत्यदेव परिब्राजक (b) राहुल सांकृत्यायन
(c) यशपाल (d) अज्ञेय

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'घुमक्कड़शास्त्र' नामक ग्रन्थ के लेखक हैं-

- (a) नागार्जुन (b) मुक्तिबोध
(c) विद्यानिवास मिश्र (d) राहुल सांकृत्यायन

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'अरे यायावर रहेगा याद' किस विधा की रचना है?

- (a) काव्य (b) यात्रा-वृत्तांत
(c) जीवनी (d) डायरी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)